नानी चिकित्सा

सार

यूनानी चिकित्सा सागर

रचयिता
हकीम मन्सा राम शुक्ल
प्रधान, डि० कांग्रेस कमेटी, पहाड़गंज,
तथा वाईस प्रिंसिपल
दी आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी तिब्बी कालिज, दिल्ली,
Ex. Liaison Officer

प्रकाशक
मोतीलाल बनारसीदास
पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता
पोस्ट बक्स नं० ७५,
चौक, बनारस।

प्रथम संस्करण } सन् १९५० { मूल्य ४)
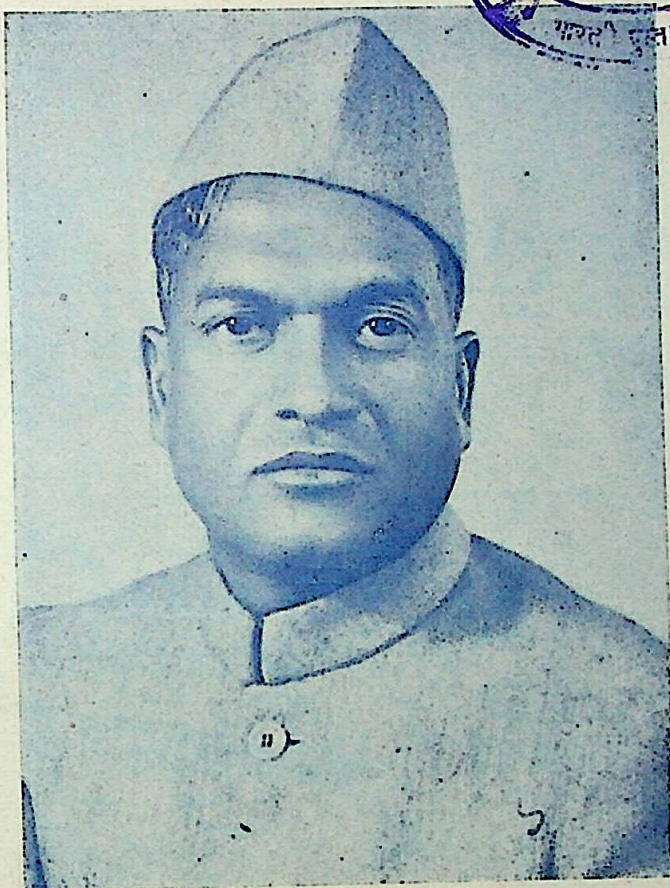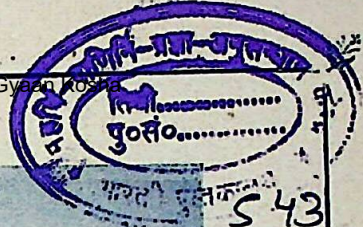
AUTHOR

HAKIM MANSA RAM SHUKLA.

Vice Principal :—

The Ayur-Vedic & Unani Tibbia College, Delhi.

President :—

District Congress Committee, Delhi.

EX-LIAISON OFFICER, PAHARGUNJ. DELHI.

❀ हकीम मंसा राम शुक्ला ❀

लेखक (वाईस प्रिंसिपल आयुर्वेदिक एन्ड यूनानी तिब्बिया कालेज देहली
यूनानी चिकित्सा सागर वा यूनानी चिकित्सा विधि
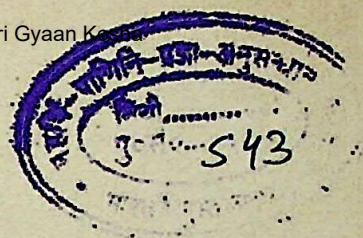
ॐ

भूमिका

भारतवर्ष तथा संसार के अन्य देशों के इतिहास का अनुशीलन करने से यह बात सिद्ध होती है कि किसी समय समस्त संसार पर भारत का प्रभुत्व था। जब अन्य देशों के लोग अज्ञान की प्रगाढ निद्रा में सुप्त थे और जंगलियों की भाँति जीवन व्यतीत किया करते थे, उस समय भारतवर्ष उन्नति के उच्चतम शिखर पर पहुंचा हुआ था और वेद के अनुपम ज्ञान की पवित्र धारा यहां अखण्ड रूप से प्रवाहित थी। यहां के ऋषियोंने अपने परिष्कृत मस्तिष्क के द्वारा एक ऐसे सुन्दर एवं सुव्यवस्थित समाज की रचना की थी कि समस्त विश्व आश्चर्यान्वित हो उठा था, यह देश सर्वप्रकारेण वैभवसम्पन्न था और एक महान् एवं उत्कृष्ट संस्कृति का स्वामी था। इसी ज्ञान के अक्षय भण्डार से संसार ने संस्कृति, सभ्यता, आचार, विचार एवं रहन-सहन का पाठ पढ़ा। इतिहास इस बात का साक्षी है कि हमारी श्रेष्ठता और सार्वजनिक उदारता से प्रभावित हो कर संसारने हमें जगद्गुरुत्व के उच्च सिंहासन पर आरूढ किया था। भगवान् मनु का कथन—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

मनु०, अ० २, श्लो० २०।

अर्थात्—"इस देश में उत्पन्न हुये ब्राह्मण से पृथिवी के सब मानवों ने अपने अपने चरित्र सीखे।"—हमारी संस्कृति की श्रेष्ठता को प्रमाणित करता है।

महाभारत में कथित अर्जुन के पाताल गमन (वर्तमान अमरीका) की यात्रा के प्रसङ्ग से कोई भी भारतीय अपरिचित नहीं। इसके साथ साथ यह बात भी अस्वीकार नहीं की जा सकती कि महाभारत के

महान् एवं भयङ्कर युद्ध में संसार के सब देशों ने भाग लिया था। इससे स्पष्टतया भारत के अन्य देशों के साथ सम्बन्ध की बात सिद्ध होती है। वर्तमान समय में भी भिन्न भिन्न देशों में अनुसन्धान कर्ताओं द्वारा जो गवेषणाएँ की गई हैं उनसे यह बात निर्विवाद रूपेण सिद्ध होती है कि किसी समय सारा संसार भारतीय संस्कृति से शिक्षित दीक्षित था मैक्सिको (Mexico) में जो स्मृतिचिह्न मिले हैं उनसे भारतीय संस्कृति और सभ्यता की झलक मिलती है। वहाँ के लोगों की परम्पराओं और रहन सहन इत्यादि पर भारतीयता की गहरी छाप है। लंका, तिब्बत, जापान, योन (यूनान) खोतन, अरब, जावा, सुमात्रा, कंबोडिया और सुदूरपूर्व देशों में बौद्ध भिक्षुओं एवं अन्य भारतीय पण्डितों का धर्म और संस्कृति के प्रचारार्थ गमन एक ऐतिहासिक सत्य है। जावा कंबोडिया, सुमात्रा, स्याम इत्यादि देशों में विष्णु, शिव और बुद्ध के विशाल मन्दिर आज भी भारतीय संस्कृति के विस्तार के प्रबल प्रमाण हैं। यहाँ के शिला लेखों और खण्डहरों में अंकित रामायण, महाभारत और गीता के श्लोक हमारे सांस्कृतिक प्रभुत्व एवं गौरव को आज भी अपने आंचल में कंगाल की निधि के समान छिपाये हैं। अपनी आध्यात्मिक प्यास बुझाने और भारतीय जीवन का वास्तविक स्वरूप देखने की प्रबल उत्कण्ठा मन में लेकर चीनी यात्रियों का भारत आगमन और पर्यटन इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। आज भी तक्षशिला और नालन्दा विश्वविद्यालयों के खण्डहर मूक भाषा में गत गौरव का गान करते हैं। ये महान् विश्वविद्यालय संसार के विद्यार्थियों के लिये आकर्षण थे। यहां दर्शन, साहित्य, व्याकरण, ज्योतिष, चिकित्सा इत्यादि की उच्च शिक्षा दी जाती थी। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेन–त्साङ्ग ने इसी विश्वविद्यालय में रहकर बौद्ध एवं संस्कृत साहित्य का अध्ययन किया था। इन विद्यालयों से शिक्षित दीक्षित विद्यार्थी संसार में ज्ञान का प्रचार करके भारतीय संस्कृति का प्रसार किया करते थे।

अरब देश भी भारतीय संस्कृति से बहुत प्रभावित था। खलीफाओं के शासनकाल में बड़े बड़े संस्कृत के ग्रन्थ अरबी भाषा में अनूदित किये गये। भारतीय ज्योतिष और चिकित्सा शास्त्र का वहां बहुत प्रसार हुआ। भारतीय पण्डितों को बुलाकर चरक, सुश्रुत, पशुचिकित्सा, स्त्रीरोग इत्यादि पुस्तकों का अरबी भाषा में अनुवाद करवाया गया। बहुत से अरबी विद्वान् जड़ी बूटियों और दूसरी औषधियों का अनुभव प्राप्त करने भारत आए और इस सम्बन्ध में उन्होंने बहुत खोज की।

संक्षिप्त रूप में यह है हमारे अतीत की गौरव गाथा। इसके पश्चात् वह समय आया जिसकी स्वप्न में भी आशा नहीं थी। भारतवासी अपने त्याग और तपस्या के वास्तविक जीवन को भूल कर स्वार्थ और लोभ में पड़ गये। परस्पर ईर्ष्या द्वेष और प्रमाद के कारण भारत परतन्त्रता की बेडियों में जकड़ा गया। विदेशियों ने सांस्कृतिक परम्पराओं और भारतीय साहित्य को नष्ट करने का बहुत प्रयत्न किया। परन्तु भारतीयों ने मन से कभी दासत्व स्वीकार नहीं किया। स्वातन्त्र्य प्राप्ति की ज्वाला अखण्ड रूप से जलती रही और बड़े बड़े बलिदान हुए।

भगवत्कृपा से आज उन अद्वितीय बलिदानों का फल हमें स्वतन्त्रता के रूप में मिला है। यद्यपि भारत स्वतन्त्र है फिर भी दशा जीर्ण है। दास्य जीवन ने हमारे धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को बहुत क्षति पहुंचाई है। इसलिये अपने गौरवमय अतीत का स्मरण करके अपने अपने क्षेत्र में कार्य करके फिर से भारत को उच्च बनाने की आवश्यकता है। दर्शन, साहित्य, ज्योतिष, चिकित्सा शास्त्र इत्यादि के अध्ययन की विशेष आवश्यकता है, ताकि जिन रत्नों को हम अपनी भूलों के कारण खो चुके हैं, उनका फिर से ज्ञान हो और उसके फलस्वरूप देश और समाज का कल्याण हो। इसी महान् आदर्श को सामने रख कर अपने क्षेत्रानुसार "युनानी चिकित्सा सागर" नाम का ग्रन्थ लिखने का मैंने साहस किया है। मेरा अपना मत है कि यूनानी चिकित्सा पद्धति भारतीय पद्धति से पृथक न होकर वही अनुपम

ज्ञान है, जो प्राचीन काल में विदेशियों ने हम से प्राप्त किया था। सिकन्दर के आक्रमण के पश्चात् बहुत से यूनानी विद्वानों ने भारतीय दर्शन, साहित्य, ज्योतिष, चिकित्सादि शास्त्रों का अध्ययन किया और उन्हें यूनान देश में प्रचलित किया। यद्यपि भाषा और भौगोलिक भिन्नता के कारण उसका रूप परिवर्तित है परन्तु मूल स्रोत वही भारतीय चिकित्सा शास्त्र ही है।

वर्तमान समय में जब कि देश का स्वास्थ्य बिगड़ रहा है और डाक्टरी (Allopathy) का चारों ओर बोल बाला है और जन साधारण बिना सोचे समझे डाक्टरी चिकित्सा के पीछे दौड़ रहे हैं, इस ग्रन्थ को जनता तक पहुँचाना और भी आवश्यक हो जाता है क्योंकि देशी चिकित्सा में ऐसी ऐसी जड़ी बूटियां प्रयोग में आती हैं जोकि सुगमतया प्राप्त हो जाती हैं और रोग को समूल नष्ट कर देती हैं। मेरा अपना मत है कि डाक्टरी चिकित्सा जिसने वर्तमान समय में अपने विचित्र आविष्कारों द्वारा चिकित्सा संसार में क्रान्ति उत्पन्न की है वह भी कोई पूर्ण चिकित्सा नहीं है। निम्नलिखित उदाहरण इस मत की पुष्टि करेंगे :—

(१) डाक्टर लोग रोग की प्रारम्भिक अवस्था में उसका निदान नहीं कर सकते, क्योंकि प्रारम्भिक अवस्था में कीटाणु बहुत ही अल्प मात्रा में होते हैं, इसलिये यांत्रिक परीक्षा कोई लाभप्रद सिद्ध नहीं होती। नाड़ी विज्ञान एवं दूसरे निदानों पर डाक्टर लोगों का विश्वास न होने के कारण रोग के समूचे स्वरूप का ज्ञान होना उनके लिये असम्भव होता है।

(२) बहुत तेज़ एवं विषैली औषधियां चिकित्सा में मुख्यतया प्रयोग में लाई जाती हैं जिनसे रोग में तो कई बार शीघ्रता से कमी हो जाती है परन्तु वे शरीर के भिन्न भिन्न अङ्गों और नाड़ियों को अत्यन्त क्षति पहुंचाती हैं और अन्यान्य भयङ्कर रोगों का उत्पादक कारण बनती हैं।

(३) डाक्टरी चिकित्सा में रोग को पूर्णतया नष्ट न करके उसको दबाने का प्रयत्न किया जाता है। इसके साथ गुण, दोष, स्वभाव, समय और स्थान का विचार न करके एक ही औषधि प्रयोग में लायी जाती है। विश्वख्यातिप्राप्त अमरीकन डाक्टर राबन्स ने बड़ी खोज के पश्चात् लिखा है कि रोग के स्थान पर रोगी की चिकित्सा करनी चाहिए।

(४) डाक्टर लोग रोग का विचार किये बिना ही आज कल (Operation) शल्यक्रिया जैसे भयङ्कर निर्णय पर पहुंच जाते हैं। इसके स्थान पर कोई औषध कितनी ही लाभदायक और रोग को समूल नष्ट करने वाली क्यों न हो उसे वे उपेक्षित समझते हैं। जालीनूस जैसे विश्वविख्यात विद्वान् ने बहुत अनुभव के पश्चात् लिखा है कि "औषध चिकित्सा से यदि रोग ठीक हो सके तो शल्य-क्रिया नहीं करनी चाहिये।"

अब प्रश्न केवल मात्र इस बात का है कि कौन सी चिकित्सा सर्व-श्रेष्ठ है। साधारण से साधारण व्यक्ति भी इस बात को समझ सकता है कि विदेशी औषधियां यहां के लोगों के स्वभाव और गुणके पूर्णतया विपरीत होती हैं। आयुर्वेदाचार्य महर्षि चरक और विश्वविख्यात बुक्रात दोनों का कथन है कि अपने देश के जल वायु और लोगों की प्रकृति के अनुसार बनाई हुई औषधियां ही सेवन करने योग्य होती हैं और उनसे रोगी को शीघ्र और अधिक लाभ हो सकता है। यहां की जड़ी बूटियां ऐसा प्रभाव रखती हैं कि डाक्टर लोग चकित रह जाते हैं। हकीम अजमलखां जैसे विश्वविख्यात चिकित्सक महमूदखां जैसे नाड़ी विशेषज्ञ और अन्यान्य महानुभावों ने अपने विचित्र अनुपम योगों से लाखों लोगों को लाभ पहुंचाकर समस्त संसार को चकित किया था। इस चिकित्सा की विशेषता से प्रभावित होकर और जन साधारण की सेवा के आदर्श को सामने रख कर ही प्रस्तुत ग्रन्थ में विचित्र एवं प्राचीन योगों के साथ साथ आधुनिक हकीमों के वंश-परम्पराप्राप्त गुप्त और प्रभावशाली योगों का संग्रह किया गया है।

यह लिखने में अतिशयोक्ति नहीं होगी कि जिन योगों के प्रयोग से देहली के बड़े बड़े औषधालय समृद्धिशाली हो रहे हैं उनका संग्रह करके जनता के सामने प्रस्तुत करना लाभदायक ही सिद्ध होगा। जन साधारण का स्वास्थ्य ठीक होने से देश और समाज का कल्याण अवश्यम्भावी है। ग्रन्थ में योगों को अत्यन्त सुगम तथा सरल भाषा में लिखा गया है। उनकी निर्माणविधि, उपयोग तथा मात्रा की ओर विशेष ध्यान दिया गया है जिससे वैद्यों को उनके बनाने तथा प्रयोग में कठिनाई न हो। योगों के नाम परिवर्तन करना उचित नहीं समझा गया ताकि वैद्य-समाज भली भान्ति इनसे परिचित हो जाये। यूनानी औषधियों के नाम आयुर्वेदिक निघण्टु के अनुसार ही लिखे गये हैं परन्तु जो नाम उपलब्ध नहीं हो सके उन्हें वैसे ही रहने दिया गया है। पुस्तक के अन्त में व्यवहारिक सुविधा के लिये २५० औषधियों का वर्णन "यूनानी औषध परिचय" के रूप में दे दिया गया है।

वैद्यसमाज को यूनानी चिकित्सा से भली भान्ति परिचित कराने के लिये "यूनानी चिकित्सा विधि" नाम का दूसरा ग्रन्थ भी शीघ्रातिशीघ्र उनकी सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ।

यह लिखना भी उपयुक्त ही है कि हिन्दी ने हमारे जन साधारण की भाषा होने के कारण ही राष्ट्र भाषा के उच्च सिंहासन को प्राप्त किया है। इसी कारण से प्रस्तुत ग्रन्थ का हिन्दी में लिखना ही उचित समझा गया है।

इसके साथ में श्रीमान कविराज वैद्य गौरी शङ्करजी आनन्द का अत्यन्त आभारी हूँ जिनकी सहायता से यह ग्रन्थ पूर्ण हुआ है।

अन्त में यही निवेदन है कि यदि वैद्य समाज और उनके साथ साथ जनता ने इस ग्रन्थ से लाभ उठाकर मुझे प्रोत्साहन देने की कृपा की तो सब की सब कठिनाईयां और आपत्तियां जो मुझे ग्रन्थ में

संग्रहीत योगों को प्राप्त करने में हुई हैं, मेरे लिये पुष्पवत् होंगी और मैं अपने इस प्रयास को सफल समझूँगा और भगवान को धन्यवाद करूँगा।

वसन्त पञ्चमी

२००६

२५-१२-४९
वज़ीर सिंह सट्रीट
पहाड़गंज
नई देहली।

विनीत
एम० आर० शुक्ला
वाईस प्रिंसिपल
आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी तिब्बी कालिज
देहली।

ॐ

मान परिभाषा प्रकरणम्

युनानी परिमाण

असार=एक सेर
सार=एक सेर
ओकीया=२ तोला ८ माशा
बृज=एक चावल
तरमस=४ रत्ती
ताला=१२ माशा
जौ=४ चावल वा एक जौ
छटांक=५ तोला
अब्बा=१ रत्ती
दाम आलमगीरी=१४ माशा
दाम ख़ाम=१ तोला २ माशा
दाम पुख़ता=१ तोला ९माशा
दांग=३$\frac{3}{4}$ रत्ती
दरम=३$\frac{1}{2}$ माशा
रत्ती=१सुरख़=८ चावल=दो जौ
रत्तल=१ माशा कम ३८ तोला

रूप्या=१ तोला
सुरख़=१ रत्ती
शारक=१ छटांक
शहीरा=२ चावल
कैरात=२$\frac{1}{4}$ रत्ती
कफ़=२ तोला
कफ़दस्त=२ तोला
माशा=८ रत्ती
मशकाल=४$\frac{1}{2}$ माशा
८ चावल=१ रत्ती
८ रत्ती=१ माशा
१२ माशा=१ तोला
५ तोला=१ छटांक
१६ छटांक=१ सेर
४० सेर=१ मन

ऐलोपैथिक परिमाण

(१)

$\frac{1}{2}$ रत्ती=१ ग्रेन
४३७$\frac{1}{2}$ ग्रेन=१ पौन्ड
१६ औंस=१ पौण्ड
६० ग्रेन=१ ड्राम
८ ड्राम=१ औंस
२८ पौण्ड=१ क्वारट
४ क्वारट=११२ पौण्ड=१ हण्ड्रवेट
२० हण्ड्रवेट=२२४० पौण्ड=१ टन

(२)

१ बिन्दु=१ मिन्म
६० मिन्म=१ फलूड ड्राम
८ फलूड ड्राम=१ फलूड औंस
२० फलूड औंस=१ पाईंट
८ पाईंट=१६० फलूड औंस=१ गैलन
यह तरल औषध के नापने के लये ॥

(३)

१ टी स्पूनफुल (चाये का एक चमचा) १ फलूड ड्राम

१ डैज़रट स्पूनफुल (हलवा खाने का चमचा) २...ड्राम

१ टेबुल स्पूनफुल (खाना खाने का चमचा) ४...ड्राम

१ वाईन गलास फुल (शराब का गलास) $1\frac{1}{2}$ से २ फलूड औंस

१ टी कप फुल (चाय की एक प्याली)= ५ फलूड औंस

१ ब्रेक फास्ट कपफुल (नाशता का प्याला)=५ फलूड औंस

१ टमबलर फुल (जल पीने का गलास) =११ फलूड औंस

आयुर्वैदिक परिमाण

६ सर्षप=१ यव ।

३ यव=१ रत्ती ।

१० रत्ती=१ माषक, हेम, धान्यक, ।

४ माषक=१ शाण, धरण, टंक ।

२ शाण=१ कोल, क्षुद्रक, द्रङ्क्षण= १ तोला ।

२ कोल=१ कर्ष

२ कर्ष=१ शुक्ति, अर्धपल, अष्टिमिका ।

२ शुक्त=१ पल=८ तोला ।

२ पल=१ प्रसृति

२ प्रसृति=१ अञ्जलि, कुडव, अर्ध-शरावक ।

२ अञ्जलि=१ शराव, अष्टपल ।

२ शराव=१ प्रस्थ ।

४ प्रस्थ=१ आढक, चतुः षष्टिपल ।

४ आढक=१ द्रोण, कलष, अर्मण ।

२ द्रोण=१ शूर्प, कुम्भ, चतुःषष्टि शरावक ।

२ शूर्प=१ द्रोणी ।

४ द्रोणी=१ खारी, ४०९६ पल ।

२००० पल=१ भार ।

१०० पल=१ तुला ।

वक्तव्य=यदि आज कलके मानानुसार १० रत्ती का माशा के स्थान पर १२ रत्ती का माशा मान लिया जाये, तो १ कोल=१ तोला के समान और १ पल =८ तोला के समान होगा, यदि इसी रीति से मान की योजना कर ली जाये तो कार्य में सुगमता रहेगी ॥

सहायक ग्रन्थ-सूची

१. कानून शेख वो–अली सीना
२. ज़खीरा ख्वारज़म शाही
३. रमूजे आज़म
४. करावादियाने आज़म
५. खुलासा तुल तजारब्र
६. करावादियान अल्वी खां
७. रसाला मजर्बात जिलानी
८. करावादियान् कादरी
९. तिब्ब अकबर
१०. करावादियान वकाईं
११. करावादियान शफाईं
१३. करावादियान जलाल
१४. तरजुमा शरह अस्वाव
१५. तरजुमा अलाजुल इमराज़
१६. देहली के सही मरक्कबात और देहली का सही मतिब्ब
१७. अफादात मसीहुलमुल्क हकीम अजमलखां मतबे अमली
१८. हाज़क
१९. मुसावह–उल–हिकमत
२०. जामा–उल हिकमत
२१. तिब्बी फार्मोकोपिया
२२. मखजुनल हिकमत
२३. मखजुनल मुरक्कबात
२४. मुअल्लम दवासाज़ी
२५. तारीखुल अतिब्बा ।
२६. खुज़ाना तुल अदविया
२७. द्रव्य गुण विज्ञान
२८. इण्डियन मैटीरिया मैडिका
२९. कनाबुल अदविया
३०. लुगात कवीर

इत्यादि इत्यादि ।

संग्रहीत योगों को प्राप्त करने में हुई हैं, मेरे लिये पुष्पवत् होंगी और मैं अपने इस प्रयास को सफल समझूँगा और भगवान् को धन्यवाद करूँगा।

वसन्त पञ्चमी

२००६

२५-१२-४९
वज़ीर सिंह सट्रीट
पहाड़गंज
नई देहली।

विनीत
एम० आर० शुक्ला
वाईस प्रिंसिपल
आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी तिब्बी कालिज
देहली।

ॐ

मान परिभाषा प्रकरणम्

युनानी परिमाण

असार=एक सेर
सार=एक सेर
ओकीया=२ तोला ८ माशा
बृज=एक चावल
तरमस=४ रत्ती
तोला=१२ माशा
जौ=४ चावल वा एक जौ
छटांक=५ तोला
अब्बा=१ रत्ती
दाम आलमगीरी=१४ माशा
दाम ख़ाम=१ तोला २ माशा
दाम पुख़ता=१ तोला ९माशा
दांग=३$\frac{3}{4}$ रत्ती
दरम=३$\frac{1}{2}$ माशा
रत्ती=१सुरख़=८ चावल=दो जौ
रत्तल=१ माशा कम ३८ तोला

रूय्या=१ तोला
सुरख़=१ रत्ती
शारक=१ छटांक
शहीरा=२ चावल
कैरात=२$\frac{1}{4}$ रत्ती
कफ़=२ तोला
कफ़दस्त=२ तोला
माशा=८ रत्ती
मशकाल=४$\frac{1}{2}$ माशा
८ चावल=१ रत्ती
८ रत्ती=१ माशा
१२ माशा=१ तोला
५ तोला=१ छटांक
१६ छटांक=१ सेर
४० सेर=१ मन

ऐलोपैथिक परिमाण

(१)

$\frac{1}{2}$ रत्ती=१ ग्रेन
४३७$\frac{1}{2}$ ग्रेन=१ पौन्ड
१६ औंस=१ पौण्ड
६० ग्रेन=१ ड्राम
८ ड्राम=१ औंस
२८ पौण्ड=१ क्वारट
४ क्वारट=११२ पौण्ड=१ हण्ड्रवेट
२० हण्ड्रवेट=२२४० पौण्ड=१ टन

(२)

१ बिन्दु=१ मिन्म
६० मिन्म=१ फलूड ड्राम
८ फलूड ड्राम=१ फलूड औंस
२० फलूड औंस=१ पाईंट
८ पाईंट=१६० फलूड औंस=१ गैलन
यह तरल औषध के नापने के लिये ॥

(३)

१ टी स्पूनफुल (चाये का एक चमचा) १ फलूड ड्राम

१ डैज़रट स्पूनफुल (हलवा खाने का चमचा) २...ड्राम

१ टेबुल स्पूनफुल (खाना खाने का चमचा) ४...ड्राम

१ वाईन गलास फुल (शराब का गलास) $1\frac{1}{2}$ से २ फलूड औंस

१ टी कप फुल (चाय की एक प्याली)= ५ फलूड औंस

१ ब्रेक फास्ट कपफुल (नाशता का प्याला)=५ फलूड औंस

१ टमबलर फुल (जल पीने का गलास) =११ फलूड औंस

आयुर्वैदिक परिमाण

६ सर्षप=१ यव।
३ यव=१ रत्ती।
१० रत्ती=१ माषक, हेम, धान्यक,।
४ माषक=१ शाण, धरण, टंक।
२ शाण=१ कोल, क्षुद्रक, द्रङ्क्षण= १ तोला।
२ कोल=१ कर्ष
२ कर्ष=१ शुक्ति, अर्धपल, अष्टिमिका।
२ शुक्त=१ पल=८ तोला।
२ पल=१ प्रसृति
२ प्रसृति=१ अञ्जलि, कुडव, अर्ध-शरावक।
२ अञ्जलि=१ शराव, अष्टपल।
२ शराव=१ प्रस्थ।
४ प्रस्थ=१ आढक, चतुः षष्टिपल।
४ आढक=१ द्रोण, कलष, अर्मण।
२ द्रोण=१ शूर्प, कुम्भ, चतुःषष्टि शरावक।
२ शूर्प=१ द्रोणी।
४ द्रोणी=१ खारी, ४०९६ पल।
२००० पल=१ भार।
१०० पल=१ तुला।

वक्तव्य=यदि आज कलके मानानुसार १० रत्ती का माशा के स्थान पर १२ रत्ती का माशा मान लिया जाये, तो १ कोल=१ तोला के समान और १ पल=८ तोला के समान होगा, यदि इसी रीति से मान की योजना कर ली जाये तो कार्य में सुगमता रहेगी॥

सहायक ग्रन्थ-सूची

१. कानून शेख वो—अली सीना
२. ज़खीरा खवारज़म शाही
३. रमूजे आज़म
४. करावादियाने आज़म
५. खुलासा तुल तज़ारब
६. करावादियान अल्वी खां
७. रसाला मजर्बात जिलानी
८. करावादियान कादरी
९. तिब्ब अकबर
१०. करावादियान वकाई
११. करावादियान शफाई
१३. करावादियान जलाल
१४. तरज़ुमा शरह अस्वाव
१५. तरजुमा अलाजुल इमराज़
१६. देहली के सही मरक्कबात और देहली का सही मतिब्ब
१७. अफादात मसीहुलमुल्क हकीम अजमलखां मतबे अमली
१८. हाज़क
१९. मुसावह—उल—हिकमत
२०. जामा—उल हिकमत
२१. तिब्बी फार्मोकोपिया
२२. मखजुनल हिकमत
२३. मखजुनल मुरक्कबात
२४. मुअल्लम दवासाज़ी
२५. तारीखुल अतिब्बा ।
२६. खुज़ाना तुल अदविया
२७. द्रव्य गुण विज्ञान
२८. इण्डियन मैटीरिया मैडिका
२९. कनाबुल अदविया
३०. लुगात कवीर

इत्यादि इत्यादि ।

ॐ

युनानी चिकित्सा सागर

—:०:—

अतरीफ़ल

अतरीफ़ल भी एक प्रकार का अवलेह है, परन्तु इसके योगों में त्रिफला (हरड़-बहेड़ा-आमला), बादामरोग़न से अच्छी तरह से स्नेहाक्त करके डाला जाता है—इसलिये इस अवलेह को अतरीफ़ल कहते हैं। बनाते समय निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिये।

(१) अतरीफ़ल को कलईदार बर्तन में बनाना चाहिये, और बनाकर किसी शीशे वा चीनी के मरतबान में रखें। टीन के डब्बों वा धात के बरतनों में न रखें। इससे अतरीफ़ल काला पड़ जाता है, और गुणों में भी न्यून हो जाता है।

(२) तैयार करने के ४० दिन वा दो मास बाद प्रयोग करना चाहिये।

(३) अधिक समय तक प्रयोग न करें। मध्य में छोड़ दें; क्योंकि अधिक समय तक प्रयोग करने से आमाशय की शक्ति क्षीण हो जाती है।

अतरीफ़ल उसतोखद्दूस

हरड़, हरड़काबुली (बड़ी), कृष्ण हरीतकी, बहेड़ा, आमला, सनामक्की, निशोथ, बसफ़ाईज-फ़सतकी, उस्तोखद्दूस, मस्तगीरूमी, अफतीमींयू (आकाशबेल), किशमिश, (सबज़ छोटी द्राक्षा) द्राक्षा, प्रत्येक २ तोले, मीठा बादाम तैल १० तोले, मधु ७८ तोले (यह कुल १५ औषध हैं)।

निर्माणविधि—चूर्ण योग्य औषध का पृथक् पृथक् बारीक चूर्ण करें। प्रथम की पांच औषध के बारीक चूर्ण को बादाम रोग़न से अच्छी तरह स्नेहाक्त करें। द्राक्षा और किशमिश को पृथक् पीसें, फिर सबको मिलाकर थोड़ा २ शहद डाल कर खरल करें, ताकि सारा शहद समीप्त हो जाये, और औषध भली प्रकार शहद में मिलकर एक रूप हो जाये, तैयार हो जाने पर शीशे वा चीनी के मरतबान में डाल दें।

मात्रा—७ माशे वा १ तोला, प्रातः वा रात्री सोते समय अर्कगाऊज़बान वा केवल जल से प्रयोग करें।

गुण—कफ़ज वा वातिक रोगों में लाभप्रद है। परन्तु मस्तिष्क के कफ़ज विकार में शोधन कार्य करके मस्तिष्क को बल देती है। आमाशय के दूषित दोषों को नष्ट करती है। अपस्मार उन्माद में भी लाभप्रद है। मध्य में छोड़ छोड़कर दीर्घकाल तक प्रयोग करने से बालों को काला करती है। पुराने प्रतिश्याय में लाभकारी योग है।

अतरीफ़ल बादियान

हरीतकी, हरीतकी काबुली, बहेड़ा, आमला, धनिया, गुलाब के फूल, सातरफ़ारसी, बादियान (सौंफ़) प्रत्येक समभाग, प्रथम की पांच औषध के बारीक चूर्ण को बादाम रोग़न से स्नेहाक्त करें, फिर बाकी के औषध के चूर्ण को भी मिलाकर मिलित औषध से तीन गुणा शहद में मिलाकर अवलेह बनावें।

वक्तव्य—बादामरोग़न आवश्यकतानुसार मिलावें।

मात्रा—१ तोला रात्री सोते समय खावें वा प्रातः अर्क सौंफ़ १२ तोले से खावें।

गुण—चक्षु के सर्व रोगों में लाभप्रद है, यदि दीर्घकाल तक सेवन करें, तो चक्षु का कोई रोग ही नहीं होगा—

अतरीफ़ल दीदान (कृमिहर अवलेह)

वायविड़ंग १० तोले, निशोथ, कालादाना, कुठकड़वी, प्रत्येक ५ तोले, कमीला, तुरमस, अफ़सनतीन (मुस्तयारा), दरमनातुरकी आकाशबेल, कालालवण, राई, शहमहिंजल (तुम्बे के भीतर का गूदा), नागरमोथा, रासन (रासन न मिलने पर सोंठ का प्रयोग करें) प्रत्येक ३-३ तोले, शहद सब मिश्रित औषध से तीन गुणा डालकर यथाविधि अतरीफ़ल बनावें।

मात्रा—९ माशे वा १ तोला, प्रातः को अर्क गाऊज़बान से प्रयोग करावें और तीन दिन के पश्चात् एरण्डतैल तीन तोले अर्कगाऊज़बान १२ तोले में वा दूध में मिलाकर पिलावें, वा और कोई मृदु विरेचन दें।

गुण—यह अवलेह उदर के कीड़ों (केंचवे-कदुदाने) को नष्ट करने में अपूर्व है। आमाशय तथा आन्त्र के कफ़ज दोष को नष्ट करती है।

अतरीफ़ल ज़मानी

निशोथ, धनियां प्रत्येक १० तोले, हरीतकी, हरीतकी बड़ी, कृष्ण हरीतकी, सकमूनीया, बनफ़शापुष्प, प्रत्येक ५ तोले, बहेड़ा, आमला, वंशलोचन, गुलाबपुष्प, नीलोफ़रपुष्प, प्रत्येक २॥ तोले; सन्दल सफ़ेद, गोंद कतीरा, प्रत्येक १॥ तोला, मधुर बादाम तैल १० तोले, उन्नाब, सपस्तान (लसूड़े) प्रत्येक २०० नग, प्रथम गोंद कतीरे तक सब औषध का बारीक चूर्ण करें, और बादामरोगन से स्नेहाक्त करें, बनफ़शा उन्नाब तथा सपस्तान का दो सेर जल में क्वाथ करें। आधा भाग रहने पर छान लें और उपरिलिखित औषध के चूर्ण से १॥ गुणा हरड़ के मुरब्बे का शीरा और समभाग शहद डालकर पाक करें। पाकसिद्धि पर शेष औषध के बारीक चूर्ण को अच्छी तरह से मिश्रित करें। ताकि सब एक रूप होकर अवलेह बन जाये।

मात्रा—७ माशे रात्री को सोते समय अर्क गाऊज़बान १२

तोले से वा केवल जल से प्रयोग करें। रेचन लाने के लिये १ तोला खावें।

गुण—यह अतरीफ़ल, कोष्टबद्धता, उदरशूल, शिरशूल, आध्मान, उदावर्त्त, उन्माद, जीर्ण प्रतिश्याय में अत्यन्त लाभदायक है।

अतरीफ़ल सनाई

सनायपत्र, हरीतकी बड़ी, बहेड़ा, आमला, प्रत्येक १० तोले, गाय का घी २० तोले, मधु १।। सेर, औषध का बारीक चूर्ण कर गाय के घी में मिलावें, फिर सब शहद के पाक में अच्छी तरह मिलाकर अवलेह बनावें।

मात्रा—७ माशे, रात्री सोते समय अर्क सौंफ़ १२ तोले वा जल से प्रयोग करें।

गुण—यह अतरीफ़ल, विबन्ध, उन्माद, शिरशूल और अर्धभेदक में उपयोगी है।

अतरीफ़ल शाहतरा

शाहतरा (पित्तपापड़ा) २५ तोले, हरीतकी २० तोले, बड़ी हरड़ १५ तोले, बहेड़ा, आमला, प्रत्येक १० तोले, सनायपत्र ५ तोले, गुलाबपुष्प ३ तोले, द्राक्षा (बीजरहित) २ सेर १६ तोले; सब औषध को यथा विधि पीस छान लें। द्राक्षा को पृथक् पीसें और चूर्ण में मिला दें, शहद तीन गुणा में मिलाकर अतरीफ़ल बना लें।

मात्रा—रात्री को सोते समय अर्क गाऊज़बान १२ तोले से वा जल के साथ ७ माशे खावें वा प्रातःकाल अर्क मुरक्कब मुसफ़ी ख़ून (रक्तशोधक अर्क) १२ तोले से प्रयोग करें।

गुण—यह अतरीफ़ल, रक्तदुष्टि, आतशक (उपदंश) तथा उससे उत्पन्न होनेवाली गर्मी, शिरशूल, शिरोभ्रम और शिर के बाल गिरने में बहुत लाभ करती है। उपदंशजनित व्रण, ख़ारश वा अन्य त्वचा के विकारों में लाभप्रद है।

अतरीफ़ल सग़रीर (लघु अवलेह)

हरींतकी, हरीतकी बड़ी, बहेड़ा, हरीतकी कृष्ण, आमला, मधुर बादाम तैल, प्रत्येक ५ तोले, मधु उत्तम १५ छटांक, सब औषध को पीस छान कर बादामरोग़न से स्नेहाक्त कर शहद के पाक में भली प्रकार मिलाकर अतरीफ़ल बनावें ।

मात्रा—७ माशे से १ तोला तक अर्कगाऊज़बान वा जल से रात्री को खावें ।

गुण—मस्तिष्क क्षीणता, बुद्धिहीनता को नष्ट करती है । अर्श के उपद्रवों में भी उपयोगी है ।

अतरीफ़ल ग़दूदी

भेड़ वा बकरी की ग्रीवा की शुष्क गिलटियां (ग्रन्थियां) ५ तोले, कृष्ण हरीतकी १५ तोले, आकाशबेल १० तोले, निशोथ, बहेड़ा, आमला, प्रत्येक सात तोले, उस्तोख़दूस, बसफ़ाईज फ़सतकी, प्रत्येक ५ तोले, सनाय ४ तोले, ग़ारीकून, कचूर, चित्रक, नवसादर, प्रत्येक ३ तोले, अनीसून (सौंफ़रूमी), तज, बालछड़, लौंग, छोटी इलायची, जायफल, मस्तगी, प्रत्येक दो तोले, शहद सब औषध से तीन गुणा, यथाविधि अतरीफ़ल तैयार करें ।

मात्रा—१ तोला, प्रातः को अर्क सौंफ़ १२ तोले से प्रयोग करें ।

गुण—कण्ठमाला, गलगण्ड के लिये विशेषरूप से लाभप्रद है । आमाशय तथा मस्तिष्क के दूषित विकारों को नष्ट करता है ।

अतरीफ़ल फ़ौलादी

लौहभस्म, हरड़, प्रत्येक दो तोले ४ माशे, द्राक्षा (बीजरहित), लाहौरी लवण, पिप्पली, प्रत्येक १४ माशे, शतावर ३ तोले, मधुयष्टि छिली हुई ४ तोले ८ माशे, आमला १० तोले, मधुर बादामतैल ५ तोले, मिश्री २० तोले, मधु ३० तोले, पीसने योग्य औषध को पीस छान कर बादाम तैल से स्नेहाक्त करें । द्राक्षा को पृथक् पीस लें । इसके उपरान्त मिश्री और मधु का पाक करके बाकी सब औषध भली प्रकार मिला देवें ।

मात्रा—५ वा ७ माशे, प्रातः वा सोते समय अर्क गाऊज़बान १० तोले से वा जल से दें।

गुण—यह अतरीफ़ल चक्षु के सब रोगों के लिये उत्तम है। मोतियाबिन्दु के रोग में बहुत लाभ करती है। अर्धभेदक, सूर्यावर्त्त तथा वातज वा रक्तज़ अर्श में भी अतीव गुणकारी है।

अतरीफ़ल कबीर

कृष्ण हरीतकी, बड़ी हरीतकी, बहेड़ा, आमला, कृष्ण मिरच, पिप्पली, प्रत्येक १।। तोला, सोंठ, जावित्री, बोज़ीदान, चित्रक, शकाकल मिश्री, तोदरी रक्त, तोदरी पीत, इन्द्रजौ मधुर, बहमन रक्त, बहमन श्वेत, तिल छिले हुये, (धोये तिल), ख़शख़ाश श्वेत, मगज़ हब्बे किलकिल (यदि यह न मिले तो इसके समभाग तोदरी सफ़ेद) प्रत्येक ९ माशे, बादाम तैल दो तोले, तुरंज-बीन १० तोले (यवासशर्करा), मधु उत्तम ३ पाव, आख़री तीन औषधं को छोड़कर बाकी औषध को पीस छानकर बादामरोग़न मिलावें, फिर तुरंजबीन को पानी में घोलकर और छानकर मधु के साथ पाक करें, और बाकी औषध के बारीक चूर्ण को उसमें मिलावें, बस तैयार है।

मात्रा—७ माशे, रात्री सोते समय अर्क गाऊज़बान १० तोले वा सादा जल से प्रयोग करें—

गुण—यह अतरीफ़ल, आमाशय, मस्तिष्क और आंखों को शक्ति देती है, प्रतिश्याय, अर्श में लाभप्रद है और वाजीकर भी है।

अतरीफ़ल किशमिशी

हरड़, बहेड़ा, आमला, कृष्ण हरीतकी, प्रत्येक १४ माशे, धनियां २८ माशे, बादामतैल २ तोले, मिश्री १४ तोले, इन सब औषध को कूट छान कर बादाम-रोग़न वा घी से भलीप्रकार स्नेहाक्त करें, फिर किशमिश ७ तोले (सबज़ रंग की छोटी द्राक्षा) पीस कर शीरा बनावें, और खाण्ड के साथ पाक करके उपरिलिखित औषध का बारीक चूर्ण मिला दें, यदि इस योग को शहद में तैयार करें, तो अधिक गुणकारी तथा अधिक देर तक दूषित नहीं होगा।

मात्रा—९ माशे प्रातः अर्कगाऊज़बान वा केवल जल से दें।

गुण—यह अवलेह पित्तप्रमेह, वीर्य का पतलापन, शीघ्रपतन और मूत्रनाली के अग्र सुराख़ का छोटा होना—मस्तिष्क और आमाशय के लिये अपूर्व लाभप्रद तथा उपयोगी है।

अतरीफ़ल कशनीज़ी

हरड़, हरड़बड़ी, बहेड़ा, कृष्ण हरीतकी, आमला, कशनीज़ (धनियां छिला हुआ), बादाम-रोग़न प्रत्येक पांच तोले, शहद सब औषध से त्रिगुण। यथाविधि योग तैयार करें।

मात्रा—७ माशे, सोते समय अर्कगाऊज़बान वा जल से दें।

गुण—यह अतरीफ़ल तबख़ीर (आमाशय से जो दूषित वातिक दोषज बाष्प ऊपर उठते हैं) के लिये विशेष रूप से गुणकारी है। और तस्य उपद्रवरूप शिरशूल, चक्षुशूल, कर्णशूल, तथा आंख दुखने में लाभकारी है। यह योग कोष्ठबद्धतानाशक है। मस्तिष्क को शुद्ध करता है। प्रतिश्याय और अर्श में भी विशेषरूप से लाभप्रद है।

अतरीफ़ल कशनीज़ी (अन्य योग)

हरड़ काबुली, हरड़, हरड़ कृष्ण, गुलाबपुष्प, उस्तोख़दूस, प्रत्येक दो तोले, दुग्धी आमला, धनियां प्रत्येक १० तोले तुरंज़बीन ख़ुरासानी ८ तोले, शहद त्रिगुण (५० तोले), बादामतैल ३ तोले, सब औषध को बारीक चूर्ण करके बादामतैल से मिश्रित करें, और तुरंजबीन ख़ुरासानी को पानी में घोलकर छान लें, और उस में शहद का पाक करके बाकी औषध का मिश्रण कर अतरीफ़ल बना लें, यदि पित्त प्रकृति के रोगी को प्रयोग कराना हो तो मधु के स्थान पर मिश्री का पाक करें।

नोट—दुग्धी आमला-आमला को गाय दुग्ध में भिगो दें फूलजाने पर दुग्ध को निकाल दें, और आमला को शुष्क करके प्रयोग करें।

मात्रा—७ माशे से १ तोला तक अर्क गाऊज़बान वा जल से दें।

गुण—उपरोक्त लिखित अतरीफलकशनीज़ी की तरह ही गुण हैं।

अतरीफ़ल मक्कल (गुग्गुलु अवलेह)

हरड़, हरड़ काबुली, बहेड़ा, कृष्णहरीतकी, आमला, १-१ तोला, शुद्ध गुग्गुलु ३ तोले, द्राक्षा, बादामरोग़न प्रत्येक ४ तोले, गन्दना बूटी का जल १ पाव, शहद सब मिलित औषध से त्रिगुण, प्रथम गुग्गुलु को गन्दना बूटी के जल में हल करें, और बाकी औषध के चूर्ण को बादामरोग़न में मिलावें, द्राक्षा को बीज रहित कर पीस लें, और हल किये हुये गुग्गुलु में शहद और मुनक्का को मिलाकर पाक करें। पाक सिद्ध होने पर बाकी औषध का चूर्ण मिला दें, तैयार है।

मात्रा—७ माशे, अर्क, गाऊज़बान के साथ प्रातः वा सायं खिलावें।

गुण—यह अवलेह रक्त तथा वात अर्श में बहुत लाभ करती है, रक्त को बन्द करती है, कोष्ठबद्धता नाशक है।

अतरीफ़ल मुलैयन (विरेचक अवलेह)

हरड़ काबुली, हरड़, कृष्ण हरीतकी, आमला, त्रिवृत, प्रत्येक २ तोले, सौंफ़, मस्तगीरूमी, उस्तोख़दूस, सकमूनीया, रेवन्दचीनी, बादामतैल, प्रत्येक ५ तोले, शहद त्रिगुण, सब औषध को यथा विधि पीस छान कर बादामतैल में मिलावें, सकमूनीया और मस्तगीरूमी को हलके हाथ से रगड़ें, फ़िर मधु के पाक में थोड़ा २ चूर्ण मिला कर अतरीफ़ल बनावें। यदि इस योग में शहद न मिलाकर औषध की वटी तथा टिकिया हाथों से वा मशीन से बना लें, तो इसे कुरस मुलैयन कहते हैं।

मात्रा—५ से ९ माशे तक, रात्री सोते समय अर्क सौंफ़ से वा गरम जल से दें।

गुण—यह अतरीफ़ल उदरशूल और कोष्ठबद्धता के लिये उत्तम है, विबन्धजनित उपद्रव, पुराने शिरशूल तथा मस्तिष्क विकारों में अतीव लाभकारी है।

अतरीफ़ल मुण्डी

हरीतकी, कृष्ण हरीतकी, बड़ी हरीतकी, आमला, धनिया, पित्तपापड़ा, मधु यष्टि, उस्तोख़दूस, १-१ तोला, मुण्डीपुष्प सबके समान भाग; सब औषध का बारीक चूर्ण कर बादामतैल से मिश्रित कर त्रिगुण शहद में मिला कर अवलेह बनावें।

मात्रा—१ से २ तोले तक योग्य अनुपान से दें।

गुण—यह अवलेह आंखकी पुरानी सुरखी, (लालिमा) तथा आंख के अन्य रोगों में अतीव गुणकारी है।

अतरीफ़ल अफतीमीयूं (आकाशबेल अबलेह)

गुलकन्द सूर्यपाकी, मुनक्का (द्राक्षा बीजरहित), मधु साफ़ किया हुआ, प्रत्येक ५५ तोले पांच माशे, तीनों को गुलाब अर्क, अर्क गाऊज़बान, अर्क दारचीनी, अर्क फ़रंजमुशक (बनतुलसी) प्रत्येक आधा सेर में हल कर उबालें, और अच्छी तरह निचोड़ कर छान कर पाक करें, इसके उपरान्त हरीतकी, हरीतकी बड़ी, कृष्ण हरीतकी, आमला, ज़रिशक गुठली निकाला हुआ प्रत्येक दो तोले ११ माशे, गाऊज़बान, पित्तपापड़ा, उस्तोखदूस, आकाशबेल, अफ़सनतीन रूमी (मुसत्यारा), फ़रंज-मुशक (बनतुलसी), सनाय, बादरंजबोया, (बिल्लीलोटन) प्रत्येक दो तोले आधा माशा, बसफ़ाईजफ़सतकी बुरादा किया हुआ, त्रिवृत (ऊपर से खुरच कर और भीतर की लकड़ी निकाल कर), रासन (अभाव में सोंठ), तुम्बे (इन्द्रायण) का भीतर का गूदा, रेवन्दचीनी, ज़रावन्द गोल, सौंफ़ रूमी, बालछड़, हिजर अरमनी, लाजवरद, प्रत्येक १ तोला ५॥ माशे, ग़ारीक़ून नरम और श्वेत १०॥ माशे, हब्ब बलसान, अगर, दारचीनी, नागकेसर, पोदीना पहाड़ी, पोदीना नहरी, तज, मस्तगी, प्रत्येक सात माशे, सब को कूट छान कर मीठा बादाम तैल ११ तोले ८ माशे से स्नेहाक्त कर पाक में मिलाकर अवलेह बनावें—यदि इसको अधिक गुणप्रद बनाना हो तो अयारजफ़ैकरा (जिसका योग आगे आयेगा) ३॥ माशे मिला कर गोलियां बनाकर प्रयोग करें।

मात्रा—५ माशे ।

गुण—उन्माद के सब प्रकार में अतीव गुणकारी योग है ।

अतरीफ़ल मक्कल मुलैयन (विरेचक गुग्गुलु अवलेह)

हरीतकी बड़ी, बहेड़ा, हरीतकी कृष्ण, आमला, आकाशबेल, उस्तोखद्दूस, प्रत्येक ३५ माशे, गुग्गुलु, अम्लतास का गूदा, प्रत्येक आठ तोले ९ माशे, प्रथम गुग्गुलु और गूदा अम्लतास को गन्दना बूटी के पानी में हल कर लें, बाकी औषध को पीस छान कर बादाम-तैल से स्नेहाक्त कर त्रिगुण मधु में पाक करें ।

मात्रा—४।। माशे से १४ माशे । यदि इसमें त्रिवृत वा सनाय ३५ माशे और मिला दें तो अधिक गुणप्रद रहेगा ।

गुण—विबन्धनाशक है, अर्श में लाभप्रद है ।

अनकरूवीया

रूमी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ हृदय है, इन निम्नलिखित योगों में भल्लातक डाला जाता है, जिसकी शकल हृदय से मिलती है, इसलिये इन योगों को अनकरूवीया कहते हैं । यह दो प्रकार का है । लघु, बृहत । प्रथम बृहत का वर्णन करते हैं ।

अनकरूवीया कबीर (बृहत)

अकरकरा, कलौंजी, कुठ मधुर, काली मिरच, पिप्पली, वज-तुरकी प्रत्येक तीन तोले, सुदाब पत्र, हिबज़त्याना, ज़रावन्द गोल, हींग, हब्बलग़ार, जुन्दबदस्तर (गन्धमारजारवीर्य), चित्रक, राई प्रत्येक १।। तोले, भल्लातक का शहद १६ तोले, अखरोटतैल वा गाय का घी २ तोले, शहद ५० तोले, सब औषध को पीसछान कर घी से स्नेहाक्त करें, फिर मधु का पाक कर सब औषध का चूर्ण भल्लातक के मधु समेत मिलाकर अच्छी तरह से घोट लें; तैयार है । ६ मास बाद उपयोग करें ।

मात्रा—४ माशे, प्रातः काल अर्क सौंफ़ से प्रयोग करें ।

गुण—अर्धांग, अर्दित, स्मृतिदोष, तथा मस्तिष्क के अन्य कफ़ज विकार के लिये उत्तम है, पाचक तथा वाजीकर है ।

अनकरूवीया सग़ीर (लघु)

कृष्णहरीतकी, हरीतकी, आमला, प्रत्येक ३ तोले, नागरमोथा, बालछड़, कुन्दर, वजतुरकी, पिप्पली, सोंठ, भल्लातक शहद प्रत्येक १॥ तोले, अख़रोट-तैल वा गाय का घी दो तोले, शहद त्रिगुण, बृहत की तरह इसको तैयार करें।

मात्रा—तथा गुण बृहत अनुरूप ही हैं।

नोट—अख़रोट का तैल भल्लातक के अवगुणों को नष्ट करता है।

बासलीकून

इसका अर्थ है आंखों को ज्योती देने वाला अंजन, यह भी दो प्रकार का है लघु तथा बृहत।

बासलीकून (बृहत)

समुद्रझाग, रौप्यमाक्षिक, प्रत्येक ५ तोले, मुसब्बर, मामीशा बूटी का घन सत्व, दग्ध ताम्र, प्रत्येक २॥ तोले, हरड़ २ तोले, मामीरा चीनी, मुरमक्की, नवसादर, हलदी, १॥–१॥ तोले, लवपुरीलवण, तमालपत्र, रांग का सफ़ेदा, मिरचकृष्ण, पिप्पली, बालछड़, सुरमा असफ़ानी, प्रत्येक १–१ तोला, सैंधवलवण, लौंग, छड़ीला, प्रत्येक ६ माशे–सब का बारीक चूर्ण कर कपड़े रेशमी में छान कर रख दें, तैयार है। रात्री को सोते समय आंख में लगावें।

गुण—प्रारम्भिक मोतीया बिन्दु, नेत्र दुर्बलता, तिमिर, नेत्र कण्डु, अर्म आदि नेत्र के समस्त कठिन रोगों में सिद्ध प्रभाव शाली औषध हैं॥

बासलीकून (लघु)

अकलीमाये नकरा १ तोला साढ़े पांच माशे, यशद फूंका हुआ पौने ९ माशे, बंग का सफ़ेदा, लवपुरी लवण, नवसादर, मिरच, पिप्पली, भांगरा, प्रत्येक पौने दो माशे, सबको बारीक पीसकर रेशमी कपड़े में छान लें—रात्री को सोते समय लगावें।

गुण—बृहत योग अनुसार।

बरूद

बरूद आंख में शीतलता करने वाली औषध को कहते हैं ।

बरूद कर्पूरी

(१) संगबसरी ५ तोले को अपक्व अंगूर के रस में तीन दिन तक भावित करें, इसके पश्चात् कर्पूर ५ रत्ती डालकर भली प्रकार खरल करें और रेशमी वस्त्र से छान लें, आवश्यकतानुसार प्रातः सायं आंख में लगावें ।

(२) संगबसरी १ तोला, कर्पूर ४ माशे दोनों को भली प्रकार खरल कर रेशमी कपड़े में से छान लें, आवश्यकतानुसार आंख में लगावें ।

गुण—नेत्र की लाली तथा गर्म्मी को दूर करके शीतलता उत्पन्न करता है ।

बरशाशा

कालीमिरच, मिरच श्वेत, अजवायन ख़ुरासानी, प्रत्येक ५ तोले अहिफेन २॥ तोले, केशर १। तोले, बालछड़, अकरकरा, फ़रफ़ीयून, प्रत्येक ३ माशे—मधु उत्तम ५५॥ तोले । सब औषध को बारीक करके, अच्छी तरह से शहद में मिलाकर अवलेह बना लें, फिर इसको तीन मास तक जौ के ढेर में रखें, इसके पश्चात् प्रयोग में लावें ।

मात्रा—४ रत्ती रात्री को सोते समय अर्क गाऊज़बान के साथ प्रयोग करें ।

गुण—पक्षाघात, अर्दित, वातकम्प, स्मृतिनाश, अपस्मार, शिरोभ्रम, प्रलाप, अनिद्रा, उन्माद, प्रतिश्याय, मुख में अधिक थूक का उत्पन्न होना, उदरशूल, यकृतशूल, कौड़ीशूल, जीर्णकास, प्रमेह, शीघ्रपतन में अपूर्व औषध है ।

बनादकालबजोर

यह एक प्रकार की वटी है, जो रीठे के समान होती है, इसी कारण से उक्त नाम रखा गया है ।

योग—मग़ज़ तुख़म ख़यार १।। तोले, मग़ज़ तुख़म ख़रपज़ा, २ तोले, मग़ज़ तुख़म कद्दु, तुख़म ख़तमी, तुख़म ख़ुरफ़ा, कतीरा, अजवायन ख़ुरासानी, गिरी बादाम छिले हुये, निशास्ता, रबुलसूस (मधुयष्टि घन सत्व), ख़शख़ाश बीज श्वेत, गिलअरमनी, करफ़स बीज, प्रत्येक ७-७ माशे—इसपग़ोल, आवश्यकतानुसार, सब औषध को कूटपीस कर, इसपग़ोल के जल में मिश्रित कर बेर अथवा रेठे समान वटी करें।

मात्रा—५ से ७ माशे ख़शख़ाश शर्बत से प्रयोग करें।

गुण—यह वटी मूत्र की जलन को दूर करती है, और वृक्क तथा मूत्राशय के व्रण के लिये उत्तम है, मूत्र को खोलकर लाती है।

पिण्डी

शुण्ठी १ पाव, गोंद नागोरी २ सेर, धावीपुष्प ७ तोले, सुपारीतेलिया १ पाव, समुद्रसोख, तालमखाना, शतावर, काकड़-सिंगी, मूसली काली, प्रत्येक ७ तोले, मंजीठ २ सेर, माजू ३।। तोले, तज १०।। तोले, गोक्षरू १ पाव, कंगनी का आटा १ पाव, खाण्ड देसी सब मिलित औषध से त्रिगुण, घी आवश्यकतानुसार।

विधी—गोंद को घी में भून लें, बारीक पीस छान लें, आटे को भी घी में भून लें, बाकी औषध को भी बारीक पीस छान लें खाण्ड का पाक कर सब औषध बीच में मिला ३–३ तोले की पिण्डी बना लें।

मात्रा—प्रातः सायं, १-१ पिण्डी खाकर दूध पीवें।

गुण—श्वेत प्रदर के लिए अति उत्तम है, स्त्रियों के कटि-शूल को हटाती है।

प्यामशफ़ा (आरोग्यनाद)

पिप्पली १ तोला, नवसादर का ऊर्ध्व पातित सत्व ६ माशे, सुहंजनाबीज, बथुआ के मधुर बीज, हिंगुल भस्म, प्रत्येक ३ माशे—सबको बारीक पीस छान मिला लें।

मात्रा—४ चावल, ताजा जल से वा अर्क सौंफ़ ६ तोले अर्क गुलाब ६ तोले, सकंजबीन दो तोले के साथ प्रयोग करें।

गुण—यह औषध, उदरशूल, मतली, वमन, अजीर्ण, आध्मान, अजीर्ण में उपयोगी औषध है।

पेग़ाम सहत (आरोग्य सूचना)

नवसादर का ऊर्ध्व पातित सत्व, जिसे केले के रस से भावित करके उड़ाया गया हो, तीन तोले, पोदीना सत्व ६ माशे, कालीमिरच, पिप्पली, यवक्षार, मूलीक्षार, अपामार्गक्षार, कण्टकारी-लघुक्षार १-१ तोला, कलमी शोरा, बड़ी इलायची बीज, लवपुरी लवण, प्रत्येक तीन तोले, शुद्ध हिरमची (एक प्रकार की मिट्टी होती है) ५ तोले, सब औषध को खूब बारीक पीस छान लें।

मात्रा—४ रत्ती, अर्क सौंफ़ से वा उष्ण जल से प्रयोग करें।

गुण—भूख लगाती है, पाचक तथा वातनाशक है। अजीर्ण, विसूचका, में अत्यन्त लाभप्रद योग है।

तरयाकात (विषनाशक औषध)
(अगद)

तरयाक ऐसी औषध को कहते हैं, जो विषों का नाश करने में समर्थ हो।

तरयाक अरबा

हब्बुलग़ार, मुरमकी, हिबज़तियाना रूमी, ज़रावन्द तवील (लम्बे) सब औषध को कूट पीस छानकर थोड़े से गाय के घी से स्नेहाक्त कर त्रिगुण शहद में मिला लें, (शहद को प्रथम आग पर रख कर उसकी झागउतार लेनी चाहिये) और ४० दिन पश्चात प्रयोग करें।

मात्रा—१ माशा गरम जल से दें।

यह तरयाक सर्प, बिच्छू, मकड़ी सरीखे विषैले जानवरों के काटने के लिये अमृत है और मद्य के विष को भी नष्ट करता है। हृदय मस्तिष्क को बल देता है। दूषित वायु को नष्ट करता है। यकृत और प्लीहा को दोषों से निवारण करता है।

तरयाकालस्नान

मिरचकाली, अकरकरा, हींग, नरकचूर, लघपुरी लवण, १-१ तोला, सब औषध को कूट पीसकर आवश्यकता अनुसार शहद में गूंद कर गलोला बनावें, और छाया में सुखा लें, और आवश्यकतानुसार दांत के नीचे रखें। दंत पीड़ा शामक है।

(२) जुन्दबदस्तर, हींग, मिरचकाली, जरावन्द गोल, सोंठ, महीसाला, अहिफ़ेन, अजवायन खुरासानी, सब औषध समभाग लेकर बारीक पीस लें, और शहद में गलोला बना लें, छाया में सुखा कर आवश्यकतानुसार दांत के नीचे रखें, दंतपीड़ा शामक है।

तरयाक समानीया

मुरमकी, हब्बुलग़ार, पाषानभेद, कुठ कड़वी, प्रत्येक २७ माशे, कालीमिरच, तज, प्रत्येक १८ माशे, केशर, दारचीनी प्रत्येक ९ माशे, शहद औषध से त्रिगुण, औषध को कूट पीस कर मधु में भली भांति मिला दें।

मात्रा—५ माशे, अर्क सौंफ़ वा ताज़ा जल से दें।

गुण—वायु कफविकार, पक्षाघात, अर्दित, अपस्मार, विष में लाभप्रद है।

तरयाकालरहम (गर्भाशय दोष निवारक)

सुपारी पुष्प, पिस्तापुष्प, ढाक गोंद, प्रत्येक ४ तोले, इन्द्रजौ मीठे २ तोले, वंग भस्म, प्रवाल भस्म, अकीक भस्म, प्रत्येक तीन माशे, मिश्री ८ तोले, सब औषध को कूट पीस कर चूर्ण करें, और पीछे भस्में मिलाकर शीशी में रखें।

मात्रा—२ माशे, जल के साथ खायें, वा माजून सुपारीपाक १ तोला में मिला कर खायें।

गुण—श्वेत प्रदर के लिये अति उत्तम है।

तरयाक नज़ला

उस्तोख़दूस ५ तोले, गाऊज़बान पुष्प, धनियां, मोड़ीयों बीज, प्रत्येक १० तोले, काहु बीज, अजवायन ख़ुरासानी, डोडा-

पोस्त, प्रत्येक ३० तोले, ख़शख़ाशसफेद ४० तोले, इन औषधों को अर्धकुट करके रात्री को पानी में भिगोवें। प्रातः जोश देकर छान लें, और खाण्ड ३॥। सेर मिला कर पाक करें, और अन्त में फूल गुलाब, धनियां, रबुलसूस (मधुयष्टि घन सत्व), निशास्ता, गोंद कीकर, गोंद कतीरा, मुरमक्की प्रत्येक ५ तोले, खूब बारीक करके पाक में मिला लें।

मात्रा—७ माशे, अर्क गाऊज़बान १२ तोले, शरबत ख़शख़ाश दो तोले के साथ प्रयोग करें।

गुण—पित्त प्रतिश्याय, कास में लाभप्रद है, चिरकाल तक सेवन करने से इसका प्रयोग जीर्ण प्रतिश्याय को नष्ट करता है।

तरयाक वबाई

मुसव्बर दो तोले, मुरमक्की, केशर, प्रत्येक, १-१ तोला, मधु १२ तोले, सब औषध को कूटपीस कर शहद में मिला कर अवलेह बनावें, वा अर्क गूलाब १० तोले में भली प्रकार खरल कर चने समान वटी करें, और इन पर चांदी पत्र चढ़ा देवें।

मात्रा—१ वा दो वटी, प्रातः वा सायं अर्क गुलाब से दें।

गुण—यह तरयाक, वबाई रोग, विसूचिका, प्लेग, शीतला के लिये प्रतिबन्ध रूप में विशेषतः प्रयोग किया जाता है, प्लेग के दिनों में अर्क सौंफ़ १२ तोले के साथ सप्ताह में दो बार प्रयोग करने से मनुष्य प्लेग समान भयानक रोग से सुरक्षित रहता है।

तरयाक ज़ीकलनफ़स—(श्वासहर अगद)

वासा के पीले पत्र लेकर तीन सेर (जल से धोकर) ४ सेर जल में उबालें, आधा सेर शेष रहने पर इसमें काकड़सिंगी और मधुयष्टि का बारीक चूर्ण प्रत्येक दो तोले डाल कर फिर पकावें, जब घन हो जाये, तो वटी बना लें, आवश्यकतानुसार १ वा दो वटी मुंह में रखकर चूसें, श्वास तथा सांस का कष्ट से आना में उपयोगी औषध है।

तरयाक मुहासा

समुद्रझाग, कड़वे बादाम छिले हुये, दोनों समभाग लेकर बारीक करें, और रात्री के समय उबटन की तरह मुख पर मलें, प्रातः गरम पानी से धो दें।

गुण—युवा अवस्था में जो मुख पर कील से निकलते हैं, उनके लिये उपयोगी हैं।

तरयाक ज़रब

चांदी पत्र ३॥ माशे, अगर, अजवायन ख़ुरासानी, प्रत्येक ७ माशे, मोती अनविध, प्रवाल, कहरबा, अकीक़, यशप सबज़, हाथी दाँत का बुरादा, बंशलोचन, बिलव, धनियां शुष्क भुना हुआ, सन्दल सफ़ेद, बहमन सफ़ेद, बहमन सुरख़, सुपारी, नागरमोथा, जीरा कृष्ण भुना हुआ, मस्तगी रूमी, शाहज़ीरा, माजू सबज़, गिलअमरनी, शादनजअदसी धुली हुई, गोंदकीकर, बेरका आटा, मौलसरी फल का आटा वा उन्नाब का आटा, मोड़ियो बीज, माई छोटी भुनी हुई, उन्नाब भुना हुआ, पिस्ता के बाहर का छिलका, मुनक्का बीज निकाले हुए प्रत्येक १०॥ माशे, ख़ुरफ़ा बीज भुने हुये, ख़शख़ाश बीज श्वेत, बड़े अंगूर के दाने प्रत्येक १७॥ माशे बही का स्वरस, मीठे सेब का स्वरस, अमरूद का स्वरस, मोड़ीयों बीज स्वरस, समभाग, यह पानी औषध से दुगना वा त्रिगुण हो, सब औषध को कूट पीसकर स्वरसों में भिगो कर सुखा लें। (अर्थात् औषध के बारीक चूर्ण को इन से भावित करें)।

मात्रा—३ माशे।

गुण—संग्रहणी, आमाशय क्षीणता, आंत्र की शक्ति की क्षीणता तथा विबन्ध को दूर करता है। शारीरिक शक्तियों की क्षीणता को दूरकरता है।

फीरोज़ नोश

फ़रफ़ीयुन, अकरकरा, बालछड़, केशर, प्रत्येक २४ माशे, अहिफ़ेन, अजवायन ख़ुरासानी, प्रत्येक ७० माशे, सब औषध

को कूट पीस कर मधु में मिलाकर अवलेह बनावें, और ६ मास बाद प्रयोग करें।

मात्रा—१ से ३ माशे।

गुण—उदरशूल, कौड़ी शूल, वातज प्रवाहिका, स्मृति नाश तथा गर्भावस्था के कफ़ज रोगों में लाभकर योग है।

तरयाक

कर्पूर २। माशे, कस्तूरी, अम्बर अशहब, प्रत्येक ४।। माशे, अगर ५ माशे, जरजीर बीज, गाजर बीज, गन्दना बीज, हब किलकिल, इन्द्रजौ मधुर, प्रत्येक ७ माशे, बादाम के वृक्ष का गोंद, पहाड़ी अजमोद ८।।। माशे, कुठ, दारचीनी, वच, केशर, मुसत्यारा, अहिफ़ेन, बालछड़, प्रत्येक १०।। माशे, निंबू का ऊपर का छिलका, हिबज़त्याना, मुरमकी, हब्ब बलसान, बादरंजबोयापत्र, (बिल्लीलोटन पत्र) बादरंजबोयाबीज, बन तुलसी बीज, नरकचूर, दरूनज अकरबी, प्रत्येक १४ माशे, तमाम औषध को कूट पीस कर त्रिगुण शहद में मिलावें।

मात्रा—४।। माशे, ६ मास के बाद इसे प्रयोग करें।

गुण—बल्य, वाजीकरण, हृदय को भी बल देता है।

तरयाक सरतान

पाषाणभेद, कुन्दर प्रत्येक १७।। माशे, सरतान जले हुये ३५ माशे, सब औषध को कूट पीस कर मधु में मिला कर अवलेह बनावें।

मात्रा—४।। माशे।

गुण—बावले कुत्ते के काटने में अत्यन्त लाभप्रद है।

तरयाक सग़ीर

हब्बुलग़ार, तुम्बे की जड़, किबर जड़ छाल, ज़रावन्द लम्बे, मुसत्यारा, हलदी, हरमलबीज सब औषध बारीक पीस कर छान लें, और शुद्ध मधु में मिलावें।

मात्रा—४।। माशे।

गुण—विषैले जानवरों के काटने से जो विषैला प्रभाव होता है, उसके लिये उपयोगी है, सर्दी के रोगों में भी लाभ प्रद है।

तरयाकलतीन

गिल मख़तूम, हब्बलग़ार, ईरसा, समभाग लेकर कूट पीस लें और गाय के घी से स्नेहाक्त करके शहद में मिला दें।

मात्रा—४ रत्ती से १ माशा।

गुण—विषों के लिये विशेष औषध है। विशेषता यह है, कि विष से प्रभावित मनुष्य को यदि खिलाई जाये तो जब तक विष का प्रभाव रहेगा, वमन बन्द न होगी, विष का प्रभाव नष्ट होने पर वमन स्वयमेव बन्द हो जायगी। यदि किसी मनुष्य को इसके खिलाने से वमन न आये, तो समझना चाहिये कि इसने विष नहीं खाया।

तोतीयाकबीर

(१) संग बसरी १ तोला, स्वर्णवर्क, शुद्ध हिंगुल, प्रत्येक दो तोले, लौंग, काली मिरच, प्रत्येक ४ तोले, मुक्ता ६ माशे, मक्खन २२ माशे, सबको बारीक पीसकर पहिले मक्खन से भावित करें, फिर निम्बुरस से इतना खरल करें, कि चिकनाहट नष्ट हो जाये, और निम्बु रस जज़ब हो जाये।

मात्रा—२ चावल, परिमाण में ज्वारश बसबासा, वा ज्वारश ऊद ७ माशे में मिला कर खिलायें। यक्ष्मा के अतिसार में मफ़रहबारद ज्वाहर वाली वा अनोशदारू लोलवी ७ माशे में मिला कर दें।

गुण—आमाष्य, आन्त्र की शक्ति क्षीणता के कारण जो अतिसार लगते हैं, उन में विशेष उपयोगी है, यक्ष्मा अतिसार-आमाष्य, हृदय तथा यकृत क्षीणता में प्रभावशाली औषध है।

(२) संग बसरी असली दो तोले, स्वर्णपत्र ३ माशे, लौंग, मिरच काली, मुक्ता, १-१ माशा। प्रथम संग बसरी को गरम करके गायमूत्र में १०१ बार बुझावें, फिर जल में बुझावें, बाकी सब औषध को बारीक पीस कर इसमें मिला तथा गाय का मक्खन

मिला कर खरल करें। फिर निम्बुरस से इतना खरल करें, कि चिकनाई नष्ट हो जाये। मात्रा, तथा गुण तोतीया कबीर वत है।

ज्वारश

ज्वारश उस औषध को कहते हैं, जो आमाशय के दोषों का निवारण करे और पाचक हो। यह भी एक प्रकार का अवलेह है, इस के बनाते समय निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिये।

(१) ज्वारश के औषध अधिक बारीक नहीं करने चाहिये। ताकि वह अधिक देरतक आमाशय में ठहरकर उसपर अपना प्रभाव कर सके।

(२) ज्वारश में मग़ज़यात (मग़ज़ बादाम, कदू का मग़ज़ आदि) नहीं शामिल किये जाते, क्योंकि यह आमाशय की पाचक शक्ति के लिये हानिकारक होते हैं।

(३) औषध के सम भाग मधु और मिलित औषध से द्विगुण खाण्ड डालनी चाहिये, प्रथम शहद को नरम आंच पर रखें, जो झाग ऊपर आजावें, उनको उतार दें, इस से मधु मोम से साफ़ हो जाता है और फिर बू नहीं उत्पन्न होती। मधु वा खाण्ड का जो पाक बनाया जाये वह गाढ़ा होना चाहिये। इसका ज्ञान करने की यह विधि है, कि चमचे से थोड़े से पाक को ऊपर उठाकर नीचे गिरायें, यदि पाक चमचे में से गिरते समय त्रिकोण बन जावे तो पाक ठीक है। यदि पाक को शुद्ध करना है, तो पकते समय इसमें दूध मिला दें, तो सब मल मैल फूल कर ऊपर आजायेगा। उस को पोने से उतार लें। पाक मोती की तरह चमकने लगेगा, बाकी औषध का चूर्ण पाक के शीतल होने पर मिलावें, मस्तगी, अम्बर, कस्तूरी को पाक में न डालें, परन्तु बाकी औषध के साथ ही भली प्रकार खरल करके फिर पाक में डालें, यदि अर्क वा खुशबू डालनी हो-तो पाक को आग पर से उतार कर उसी समय शीघ्रता से डाल दें, और ढकना बन्द कर दें। जब पाक शीतल हो जाये तो बाकी औषध का चूर्ण मिलाना चाहिये, औषध को अच्छी तरह मिला कर कुछ दिनों बाद प्रयोग करें।

ज्वारश आमला सादा

आमला शुष्क गुठली निकाला हुवा ८ तोले लेकर गोदुग्ध में भिगोवें, २४ घण्टे बाद निकालकर पानी से धो डालें, दूसरे पानी में जोश दें, जब वह भली प्रकार गल जायें तब मलकर कपड़े से छान लें, और इसमें १ सेर खाण्ड मिला कर यथाविधि पाक करें।

मात्रा—७ माशे, अर्क गाऊज़बान १२ तोले से प्रयोग करें।

गुण—यह ज्वारश हृदय तथा यकृत के पित्तविकारों को नष्ट करती है। हृदय तथा आमाशय को बल देती है, पित्त अतिसार नाशक है।

ज्वारश आमला अम्बरी

आमला शुष्क साफ़ किया हुआ ४॥ तोले, धनियाँ, कृष्ण खुरफ़ाबीज, ९-९ माशे, वंशलोचन ७ माशे, सन्दल सफ़ेद, समाक, ज़रिशक, गुलाबपुष्प, बादरंजबोया, पिस्ता के बाहर का पोस्त, प्रत्येक ४॥ माशे, मुक्ता २ माशे, अम्बर अशहब, स्वर्णवर्क, चाँदीवर्क प्रत्येक १॥ माशे, खाण्ड १ पाव, प्रथम आमला को गौदुग्ध में २४ घण्टे के लिये भिगोवें, फिर पानी से धोकर पीस लें, फिर खाण्ड और मुरब्बा बही के शीरा में थोड़ा जल डाल कर पाक करें, और इसमें पिसा हुआ आमला शामल करके थोड़ा जोश दें, अब मुक्ता और अम्बर को तबाशीर के साथ खरल करके दूसरी औषध के चूर्ण में मिलावें, फिर इस मिलित चूर्ण में सोने के तथा चाँदीपत्र मिला कर खूब रगड़ें, ताकि सब एकजीव हो जायें, ऐसा होनेपर पाक में मिला दें, तैयार है।

मात्रा—५ माशे अर्क गाऊज़बान १२ तोले के साथ प्रयोग करें।

गुण—यह ज्वारश आमाशय को बल देती है, भूख बढ़ाती है, दूषित वायु को ऊपर उठने से रोकती है, भ्रम, हृदयावसाद, पित्तातिसार में लाभप्रद है, हृदय, यकृत को बल देती है।

ज्वारश आमला लोलवी

आमला दुग्धभावित ५४ माशे, धनियां, मग़ज़बीज खुरफ़ा छिला हुआ, प्रत्येक ५ माशे, तबाशीर सफ़ेद, सन्दल सफ़ेद, समाक (तिंतड़ीक), शुद्ध किया हुआ, ज़रिशक शुद्ध किया हुआ, गुलाबपुष्प, बादरंजबोया, पोस्त पिस्ता (उपर की कठोर त्वचा), प्रत्येक ४।। माशे, मोती ३ माशे, अम्बर अशहब, चांदीपत्र, स्वर्णपत्र प्रत्येक १।। माशे, मिश्री, मधुर बहीफल का पानी। यह दोनों औषधों से द्विगुण मात्रा में लेकर यथा विधि पाक करें। पश्चात सब औषध मिलाकर ज्वारश तैयार करें।

मात्रा ३ से ५ माशे तक।

गुण—आमाशय को बल देती है, भूख लगाती है, यकृत के पित्त विकार के लिये उपयोगी है, हृदय बलय, आमाशयशोधक तथा पित्त अतिसार के लिये उपयोगी है।

ज्वारश आमला

आमला शुष्क दुग्धभावित ५ तोले, पोस्त बीरून पिस्ता (पिस्ते के बाहर का छिलका) ५ माशे, तबाशीर, पोस्त तरंज (नारंगी के ऊपर का छिलका शुष्क करके प्रयोग करें) सन्दल सफ़ेद, प्रत्येक १—१ तोला, मस्तगीरूमी, बड़ी इलायची का छिलका प्रत्येक ६ माशे, आमला को आवश्यकतानुसार जल से धोकर फिर और जल डालकर उबालें, आमला के गल जाने पर इसी पानी में दो सेर खाण्ड मिलाकर पाक करें, फिर बाकी औषध के चूर्ण को मिलाकर ज्वारश तैयार करें।

मात्रा—७ माशे अर्क गाऊज़बान से प्रातः खायें, यदि शुष्क आमला के स्थान में ताज़े आमले प्रयोग किये जावें, तो अधिक गुणप्रद होगा, गुण ज्वारश आमला की तरह।

ज्वारश आमला अम्बरी ख़ास

बहिदाना दो तोले को अर्क गुलाब, अर्क गाऊज़बान, प्रत्येक दो तोले में भिगोवें, ज़रिशक दो तोले, आमला दुग्धभावित ७ तोले

को अर्क बेदमुशक, बादरंजबोया का पानी, अम्ल अनाररस, मधुर अनाररस, प्रत्येक ५ तोले में भिगोवें। प्रातःकाल मलकर छान लें, और बहिदाना का जल भी छान लें, अब इन दो जलों को मिलाकर १ सेर खाण्ड मिलाकर पाक कर लें, और शीतल होने पर चांदीपत्र, स्वर्णपत्र, अम्बर अशहब प्रत्येक ३ माशे, मुक्ता, याकूत, (माणिक), कहरबा शमई, दारचीनी, प्रत्येक ४ माशे को एक साथ खरल करके पृथक रख लें, फिर पोस्त तरंज ५ माशे, छोटी एलाबीज, बंशलोचन, आबरेशम (अपक्व) कुतरा हुआ, सन्दल सफ़ेद, गाऊज़बान-पुष्प, धनियाँ, प्रत्येक १--१ तोला, सबको बारीक करके चूर्ण करें, और सब चूर्णों को एक साथ मिलाकर खरल कर थोड़ा २ कर पाक में भली प्रकार मिलावें। ४--५ रोज रखने के बाद प्रयोग करें।

मात्रा—५ से ७ माशे तक अर्क गाऊज़बान १२ तोले से दें।

गुण—आमाशय को बल देती है, भूख बढ़ाती है, हृदय बल्य, यकृत के पित्त विकार में अति उत्तम है, पित्त अतिसार में लाभप्रद है।

ज्वारश अनारीन

मधुर अनाररस, अम्ल अनाररस, प्रत्येक १--१ सेर, पोदीना सबज़ का रस १० तोले, गुलाबजल १० तोले, बालछड़, मस्तगी रूमी, प्रत्येक ७ माशे, बड़ी एलाबीज, पोस्त तरंज प्रत्येक ४ माशे, पोस्त पिस्ता, छोटी एलाबीज, प्रत्येक ३ माशे, खाण्ड १ सेर, प्रथम गुलाबजल, पोदीना जल, मधुर तथा अम्ल अनाररस में खाण्ड मिलाकर पाक करें, फिर दूसरी औषध का चूर्ण मिलाकर ज्वारश तैयार कर लें।

मात्रा—७ माशे, अर्क गाऊज़बान ५ तोले, अर्क गाजर ७ तोले के साथ प्रयोग करें।

गुण—आमाशय तथा यकृत को बल देती है, भूख लगाती है, पित्त को शान्त करती है, वमन और मतली को रोकती है।

ज्वारश

हरड़ का मुरब्बा ५ नग, आमला का मुरब्बा ४ नग, धनियां १ तोला, छोटी इलायची ३ माशे, बेदमुशक अर्क आवश्यकतानुसार, खाण्ड औषध से दुगनी। प्रथम मुरब्बों को १ दिवसरात्री पानी में रखें, फिर मुरब्बों को धोकर गुठली निकाल कर बारीक पीस लें, और धनियां तथा इलायची का चूर्ण भी मिला कर खरल करें। फिर खाण्ड का पाक कर यह सब मिला दें, तैयार है।

मात्रा—१ तोला

गुण—हृदय बल्य, भ्रम, उन्माद, हृदय क्षीणता को नष्ट करने में उपयोगी है, दूषित वायु को आमाशय से ऊपर मस्तिष्क को जाने से रोकती है।

ज्वारश आबी ग़ैरमदक़ूक

चार सेर बही फल के टुकड़े ३२ सेर शराब म हलकी आंच पर पकावें। जब टुकड़े गल जायें, तो १० सेर झाग उतारे हुये मधु में मिला कर दोबारा जोश दें। अब इसमें लौंग दो तोले ८ माशे, बालछड़ ४ तोले, करफ़स बीज १३ तोले ४ माशे, मिरच काली २१ तोले चार माशे बारीक करके बही के टुकड़ों पर छिड़क दें। औरमरतबान में रख दें।

मात्रा—१ तोला रोज़ खाया करें।

गुण—आमाशय, आन्त्र को बलदायक है, अजीर्ण को नष्ट करती है।

ज्वारशअतरज

निम्ब का छिलका शुष्क पौने नौ तोले, लौंग, जायफल, पिप्पली, छोटी इलायची, तज, पान की जड़, सोंठ प्रत्येक ३॥ माशे कस्तूरी १॥ माशे सब औषध का चूर्ण कर त्रिगुण झाग उतारे शहद में मिलाकर ज्वारश बनावें।

मात्रा—७ से ९ माशे।

गुण—आमाशय के लिये बलप्रद है। कफविकारों के लिये

उत्तम है, पाक अग्नि को शक्ति देती है। शरीर को दृढ़ बनाती है।

ज्वारश बुकरात

करफ़स बीज, गाजरबीज, सोयेबीज, सौंफ़, धनियां, अजवायन, १-१ सेर, मस्तगी, अकरकरा, प्रत्येक ४॥ माशे; अगर, लौंग प्रत्येक २। माशे, यथाविधि सब औषध को कूट छान कर तीन गुना मधु में मिलाकर ज्वारश बनावें।

मात्रा—५ से ७ माशे।

गुण—आमाशय को बल देती है। वाजीकर है, खाने का पाचन करती है तथा भूख लगाती है, आध्मान को दूर करती है। आमाशय वृक्क, मूत्राशय की सर्दी को दूर करती है। मुख से पानी जाने को बन्द करती है। हिचकी तथा अम्लपित्त के लिये उत्तम है।

ज्वारश बसबासा (जावित्री अवलेह)

जावित्री, तज, लघु एलाबीज, सोंठ,काली मिरच, दारचीनी,तगर, लौंग, पिप्पली, प्रत्येक दो तोले, बृहत एला बीज ५ तोले, खाण्ड १ पाव मधु उत्तम आध सेर, सब औषध को कूटपीस छानकर, मधु तथा खाँड का पाक कर औषध चूर्ण मिलाकर ज्वारश तैयार करें।

मात्रा—७ माशे, प्रातः सायं जल से वा अर्क सौंफ़ के साथ प्रयोग करें, और भोजन पचने के लिये भोजनोपरान्त खावें।

गुण—यह ज्वारश आमाशय को नरम करती है, भोजन पचाती है, तथा वातनाशक है, वातिक शूल, वातिक अर्श में लाभप्रद है, पेट बढ़ने के रोग में उत्तम है।

ज्वारश तिमरहिन्दी (इमली की ज्वारश)

इमली जिसे बीजों तथा छिलकों से साफ कर लिया हो, बीज निकाली द्राक्षा, मधुर अनारदाना, प्रत्येक ४० तोले, प्रथम इमली और द्राक्षा को पृथक २ पीसकर मरहम जैसी बना लें, अनार का रस दबाकर निचोड़ लें और इस पानी में खाँड १

पाव, द्राक्षा तथा इमली डालकर पाक करें, पाक करते समय नींबू काग़ज़ी का रस वा सिरका और अम्ल अनाररस थोड़ा २ डालते रहें, जब पाक ठीक हो जाये, और ऊपर लिखित रस जज़्ब हो जायें, तो रेहांपत्र ६ माशे, पोदीना पत्र १ तोला, काली मिरच, सोंठ, तज, लौंग, जायफल, अगर, लघु तथा बृहत एलाबीज, प्रत्येक ५ माशे, कस्तूरी १ माशा कूट छानकर पाक में मिलावें, इस ज्वारश को धातु के बरतन में न बनावें, अच्छी तरह से कलई किये हुये बरतन में बनावें, वा मिट्टी के बरतन में बनावें।

मात्रा—५ से ७ माशे।

गुण—आमाशय, दिल, यकृत को बल देती है, वमन को रोकती है, पैत्तिक अतिसार, गर्मी के दिनों में पित्त की अधिकता तथा पैत्तिक अजीर्ण में उपयोगी है, विसूचका में लाभप्रद है।

ज्वारश तफ़ाह

आध सेर सेंब उत्तम लेकर, बीज तथा छिलका रहित करके उत्तम मधु में इस कदर जोश दें, कि गल जायें, फिर छानकर खाँड तथा मधु १--१ पाव मिलाकर पाक करें, और इस पाक में केशर २। माशे, काली मिरच, पिप्पली, लौंग, प्रत्येक ९ माशे, सोंठ १८ माशे, अगर २२।।माशें, कूट छानकर मिलावें, चीनी वा शीशे के बरतन में रखें।

मात्रा—५ से ७ माशे,

गुण—आमाशय, हृदय, मस्तिष्क को बल देती है, और पाचक अग्नि को बढ़ाती है।

ज्वारश जालीनूस

बालछड़, बड़ी एलाबीज, तज कलमी, दारचीनी, पान की जड़, लौंग, नागरमोथा, सोंठ, कालीमिरच, पिप्पली, कुठ मधुर, ऊद-बलसान, तगर, मोड़ीयों बीज, चिरायता मधुर, केशर प्रत्येक दो तोला, मस्तगी रूमी ५ तोला, खाँड सब के मिलित समभाग तथा शहद दुगना, पहिले खाँड तथा मधु का पाक करें, और बाकी औषध का चूर्ण डाल कर ज्वारश त्यार करें।

मात्रा---७ माशा प्रातः सायं भोजनोपरान्त प्रयोग करें ।

गुण---यह ज्वारश आमाशय के सब उपद्रवों में लाभकारी है। पाचक संस्थान को शुद्ध करती है---भूख लगाती है विबन्ध हटाती है, वातिक शूल तथा अर्श में गुणप्रद है, आमाशयदोषजनित शिरशूल, दांतों से बू आना, कटिशूल, मूत्राशयशिथिलता, मूत्रातिसार, कफज कास, शारीरिक क्षीणता में उपयोगी है, वृक्क तथा मूत्राशय अश्मरी में भी लाभप्रद हैं, बालों को श्वेत होने से रोकती है ।

ज्वारश जावीद

जायफल, जावित्री, लौंग, दारचीनी, बालछड़, नागरमोथा, आमला साफ कीया हुआ, लघुएलाबीज, समभाग लेकर चूर्ण करें। और मिश्रित औषध से त्रिगुण उत्तम मधु लेकर पाक करके ज्वारश त्यार करें ।

मात्रा---७ माशे, खाना खाने के बाद प्रयोग करें ।

गुण---आमाशय को बल देती है, हज़म को सुधारती है, भूख बढ़ाती है, रंग निखारती है, बुद्धि तीव्र होती है, अर्श को लाभ करती है । मुँह की बदबू को नष्ट करती है ।

ज्वारश जलाली

मुशक ६ रत्ती (कस्तूरी), अनीसून, करफ़सबीज, प्रत्येक ६।।। माशे, मिरच काली, जीरा (सिरके में भावित किया हुआ), मस्तगी रूमी, पोदीना शुष्क, अगर, प्रत्येक १८ माशे, बालछड़, तज, लौंग, दारचीनी, बृहत् एलाबीज प्रत्येक तीन तोले ९ माशे, प्रथम कस्तूरी, रूमीमस्तगी, काली मिरच को ख़रल करें, पश्चात् सब औषध का चूर्ण कर मिला लें, अब दुगना मधु और दुगनी खाँड लेकर जल में मिला कर पाक करें। पाकसिद्धि पर बाकी औषध मिला कर ज्वारश त्यार करें ।

मात्रा---५ से ९ माशे तक ।

गुण---आमाशय क्षीणता को नष्ट करती है । वीर्य को बढ़ाती है । तथा सम्भोग शक्ति को उत्पन्न करती है ।

ज्वारश ख़ोज़ी

जायफल ५ नग, बहेड़ा, १० नग, कुठ कड़वी, बालछड़, हब्ब बलसान, दारचीनी, नाख़ूना, पितपापड़ा, तालीसपत्र प्रत्येक १४ माशा रेवन्दचीनी, ज़रावन्द गोल, छड़ीला प्रत्येक १७।। माशा, कृष्ण हरीतकी बृहत हरीतकी, (जेतून तैल में चरब की हुई) प्रत्येक १७ माशे हब अलास (मोड़ीयों के बीज) सब औषध के समान, तमाम औषध का यथाविधि चूर्ण करें, शहद सब औषध के समान और खाँड औषध से दुगनी, शहद और खाँड में जल डाल कर यथाविधि पाक करें, पाकसिद्धि पर औषध का चूर्ण मिला देवें।

मात्रा—५ से ९ माशे योग्य अनुपान से।

गुण—यह ज्वारश दस्तों को बन्द करती है, खाना हज़म करती है, जलोदर में लाभप्रद है, मूत्र खोलकर लाती है, त्यार करने के दो मास पश्चात प्रयोग करें।

ज्वारश ख़बसलअदीद (मण्डूर अवलेह)

शुद्ध मण्डूर, हरीतकी, कृष्ण हरीतकी, बहेड़ा आमला, फूल गुलाब, गुल अनार, अज़ख़र मकी, सब वस्तु समभाग लेकर चूर्ण करें, और ऊत्तम सुरा में उबालें, घन होने पर छान कर सुरक्षित रखें।

मात्रा—प्रतिदिन आठ तोले पिया करें।

गुण—आमाश्य की कमजोरी में अतीव लाभकारी है।

ज्वारश ख़ुलंजान

करफ़स बीज, अनीसून, जीरा, शाह जीरा, तालीसपत्र, प्रत्येक १०।। माशे, पिप्पली २१ माशे, सोंठ २७ माशे, मिश्री औषध से त्रिगुण, तज, मिरच काली, ख़ुलंजान (पान की जड़), नागरमोथा प्रत्येक सात माशे, लघुएला बीज, दारचीनी, नागकेसर, प्रत्येक १०।। माशे, सब औषध को कूट छानकर चूर्ण करें, मिश्री का पाक करके बाकी औषध मिला ज्वारश त्यार करें।

मात्रा—सात माशे।

गुण—खाने को हज़म करती है, वायु और सरदी तथा जिगर के लिये उपयोगी है।

ज्वारश दारचीनी

लघुएला, तज प्रत्येक सात माशे, मस्तगी, अनीसून, सौंफ़, दालचीनी प्रत्येक १०।। माशे, लौंग, कलीमिरच, पिप्पली, बालछड़, तगर प्रत्येक १७।। माशा, अगर, सोंठ प्रत्येक २१ माशे, पोदीना २७ माशे, सोंठ ३५ माशे, सब औषध का चूर्ण कर त्रिगुण मधु का पाक करके मिला दें।

मात्रा—५ से ७ माशे।

गुण—वृक्क, मूत्राशय और आमाशय की क्षीणता को दूर करती है। दूषित वायु तथा अन्य दोषों को नष्ट करती है।

ज्वारश ज़रहूनी सादा

गाजरबीज, करफ़सबीज, शलग़मबीज, अजवायन, सौंफ़, मग़ज़ तुख़म ख़रबूज़ा, मग़ज़ तुख़म ख़यारैन—करफ़सजड़ त्वक प्रत्येक १ तोला १० माशे, अकरकरा, दारचीनी, केशर, मस्तगी, अगर, प्रत्येक सात माशे, मधु त्रिगुण, यथाविधि मधु का पाक कर ज्वारश त्यार करें, कई इस योग में जावित्री, लौंग, कबाबचीनी, कालीमिरच प्रत्येक १० माशे, तथा अम्बर ७ माशे भी डालते हैं।

मात्रा—गुण—७ माशे अर्क सौंफ़ से प्रयोग करें। यह ज्वारश, कमर और वृक्कों को बल देती है, वाजीकरण है। वीर्य को बढ़ाती है, मूत्र अतिसार में लाभप्रद है, शरीर को चुस्त रखती है, तथा आमाशय को ताकत देती है।

ज्वारश ज़रहूनी अम्बरी

साहलबमिश्री, बैल के शिश्नका शुष्क चूर्ण, चिड़िया (चटक) के शिर का मग़ज़, चिरायता मधुर, छुहारे, गोक्षरू, प्रत्येक ९ माशे, करफ़स-बीज, गाजरबीज, शलग़मबीज, सोयेबीज, खरबूज़ाबीज, ख़यारैनबीज, हब्बेकिलकिल, हब्बलज़लम, अजवायन, सौंफ़, खोपा, चलग़ोज़ा के बीज, करफ़स जड़ प्रत्येक २२ माशे, अम्बरअशब ९ माशे, कस्तूरी २। माशा, जावित्री, लौंग, पिप्पलामूल, अकरकरा, कबाबचीनी,

सोंठ, पान की जड़, जायफल, गुलाबपुष्प, तज, पिप्पली, शलग़म-बीज, तुखम जरजीर, प्याज़बीज, गन्दनाबीज, हब्बालरशाद, अंजरा-बीज प्रत्येक १० माशे, केशर, कुन्दर, मस्तगीरूमी, अगर, प्रत्येक १४ मासे, हालोंबीज, बोज़ीदान, बहमन सुरख़, बहमन सफ़ेद, शका-कलमिश्री, इन्द्रजौ मधुर प्रत्येक १।। तोले, खाँड ५२ तोले, मधु १ सेर, प्रथम खाँड और शहद का पाक करें, और औषध का चूर्ण कर कस्तूरी, अम्बर, केशर को भी बारीक करके चूर्ण में मिला कर खरल करें, फिर इस चूर्ण को पाक सिद्ध होने पर पाक में मिला दें।

मात्रा—५ माशे, अर्क गाऊज़बान १२ तोले के साथ प्रयोग करें।

गुण—यह ज्वारश विशेष करके वृक्क तथा मूत्राशय को बल देती है, कमर को बलवान बनाती है, यकृत तथा मस्तक के लिये बलप्रद है, मूत्र अधिकता, वातरक्त, कफ़ज कास वा अन्य कफ़ज, वातज उपद्रवों को शान्त करती है। वीर्य को बढ़ाती है, तथा वाजी-करण है।

ज्वारश ज़ंजबील (शुण्ठी अवलेह)

सोंठ ६ तोले, गोंद कीकर, छोटी इलायचीबीज प्रत्येक ३।। तोले, जावित्री १२ तोले, खाँड ३४ तोले, खाँड का पाक करके औषध का चूर्ण मिला देवें।

मात्रा—सात माशा, खाना खाने के पश्चात् अर्क सौंफ़ वा जल से दें।

गुण—भोजन को पचाती है, वात तथा कफदोष को नष्ट करती है, आधमान, अजीर्ण तथा विसूचका में लाभप्रद है।

(२) जायफल १ नग, केशर ४ माशे, लौंग, दारचीनी प्रत्येक १८ माशे, गोंद कीकर, इलायचीबीज प्रत्येक तीन तोले, सोंठ ६ तोले, निशास्ता १२ तोले, खाण्ड ३५ तोले खाण्ड का पाक कर औषध का चूर्ण मिलाकर ज्वारश तैयार करें। मात्रा तथा गुण प्रथम ज्वारश की तरह हैं।

ज्वारश सफ़रजली काबज़

बहीफल आधा सेर, को पोस्त तथा बीजरहित करके सिरका उत्तम तीन पाव में जोश दें, जब बही नरम हो जायें, तो कटकर

मलीदा सा बनाकर खाण्ड तथा मधु १-१ पाव भर मिलाकर पाक करें, पाक सिद्ध होने पर नीचे उतार लें, और सोंठ १।। तोले, कालीमिरच, पिप्पली, लौंग, प्रत्येक ७ माशे, अगर २२ माशे, केशर २। माशे, सब का चूर्ण कर पाक में मिलावें।

मात्रा—७ माशे, भोजनोपरान्त प्रयोग करें।

गुण—यह ज्वारश आमाशय को बल देती है, भूख लगाती है, पित्त अतिसार तथा पैत्तिक वमन को बन्द करती है, शरीर में चुस्ती तथा मन में आनन्द उत्पन्न करती है।

ज्वारश सफ़रजली मुसहल

बही आध सेर को (छिल्का तथा बीजरहित) सिरका उत्तम ३ पाव में जोश दें, जब बही भली प्रकार मृदु हो जाये, तो पीस कर मलीदा करें, फिर इस में मधु ३ पाव मिलाकर पाक करें, अब इलायची छोटी, बड़ी प्रत्येक २२ माशे, सोंठ, मस्तगीरूमी प्रत्येक १।। तोले, पिप्पली, दारचीनी, केशर प्रत्येक १०।। माशे, सकमूनीया भुना हुआ ३ तोले, त्रिवृत ८।। तोले का चूर्ण कर पाक में मिला लें।

मात्रा—७ माशे, अर्क सौंफ १२ तोले के साथ प्रयोग करें।

गुण—यह ज्वारश रेचक है, आंत्र को मल तथा दोषों से शुद्ध करती है, उदरशूल, आन्त्रशूल को नष्ट करती है, आमाशय बल्य तथा पाचक है।

ज्वारश शाही

मुरब्बा आमला ४ नग, मुरब्बा हरीतकी ५ नग, धनियां १ तोला, छोटी इलायची ३ माशे, खाण्ड औषध से दुगनी, अर्क बेद-मुशक आवश्यकतानुसार, प्रथम मुरब्बों को अर्क में अच्छी तरह पीस कर खाण्ड मिलाकर पाक करें, और अन्त में बाकी औषध का चूर्ण कर मिलाकर ज्वारश बनावें।

मात्रा—५ से ७ माशे, प्रातःकाल अर्क गाऊज़बान १२ तोले वा अर्क गाजर ५ तोले के साथ प्रयोग करें।

गुण—यह ज्वारश भ्रम, उन्माद को दूर करती है, हृदय को बल देती है, मन में उल्लास उत्पन्न करती है, विबन्ध नाशक है ऊर्ध्व गत दोषों को दूर करती है।

ज्वारश शाही (नं० २)

ज़रिश्क ९ तोले, आंवला मुरब्बा, हरीतकी मुरब्बा,६–६ तोले, अर्क गुलाब, अर्क बेदमुशक, शरबत अनार मधुर, शरबत अनार अम्ल प्रत्येक ९ तोले, खाण्ड ६ तोले, मुरब्बों और ज़रिशक को गुलाब, व बेदमुशक में पीसकर बाकी सब वस्तु को मिलाकर ज्वारश त्यार करें ।

मात्रा तथा गुण ज्वारश शाही नं० १ की तरह है ।

ज्वारश शहनशाही अम्बरी

ज़रिशक ९॥ माशे, मुरब्बा आमला, मुरब्बा हरड़ प्रत्येक २६ तोले,अर्क गुलाब, अर्क बेदमुशक प्रत्येक २६ तोले, शरबत अनार मधुर, शरबत अनार अम्ल, प्रत्येक ९॥ तोले, सकंजबीन ११ तोले, शरबत-नारंज, शरबत लीमू, शरबत आलुबालु प्रत्येक १७ तोले, आबरेशम कुतरा हुआ १३ माशे, गाऊज़बान पुष्प, फूल गुलाब, प्रत्येक २२ माशे, अम्बरशब ७ माशे, मुक्ता, स्वर्ण वर्क, चांदी वर्क प्रत्येक १३ माशे, खाण्ड श्वेत १७ तोले, मुक्ता, स्वर्णपत्र, चांदीपत्र में थोड़ी सी शक्कर मिलाकर बारीक चूर्ण करें, और बाकी औषध का भी बारीक चूर्ण कर अम्बरशब आदि के चूर्ण में मिलावें, अब ज़रिशक और मुरब्बाजात को गुलाब तथा बेदमुशक अर्क में खूब बारीक पीसकर शर्बत तथा खाण्ड मिलाकर पाक करें, फिर इस पाक में बाकी चूर्ण मिलाकर ज्वारश त्यार करें ।

मात्रा—५ माशे, अर्क गाऊज़बान ५ तोले के साथ वा अर्क अम्बर ५ तोले के साथ प्रयोग करें ।

गुण—यह ज्वारश ख़फ़क़ान, भ्रम को दूर करके मन में आनन्द तथा शांति उत्पन्न करती है, पक्वाशय को बल देती है, और अशुद्ध बाष्पों को नष्ट करती है, आमाशय शूल को भी नष्ट करती है ।

ज्वारश शहरयारान

सकमूनिया ३ तोले, दारचीनी, बालछड़, जायफल, लघुएला, मस्तगीरूमी, हब्ब बलसान, तज प्रत्येक ४॥ तोले, केशर ४॥ तोले, कालादाना, त्रिवृत प्रत्येक आठ तोले, खाण्ड तथा शहद सब औषध

के समान, प्रथम शहद तथा खाण्ड का पाककर बाकी औषध का चूर्ण मिलाकर ज्वारश त्यार करें।

मात्रा---७ माशे से १ तोला तक अर्क सौंफ़ १२ तोले के साथ प्रयोग करें।

गुण---यह ज्वारश कबज़ खोलती है, आन्त्रशल को हटाती है, मूत्र के रुक रुक कर आने में लाभप्रद है।

ज्वारश सन्दलीन

कस्तूरी, १॥। माशे, मस्तगी, केशर प्रत्येक ३॥ माशे, मुक्ता अनविधे, प्रवाल, खुरफ़ाबीज छिला हुआ और भुना हुआ, धनियां शुष्क भुना हुआ, पोस्त पिस्ता (बाहर का छिलका) प्रत्येक ७ माशे, सन्दल सुरख़, गुलाब में घिसा हुआ १७॥ माशे, सन्दल सफ़ेद, गुलाब अर्क में घिसा हुआ ३५ माशे, गुलाब आठ तोले ५ माशे, तरंज का पानी १४ तोले सात माशे, खाण्ड १ सेर, प्रथम खाण्ड को अर्क गुलाब में हल करके पाक करें, और पाक के पश्चात् तरंज का पानी तथा मधु मिलाकर गाढ़ा करें, अब सब औषध का बारीक चूर्ण कर पाक में मिलाकर ज्वारश त्यार करें।

मात्रा---१०॥ से १७॥ माशे।

गुण---आमाशय, दिल, दिमाग़, यकृत को बल देती है, पैत्तिक अतिसार में लाभप्रद है, ख़फ़कान को दूर करती है।

ज्वारश तबाशीर

बंशलोचन, गुलाब पुष्प, चन्दन सफेद, धनियां, आमला प्रत्येक ३ तोले, हब्बालास, पोस्त अतरज (बिजौरा निंबू का छिलका), पोस्त समाक (तितड़ीक का छिलका), मस्तगी प्रत्येक १॥ तोले, कर्पूर शुद्ध, ४॥ माशे, बही मधुर का रस, सब मिलित औषध से त्रिगुण, खाण्ड समान भाग, अर्क गुलाब १० तोले, अब गुलाब अर्क और बही का रस मिलाकर खाण्ड डाल पाक करें, और पाक सिद्धि पर बाकी औषध का चूर्ण मिला दें।

मात्रा---५ माशे, अर्क गाजर ५ तोले, वा अर्क गाऊज़वान १२ तोले के साथ दें।

गुण—यह ज्वारश आमाशय को बल देती है, पैत्तिक वमन, मतली, अतिसार और अजीर्ण दोषों को नष्ट करती है।

ज्वारश ऊद तुरश

बालछड़, लघु एला, केशर, नारंगी (बिजौरा निंबू) का ऊपर का छिलका, लौंग, दारचीनी, बादरंजबोया, मस्तगी रूमी, तबाशीर श्वेत, प्रत्येक तीन माशे, अगर ३ तोले, अम्लसेब रस १९ तोले, गुलाब २३ तोले, खाण्ड सफ़ेद, मधु उत्तम प्रत्येक २६ तोलें, निंबू-रस ३४ तोले। सेबरस, निंबूरस, गुलाब अर्क में मधु तथा खाण्ड मिलाकर पाक करें, और बाकी औषध कूट छान कर पाक में मिला दें।

मात्रा—७ माशे, अर्क गाऊज़बान वा केवल जल से दें।

गुण—पाचक, आमाशय बल्य, पित्त रोगों में लाभप्रद है।

ज्वारश ऊद शरीन (मधुर अगर अवलेह)

तगर, केशर प्रत्येक ७ माशे, अगर, दारचीनी, जायफ़ल, तज, छोटी इलायची, लौंग, पान की जड़, पिप्पली प्रत्येक १।। तोले, खाण्ड १ पाव, मधु ३२ तोले, खाण्ड, मधु का पाक करें, और बाकी औषध मिला कर अवलेह निर्माण करें, किसी योग में कस्तूरी २ माशे भी मिलाना लिखा है।

मात्रा—५ से सात माशे, अर्क गाऊज़बान १० तोले के साथ प्रयोग करें।

गुण—यह ज्वारश आमाशय को बल देती है, भूख लगाती है और पाचनकार्य करती है।

ज्वारश ऊद मुलैयन (विरेचक अगर अवलेह)

सौंफ़, अनीसून, पोदीना, मस्तगी रूमी, लघु एलाबीज प्रत्येक ३।। माशे, अगर हिन्दी, वंशलोचन प्रत्येक ७ माशे, फूल गुलाब, सनाय, त्रिवृत प्रत्येक ९ माशे, खाण्ड, शहद, गुलाब अर्क, १–१ पाव इन तीनों का पाक कर बाकी औषध का चूर्ण कर पाक में मिलावें।

मात्रा—सात माशे प्रातः को अर्क सौंफ से खायें।

गुण--रेचक है, आमाशय बल्य तथा भूख लगाती है।

(२) ऊद कच्चा, मस्तगीरूमी. १-१, तोला, सकमूनीया ६ माशे, त्रिवृत ४ तोले, मधु त्रिगुण, मधु का पाक करके बाकी औषध का चूर्ण मिलाकर ज्वारश तयार करें।

मात्रा तथा गुण उपरिलिखित ज्वारश की तरह।

ज्वारश फ़लाफ़ली

कृष्ण मिरच, श्वेत मिरच, पिप्पली प्रत्येक २० तोले, ऊद-बिलसान १० तोले, करफ़सबीज, तज, तगर, सोंठ, १-१ तोला, मधु त्रिगुण, मधु का पाक करके यथाविधि चूर्ण बनाकर ज्वारश तयार करें।

मात्रा--३ माशे, अर्क सौंफ़ के साथ।

गुण--यह ज्वारश उदरशूल, दूषित वायु तथा चोथीया ज्वर में लाभदायक है।

ज्वारश फ़वाका

मधुर तथा अम्ल अनार का रस, मधुर सेब का रस, बही-स्वरस, अमरूद स्वरस, अंगूर स्वरस, ज़रिशक शीरा, समाक का शीरा, निंबू का रस, सब समभाग लेकर देगची में पकावें, पाव भाग रहने पर खाण्ड आवश्यकतानुसार डाल कर पाक करें।

मात्रा--७ माशे से १ तोला तक भोजनोपरान्त प्रयोग करें।

गुण--हृदय, आमाशय, यकृत को बल देती है, वमन को बन्द करती है, पित्त का निष्कासन करती है।

ज्वारश फ़वाका अम्बरी

अम्ल अनाररस, मधुर अनाररस, अमरूदरस, अंगूररस, ज़रिशक का शींरा, समाक (तितंड़ीक) का शीरा प्रत्येक १७ माशे, खाण्ड आधा सेर डालकर पाक करें। और इस पाक में मस्तगी रूमी, दारचीनी, बादरंजबोया प्रत्येक १०॥ माशे, कस्तूरी, अम्बरशब १॥, १॥ माशे का बारीक चूर्ण कर मिलाकर ज्वारश बनावें।

मात्रा--६ माशे से १ तोला तक।

गुण--आमाशय दुर्बलता, हृदय दुर्बलता को नष्ट करने में अद्वितीय है।

ज्वारश करतम (कुसम्बे के बीज का अवलेह)

कुसम्बे के बीज, मधुर बादाम गीरी २-२ तोले, अनीसून, बस-फाईज फ़सतकी १-१ तोला, शहद सब के समान, खाण्ड दुगनी, औषध को कूट पीस कर, शहद खाण्ड का पाक बनाकर इसमें औषध चूर्ण मिला ज्वारश त्यार करें। यदि मस्तगी रूमी २ तोले मिला दी जाये, तो अधिक गुणप्रद होगी।

मात्रा—७ माशे, अर्क गाऊज़बान १२ तोले के साथ प्रयोग करें।

गुण—स्त्रियों के मासिक धर्म्म के विकारों को नष्ट करती है, मूत्रल, विबन्धनाशक, तथा आमाशय बल्य है।

ज्वारश कमूनी (जीरक अवलेह)

जीरा कृष्ण (सिरका भावित) तथा भुना हुआ २० तोले, सुदाबपत्र, शुण्ठि, बूरा अरमनी, ८-८ तोले, काली मिरच ६ तोले, मधु उत्तम त्रिगुण, मधु पाक करके बाकी औषध का चूर्ण मिला कर ज्वारश त्यार करें।

मात्रा—७ माशे से १ तोला तक अर्क सौंफ़ १२ तोले से वा जल से दें।

गुण—आमाशय की सरदी को नष्ट करती है, आमाशय के कफज स्राव को शुष्क करती है, उदरशूल, अम्लपित्त, अजीर्ण को दूर करती है, कुछ रेचक है।

ज्वारश कमूनी कबीर (बृहत जीरक अवलेह)

दारचीनी, काली मिरच, श्वेत मिरच, बूरा अरमनी, प्रत्येक सात माशे, सुदाबपत्र १ तोला, कृष्ण जीरक शुद्ध ४। तोले, शुण्ठि मुरब्बा ३ तोले, हरीतकी मुरब्बा ५ तोले, सूर्य्यतापी गुलकन्द ८ तो०, खाण्ड २० तो०, मधु १० तोले, प्रथम गुलकन्द तथा मुरब्बों को जल में बारीक पीस लें, और खाण्ड मिलाकर आग पर रखें, पाकसिद्धि पर बाकी औषधचूर्ण डाल कर ज्वारश त्यार करें।

मात्रा—७ माशे, अर्क सौंफ से प्रयोग करें।

गुण—यह ज्वारश उदर के वातविकार, वातिकशूल, आध्मान, हिक्का, अजीर्ण, वातोदर को नष्ट करती है, कुछ रेचक भी है।

ज्वारश कमूनी अकबर

दारचीनी, बूरा अरमनी, ५–५ तोले, मिरच कृष्ण, मिरच सफ़ेद प्रत्येक सात तोले, सुदाबपत्र १५ तोले, सोंठ का मुरब्बा ४० तोले, जीराकृष्ण शुद्ध ५० तोले, हरीतकी मुरब्बा (गुठली निकाला हुआ) ६० तोले, गुलकन्द ५०० तोले, प्रथम मुरब्बाजात तथा गुलकन्द को पानी में पीसकर पृथक् रखें, और मुरब्बों, गुलकन्द तथा औषध के समान भाग खाण्ड तथा शहद लेकर पाक करें, पाक होने पर औषध-चूर्ण को मिला दें, यदि इसमें सोंठ, हरीतकी, त्रिवृत प्रत्येक ४० तोले का चूर्ण और मिला दें, तो यह ज्वारश अधिक लाभप्रद होगी।

मात्रा–७ माशे से १ तोला तक योग्य अनुपान से दें।

गुण–हृदय, यकृत को बल देती है, विबन्धनाशक है।

ज्वारश कमूनी सग़ीर (लघु)

जीरा कृष्ण शुद्ध १४॥ तोले, सुदाबपत्र (छाया में शुष्क किये हुए), शुण्ठि प्रत्येक ७० माशे, कृष्ण मिरच ५२॥ माशे, बूरा अरमनी १७॥ माशे, मधु त्रिगुण–यथाविधि ज्वारश त्यार करें।

मात्रा–५ से ९ माशे, **अर्क** सौंफ़ १२ तोले के साथ दें।

गुण–आमाशय, तथा अण्डकोषों की सरदी को नष्ट करती है, अम्लपित्त तथा आन्त्रवृद्धि में भी उत्तम है।

ज्वारश कमूनी मूसहल (रेचक योग)

कृष्ण जीरा शुद्ध १५ तोले; त्रिवृत सफेद ७॥ तोले, आकाशबेल-विलायती ५ तोले, कालीमिरच, शुण्ठि, पिप्पली प्रत्येक २॥ तोले, पोदीना, सुदाबपत्र, सातर फारसी, बूरा अरमनी प्रत्येक १५ माशे, मधु औषध से त्रिगुण, यथाविधि पाक करें।

मात्रा–७ माशे; अर्क सौंफ़ १२ तोले के साथ प्रयोग करें। इसके रेचन गुण की वृद्धि के लिये १ तोला की मात्रा में दें, और ऊपर से अर्क सौंफ़ ६ तोले, अर्क मकोय ६ तोले, शरबत दीनार ४ तोले मिला कर पिलावें।

गुण–यह ज्वारश आमाशय तथा आन्त्र के मल तथा दोषों का निष्कासन करती है, मुंह की बदमज़गी, लालास्राव तथा कफ़ज रोग

में लाभप्रद है, आमाशय को बल देती है; तथा वायुविकारों के लिये उत्तम है।

ज्वारश मस्तगी

मस्तगी रूमी २। तोले, गुलाब अर्क ६ तोले, खाण्ड १ सेर, अर्क तथा खाण्ड को मिलाकर पाक करें, पाकसिद्धि होने पर मस्तगी को बारीक खरल करके इसमें मिला दें।

मात्रा–७ माशे, अर्क सौंफ़ से दें।

गुण–आमाशय के दूषित स्राव को शुष्क करती है, लालास्राव को नष्ट करती है, मूत्र की अधिकता को रोकती है, आमाशय और आन्त्र को बल देती है।

ज्वारश मस्तगी (बृहत)

मस्तगी रूमी, काली मिरच, अजवायन, कबाबचीनी, कृष्णजीरक शुद्ध, श्वेत जीरक शुद्ध, अनीसून, फूल गुलाब, नारंज के ऊपर का छिलका शुष्क, कासनीबीज, सौंफ़, कुन्दर, धनियां, बादरंजबोया (बिल्ली लोटन), गाऊज़बान पुष्प, कचूर, बालछड़, केशर प्रत्येक ५ तोले, दारचीनी, सोंठ, छोटी इलायचीबीज, प्रत्येक दो तोले, मधु उत्तम सब के समान, खाण्ड दुगनी, मधु तथा खाण्ड का पाक करें, बाकी औषध का चूर्ण कर मिलावें, केशर और मस्तगी को भी औषध के चूर्ण के साथ ही खरल करें।

मात्रा–५ माशे, अर्क सौंफ़ १२ तोले के साथ प्रयोग करें।

गुण–आमाशय दुर्बलता, यकृत की सरदी, कफ़जदोष, लालास्राव मूत्र अधिकता, अतिसार में लाभप्रद है।

ज्वारश अम्बर

सोंठ, पिप्पली ३५–३५ माशे, जायफल १७।। माशे, बृहतएला, लघुएला, जावित्री, दारचीनी, १४–१४ माशे, छड़ीला, मस्तगी, अम्बर, तज, लौंग, केशर प्रत्येक ७ माशे, कस्तूरी ३।। माशे, औषध का चूर्ण करें, और शहद का पाक करके ज्वारश त्यार करें।

मात्रा–४।। माशे।

गुण–आमाशय की सरदी, पाचनदोष, खफ़कान तथा गर्भाशय पीड़ा के लिये अति उत्तम है, स्त्रियों को बहुत उपयोगी है।

ज्वारश कसरी

अम्बराशब ४।। माशे, रोगन बलसान ७ माशे, अनीसून, नागकेसर, करफ़सबीज, जुन्दबदस्तर, अहिफ़ेन, अजवायन खुरासानी, बादरंजबोया पत्र, मरज़नजोश पत्र प्रत्येक १०।। माशे,लौंग, कबाबा, बड़ी इलायची, छोटी इलायची प्रत्येक १७।। माशे, अम्बर को रोग़न बलसान में हल करें, अहिफ़ेन शराब में हल करें, सब औषध को त्रिगुण मधु के पाक में डाल कर ज्वारश त्यार करें, दो मास बाद वा ६ मास के बाद प्रयोग करें।

मात्रा—१ से २ माशा।

गुण—आमाशय विकार, शूल, अजीर्ण तथा गर्भाशय विकारों में लाभप्रद है।

ज्वारश कुंदर

कुन्दर सफ़ेद, प्रवाल की जड़ प्रत्येक १७ तोले ६ माशे, सोंठ, पान की जड़, प्रत्येक १२ माशे, जायफल, लौंग, प्रत्येक १२।। माशे, कस्तूरी १।।। माशे, सब औषध को पृथक कूटकर चूर्ण करें, त्रिगुण मधु में मिलावें। मात्रा- १०।। माशे।

गुण—आमाशय की सरदी को हटाती है, उष्णता पैदा करती है, हृदयक्षीणता, दिल डूबना में लाभप्रद है; कफ़ज अतिसार में भी उपयोगी है।

ज्वारश

पोदीना शुष्क, काली मिरच, अजवायन, बड़ा जीरा, काशम, सुदाब पत्र, सोंठ, लौंग, दारचीनी, समभाग लें, शहद त्रिगुण, ज्वारश तयार करें।

मात्रा—७ माशे।

गुण—अजीर्ण, आमाशय दुर्बलता को नष्ट करती है। दूषित वायू का निष्कासन करती है।

ज्वारश केसर

करफ़सबीज, अजवायन, अकरकरा, साम्भर लवण प्रत्येक २१।। माशे, पिप्पली, सोंठ, हरड़, सकमूनीया, त्रिवृत प्रत्येक ४२ माशे,

खाण्ड ५२।। माशे, यथाविधि ज्वारश त्यार करें।

मात्रा—४।। माशे, योग्य अनुपान से।

गुण—आन्त्रशूल, वातरक्त को लाभ देती है, गाढ़े लेसेदार दोषों को बाहर निकाल़ती हैं।

ज्वारश नारमुशक

छोटी इलायचीबीज ३।। माशे, बड़ी इलायची, दारचीनी प्रत्येक ७ माशे, नागकेसर, लौंग प्रत्येक १०।। माशे, पिप्पली १०।। माशे, सोंठ २१।। माशे, सकमूनीया ७० माशे, खाण्ड ८ तोले ५ माशे, यथाविधि ज्वारश त्यार करें।

मात्रा—३।। से १०।। माशे तक।

गुण—आन्त्रशूल तथा विबन्धनाशक है।

ज्वारश समाक (तितड़ीक अवलेह)

खरनूब नबती ८ तो० ९ माशे, समाक ७० माशे, मोड़ीयोंबीज ३५ माशे, गोदंकीकर, गुल्नार फारसी, अनारदाना प्रत्येक १७ माशे, द्राक्षा बीजरहित समानभाग, सब का चूर्ण कर ज्वारश बनावें।

मात्रा—१०।। माशे।

गुण—पित्त अतिसार को नष्ट करती है।

ज्वारश अताई

बहमन सुरख़, बहमन सफ़ेद, तोदरी सुरख़, तोदरी सफ़ेद, असपस्तबीज, ख़रबूजाबीज, जरजीरबीज, प्याज़बीज, अमाज़बीज, अंजराबीज, कतीरा, हालोंबीज, शलग़मबीज, करफ़सबीज प्रत्येक १३।। माशे, शकाकलमिश्री, छोटी इलायची, पिप्पली, पान की जड़, दारचीनी, सोंठ, कुरफ़ा प्रत्येक ४।। माशे, तुरंजबीन (यवास शर्करा), सब औषध से त्रिगुण, प्रथम तुरंजबीन को रात भर गौदुग्ध में भिगोवें। प्रातः मल छानकर आग पर रखें, जब पाक हो जाये, तो चूर्ण की हुई औषध इसमें मिलाकर ज्वारश बनावें।

मात्रा—४।। माशे गौदुग्ध से।

गुण—वृक्क तथा मूत्राशय को बल देती है, वीर्य को बढ़ाती है।

ज्वारश ख़बसलहदीद (मण्डूर अवलेह)

कृष्ण हरीतकी, आमला, पिप्पली, सोंठ, जीरा कृष्ण, हरीतकी, तज, नागरमोथा, दारचीनी, लौंग, जायफल, सोयेबीज, करफ़सबीज, गन्दनाबीज, जरजीरबीज, गाजरबीज, शलग़मबीज, प्रत्येक ३।। माशें, जावित्री, छोटी इलायची, गुलाबपुष्प, बड़ी इलायची, अगर, कस्तूरी प्रत्येक ७ माशे, सपंदानबीज ८ तोले, मण्डूर शुद्ध (भस्म डालें, तो अधिक लाभप्रद है), सब औषध को समान भाग, कूट छानकर मधु का पाक कर ज्वारश त्यार करें।

मात्रा—४ माशे से १ तोले तक।

गुण—वाजीकर, पाचक, अर्शनाशक है, तथा आमाशय दुर्बलता और पाण्डु के लिये अत्यन्त उपयोगी है।

ज्वारश विक्रमाजीत

गोंदकीकर आधा सेर को दो सेर गाय के घी में भून लें, घी को पृथक् कर लें, असगन्ध, मूसली काली, सोंठ, १७–१७ माशे, कंकोल ५२।। माशे, लौंग, जायफल ३५–३५ माशे, दारचीनी, पानजड़, कबाबचीनी, जावित्री, अकरकरा १४–१४ माशे, सब औषध को कूट छान कर इस घी में मिश्रित करें। जिसमें गोंद भूना था, फिर शक्कर सुर्ख़ तथा खाण्ड प्रत्येक १।।–१।। सेर का पाक करके भूना हुआ गोंद इसमें मिला देवें, और चमचा से चलावें। जब हलवा सा हो जाये, तो आग से उतारकर बाकी औषध का चूर्ण मिला देवें।

मात्रा—१ से तीन तोले तक प्रयोग करें।

गुण—पुंसक शक्ति को बढ़ाती है कटिपीड़ा नष्ट कर उसे बलवान बनाती है, आमाष्य को बल देती हैं।

ज्वारश कुन्दरी

कुन्दर, खाण्ड १७।।–१७।। तोले, सोंठ, पानजड़ ४२–४२ माशे, मिरच, पिप्पली ३५–३५ माशे, जायफल, लौंग, छोटी इलायची, १७।।–१७।। माशे, कस्तूरी १।।। माशे, सब औषध को कूट छानकर ज्वारश त्यार करें।

मात्रा—७ माशे।

गुण—आन्त्रवृद्धि तथा अण्डकोषों में जल भर जाने में लाभप्रद है, आमाशय बल्य तथा पाचक है, वायू को नष्ट करती है।

जौहर (ऊर्ध्वपातित सत्व)

जौहर किसी वस्तु के सूक्ष्म तत्वों को कहते हैं, जो किसी विधि विशेष से ग्रहण किये जाते हैं, और उनको ग्रहण करने का तात्पर्य, उस वस्तु के अधिक उपयोगी गुणों को हासिल करना होता है, जौहर उड़ाने की क्रिया को यूनानी चिकित्सा में तसहीद कहते हैं, जिसकी विधि निम्नलिखित है—जिस औषध का जौहर उड़ाना हो, इसको अर्ध कुट्टित करके किसी जलीय औषध में खरल कर सुखा लिया जाता है, दो प्याले लिये जाते हैं, जिनके मुख बिलकुल एक दूसरे से मिलते हों, नहीं तो घिसकर मिलाये गये हों, अब एक प्याले में औषध रखकर दूसरे प्याले से ढक दिया जाता है, मुलतानी मिट्टी वा चिकनी मिट्टी से संधिबन्द कर दी जाती है, धूप में रखकर सुखा लें, और छोटे चूल्हे पर चढ़ाकर नीचे मोटी बत्ती द्वारा आग दें, और ऊपर के प्याले पर कपड़े की चार तह जल में भिगोकर रखें, कपड़े को बार २ तर करते रहें, अग्नि की उष्णता से जो जौहर उड़ेगा, वह ऊपर के प्याले की तली में पहुंचकर जमता रहेगा। यह क्रिया औषध के परिमाण और अग्नि के परिमाण अनुसार २–२॥ घण्टे वा न्यून अधिक समय तक जारी रखें, जब अग्नि शान्त हो जाये, और प्याले सरद हो जायें, तो सावधानी से खोलकर ऊपर के प्याले से जौहर उतार लें, और शीशी में डाल दें।

जौहर सेन

मल्ल श्वेत, को उत्तम सुरा (ब्राण्डी नं० १) में अच्छी तरह खरल करें, दो प्यालों के भीतर रखकर यथाविधि जौहर उड़ायें।

मात्रा—२ चावल, लबूब कबीर ७ माशे वा माजून जालीनूस लोलवी, वा मक्खन मलाई में मिलाकर प्रयोग करें, प्रयोग के समय घी, दूध का अधिक प्रयोग करें, जलोदर रोग में माजून दबीदलवरद ७ माशे में मिलाकर प्रयोग करें।

गुण—वाजीकरण है, भूख बढ़ाता है, शरीर में शक्ति उत्पन्न करता है, कफ़ज विकार तथा जलोदर में उपयोगी है।

जौहर कलान

मल्ल श्वेत, रसकपूंर, दारचिकना, शुद्ध पारद, शुद्ध हिंगुल, सब को समान भाग लेकर प्रातः से सायं तक ब्राण्डी में खरल करें, फिर अर्क गुलाब में खरल करके यथाविधि जौहर उड़ायें।

मात्रा---२ चावल, पेड़े में रखकर गोली बनाकर निगल जावें, (पेड़े के स्थान पर कैपसूल में डाल कर निगल लें) ताकि औषध दांतों को न लगे, यदि इसके प्रयोग से गर्मी अधिक लगे, तो आधी स्फटिका मिला लें।

गुण---वात तथा रक्त के रोग, उपदंश, आतशक, कुष्ट में विरेचन के पश्चात बहुत उपयोगी है।

जौहर रसकर्पूर (जौहर मुनक्का)

रसकर्पूर, मल्ल, दारचिकना, सबको समभाग लेकर ब्राण्डी में खरल करके जौहर उड़ायें, कभी २ केवल रसकपूंर को ही प्यालों में रखकर ज़ौहर उड़ा लेते हैं।

मात्रा---दो चावल, मुनक्का (काली द्राक्षा बीजरहित) में रखकर और बन्द कर निगल लें, यह उपरोक्त औषध दांतों को नहीं लगनी चाहिये, क्योंकि मुंह आजाता है, दांत तक गिर जाते हैं, सावधानी से निगलनी चाहिये।

गुण---वात तथा रक्त के दोष, आतशक तथा चर्मरोगों में बहुत उपयोगी है।

जौहर लोबान

इसी को लोबान सत्व भी कहते हैं, लोबान का छोटा २ टुकड़े करके यथाविधि ज़ौहर उड़ायें।

मात्रा---चार चावल, पान में रखकर खायें।

गुण---कफ़ का स्राव करता है, वाजीकर भी है।

ज़ौहर नवशादर

नवसादर, साम्भर लवण प्रत्येक ५ तोले को अर्ध कुट्टित कर यथा विधि जौहर उड़ायें।

मात्रा---चार चावल, खाली पेट मुनक्का में रखकर निगल जायें।

गुण---पाण्डु, यकृत विकार तथा जलोदर में उत्तम है।

चटनी

चटनी चाटने वाली औषध को कहते हैं, यह कास श्वास के लिये बनाई जाती है, और ऊंगली से चाटी ज़ाती है, अब ऊंगली का स्थान चमचा ने ले लिया है ।

(१) रबुलसूस (मधुयष्टि का घनसत्व), दारचीनी, पिप्पली, कीकर गोंद प्रत्येक ६ माशे, बादाम छिलका उतारे हुये १ तोला, मधु उत्तम ६ तोले, औषध को बारीक पीसकर शहद में भली प्रकार मिलायें ।

मात्रा—६-६ माशे, दिन में ३-४ बार चाटें ।

गुण—कास श्वास में उत्तम है, कफ़ स्रावक है ।

चटनी नं० २

रबुलसूस (मधुयष्टि का घन सत्व), शकर तेग़ाल, मग़ज़ कदु, ख़शख़ाश बीज प्रत्येक ६ माशे, गोंद कीकर, गोंद कतीरा, ३—३ माशे, बारीक पीसकर शरबत ख़शख़ाश ५ तोले में मिलाकर रखें ।

मात्रा—६—६ माशे, दिन में ३—४ वार चाटें ।

गुण—वातज खुशक कास में उत्तम है ।

चूर्ण

चूर्ण का अर्थ बारीक पीसी हुई वस्तु का नाम है, परन्तु लोक भाषा में उसको चूर्ण कहते हैं, जो चटापटा तथा पाचक हो, भोजन को शीघ्र पचाये, इसमें लवण की अधिकता होती है ।

चूर्ण अक्सीर हज़म

सोंठ, मिरच, पिप्पली, नीबू सत्व ५—५ तोले, सैंधव लवण २० तोले, पोदीना सत्व १ तोला, बारीक पीस छानकर पोदीना सत्व मिलाकर खरल करें, और शीशी में बन्द रखें ।

मात्रा—१ से २ माशे, भोजनोपरान्त ।

गुण—भोजन को पचाने मे अति गुणकारी है, अरूचि नाशक है, स्वादिष्ट है ।

चूर्ण (२)

नवसादर, सौभाग्य भस्म, मिरचकाली, ५—५ तोले, राई १० तोले, सैंधव लवण २५ तोले, पिपरमिण्ट सत्व १ तोला, पिपरमिण्ट के

सिवाये, बाकी सब औषध का बारीक चूर्ण कर तत्पश्चात् पिपररिण्ट मिलाकर खरल करें, इसकी शीशी का मुख बन्द करके रखें।

मात्रा—२–३ माशे, भोजनोपरान्त प्रयोग करें ।

गुण—उदरशूल, अजीर्ण, नाशक है, भूख खूब लगाता है।

Pills हबूब वटी

जिन औषध की गोलियां (हबूब) बनानी हों, उनको अत्यन्त बारीक छान लिया जाये, मोती तथा अन्य मूल्यवान पाषाण, याकूत अकीक आदि को प्रथम अत्यन्त खरल करें, और फिर बाकी औषध में मिलाकर खरल करें, ताकि सब अच्छी तरह मिलकर एकजीव हो जायें, इसके बाद पानी शहद, या जिस औषध के रस में गूंद कर वटी बनानी लिखी हो, उसमें गूंदकर वटी बना लें, यदि वटी के प्रयोग में इसपग़ोल, बहिदाना, वा गोंद लिखी हो, तो पानी में भगोकर इनका लुआब (रस) लिया जाये, और इसमें दूसरी बारीक चूर्ण की हुई औषध डालकर भली प्रकार खरल कर वटी बनावें, यदि वटी की योग में गुगगुल, रसौत, अहिफेन जैसी औषध हों, तो इस को प्रथम पानी में घोल लें, और इस पानी को दूसरे चूर्ण में मिलाकर वटी करें, यदि योग में कस्तूरी, केशर आदि सुगन्धित औषध भी हों, तो इनको बारीक कीये हुये चूर्ण में मिलावें, मेरी सम्मति में केशर को पृथक अच्छी तरह खरल करें, और कस्तूरी को (Rectified spirit) रेकटीफाईड स्पिरिट में हल करके डालें, मग़ज़यात, द्राक्षा को पृथक बारीक खरल करके मिलावें, यदि योग में एसी लेसदार औषध हों, जिनके कारण से वटी बनाते कष्ट होता हो, हाथ में लगती हो, तो हाथ को बादाम तैल वा घी से चुपड़ लेना चाहिये, वा निशास्ता बारीक करके इसकी सहायता से वटी करें—यदि वटी के योग में ऐसी भुरभुरी औषध हों जिनके कारण से वटी न बनती हो, तो गोंद के लेसदार रस (जल में गोंद को घोल लें) के साथ मिलाकर वटी करें, विषमुष्टि, वत्सनाभ आदि औषध को शुद्ध करके डालें मस्तगी को पृथक हलके हाथों रगड़ कर बाकी के चूर्ण में मिलाकर खरल करें, कूटने से वह चिमट जाती है।

वटी समान बनानी चाहिये, छोटी कुरूप नहीं होनी चाहिये, इतनी कठोर न हो, कि आमाशय में हल ही न हो सके, और न इतनी मृदू कि उसका रूप ही विगड़ जाये, वटी को सुन्दर बनाने के लिये उसपर, स्वर्ण, चांदी के वर्क चढ़ाये जाते हैं, इसकी विधि यह है, कि एक थाली तथा रकाबी में वरक बिछाकर इन पर ताजा गीली गोलियां डालें, और रकाबी को हिलायें, ताकि तमाम गोलियों पर वरक अच्छी तरह चढ़ जायें, यदि गोलियां शुष्क हों, तो उनको गोंद के पानी से वा शहद से गीली कर लेवें, कभी २ कड़वी औषध के स्वाद को छिपाने के लीये उनपर खाण्ड चढ़ाई जाती है, उसकी विधि यह हैं, कि खाण्ड के खरपाक में गोलियां डालकर हिलावें, जब पाक इनपर चढ़ जाये, और शुष्क हो जाये तो फिर इनको खूब हिलावें, ताकि आपस में रगड़ खाकर एक समान हो जायें, परन्तु आजकल यह सब कार्य मशीन द्वारा अत्यन्त सरलता से और उत्तम रूप से हो जाते हैं।

हब्ब अहमर

मल्ल श्वेत, हड़ताल वर्की, हिंगुल प्रत्येक १-१ तोला, सबको १०१ निंबूरस में इतना खरल करें, कि सब रस ज़ज़ब हो जाये, मूंग समान वटी करें।

मात्रा तथा प्रयोग विधि—आधी वटी, मक्खन में मिला कर प्रयोग करें, दूध, घी मक्खन का प्रयोग करें, विषयवासना तथा अम्लपदार्थ त्याजय हैं, शरद ऋतु में प्रयोग करें, यदि इसके प्रयोग से भूख कम हो जाये, और कोष्ट बद्धता हो जाये, तो इसी योग में १ तोला शुद्ध गन्धक मिलाकर वटी बनावें।

गुण—वाजीकरण हैं, वृद्धावस्था में विशेष उपयोगी हैं।

हब्ब अज़राकी

अज़राकी (विषमुष्टि) शुद्ध १ तोला, कालीमिरच, पिप्पली ६-६ माशे, सबको बारीक पीसकर अर्क अजवायन से भावित कर चने समान वटी करें।

मात्रा—१ वटी, अर्क सौंफ ५ तोले अर्क गाऊज़बान ५ तोले वा जल से दें।

गुण—शरीर को दृढ़ बनाती हैं, कफ़ज विकार में बहुत उत्तम है।

(२) शुद्ध विषमुष्टि दो तोले, दारचीनी, जावित्री, जायफल, लौंग, अगर, १-१ तोला, बारीक चूर्ण कर अजवायन के अर्क से भावित कर चने समान वटी करें।

मात्रा तथा गुण उपरोक्त हैं।

हब्ब असगन्ध (अश्वगन्धा वटी)

मूसली सफ़ेद, पिप्पली, अजवायन देशी, पिप्पलामूल, १-१ तोला, मेदालकड़ी, सोंठ, असगन्ध नागोरी, शतावर २-२ तोले, (कई पिप्पलामूल के स्थान पर सुरंजान शरीन डालते हैं, और मेदा लकड़ी के स्थान पर विधारा डालते हैं), औषध को कूट छान कर आवश्यकतानुसार गुड़ डालकर मटर परिमाण वटी करें।

मात्रा—१ वटी, प्रातः अर्क सौंफ़ से दें।

गुण—कटिशूल, जोड़ों की पीड़ा, आमवात, उदर में वायु विकार होना और कफ़ज विकार में उत्तम है।

उपदंश वटी

शुद्ध जयपाल बीज, कुटकी, तुत्थ, १-१ माशा सबको पानी में अत्यन्त वारीक कर ३ वटी करें, और आम के अचार के टुकड़े पर से ऊपर का छिलका उतार कर १ वटी पर लपेट कर खिलावें, इससे ३-४ रेचन तथा १, दो वमन आयेंगी, इस तरह तीन दिन करें, आशा है, तीन दिन में ही आतशक का रोगी निरोग्यता प्राप्त करेगा, बीच में भारी अपच्य वस्तु न खिलावें, घी दूध दें।

गुण—आतशक को दूर करती हैं।

हब्ब अशग़ार

हरीतकी, चित्रक, शुण्ठि, सज्जीक्षार, सौभाग्य भस्म, जीरा श्वेत, लवपुरी लवण, समभाग लेकर कूट छान लें, इसके पश्चात् दुगना पुराना गुड़ मिलाकर मूँग समान वटी करें।

मात्रा—प्रातः ३ माशा, उष्ण जल के साथ प्रयोग करें।

गुण—बढ़ी हुई प्लीहा को शीघ्र ही कम करती है।

अयारज वटी

अयारज फैकरा, त्रिवृत, ५-५, माशा, कालादाना, गारीकून, अनीसून प्रत्येक ४।। माशा, तुम्भे का भीतरी गूदा शुष्क, साम्भर लवण प्रत्येक २ माशे, सबको कूट छान कर बारीक कर अर्क सौंफ़ से भावित कर मूंग समान वटी करें ।

मात्रा—५ माशा, चांदीपत्र में लपेट कर अर्क गाऊज़बान १२ तोले के साथ चार घड़ी रात्री रहे, प्रयोग करें, प्रातः उठकर पाचक तथा विरेचक योग (अम्लतास बिना डाले) पीवें, खाना न खायें, तीसरे पहर मूंग की नरम खिचड़ी खिलावें ।

गुण—मृगी, सुप्ति रोग, शिरशूल पुराना तथा चक्षु रोगों में लाभप्रद है, मस्तिष्क को कफज दोषों से शुद्ध करती है ।

अयारजफ़ैकरा

बालछड़, दारचीनी, ऊदबलसान, तज, मस्तगी, तगर, केशर, मुसब्बर, १-१ तोला, सब औषध को कूट छान कर अर्क सौंफ़ से छोटी २ वटी करें ।

मात्रा—७ माशे उष्ण जल से दें ।

गुण—मस्तिष्क तथा आमाशय को दोषों से निवृत करती है, गाढ़े कफ को छांटती है, शिरशल, अर्दित, अर्धांग, तथा आमवात में उत्तम है, मस्तिष्क का शोधन करती है ।

हब्ब एज़ा रहीसा

अम्बरशहब, कस्तूरी, केसर, लौंग, प्रत्येक ३-३ माशे, जायफ़ल ४ माशे, अकरकरा ५ माशे, जावित्री ६ माशे, छोटी एलाबीज ७ माशे, चोबचीनी ८ माशा, तेजबल ९ माशे, कबाबचीनी १० माशे, मदन मस्त ११ माशे, शतावर १ तोला, पिप्पली १३ माशे, ऊटंगनबीज दो तोले, कौंचवीज २७ माशे, मालकंगनी २८ माशे, बनफ़शा जड़ २९ माशे, समुद्रसोख ३० माशे, मोचरस २३ माशे, इन्द्रजौ मधुर २ तोले, कौंच जड़ २५ माशे, नागकेसर २७ माशे, मूसली सफेद २८ माशे, काला गुड़ २६ माशे, हिंगुल शुद्ध २१ माशे, सब औषध को कूट पीस छानकर गुड़ के शरबत में मिला जंगली बेर समान वटी करें ।

मात्रा—१ से दो वटी, प्रातः सायं।

गुण—शरीर को दृढ़ बनाती है, वृद्धों के लिये अत्यन्त उपयोगी है।

हब्ब एतलाम (स्वप्नदोषहर वटी)

अजवायन ख़ुरासानी, नीलोंफ़रबीज, ख़शख़ाशबीज, गोंद कतीरा, गोंद कीकर, अहिफ़ेन, काहुबीज, कृष्णखुरफ़ाबीज, शतावर, मधुर कदुबीज, तालमखानाबीज, पोंटश्यम ब्रोमाईड (Potassium Bromide) १-१ तोले, बारीक पीसकर बरगद के दुग्ध में खरल कर चने समान वटी करें।

मात्रा—१ वटी, रोगी को दूध से प्रयोग करें।

गुण—यह गोलीयां स्वप्नदोष में अन्यन्त उपयोगी हैं।

अयारजवटी (विशेष)

बालछड़, दारचीनी, हब्व बलसान, ऊद बलसान, तज, मस्तगी रूमी, तगर, केशर, १०–१० माशे, मुसब्बर ३। तोले, त्रिवृत, कालादाना, ग़ारीकून, अनीसून प्रत्येक १० तोले, हिन्दी लवण, तुम्बे का भीतरी गूदा प्रत्येक चार तोले, सब औषध को कूट छानकर सौंफ़ अर्क से भावित करके मूंग समान वटी करें।

गुण तथा मात्रा—पूर्व अयारज की तरह।

हब्बे असतस्का (जलोदर वटी)

शुद्ध गन्धक, शुद्धपारद, कमीला, त्रिवृत, तुम्बे की जड़, हरीतकी, काला लवण, १–१ माशा, शुद्ध जयपालबीज ४ माशे, प्रथम पारद गंधक की कज्जली करें, पश्चात् बाकी औषध का चूर्ण मिलाकर खरल करें, थुहर के दूध में भावित कर, २–२ रत्ती की वटी करें।

मात्रा—१ वटी ऊंटनी के दूध से दें।

गुण—जलोदर के जल को दस्त लाकर निकालती है।

(१) हब्ब बतालसोत (स्वरभेद हरवटी)

कतीरा, निशास्ता, गोंद कीकर, रबुलसूस, मग़ज़कदू मधुर, मग़ज़ तुख़म ख़यारैन, खाँड, समभाग, सब को कूट छान कर चने समान वटी करें, और १–१ गोली मुंह में रखकर चूसें।

गुण—आवाज़ को साफ़ करती हैं, कफ़ ख़ारज करती हैं, और कास के लिये उत्तम है।

(२) गोंद कीकर, गोंदकितीरा, रबुलसूस, शकरतेग़ाल, मग़ज़ कद्दू शरीन, ख़यारैन मग़ज, निशास्ता, खाँड प्रत्येक, ५—५ तोले, सब औषध को कूट छान कर चने समान वटी करें।

गुण तथा मात्रा—प्रथम योगवत।

हब्ब बुख़ार

कुनीन सल्फ़ (Quinine Sulphas), गिलोय सत्व ६-६ माशे, वंशलोचन २ तोले, गोंदकीकर ३ माशे, कूट पीस छान कर मूंग समान वटी करें।

मात्रा—ज्वर आने से पूर्व १ वटी प्रातः, मध्यान्ह, सायंकाल प्रयोग करें।

गुण—विषम ज्वर में उपयोगी हैं, विरेचन के बाद प्रयोग करने से अधिक लाभप्रद सिद्ध होगी।

(२) कुनीन सलफ़ (Quinine Sulphas), गिलोय सत्व, ज़हरमोहरा, वंशलोचन, १-१ तोला, असपरीन (Aspirine), (Potassium Bromide) पाटेशयम ब्रोमाईड, ६—६ माशे, सब को बारीक पीसकर चने समान बटी करें।

मात्रा—६ वटी, प्रतिदिन, २-२ की मात्रा में अर्क गाऊज़बान, सौंफ़ अर्क, अर्क ख़स, अर्क सन्दल प्रत्येक ४ तोले, शरबत बज़ूरी ४ तोले के साथ प्रयोग करें।

गुण—बारी के ज्वरों में लाभप्रद हैं।

हब्ब बनफ़शा

बनफ़शापुष्प, गुलाबपुष्प, ७-७ माशे, रबुलसूस २ माशे, त्रिवृत, सकमूनीया, प्रत्येक ४॥ माशे, ग़ारीकून, चलनी में छाना हुआ, ३॥ माशे, सब को कूट छान कर ताज़ा जल से वटी करें।

मात्रा—७ माशे, चार घड़ी रात्री रहे पानी के साथ प्रयोग करें, प्रातः पाचक योग का प्रयोग करें।

गुण—वक्ष, और मस्तिष्क के कफ़ज स्राव का शोधन करती है, सांसफूलने में लाभप्रद है, शिरशूल तथा चक्षु रोग में लाभप्रद है।

हब्ब बवासीर (अर्शवटी)

(१) रसौत, कृष्ण हरीतकी, गन्दनाबीज समभाग लेकर वटी करें, वटी छोटे बेर समान करें।

मात्रा—२ वटी, प्रातः २ सायं जल के साथ दें।

गुण—अर्श में लाभप्रद हैं।

(२) मग़ज़ तुख़म बकायन, मग़ज़ तुख़्म नीम, रसौत, काली मिरच, १-१ तोले, कूट पीस कर जंगली बेर समान वटी करें।

मात्रा तथा गुण—प्रथम योग समान।

(३) मग़ज़ तुख़म नीम—मग़ज़ तुख़म बकायन, मग़ज़ शफ़तालु, रसौत सम भाग लेकर मूलीरस से भावित कर, १-१ रत्ती की वटी करें।

मात्रा तथा गुण—१ वटी, प्रातः १ सायं अफ़तमीयूं (आकाशवेल) के अर्क के साथ और कबज़ में अर्क गुलाब ४ तोले, शरबत बनफ़शा १ तोला के साथ खायें, अर्श में उपयोगी है।

हब्ब बवासीर बादी (वातिक अर्शहरवटी)

ढाकजड़, जदवार, १-१ तोले, हबज़ल्याना २ तोले, हालोंबीज, रसौत, हरड़छाल, बहेड़ा छाल, आमला, रसकपूर, रक्तचन्दन, श्वेत-चन्दन २-२ तोले, कथ्थश्वेत, नीमपत्रस्वरस, मुण्डीरस, महन्दीपत्र स्वरस, बड़ी इलायचीबीज, काली मिरच, जीरा सफ़ेद, गुलाबपुष्प, तबाशीर, रेवन्दचीनी, १-१ तोला, मूलीपत्रस्वरस १॥ सेर, मधु उत्तम २४ तोले, सब औषध को बारीक करें, दो दिन तक औषधियों के स्वरस में खरल करें, फिर मधु मिलाकर वटी करें।

मात्रा—प्रातः सायं १—१ वटी, अर्क केवड़ा, अर्क सौंफ के साथ प्रयोग करें।

गुण—यह वटी वातिक अर्श में लाभप्रद है।

हब्ब पान

शुद्ध मल्ल श्वेत, कत्थ श्वेत, तबाशीर प्रत्येक तीन माशे, पान के रस में एक दिन खरल कर मुंग समान वटी करें।

मात्रा–१ वटी, प्रातः मक्खन में लपेट कर खावें, प्रयोगसमय, दूध, घी, मक्खन का अधिक प्रयोग करें।

गुण–आतशक में अति उत्तम है।

हब्ब पपीता

पपीता अंग्रेज़ी, ६ माशे, सोंठ, पिप्पली, मिरच, पोंदीना शुष्क, आकफूल, लवपुरी लवण, कृष्ण लवण, १-१ तोले, तमाम औषधियों को कूट छान कर, निंबुरस से भावित कर, चने समान वटी करें।

मात्रा—१-१ वटी प्रातः-सायं भोजनोपरान्त प्रयोग करें, आमाशय के रोग में २ वटी जल के साथ खावें।

गुण–पाचक है, उदरशूल, वातशूल, विसूचिका, आध्मान में लाभप्रद है।

(२) पपीता देसी–(बीज और छिलकों से शुद्ध कीया हुआ) ५ तोले, सोंठ, नवसादर, लवपुरी लवण, काली मिरच, १-१ तोले सब को कूट छान कर, निंबु रस से भावित करें, मटर समान वटी करें। मात्रा तथा गुण उपरोक्त ही हैं।

हब्ब पचलोना

साम्भर लवण, काला लवण, सैन्धव लवण प्रत्येक १७। माशे, पोदीना शुष्क, कचूर प्रत्येक २२।। माशे, हरड़, बहेड़ा, आमला, मिरच, पिप्पली, सोंठ, वज तुरकी, जीरा कृष्ण, जीरा श्वेत प्रत्येक ३ तोले ४।। माशे, धनिया १० तोले, अजवायन, सौंफ़ २०–२० तोले, सब औषध को कूट छानकर निंब रस से भावित करें, फिर आमला सबज़ के रस से भावित करें, शुष्क होने पर निंबू रस के साथ जंगली बेर समान वटी करें।

मात्रा—दो गोली भोजनोपरान्त जल से लें, यदि आमला सबज़ न मिल सके तो शुष्क आमला को गरम पानी में रात्री भर भिगो रखें। प्रातः जल निथार कर काम में लायें।

गुण—आमाशय को बल देती है, पाचक है, भख लगाती है, वायु को नष्ट करती है, हिक्का में भी उपयोगी है।

हब्बपेचश (प्रवाहिकाहरवटी)

कर्पूर, हरड़, माजू, आमला, अहिफ़ेन, केशर, समभाग लेकर अर्क गुलाब में खरल करें। चने समान वटी करें।

मात्रा—१–१ वटी, प्रातः, मध्यान्ह, सायं प्रयोग करें, यदि आन्त्र में अशुद्धि हो, तो पहिले एरण्ड तैल का प्रयोग रोगी को कराके दस्त आ जाने पर इस वटी का प्रयोग करें।

गुण—प्रवाहिका, शूल, मरोड़ और खून आने में लाभप्रद है।

(२) अहिफ़ेन, सौभाग्यभस्म, मस्तगीरूमी, हिंगुल, समभाग लेकर मूंग समान वटी करें।

मात्रा—जल से दिन में १–१ वटी तीन बार दें।

गुण—प्रवाहिका में अत्यन्त उत्तम है।

हब्ब ताप बलगमी (कफज्वरहर वटी)

मग़ज़करंजुआ, पिप्पली १–१ तोला, जीरा सफेद, कीकर के ताजे पत्ते, ६–६ माशे, सब औषध का वारीक चूर्ण कर फिर १–१ पत्ता कीकर का डाल डाल कर खूब कूटें, सब समाप्त होने पर और एकजीव हो जाने पर पानी मिला-कर चने समान वटी करें।

मात्रा—१–१ वटी, दिन में ३ बार चार २ घण्टे बाद दें।

गुण—कफ़ज ज्वर में उत्तम है।

हब्ब–तुरश मशतही (गन्धक वटी)

शुण्ठि, कृष्ण लवण, पथर लवण, एक २ पाव, लौंग, पिप्पली, शुद्ध गन्धक, प्रत्येक २८ माशे, छोटी इलायची १४ माशे, सब औषध को बारीक पीसकर निंबु रस से ७ वार भावित करें, फिर चने समान वटी करें।

मात्रा—दो, दो वटी भोजनोपरान्त दें।

गुण—पाचक है, अजीर्ण तथा अरुचिनाशक है। वातिक अर्श में भी लाभप्रद है।

हब्ब तन्कार (सौभाग्य वटी)

सोहागा चौकिया दो तोले, अजवायन खुरासानी २।। तोले, काली मिरच १२ तोले, मुसब्बर १८ तोले, कूट छानकर घी-कुमारी स्वरस से भावना देकर चने समान वटी करें।

मात्रा—दो गोली, सोते समय वा भोजनोपरान्त खावें।

गुण—आमाशय का भारीपन, क्षीणता, तथा विबन्ध को नष्ट करती है। वायु को नष्ट करके भूख लगाती है।

हब्ब जालीनूस

चिड़ों के शिर का मग़ज़, शकाकल मिश्री, सफ़ेद प्याज़बीज, गन्दनाबीज, जरजीर बीज, रेगमाही, छुहारे १-१ तोला, कस्तूरी ३ माशे, औषध को कट छानकर कस्तूरी मिलाकर चने समान वटी करें।

मात्रा—२ वटी, प्रातः अर्क मालहम ५ तोले के साथ वा पाव भर दूध के साथ जिसमें मधु वा अण्डे की ज़रदी मिली हुई हो, प्रयोग करें।

गुण—यह वटी शरीर को दृढ़ बनाती है, वाजीकरण है, सम्भोग पश्चात की क्षीणता को नष्ट करके बल देती है।

हब्ब जदवार

एक सालम नारियल का छिलका दूर करके एक पैसा बराबर स्थान काट लें, अब उस सुराख़ द्वारा अहिफेन ५ तोले, जदवार ख़ताई ४ माशे, केशर ४।। माशे, बारीक करके नारियल में भर दें। पीछे सुराख़ बन्द करके माष के आटे का १ अंगुल मोटा लेप लगा दें, और दस सेर उबलते दूध में जोश दें, जब दूध का खोया हो जाये तो नारियल को इतने घी में डालकर भूनें, कि नारियल डूब जाये। ऊपर का आटा सुरख़ होने पर घी से निकाल लें, अब आटे को पृथक् करके नारीयल को भीतर की औषध समेत अच्छी तरह कूटें। मरहम की भांति हो जाये, तो कटा हुआ नारियल ७।। तोले, अम्बर, रोग़न बलसान, २-२ माशे, जायफ़ल, अजवायन खुरासानी, गोंद कीकर, प्रत्येक २। माशे, जावित्री, बहमन सुरख़

और सफ़ेद, मायाशुत्रअहराबी, बादरंजबोया, पान की जड़ प्रत्येक ४।। माशे, खाण्ड सफ़ेद १ तोला कूट छान बारीक करके चने समान वटी करें, ऊपर चांदी के वर्क चढ़ायें।

मात्रा—एक वा दो वटी, मधु से मीठे कीये हुए दूध से लें।

गुण—यह वटी शीघ्र पतन, प्रमेह, खांसी, पुराने जुकाम में लाभप्रद है। इसके प्रयोग से अहिफ़ेन की आदत छूट जाती है, बलप्रद तथा वाजीकरण हैं।

हब्ब जरयान

जायफल, जावित्री, माजू, हरमल, मस्तगी, नागकेसर, मोचरस, तज, गुल सुपारी, छालीया, छोटी इलायचीबीज, तबाशीर, अजवायन ख़ुरासानी, अहिफ़ेन, केशर १–१ माशा, सबको कूट छान कर इसपग़ोल का लुआब मिलाकर चने समान वटी करें।

मात्रा तथा गुण—१ वटी, प्रातः गौदुग्ध से प्रयोग करें, यह वटी प्रमेह, वीर्य का पतलापन, शीघ्रपतन, चेहरे की बेरोनकी, शरीर की क्षीणता आदि को नष्ट करती हैं।

(२) सिंघाड़े के आटे को बरगद के दुग्ध में और थोड़ा सा जल मिलाकर भावित करके चने समान वटी करें।

मात्रा—दो-दो वटी, प्रातः सायं गौदुग्ध से प्रयोग करें।

(३) सिंघाड़ा शुष्क २ माशे, वंशलोचन ३ माशे, कत्था सफ़ेद १ तोला, तीनों वस्तु को बरगद के दुग्ध में खरल कर चने समान वटी करें।

मात्रा तथा गुण—१ वटी, प्रातः १ सायं दूध से प्रयोग करें। प्रमेह में उत्तम है।

हब्ब जरयान विशेष

बहमन सुरख़, बहमन सफेद, अकरकरा, गोक्षरू, ऊटंगनबीज, मूसली श्वेत, शाहदाना, मायाशुत्रअहराबी, गोंद कीकर, मोचरस, साहलबमिश्री, अपक्व कीकर की फली, वंगभस्म, वंशलोचन, गोंद-ढाक; तालखाना, समुद्रसोख, बीजबन्द, १–१ तोला, अकीकभस्म,

केशर प्रत्येक ६ माशे, सब औषध को कूट छान कर जंगली बेर के समान गोंदकीकर के लुआब में वटी करें।

मात्रा—दो-दो वटी, प्रातः सायं दूध से लें।

गुण—प्रमेह और शारीरिक क्षीणता को दूर करती है। हजारों रोगियों पर प्रयोग की गई हैं।

हब्ब ज्वाहर

मुक्ता ३ माशे, मरजान जड़ २।। माशे, यशप सबज़ १।। माशे, अकीक सुरख़ १।। माशे, याकूत सुरख़ वा ज़रद (पीत), फीरोज़ा २-२ माशे, ज़हरमोहरा ख़ताई ३।। माशे, नारजीलदरयाई, केशर १-१ माशा, चांदीपत्र ३ माशे, स्वर्णवर्क १।। माशे, कस्तूरी २ माशे, अम्बरशब १ माशा, सब को कूट पीस १ पाव गुलाब अर्क में खरल कर, चने समान वटी करें, स्वर्ण वर्क चढ़ा लें।

गुण तथा मात्रा—१ वटी, दवालमस्क मतहदिल ज्वाहरवाली ५ माशे वा मफ़रह ५ माशे, में मिलाकर प्रयोग करें। यह शारीरिक दुर्बलता में अत्यन्त उत्तम है। रोगों के पश्चात् की क्षीणता में उपयोगी है। रक्तपित नाशक है।

हब्ब ज्वाहर मोलफ़

मुक्ता, ज़मुरद, याकूत रमानी, ज़हरमोहरा ख़ताई, कहरबा शमई, लालबदख़शानी, यशप सफेद, कर्पूर उत्तम, प्रत्येक ३।। माशे, अंजबारजड़, सन्दल सफेद, गिल अरमनी, प्रत्येक २। माशे, रबुलसूस, गोंदकीकर, गोंदकतीरा, निशास्ता, नीलोफ़रपुष्प, सरतान जला हुआ, बंशलोचन, ख़शख़ाशबीज श्वेत, गाऊज़बान पुष्प, प्रत्येक ४।। माशे, केशर ४।। माशा, प्रथम ज्वाहरात को गुलाब अर्क में सुरमा की तरह बारीक खरल करें, फिर बाकी औषध का चूर्ण मिलाकर बहिदाना जल से चने समान वटी करें।

मात्रा—१ वटी, प्रातः १ सायं दूध के साथ दें।

गुण—रक्तपित्त, यक्ष्मा, अतिसार, जीर्णज्वर में उत्तम है। शरीर में बल उत्पन्न करती है। दुर्बलता को नष्ट करती है।

हब्बहलतीत (हिंगुवटी)

हींग असली ४ तोले, सोंठ ३ तोले, लवण लाहौरी, कृष्ण लवण प्रत्येक दो तोले, लौंग, पान की जड़, काली मिरच, पिप्पली, छोटी इलायची, कबाबचीनी, मस्तगी, पिपलामूल, अजवायन, हरीतकी, बहेड़ा, आमला, कलौंजी, १-१ तोला, सब औषध को कूट छान लें, और हींग को घी में भून लें। इसके पश्चात् सब औषध के चूर्ण के समभाग घीकुमारी रस, अद्रक रस, नींबू रस इतना डालें, कि औषध से चार अंगुल ऊपर रहे। शुष्क होने पर दो-तीन वार इतना ही रस डालकर शुष्क करें, और अन्त में खरल करके चने समान वटी करें।

मात्रा—प्रातः-सायं १ वा दो वटी भोजनोपरान्त दें।

गुण—अजीर्ण नाशक है, उदरशूल, वमन, वातरोग में लाभप्रद है। दीपक तथा पाचक है।

(२) हींग असली, अजवायन ४-४ तोले, पिप्पली, बहमन सुरख, बहमन सफेद, मिरच काली, कालादाना प्रत्येक ३।। तोले, सोंठ, शकाकल मिश्री, इन्द्रजौ ३-३ तोले, साहलबमिश्री २।। तोले, पान जड़, बड़ी हरड़ २-२ तोले, लौंग, कृष्ण हरीतकी, गाजर बीज, पिप्पलमूल, शुद्ध गुग्गुल, प्रत्येक १।।। तोले, कुन्दर, छोटी इलायची, बालछड़, १।।-१।। तोले, मस्तगी, कबाबचीनी, सौंफ़, बड़ी इलायची, दारचीनी, प्रयेक १। तोले, बादामगिरी १७।। तोले, चलग़ोज़ाबीज ३५ तोले, द्राक्षा बीज रहित ७० तोले, प्रथम दोनों हरड़ को तथा मग़ज़यात को रोग़न जैतून मे भून लें, कि वह सुरख़ हो जायें, फिर बाकी औषध को और द्राक्षा को इतना कूटें, कि एक जीव हो जायें, तत्पश्चात जंगली बेर समान वटी करें।

मात्रा—१ से तीन वटी, भोजनोपरान्त दें।

गुण—इसको भी हब्ब हींग कहते हैं, वीर्यप्रद है, तथा पाचक और दीपक है।

हब्ब हमल (गर्भवटी)

कस्तूरी २ रत्ती, अहिफेन १ रत्ती, जायफल १ नग, केशर १ माशा, भांग दो माशे, गुड़ पुराना ६ माशे, सुपारी ३ नग, लौंग

४ नग, सब औषध को कूट पीसकर गुड़ पुराने में मिलाकर जंगली बेर के समान वटी करें।

मात्रा—मासिक धर्म पश्चात् प्रति दिन तीन दिवस तक १-१ वटी माजून मोचरस ७ माशे में मिलाकर दूध के साथ प्रयोग करें, और चौथे दिन सम्भोग करें।

गुण—गर्भाशय के विकारों को नष्ट करती है। गर्भाधान में सहायता देती है। यदि मासिक धर्म ठीक हो, तो अवश्य ही गर्भ ठहर जाता है।

(२) मुश्क (कस्तूरी) १ माशा, तबाशीर ३ माशे, केशर ४ माशे, ज़रवरद (गुलाबजीरा) १ माशा, जीरा सफ़ेद ४ माशा, तुलसी पत्र दो तोला, जावित्री दो तोले, धनन्तर बीज ११ नग, सहदेवी पत्र ४ तोले, सब औषध को कूटपीस कर १-१ रत्ती की वटी करें।

मात्रा, प्रयोग विधि तथा गुण—गर्भ के प्रथम सप्ताह में तीन वटी दिन में तीन वार खिलायें, परन्तु एक सप्ताह बाद दो-दो वटी प्रातः सायं दें। यह वटी गर्भ की रक्षा करती है। गर्भ को जीवत रखती है।

हब्ब ख़ास

विषमुष्टि शुद्ध ६ माशे, लौहभस्म दो तोले, दारचीनी, जायफल, जावित्री, जदवारख़ताई, लौंग, शिलाजीत १-१ तोले, अम्बरशब, कस्तूरी, केशर, अहिफ़ेन, चांदीवर्क ३-३ माशे, स्वर्ण वर्क १ माशा, सब औषध को बारीक पीसकर पान के रस में भावित कर चने समान वटी करें। स्वर्ण वर्क गोलीयों पर चढ़ा लेवें।

मात्रा—१-१ वटी, प्रातः—सायं गौ दुग्ध से दें।

गुण—शारीरिक दुर्बलता को नष्ट करती है, वाजीकरण है।

हब्ब ख़बसलहदीद (मण्डूरवटी)

मण्डूर को बारीक पीस कर सात दिन तक गन्दना बूटी के रस में भावना दें, और रोज़ाना रस बदलते रहें, फिर शुष्क कर लोहे के तवे पर भून ल, अब यह मण्डूर ३८ तोले, हब्बालरशाद, ८ तोले, गन्दनाबीज, जरजीरबीज, करफ़स बीज, गाजर बीज,

मूली बीज, मेथी बीज, प्याज़ बीज, लघुएलाबीज, प्रत्येक सात तोले, सब औषध को कूटछान कर गन्दना स्वरस में खरल कर चने समान वटी करें।

मात्रा—तीन वटी, प्रातः तीन सायं काल प्रयोग करें।

गुण—पाचक है, पाण्डूनाशक, रक्तवर्धक, अर्श के लिये लाभप्रद है, अर्श जनित प्रवाहिका में भी उत्तम है, पुराने सुज़ाक में भी लाभप्रद है।

हब्ब डब्बा इतफ़ाल (बालरोगहर वटीं)

तुथ्थ भुना हुआ, सौभाग्य भुना हुआ, ३—३ माशे लेकर बकरी दूध में वा पानी में खरल कर बाजरा समान वटी करें।

मात्रा——आवश्यकतानुसार—१ वा दो वटी मां के दूध में वा किसी योग्य क्वाथ से दें।

गुण—बच्चों के डब्बा रोग में उत्तम हैं।

राजगुटी

सोंठ, ३ तोले, मिरच काली, सौंफ़, पोदीना शुष्क, कपूर कचरी २-२ तोले, पिप्पली, छोटी इलायची, पत्रज, ६-६ माशे, बालछड़ १॥ माशे, सौभाग्य भस्म, लवपुरी लवण, सैंधव लवण १-१ तोला, शगूफ़ा अज़ख़र, नरकचूर ९-९ माशे, दारचीनी ३ माशे, मस्तगी-रूमी ४ माशे, सबका बारीक चूर्ण करें, अमचूर श्वेत दो तोले, मिरचलाल ११ नग, पानी में पीस कर औषध के चूर्ण को इस में खरल करें, शुष्क होने पर गोलीयां बना लें, (शरद ऋतु में प्रयोग करने के लिये इस में ५ माशे लवंग और डाल दें)।

मात्रा—भोजनोपरान्त १ वा दो वटी प्रयोग करें।

गुण—दीपक, पाचक तथा अजीर्ण नाशक है, विसूचिका में भी लाभप्रद है।

हब्ब रबय

पलाशपापड़ाबीज, करंजुआबीज बारीक पीस कर चने समान वटी करें।

मात्रा—दिन में ३ वार १–१ वटी ४–४ घण्टें पश्चात् जल से दें।

गुण—चौथीया ज्वर में उत्तम हैं।

हब्ब रसौत

शुद्ध रसौत, गुग्गुलु शुद्ध, गेरू, मग़ज़ तुख़मनीम, मग़ज़ तुख़म बकायन, तुख़म गन्दना, सब समभाग लें, प्रथम गुग्गुलु को गन्दना बूटी के रस में हल कर लें, फिर बाकी सब औषध का चूर्ण कर मिलाकर चने परिमाण वटी करें।

मात्रा तथा प्रयोग विधि—प्रातः सायं १-१ वटी, ज्वारश जालीनूस ७ माशे में मिलाकर खिलायें, रक्तार्श में ३ वटी अर्क गाऊज़बान १० तोले शरबत अन्जबार दो तोले के साथ दें।

गुण—यह वटी अर्श में लाभप्रद है। रक्त अर्श में खून को बन्द करती है।

(२) एक मिट्टी के बरतन को आग पर खूब लाल कर दें, फिर इसमें हरड़ काबुली घी में अच्छी तरह स्नेहाक्त कर इस बरतन में भूनें, जब सुरख़ हो जाये, तो छिलका और गुठली दूर करके कूट लें, समभाग रसौत मिलाकर जल से माष के समान वटी करें।

मात्रा तथा गुण—२–२ वटी, प्रातः सायं अर्क गाऊज़बान १० तोले, शरबत अन्जबार दो तोले के साथ प्रयोग करें। रक्तार्श में लाभप्रद है।

हब्ब राल

रालश्वेत, गोंद कीकर दोनों समभाग लेकर ४–४ रत्ती की वटी करें, १-१ वटी प्रयोग करें।

गुण—अतिसार बन्द करती है।

हब्ब सुरख़ी चशम

गेरू ४॥ तोले, अहिफेन १ तोला, सोंठ, गोंदकीकर प्रत्येक ३ माशे, औषध को कूट पीस कर चने समान वटी करें, १ वटी पानी में घिस कर, दिन में तीन बार पपोटों पर अर्ध उष्ण लेप करें, यह वटी आंख दुखने के कुछ दिवस बाद प्रयोग करें।

गुण—यह वटी आंख की सुरखी (लालिमा) और पीड़ा में लाभप्रद है।

हब्ब सुरख़ बवासीर (अर्शहर वटी)

रसोत शुद्ध दो तोले, गेरू ४ तोले दोनों को कुकरौन्दा रस में खरल करके चने समान वटी करें।

मात्रा—३–४ वटी, अर्क गाऊज़बान १० तोले शरबत अंजबार दो तोले के साथ प्रयोग करें।

गुण—रक्त अर्श में रक्त को शीघ्र बन्द करती है।

हब्ब सुरख़बाद

रसौत ९ माशे, सन्दल सुरख़ २ माशे, नरकचूर ३ माशे, अहिफेन, हलदी, मेहन्दीपत्र, १-१ माशे, मुर्दासंग, चाकसू ४-४ रत्ती, नीमपत्र, बकायनपत्र (महनिम्बपत्र), १५–१५ पत्र सब को कूट छान कर मूंग समान वटी करें।

मात्रा—आवश्यकतानुसार १-१ वटी माता के दूध में बच्चे को दें।

गुण—बच्चों के सुरख़बाद तथा रक्तदुष्टि में उत्तम है।

सुरफ़ा वटी

गोंद बबूल, रबुलसूस, ख़शख़ाशबीज, निशास्ता, अहिफेन, १-१ तोला, सब औषध को खरल कर बहीदाना के स्वरस में चने समान वटी करें, १ वा दो वटी मुख में रखकर चूसें।

गुण—शुष्क तथा प्रतिश्याय जनित खांसी और गले की ख़राश में लाभप्रद हैं।

(२) गोंदकीकर, रबुलसूस, गोंद कतीरा, बहीदाना बीज, मग़ज़ बादाम, मग़ज़ पिस्ता, मग़ज़ ख़शख़ाशसफ़ेद, शकरतैग़ाल, १-१ माशे, सब को पोस्त डोडा के क्वाथ में खरलकर चने समान वटी करें, १–१ वटी मुंह में रखकर चूसें।

गुण—कास में लाभप्रद है।

हब्ब सुरंजान

मुसब्बर, हरड़, सुरंजान मधुर, १–१ तोला सब को बारीक पीस कर जल के साथ चने समान वटी करें।

मात्रा—प्रातः सायं ३-३ माशे जल के साथ दें।

गुण—आमवात, वातरक्त, गृध्रसी में लाभप्रद है ।

हब्ब सोज़ाक

गिलोय सत्व, स्फटिका, दो-दो तोले, कलमी शोरा, छोटीएला-बीज, १-१ तोले, कत्था सफेद ६ माशे, सब को कूट छान कर गुड़ में मिलाकर चने समान वटी करें।

मात्रा—३ वटी, प्रातः को ताज़ा जल से प्रयोग करें, और प्रतिदिन १ वटी बढ़ाते रहें, सात दिन के बाद और वृद्धि न करें।

गुण—सोज़ाक (पूयमेह) में लाभप्रद है।

(२) वंशलोचन दो तोले, गेरू १॥ तोले, कलमीशोरा ९ माशे, कुन्दर ५ माशे, गिलअरमनी ७ माशे, संगज्राहत, (दुग्ध पाषाण), बड़ी इलायची, कहरबा शमई, गोंदकीकर, हिजरलयहूद ९—९ माशे, समुद्रझाग ५ माशे, सन्दल तैल २॥ माशे, रसौत शुद्ध ४ तोले, स्फटिका भुनी हुई दो तोले, अहिफेन १४ माशे, नीमपत्र ५ नग, केशर ५ रत्ती, शुष्क औषध को कूट छान कर रोग़न सन्दल में मिलावें, रसौत तथा अहिफेन को पानी में हल करके छान लें, और नीमपत्र का स्वरस निकालें, इसमें केशर हल करें, अब इनमें बाकी सब चीज़ के चूर्ण को मिलाकर खरल कर चने समान वटी करें।

मात्रा—दो वटी, प्रातः जल से दें ।

गुण—सुजाक में लाभप्रद है ।

हब्ब समाक (तिंतड़ीक वटी)

समाक, माजू सबज़, अनार का छिलका, मोड़ीयों बीज, द्राक्षा-बीज, अहिफेन, १—१ माशा लेकर बारीक चूर्ण करें, इसपग़ोल वा गोंद कीकर के स्वरस की सहायता से चने समान वटी करें।

मात्रा—१—१ वटी, दिन में २ वा ३ बार प्रयोग करें।

गुण—पाचक तथा अतिसार को रोकने में उपयोगी है।

हब्ब समलफ़ार (मल्ल वटी)

मल्ल श्वेत आधा रत्ती, काली मिरच ७ नग दोनों को मिलाकर २० वटी करें।

मात्रा—२–३ वटी, दिन में तीन वार भोजनोपरान्त दें।
गुण—जीर्ण विषमज्वर में उत्तम हैं।

हब्ब सियाह चशम (कृष्णवटी)

रसौंत शुद्ध, ४।। तोले, फटकड़ी भुनी हुई २। तोले, अहिफ़ेन १ तोला, नीमपत्र सबज़ ५ पत्र, केशर ५ रत्ती सब औषध को लोहे की कड़ाही में डालकर थोड़ा पानी डालकर दस्ते से खूब रगड़ें, जब औषध एकजीव हो जायें, तो माष समान वटी करें।

मात्रा तथा गुण—१ वटी, पोस्तडोडा के जल से वा शुद्ध जल से घिसकर ३–४ वार पपोटों पर लगावें। आंख दुखने में, (नेत्राभिष्यन्द) आंख की सुरखी तथा जाले में उपयोगी है।

हब्ब शबीयार

अयारज फैकरा १२ तोले, हरड़, कृष्ण हरड़ ३–३ तोले, गुलाबपुष्प २ तोले, असारा ग़ाफ़स, मस्तगी, अनीसून १–१ तोला सब औषध को कूट छान कर जल से चने समान वटी करें।

मात्रा—३ माशे की मात्रा में चार घड़ी रात रहे, उठकर अर्क गाऊजबान १२ तोले के साथ प्रयोग करें। प्रातः पाचक योग पीवें, तीसरे प्रहर मूंग की दाल की खिचड़ी खायें। बवासीरी मस्सों पर इसे रोगन बादाम में हल करके प्रतिदिन लगावें।

गुण—यह वटी मस्तिष्क, आमाशय, आन्त्र का संशोधन करती है, गन्दे मल को निकालती है, अर्श, जीर्णज्वर, पुरानी कास चौथीया ज्वर, यकृत तथा प्लीहा शोथ को नष्ट करती है।

(२) हरड़, बहेड़ा, सनाय, ५–५ तोले, फूल गुलाब, कालादाना प्रत्येक ३।। तोले, मुसब्बर, ३ तोले, कुन्दर १। तोला, गोंद कतीरा १० माशे, शुद्ध गुग्गुल, असारा रेवन्द, मस्तगी ३–३ माशे, कूट छानकर पानी के संग मूंग समान वटी करके चांदी के वर्क चढ़ायें।

मात्रा—गुण—उपरोक्त।

हब्बशफ़ा

शुद्ध धस्तुरबीज ३ तोले, रेवन्दचीनी २ तोले, सोंठ, गोंद कीकर, १–१ तोला, गोंदकीकर को पानी में हल करके बाकी औषध को बारीक पीसकर इसमें मिलाकर खरल कर चने समान वटी करें।

मात्रा—१ वटी प्रातः जल से दें।

गुण—शिरशूल, वातपित्तज्वर, प्रतिश्याय में लाभप्रद है, शरीर के बल, तेज को स्थिर रखती है। अहिफेन की आदत को छुड़ा देती है।

हब्ब शहका

जवक्षार ६ माशे, काली मिरच १०॥ माशे, पिप्पली २१ माशे, अनारदाना ४२ माशे, गुड़ ८४ माशे, सब औषध को कूट पीसकर गुड़ में मिलाकर चने समान वटी करें।

मात्रा—आवश्यकतानुसार २ वटी प्रातः, २ सायं के समय प्रयोग करें।

गुण—कास, तथा काली खांसी में उत्तम हैं।

हब्ब शाही

शुद्ध कुचला, राईं, सोंठ, सौंफ़, मस्तगी, अनीसून, करफ़सबीज, सोहागा, कृष्ण लवण, नवसादर, लोटासज्जी, समभाग लेकर बारीक चूर्ण करें, पानी वा इसपग़ोल के पानी के साथ चने के समान वटी करें।

मात्रा—२ से ४ वटी, भोजनोपरान्त खावें।

गुण—यह उदर के सब विकारों को दूर करती है। अजीर्ण नाशक है।

हब्बसदफ़

इसपग़ोल का छिलका, गोंदकतीरा, ख़शख़ाशबीज श्वेत, सुदाबपत्र, सौंफ़, धनियांशुष्क, गुलाबपुष्प १०–१० तोले, सदफ़ (सिपियां, शुक्ति), मस्तगी रूमी ८–८ तोले, माज़ू सब्ज़ ६ तोले, सब औषध को बारीक खरल करें। गोंदकीकर के जल की सहायता से चने ससान वटी करें, रूमी मस्तगी को पृथक खरल करें।

मात्रा--दो वटी, प्रातः सायं दूध के साथ दें, यह गोलीयां कब्ज़ नहीं करती ।

गुण--प्रमेह, स्वप्नदोष में उत्तम है।

हब्ब सरह (अपस्मारवटी)

कुन्दर, मुसब्बर, जुन्दवदस्तर १-१ माशा, लेकर कूट पीसकर जल से वटी मूंग समान बनावें ।

मात्रा--प्रातः को दो-तीन वटी जल के साथ बड़ों को; और बच्चों को आयु अनुसार माता के दूध से दें ।

गुण--अपस्मार तथा बालग्रह में उत्तम है।

हब्ब ज़ीकलनफ़स (श्वासहरवटी)

पिप्पली, काकड़ासिंगी, मधुयष्टि, लौंग, मधुर अनार का छिलका, यवक्षार प्रत्येक ६ माशे कूट छानकर मधु से चने समान वटी करें।

मात्रा--१-१ वटी, प्रातः सायं जल से दें ।

गुण--कास श्वास में उत्तम है ।

प्लैग वटी (हब्ब ताऊन)

ज़हरमोहरा असली, जदवार असली, दरूनजअकरबी, मुरमकी, तबाशीर, कपूंर, ६-६ माशे, सब औषध को गुलाब अर्क में खरल कर चने समान वटी करें।

मात्रा तथा गुण--१ वा दो वटी, दिन में तीन वार अर्क बेदमुश्क, गुलाब के साथ प्रयोग करें। यह वटी प्लैग के लिये उत्तम है ।

हब्ब ताऊन अम्बरी ज्वाहरवालीं

दरूनजअकरबी, जदवार (निर्बसी), कचूर, बहमन सुरख, श्वेत ६-६ माशे, सन्दल सफ़ेद, गिलं मखतूम (एक प्रकार की मिट्टी), गिल अरमनी (यह भी एक प्रकार की मिट्टी है), दारचीनी, पाषाणभेद, तबाशीर, ज़रावन्द मदहरज (गोल जरावन्द), हब्ब बलसान ४-४ माशा, केशर, ज़हरमोहरा, मुक्ता, याकूत, ३-३ माशे, अम्बर, चांदी वर्क, स्वर्णवर्क १॥-१॥ माशे, अर्क गुलाब,

अर्क बेदमुष्क, अर्क केवड़ा प्रत्येक ५-५ तोले, ज्वाहरात को अर्क में खरल करें, अम्बर, केशर को औषध के चूर्ण में खरल करें, और १-१ रत्ती की वटी करें। ऊपर चांदी तथा स्वर्ण के वरक लपेट दें।

मात्रा—रोग अवस्था में दिन में तीन वार २-२ वटी मफरह बारद में मिलाकर वा अर्क गुलाब ५ तोले के साथ प्रयोग करें, प्रतिबन्ध रूप में प्रतिदिन दो वटी जल से खा लेवें।

गुण—प्लेग की रोग अवस्था में वा प्रतिबन्ध रूप में सेवन करने में अति उत्तम औषध है।

हब्ब असारा

असारा रेवन्द, मुसब्बर, १-१ तोला, मस्तगीरूमी ६ माशे तीनों को वारीक पीस छानकर चने समान वटी करें।

मात्रा—३-४ वटी, रात को पानी के साथ खा लेवें।

गुण—विबन्ध नाशक है, और आसानी से दस्त लाती है।

हब्ब अम्बर मोमयाई

शुद्ध शिलाजीत, मस्तगीरूमी, बंशलोचन, मुक्ता, लौंग, जावित्री, जायफ़ल, बहमन सुरख़, सफेद, दारचीनी, शकाकल मिश्री, सोंठ, दरूनज अकरबी, अगर, ऊदसलीब, साहलबमिश्री, जदवार ख़ताई, प्रत्येक ६ रत्ती, फ़ादजहरमदनी, अम्बरशब, कस्तूरी, १-१ माशा, [illegible]रबहुटी ५ नग, मगज़ सिर कजंशक नर ख़ानगी (घरेलु चिड़िया नर के शिर का मग़ज़) ३ माशे, स्वर्ण पत्र ५ पत्र, प्रथम शिलाजीत, अम्बर, मस्तगी को १ शीशी में भरकर पिस्ता तैल इस कदर डालें, कि औषध से ऊपर रहे, फिर किसी देगची में शीशी रखकर ग्रीवा तक पानी में डुबोकर शनैः शनैः गर्मी पहुँचायें, जब शीशी की औषध तैल में गर्मी खा कर पिघल जायें, तो निकाल लें। अब फादज़हर, कस्तूरी, मुक्ता, स्वर्णपत्र को अर्क बेदमुष्क में हल करलें, और बाकी औषध को कूट छान लें। मग़ज़ शिर कंजशक नर को थोड़ा घृत में भून करके बाकी औषध चूर्ण में खरल कर चने समान वटी करें। और उनपर स्वर्णबर्क चढ़ा देवें।

मात्रा—दो वटी रात्री सोते समय गौदुग्ध से दें।

गुण—ध्वज भंग, हृदय, मस्तिष्क दुर्बलता, शिश्न शिथिलता तथा शारीरक दुर्बलता में अतीव उत्तम हैं।

हब्ब ग़ाफ़स

असारा ग़ाफ़स (ग़ाफ़स का घन सत्व) १॥। माशे, तबाशीर, बालछड़ ७–७ माशे, फूल गुलाब १॥ तोले सब को पानी में पीसकर चने समान वटी करें।

मात्रा—३ माशे की मात्रा अर्क सौंफ, अर्क मको ६–६ तोले वा अर्क गाऊजबान १२ तोले के साथ प्रयोग करें।

गुण—यह वटी, वात कफ़ज ज्वरों में उत्तम है। जीर्ण ज्वर में भी लाभप्रद है।

(२) अफ़सनतीन, हरड़, असारा ग़ाफ़स, मस्तगीरूमी, केशर, रेवन्दचीनी, अनीसून, लाक्षा धुली हुई, पितपापड़ा, आयरजफैकरा प्रत्येक दो तोले, सबको पीसकर चने समान वटी करें।

मात्रा—तथा गुण उपरोक्त।

हब्ब फ़ालज

मल्ल शुद्ध, तबाशीर सफेद, १–१ माशा, कत्थ सफ़ेद २ माशे, बारीक पीसकर अद्रक रस में खरल कर १–१ रत्ती की वटी करें।

मात्रा—१–१ वटी, प्रातः सायं खिलायें, तीसरे दिन खाँड का शरबत पिलायें, लवण का त्याग रखें।

गुण—फ़ालज (अर्धाङ्गवात, अधरंग) में उत्तम है, पहिले विरेचन अवश्य दे लें।

हब्ब फिलफ़िल

रबुलसूस (मधुयष्टिका घन सत्व), मिरच काली, कच्ची शक्कर, तीनों को लेकर बारीक कर जल से काली मिरच समान वटी करें। आवश्यकतानुसार, १–१ वटी मुख में रखकर चूसें।

गुण—कफ़ज कास में प्रभावकारी हैं।

हब्ब कपूंर मरवारीदी

मुक्ता १ तोला, जहरमोहरा ४ तोले, चन्दन सफेद २ तोले, जदवार ९ माशे, कस्तूरी, गोंदकीकर प्रत्येक १॥ माशे, चांदीपत्र ४ रत्ती, गोंदकीकर को थोड़े जल में हल करें, बाकी औषध के चूर्ण को इसमें गूंद कर चने समान वटी करें।

मात्रा—१–१ वटी, प्रातः सायं अर्क गाऊज़बान ५ तोले, अर्क बेद मुशक ३ तोले, शरबत मधुर अनार दो तोले के साथ प्रयोग करें।

गुण—सब प्रकार के ज्वर, संक्रामक रोग, तीव्र ज्वर तथा प्लैग में उत्तम है।

हब्ब किबद नवसाद्दरी

नवसादर, सैंधवलवण, कृष्ण लवण, सौभाग्य भस्म, लवपुरी लवण, नरकचूर, हरीतकी कृष्ण, हरड़, वायविड़ंग, मिरच, सोंठ, १–१ तोला, सब को कूट छान कर गुलाब अर्क में थोड़ी सी गोंद मिलाकर, उसकी सहायता से चने समान वटी करें।

मात्रा—२-२ वटी, भोजनोपरान्त दें।

गुण—यकृत की सख़्ती को दूर करती हैं, अजीर्ण, विबन्ध-नाशक है।

हब्ब कत्थ

कत्थ पापड़ीया, रसकपूंर, कपूर, १–१ तोले, मूसली सफ़ेद, दो तोले, सब को बारीक पीस कर चने समान वटी करे।

मात्रा—१ वटी, द्राक्षा (बीज रहित) में रखकर निगल जायें, ताकि दांतों को न लगे, चने की रोटी और अरहर की दाल खावें।

गुण—आतशक में अत्यन्त उत्तम है।

हब्ब कुचला

कुचला को एक बरतन में डालकर घृतकुमारी का गूदा भर देवें, गूदा शुष्क होने पर अद्रक रस में १५ दिन तक भिगो रखें, फिर छील लें, और खरल करके रख लें, अब यह कुचिला, केशर, १–१ तोले, दारचीनी, जावित्री, सुरंजान, ४–४ तोले, सोंठ १०

तोले, बड़ी इलायची बीज ५ तोले, सब को बारीक करके जंगली बेर समान वटी करें ।

मात्रा—१-१ वटी, प्रातः सायं दूध के साथ प्रयोग करें ।

गुण—वीर्य बल्य, शक्तिप्रद तथा आमवात, वातिक शूल में उपयोगी है ।

हब्ब किशमिश

लौंग, सौंफ़, अनीसून रूमी ३-३ माशे, बनफ़शा पुष्प ६ माशे, हरड़, किशमिश ताज़ा सबज़, १-१ तोला, सनाय, तुरंजबीन (यवासशर्करा), गुलकन्द सूर्यतापी दो-दो तोले, सब औषध को कूट छान कर, किशमिश और गुलकन्द में मिलाकर कूटें, और चने समान वटी करें ।

मात्रा—विबन्ध में ७ माशे, रात्री सोते समय गरम पानी से खा लेवें, और विरेचन के लिये १ तोला की मात्रा में अर्क सौंफ़ ६ तोले अर्क गाऊज़बान ६ तोले, शरबत दीनार ४ तोले के साथ प्रयोग करें ।

गुण—मृदु प्रकृति वालों के लिये उत्तम विरेचन है, यदि किसी और विरेचक औषध से दस्त न आते हों, तो इसको देने से दस्त खुल कर आ जाते हैं ।

हब्ब किमाये इशरत

स्वर्ण वर्क, चांदी वर्क, कस्तूरी, अम्बर, १—१ माशा, ज़रिशक, मुनक्का, १—१ तोला, जदवार खताई १।।। तोला, जावित्री २ तोले, तेजपात १। तोले, कबाबा, तगर, हब्ब सनोबर, मुरमकी, जायफ़ल २—२ तोले, पिप्पली, बालछड़, दरूनज अकरबी, ऊदकमारी, लौंग, छोटी इलायची प्रत्येक ४० माशे, दारचीनी, कचूर, नागरमोथा, मेहीसाला, २—२ तोले, सोंठ, मस्तगी रूमी, काली मिरच, करफ़स बीज, ५—५ तोले, केशर, अहिफेन, १—१ तोला, प्रवाल भस्म, यशप भस्म, अकीक भस्म, कहरबा शमई ६—६ माशे, बंगभस्म ३ माशे । कस्तूरी, अम्बर, केशर, मेहीसाला, स्वर्णपत्र, ज्वाहरात आदि को बाकी औषध के चूर्ण में बारीक खरल करें, और रोग़न बळसान की सहायता से चने समान वटी करें ।

मात्रा---१-१ वटी, प्रातः सायं गौदुग्ध से खावें।

गुण---यह वटी पुंसक शक्ति दाता तथा उत्तमांगों को बल देने में प्रसिद्ध तथा प्रभावशाली है।

अहिफ़ेन वटी

जायफल का भीतरी गूदा निकाल कर इसके स्थान में अहिफ़ेन १ तोला, जदवार बनफ़सजी, ३ माशे, अहिफेन १ माशा का चूर्ण कर मिलाकर भर देवें, और गन्दम के खमीरे आटे से मुख बन्द करके गरम भूबल में दबा दें, जब पक जाये, तो आटे को दूर करके सब को खूब बारीक करें, और मरिच समान वटी करें।

मात्रा---१ से दो वटी।

गुण--बल्य, स्तम्भक, और प्रतिश्याय, में उत्तम है।

हब्ब कोचक (हब्ब चरस)

जदवार, ४॥ माशे, चरस (भांग सत्व), गाजर बीज, साहल्ब मिश्री ९ माशे, दरूनज अकरबी, फ़रफ्यूं प्रत्येक १३॥ माशे, सब औषध को कूट छान कर पोस्त डोडा के स्वरस की सहायता से मरिच समान वटी करें।

मात्रा--१ वटी।

गुण--स्तम्भक हैं, शीघ्र पतन में लाभप्रद हैं।

हब्ब खुशकैफ़ (आनन्ददा वटी)

जायफल, पानजड़, साहलब मिश्री प्रत्येक २८ माशे, शुद्ध अहि-फेन २१ माशे, जदवार बनफसजी १४ माशे, सब औषध को कूट छान कर चने समान वटी करें।

मात्रा--१ से दो वटी।

गुण--स्तम्भक है।

हब्ब कोबा (दाद हर वटी)

पारद, गन्धक, मुरदासंग, खांड, गोंद कीकर, लेकर खरल करें, पानी से चने समान वटी करें। आवश्यकतानुसार, १ वटी पानी वा थूक में घिसकर दाद पर लगावें।

गुण---दाद, खजली तथा चम्बल में लाभप्रद है।

हब्ब काबज

अहिफेन, कतीरा, माईं लघु, अस्पस्त बीज, अकाकीया (कीकर का घन सत्व), फूल गुलाब, मटर के दाने, मोड़ीयोंबीज, १—१ माशे, सब औषध को खरल कर गोंद कीकर स्वरस के साथ चने समान वटी करें।

मात्रा—१ से ३ वटी, आवश्यकतानुसार दें।

गुण—दस्तों को शीघ्रता से बन्द करती हैं।

हब्ब काबज़ (२)

एक मोटा सा छुहारा लेकर गुठली निकाल दें, और गुठली के स्थान मे अहिफेन भरकर धागा लपेट देवें। ऊपर गूंदे आटे की मोटी तह चढ़ाकर गरम भूबल में रख दें। जब आटा सुर्ख हो जाये। तो निकाल कर आटा छुडा देवें, और सब को बारीक करके मूंग समान वटी करें।

मात्रा—१ वटी, प्रातः १ मध्यान्ह और १ रात्री को देवें।

गुण—यह वटी, दस्तों को अत्यन्त शीघ्रता से बन्द करती हैं।

हब्ब गुल आक

आक पुष्प, सोंठ, कालीमिरच, बांसवृक्षपत्र, समभाग लेकर बारीक पीस चने समान वटी करें।

मात्रा—२—२ वटी, प्रातः सायं जल से देवें।

गुण—उदरशूल, अजीर्ण; अतिसार में लाभप्रद है।

हब्ब गुल पिस्ता

पिस्ता पुष्प, १ तोला, बहेड़ा २ तोले दोनों को कूट छानकर अद्रक रस में खरल कर मूंग समान वटी करें। १ से दो वटी मुंह में रखकर चूसें।

गुण—कफ़ज कास में उत्तम है। छाती से कफ़ को निकालती है।

हब्ब लबलखशखाश

केशर २। माशे, पोस्त बेख़ लफाह (लफ़ाह को इंगलिश में बेलाडोना (Belladona) कहते हैं। उसकी जड़ की छाल) ४॥

माशे, यदि, यह न मिले, तो भांग पत्र डालें। अजवायन खुरासानी, मस्तगीरूमी, कहरूबा, गोंदकतीरा, निशास्ता, गोंदकीकर, काहुबीज, गाऊज़बान पुष्प, ख़शख़ाशबीज, मग़ज़ तुख़म ख़यारैन, अहिफ़ेन, प्रत्येक ९ माशे, रबुलसूस १० माशे, गिल अंरमनी १॥ तोले, रवेन्द चीनी ७ माशे, सबको कूट छानकर, चूर्ण करें। और पोस्त डोडा के क्वाथ में खरल कर मिरच समान वटी करें।

मात्रा—जीर्ण प्रतिश्याय, में १ गोली अर्क गाऊजबान के साथ और इमसाक (स्तम्भन) के लिये एक वटी रोगी को दूध के साथ दें।

गुण—नज़ला (जीर्ण प्रतिश्याय), गले की ख़राश, खांसी के लिये अत्यन्त लाभप्रद है, स्तम्भक है।

हब्ब लुआब बहीदाना

मग़ज़ बहीदाना, मग़ज़ तुख़म कद्दू, मग़ज़ तुख़म ख़यारैन २–२ माशे, केशर १ माशा, गोंदकीकर, निशास्ता, गोंदकतीरा ३–३ माशे, मग़ज़ बादाम, द्राक्षा, ख़शख़ाश सफेद ४–४ माशे, मिश्री ७ माशे, रबुलसूस, २ माशे, कूट छानकर बहिदाना के लुआब में चने समान वटी करें, १ वा दो वटी मुंह में रखकर चूसें।

गुण—यह वटी सिल की खांसी में लाभप्रद है।

हब्ब लबान वा हब्ब कुन्दर

कुन्दर, बाकला का आटा, बहिदाना मग़ज़, प्रत्येक ७ माशे, रबुलसूस, कतीरा, बनफशा पुष्प, तुरंजबीन, ५–५ माशे, मुनक्का ४ माशे, अनीसून, सौंफ़, मग़ज़ बादाम कड़वे, खाँड, २–२ माशे सब औषध को कूटकर इपगोल के रस से चने समान वटी करें। आवश्यकतानुसारे १–१ वटो मुंह में रखकर चूसें।

गुण—जिस कास में वमन होती है। उसमें अत्यन्त उपयोगी है।

हब्ब लीमूं

कत्थ सफ़ेद, कालादाना, बड़ी इलायची का छिलका जला हुआ, सुपारी जीर्ण, १–१ तोला, मुरदासंग २ तोले, सबको बारीक करके

१०१ निंबू रस से भावित करें, रस सूखने पर चने समान वटी करें।

मात्रा—प्रातः सायं १–१ बटी पानी के साथ प्रयोग करें, मूंग की दाल तथा लौकी प्रयोग न करें।

गुण—आतशक, तथा तदजनित जोड़ों की पीड़ा में लाभप्रद है।

हब्ब मुहलल औराम (शोथ हरवटी)

चने का आटा, थुहर (स्नुही) के दूध में भावित करके ग़लोला सा बना कर गन्दम का आटा ऊपर से लपेट दें, और गरम भूबल में दबा दें। पक जाने पर निकाल कर चने समान वटी करें।

गुण तथा मात्रा–१–१ वटी, प्रातः सायं योग्य अनुपान से दें, यह वटी शरीर के भीतरी अंगों की शोथ में अति उत्तम है।

हब्ब मदर

मुसब्बर, २ तोले, हीराकासीस, केशर १–१ तोला, सब को पानी में पीस कर चने समान वटो करें।

गुण–मात्रा तथा प्रयोगविधि–मासिक धर्म्म से तीन दिन पूर्व दिन में तीन बार जल से दें। मासिक धर्म्म प्रारम्भ हो जाने पर बन्द कर दें, इन गोलीयों के प्रयोग से मासिक धर्म खुल जाते हैं।

हब्ब मरवारीदी

सौभागय अर्ध भुना, माजू जला हुआ ५–५ माशे, मस्तगीरूमी १० माशे, शुद्ध विषमुष्टि ५ माशे, मुक्ता, अम्बरशब १। माशे, सब औषध को बारीक पीस कर अर्क गुलाब से चने समान वटी करें।

मात्रा–प्रात, सायं १–१ वटी, अर्क अम्बर ५ तोले के साथ खावें, वा दूध से प्रयोग करें।

गुण–श्वेत प्रदर, तथा स्त्रियों की दुर्बलता में उपयोगी हैं।

हब्ब मुसहल (विरेचक वटी)

शुद्ध जयपाल, कृष्ण हरीतकी १–१ तोले, साठी के चावल २ तोले, सब औषध को कूट पीस कर चने समान वटी करें।

मात्रा—आवश्यकतानुसार, १ वा दो वटी प्रातः समय शीतल जल से लें, दस्त बन्द करने हों, तो गरम पानी पीवें।

गुण—अत्यन्त उत्तम विरेचन हैं।

(२) सौंफ़, कलौंजी, हरीतकी कृष्ण, त्रिवी, १—१ तोला, शुद्ध जयपाल २ तोले, सब औषध को खरल कर अर्क गुलाब से चने समान वटी करें।

मात्रा—वातिक पाचक क्वाथ पीने उपरान्त ४ वटी योग्य अनुपान से लें।

गुण—वातिक दोष को रेचन लाकर नष्ट करती है।

हब्ब मस्कीन निवाज़

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, पिप्पली, काली मिरच, सौभाग्य, लोटा सज्जी, रेवन्दचीनी, शुद्ध वत्सनाभ, शुद्ध हरिताल, शुद्ध जयपाल, १—१ तोला, प्रथम कज्जली करें। फिर बाकी औषध का बारीक चूर्ण कर भांगरा रस तथा पान रस से भावित करें, मोठ समान वटी करें।

मात्रा—१ वा दो वटी, अर्क सौंफ़ से प्रतिदिन प्रयोग करें। विबन्ध के लिये, दो वटी रात्री को सोते समय उष्ण दूध से प्रयोग करें, छोटों को आयु अनुसार दें।

गुण—आमाशय, आंत्र तथा मस्तिश्क का संशोधन करती है, विरेचक है, ज्वर में भी उत्तम है।

हब्ब मुसफ़ीखून (रक्त शोधन वटी)

रसौत, शुद्ध चाकसू, मुण्डी, ब्रह्मडण्डी, नीलकण्ठी, नीलोफ़र पुश्प, सरफुंका, चन्दन सफेद, चन्दन सुरख़, पितपापड़ा, महन्दी पत्र, जवांसा, नीमपत्र, बकायन पत्र, धनियां शुष्क, काचनार पुष्प, १—१ तोला सब औषध को कूट छान जल से चने समान वटी करें।

मात्रा तथा प्रयोग विधि—२ वटी, अर्क मरकब मुसफी खून १२ तोले के साथ शरबत उन्नाब २ तोले मिलाकर प्रयोग करें, बालकों को आयु अनुसार दें।

गुण—परम रक्त शोधक है, आतशक में भी लाभप्रद है।

हब्ब मग़ज बादाम

मग़ज़ बादाम मधुर, (छिले हुये), मग़ज बादाम कटु (छिले हुये तथा भुने हुये), अलसी बीज, चलग़ोज़ा बीज, २–२ तोले, अहिफ़ेन, आलुबख़ारा की गोंद वा गोंद कीकर, ईरसा, रबुलसूस, १–१ तोला, मिश्री २ तोले, सब औषध को कूट पीस कर सौंफ़ पत्र स्वरस में खरल कर चने समान वटी करें।

मात्रा तथा प्रयोग विधि—२ वटी, अर्क गाऊज़बान १२ तोले शरबत ख़शख़ाश २ तोले के साथ प्रयोग करें, खांसी के समय १ वटी मुंह में रखकर चूसें।

गुण—यह वटी, फुटफुस व्रण, जीर्ण कास, स्वर भेद में लाभप्रद है, कफ़ का निश्कासन करती हैं।

हब्ब मक्कल (गुग्गुलु वटी)

हरड़, हरड़ वड़ी, गुग्गुलु शुद्ध प्रत्येक १५–१५ माशे, निशोथ सफेद १० माशे, सकबीनज (एक प्रकार का गोंद है) ५ माशे, राई २ माशे, प्रथम दोनों हरड़ को बादाम तैल से स्नेहाक्त करें, गुग्गुल तथा सकबीनज को गन्दना पत्र स्वरस में हल करके छानें, फिर वाकी सब औषध चूर्ण मिला चने समान वटी करें।

मात्रा—३ माशे, सोते समय अर्क सौंफ़ वा अर्क गाऊज़बान (गौजिह्वा), वा लौहे के भुझे हुये पानी १२ तोले के साथ प्रयोग करें। गुण—अर्श, वातज अर्श, में उपयोगी है, तथा विबन्धनाशक हैं।

हब्बमकवी (बल्य वटी)

शुद्ध मल्ल श्वेत (निंबुरस में), शुद्ध गन्धक, धस्तूरबीज शुद्ध, शुद्ध हड़ताल, शुद्ध हड़तालगोदंती (गोदंती भस्म डालें), शुद्ध, पारद, प्रत्येक दो तोले, प्रथम कज्जली कर बाकी औषध के बारीक चूर्ण को मिला कर मसूर बीज समान वटी करें।

मात्रा—वीर्य क्षीणता तथा सम्भोग क्रिया की हीनता में १ वटी मक्खन के साथ वा बालाई और दूध से प्रयोग करें, घी, दूध का अधिक प्रयोग करें।

गुण—वाजीकरण है, स्तम्भक शक्ति को बढ़ाती है।

(२) (इसका दूसरा नाम ज़दजाम इशक भी है)—केशर, दार-चीनी, जायफल, अहिफेन, कस्तूरी, अकरकरा, शुद्ध हिंगुल, लौंग, १–१ माशा, मुक्ता २ माशे, मल्ल तैल २ माशे, सब औषध का बारीक चूर्ण कर मधु में चने समान वटी करें।

मात्रा—१ वटी, खाकर ऊपर से दस बूंद मत्सय तैल उत्तम पी लिया करें।

गुण—वाजीकरण है, उत्तेजक है।

हब्ब मुमस्क (स्तमभ्क वटी)

कपूर, चित्रक, कस्तूरी, जायफ़ल, जावित्री, अहिफेन, सब सग भाग, सब औषध बारीक करके मिरच समान वटी करें।

मात्रा तथा गुण—सम्भोग से १ घण्टा पूर्व, जल के साथ ४ वटी प्रयोग करें, बाजीकरण है, शीघ्र पतन को नष्ट करती हैं।

(२) शुद्ध हिंगुल, जायफ़ल, अकरकरा, अहिफ़ेन, समभाग, कूटछान कर मधु के साथ मूंग समान वटी करें, ऊपर से चांदी के वर्क लपेट दें।

मात्रा तथा गुण—सम्भोग से १ घण्टा पूर्व १ वटी दूध से सेवन करें, और उस रोज़ सायंकाल का खाना कम खायें। गुण उपरोक्त।

(३) जायफ़ल, जावित्री, अहिफेन, माजू, मस्तगी, केशर, नाग-केसर, मोचरस, शुद्धगुग्गुलु, छालीया, लघुएलाबीज, वंशलोचन, अजवायन खुरासानी, समभाग लेकर कूट छान कर चनें समान वटी करें।

मात्रा तथा गुण—उपरोक्त।

हब्ब मोमयाई

मुरमकी, मस्तगी, पानजड़, बहमन सुरख़, बहमन सफेद, ४–४ माशे, लौंग, दारचीनी, लोबान, बादाम रोग़न, गोंद कीकर, अगर, रबुलसूस, ६–६ माशे, आबरेशम कुतरा हुआ, महीसाला, शुद्ध शिला-जीत १-१ तोला, सबको बारीक पीसकर बादाम रोग़न से स्नेहाक्त करें। पश्चात पोस्त डोडा के स्वरस में खरल कर चने समान वटी करें।

मात्रा तथा गुण—सम्भोग के पश्चात २ वटी उष्ण दूध से प्रयोग

करें, सम्भोग के पश्चात जो शरीर में क्षीणता आ जाती है, उसे दूर कर के बल तथा शक्ति उत्पन्न करती है।

हब्ब मलज़ज़ (आन्ददायक वटी)

कबूतर का विष्टा, स्त्री के शिर के बाल, गौ का पित्ता, शूकर पित्ता, बीरबुहटी, दारचीनी, अकरकरा, जावित्री, १—१ माशा, कस्तूरी ४ रत्ती, बारीक पीस कर मधु संग चने समान वटी करें।

मात्रा, उपयोग तथा गुण—१ वटी ब्राण्डी वा थूक से घिस कर शिश्न पर लगाकर सम्भोग करें, अत्यन्त आनन्द प्राप्त होगा।

हब्ब मुलैयन

शुद्ध जयपाल, गिरि बादाम मधुर, अरण्ड बीज १—१ तोला, खाँड २ तोले, खरल कर चने समान वटी करें।

मात्रा तथा गुण—मृदु रेचन के लिये रात्री को दो वटी तथा तीव्र विरेचन के लिये ४ वटी प्रयोग करें, रेचक है।

(२) जुलापा १५ माशे, सोंठ, सकमोनीया विलायती ५—५ माशे, केलोमल (Calomal), पिप्परमिण्ट तैल, ३-३ माशे, सब को मिलाकर चने समान वटी करें।

मात्रा तथा गुण—आवश्यकतानुसार, १-२ वटी जल वा दूध दें, सरल तथा उत्तम विरेचक है।

हब्ब मग़श

शुद्ध विषमुष्टि १० तोले, काली मिरच, पिप्पली ५—५ तोले, अम्बरशब १ तोला, सब औषध को खरल कर पान पत्र स्वरस वा अद्रक रस से भावना देकर चने समान वटी करें।

गुण तथा मात्रा—१—१ वटी, प्रातः सायं दूध से दें। वाजीकरण है, शिश्न में शक्ती उत्पन्न करती है, जीर्ण प्रतिश्याय, अर्दित, तथा शीतलता से उत्पन्न होने वाले रागों में उत्तम है।

(२) शुद्ध हिंगुल, रेगमाही, लौंग, ४—४ माशे, केशर, कस्तूरी, अहिफेन, १—१ माशा, नकछिकनी, स्वर्ण पत्र, ३—३ माशे, कायफल ७ माशे, दारचीनी, चांदीपत्र ७—७ माशे, सब औषध को बारीक पीस कर अद्रक रस से भावित कर चने समान वटी करें।

मात्रा तथा गुण—१ वटी, सोते समय दूध से प्रयोग करें, और स्तम्भनार्थ १ घण्टा पूर्व १ वा दो वटी दूध से प्रयोग करें, वाजीकरण तथा स्तम्भक है।

हब्बं नजात

फूल गुलाब, मुसब्बर, आसारा रेवन्द, मस्तगी प्रत्येक ५—५ तोले, सनाय, बड़ी हरड़, हरड़ प्रत्येक १० तोले, त्रिवृत, शुद्ध जयपाल प्रत्येक २॥ तोले, सकमूनिया भुना हुआ १॥ तोले, सब औषध को कूट-छानकर इसपग़ोल स्वरस में जंगली बेर के समान वटी करें।

मात्रा तथा गुण——२ वटी गरम जल वा दूध से दें, विबन्धनाशक है। तथा कोष्टबद्धता जनित सब रोगों को नष्ट करती है—तीनों दोषों को निकालती है।

हब्ब नखूद

बहरोज़ गीला, १ तोला, चने का आटा ५ तोले, दोनों को मिलाकर जंगली बेर समान वटी करें।

मात्रा तथा गुण——दिन में २—२ वटी तीन बार प्रयोग करें। नये सुजाक में लाभप्रद है, पुराने सुजाक को भी कुछ समय प्रयोग करने से यह वटी नष्ट कर देती है।

हब्ब निशात

चांदी भस्म ४। माशे, जावत्री, केशर, कस्तूरी, रेहमाही १॥ १॥ तोले, जायफल, समुन्द्रसोख प्रत्येक ९—९ माशे, ज़हरमोहरा १। माशे, सब औषध को कूट छानकर, पानरस, वा अद्रक रस से भावित कर चने समान वटी करें, और ऊपर चांदी के वर्क चढ़ायें।

मात्रा तथा गुण——१ वटी, सम्भोग से १ घंटा पूर्व प्रयोग करें। स्तम्भक तथा आनन्द दायक हैं।

हब्ब हलीला (हरीतकी वटी)

हरड़, हरड़ बड़ी, बहेड़ा, आमला, कृष्ण हरीतकी, गुलाब पुष्प, ३—३ माशे, सनाय पत्र ६ माशा, ग़ारीकून, (छलनी में छना हुआ) त्रिवृत, लाजवरद धुला हुआ प्रत्येक ७ माशे, कूट छानकर मूंग समान वटी करें।

मात्रा—३ से ६ माशे, बादाम तैल से स्नेहाक्त कर रोगी सोते समय उष्ण जल वा अर्क सौंफ से ले।

गुण—बिबन्ध नाशक, अर्श तथा शिरशूल के लिये भी लाभप्रद हैं।

हब्ब याकूत

याकूत सुरख, मुक्ता, गिरिबादाम, अगर १—१ तोला, बुसद, कहरबा, ६—६ माशे, कस्तूरी १॥ माशे, अम्बर, ३ माशे, निशास्ता, १ तोला, रबलसूस (मधुयष्टि का घन सत्व) २ तोला, गोंदकीकर, बनफशा मूल, अहिफ़ेन, मिश्री २—२ तोले, प्रथम ज्वाहरात को अर्क गुलाब में खरल करें। फिर बाकी औषध का बारीक चूर्ण कर मिलाकर चने समान वटी करें।

मात्रा तथा प्रयोग विधि—वाजीकरण के लिये १ वटी लबूब कबीर ५ माशे, वा माजून जालीनूस ५ माशे में मिलाकर प्रयोग करें। शारीरक दुर्बलता के लिये, ख़मीरा गाऊज़बान अम्बरी ज्वाहरवाला, ५ माशे, वा दवालमस्क ५ माशे में मिलाकर प्रयोग करें। नज़ला, ख़ांसी में १ वटी खाकर अर्क गाऊज़बान १२ तोले, शरबत बनफ़शा दो तोले डालकर सेवन करें।

गुण—शरीर की दुर्बलता में उत्तम है। स्तम्भक है, तथा प्रतिश्याय, कासश्वास में लाभप्रद है—अत्यन्त प्रभावशाली योग है।

हब्ब त्रिवृत

त्रिवृत, १ भाग, सुरंजान मधुर, हरड़, आधा-आधा भाग, गुलाब पुष्प, बनफ़शा, अफतमियूं (आकशवेल), सौंफरूमी, बोजीदान, ग़ारीक्यून, सकमूनीया भुना हुआ, शुद्ध गुग्ल, सकबीनज, सैंधव लवण—तीसरा भाग, सबको कूट छानकर मूंग समान वटी करें।

मात्रा—४ माशे।

गुण—शिर शूल, अर्धभेदक, चक्षूपीड़ा तथा वातरक्त में अति उत्तम है।

हब्ब अफतीमियूं

सकमूनीया ३॥ माशे, अयारजफैकरा, शहम हिंज़ल (इन्द्रायण का भीतरी शुष्क गूदा), गारीक्यून, अफतिमियूं (आकाश बेल), शुद्ध

गुग्गुलु, हिजर अरमनी, (एक प्रकार का पाषाण है) प्रत्येक सात माशे, निशोथ सफेद १।।। तोले सबको कूट छानकर पानी से गोलीयां बनावें ।

मात्रा—४ माशे ।

गुण—शिर, तथा आमाशय को वातिक दोषों से निवृत करती है ।

हब्ब लाजवरद

लौंग, सौंफ़ रूमी, सकमूनीया प्रत्येक ३।। माशे, लाजवरद धुला हुआ १०।। माशे, बसफ़ाईज फसतकी १४ माशे, ग़ारीक़ून, अफ़तीमियूं, प्रत्येक १ तोला ५।। माशे, अयारज फैंकरा १।।। तोले, सबको कूट छानकर करफ़स के पानी में गूंद कर वटी करें ।

मात्रा—१०।। माशे, बकरी के दूध को फटाकर शरबत उन्नाब मिलाकर उसके संग लेंवें ।

गुण—वातिक दोषों में लाभप्रद हैं ।

हब्ब शैतरज (चित्रक वटी)

मुसब्बर ५ तोले १० माशे, त्रिवृत दो तोले ११ माशे, मिश्री, १४ माशे, सोंठ, हरमल बीज, प्रत्येक पौने ९ माशे, चित्रक, सैंधव-लवण, वचं प्रत्येक ७ माशे, मिरच, पिप्पली, अकरकरा प्रत्येक ३।। माशे जल से वटी करें ।

मात्रा—१ से २ वटी, योग्य अनुपान से दें ।

गुण—अर्धांग, अर्दित, जिह्वा का भारीपन, शिरशूल के लिये उपयोगी है ।

वातकम्पहर वटी

अकरकरा, जुन्दबस्तर, चित्रक, अजवायन खुरासानी, प्रत्येक १०।। माशे, सकबीनज (एक प्रकार की गोंद है), तुम्बे का गूदा, प्रत्येक १४ माशे, अयारज फैंकरा प्रत्येक १ तोला ५।। माशे, सबको कूट छानकर पानी में गूंद कर वटी बनावें ।

मात्रा तथा गुण—८।।। माशा, वातकम्प में उपयोगी है ।

अपस्मार हरवटी

मुसब्बर, शुद्ध गुग्गुलु-१-१ भाग, सकमूनीया पाव भाग, तीनों को बारीक पीस कर चने प्रमाण वटी करें।

मात्रा---युवा अवस्था में ४॥ माशा, बालकों को २ माशा।

गुण---अपस्मार मे अन्त्यन्त उत्तम ह।

चक्षुवटी

कौड़ी, नीलाथोथा, पिपली, संगबसरी समभाग बारीक पीस कर सात प्रहर अंक गुलाव से खरल करें, और वटी बना कर रखें। गुण–आवश्यकतानुसार आंख में लगावें, फोले के लिये अति उत्तम है।

हब्ब सबज़

रसौत ४तोला ८माशा, फटकड़ी खील की हुई दो तोला ४माशा, अहिफेन १४ माशा, नीमपत्र ५ नग, केशर ५ रत्ती, सब को पीस कर लौहे की कड़ाही में डालें, और थोड़ा पानी मिलाकर लौहेके दस्तेसे खूब खरल करें, इस के पश्चात आगपर रखें, पानी जल जाने पर जब घन हो जाये तो वटी बनावें, आवश्यकता पर, सबज़ धनिया के स्वरस वा पोस्त ख़शख़ाश के जल में घिस कर आंख के पपोटे पर लगावें, कभी २ मुसब्बर ३॥ माशा भी डाला करते हैं।

गुण–आंख दुखने (नेत्राभिष्यन्द) में लाभप्रद है, तथा जाला में भी उपयोगी हैं।

मुखसुधार वटी

बही फल को बीच में से ख़ाली करें, और ख़ाली स्थान में लौंग कूट कर भर देवें, उसके ऊपर भगोया हुआ कपड़ा लपेट कर गीली मुलतानी मिट्टी लगाकर लेवें, इसके पश्चात आग में दबावें, ऊपर की मिट्टी पक जाने पर मिट्टी तथा कपड़ा पृथक कर के कूटें, पित प्रकृति वालों के लीये कपूर ६ रत्ती, चन्दन सफ़ेद ३॥ माशा, ज़रद आलू शुष्क, (अंक गुलाब में पिसा हुआ) २ तोला ११ माशे, इस में मिला कर वटी करें और कफ़ज प्रकृति वालों के लिये कस्तूरी १॥ माशा, जायफल १॥। माशा, सोंठ ३॥ माशा मिलावें।

गुण—इन गोलियों को मुंह में रखने से मुंह की बदबू (जो कि आमाशय के विकृत होने से होती है) दूर होती है।

हब्ब जदवार

जदवार (निर्बंसी), दरूनज अकरबी, दारचीनी, लौंग, वंशलोचन, शुद्ध शिलाजीत प्रत्येक ७ माशे, केशर, जावित्री, मस्तगी रूमी, अगर, अहिफ़ेन, अजवायन ख़ुरासानी प्रत्येक ३॥ माशे, कस्तूरी, जुन्दबदस्तर, प्रत्येक १॥। माशे, सबको कूट पीसकर चने समान वटी करें।

मात्रा—१ से दो वटी योग्य अनुपान से।

गुण—कास, प्रतिश्याय, श्वास, सांस फूलना, के लिये लाभप्रद है, शरीर को बल देती है।

हब्ब सहाल (कास वटी)

रबुलसूस, काली मिरच, काली जीरी, हींग, बादाम गिरी, प्रत्येक दो तोले ११ माशे, कूट छानकर मधु में मिलाकर वटी करें, मुख में रखें।

गुण—तीव्र कास तथा सांस फूलने में लाभप्रद हैं।

(२) सौभाग्य भुना हुआ, मुसब्बर, समभाग लेकर दोनों के समभाग गुड़ मिलाकर वटी बनावें, खांसी समय १ वटी खा लें। प्लीहा वृद्धि में एक मास प्रतिदिन भोजनोपरान्त खावें।

गुण—कास, श्वास, कोष्ट बद्धता, तथा प्लीहा में उपयोगी है।

हब्ब अताई

ज़राबन्द गोल, अहिफेन प्रत्येक ४॥ माशे, महीसाला, कुन्दर शुद्ध, मुरमकी, बतम की गोंद प्रत्येक १३॥ माशे, कूट छानकर वटी करें।

मात्रा—४ रत्ती से २ माशे तक योग्य अनुपान से दें।

गुण—कफ़ज कास तथा श्वास में उत्तम है।

कासवटी

शकर तेग़ाल, निशास्ता, गोंदकतीरा, गोंदकीकर प्रत्येक १०॥ माशे, खशख़ाश बीज, रबुलसूस, बहिदाना बीज, प्रत्येक १४ माशे,

मगज़ बादाम मधुर छिले हुये, खाँड सफेद प्रत्येक दो तोले ११ माशे, सबको कूट छानकर बहिदाना के स्वरस में वटी करें, और १-१ वटी मुख में रख कर चुसें।

गुण—कास रक्तपित-यक्ष्मा में उत्तम है।

कासवटी (२)

कर्पूर २ रत्ती, बंशलोचन, इंजबारमूल, दमलख़वायन (खून सोशान), कहरूबा शमई, मुक्ता, शादनज अदसी धुला हुआ, गोंद कीकर, कतीरा, रबुलसूस, सरतान (केकड़ा) जला हुआ, गिल अरमनी (एक प्रकार की मिट्टी है) प्रत्येक ४ रत्ती, मग़ज़ तुख़म खरपज़ा (खीरे के बीज का मग़ज़), मग़ज़ कदू मधुर १—१ माशा, मुक्ता, शादनज तथा कहरूबा को पृथक खरल कर लेवें, और बाकी औषध का बारीक चूर्ण करके मिला जल से वटी करें, यह सब एक मात्रा है। गधी वा स्त्री वा बकरी के दूध से प्रयोग करें।

गुण—रक्तपित-कास-यक्ष्मा, ज्वर में उपयोगी है।

हब्ब फ़ादज़हर महदनी

फ़ादज़हरमदनी ख़ताई, याकूत रमानी, मुक्ता, कहरूबा, गिलअरमनी धुली हुई, दरूनज अकरबी, हब्ब बलसान, शकाकल मिश्री, बहमन सुरख़, सफेद, हब्बुलग़ार, वंशलोचन, दारचीनी प्रत्येक ४॥ माशा, केशर २। माशा, अम्बरशब, कस्तूरी, स्वर्ण पत्र, चाँदी पत्र प्रत्येक ५ रत्ती, प्रथम ज्वाहरात, को उत्ताम खरल में खरल करें। पीछे स्वर्ण तथा चाँदी पत्र को गोंद कीकर के स्वरस में हल करके कस्तूरी तथा केशर हल कर लें, इसी तरह अम्बर को रोग़न बलसान २। माशा में पिघला कर तथा बाकी औषध को कूट पीसकर एक जीव कर २ रत्ती की वटी बनावें।

मात्रा—आवश्यकतानुसार प्रतिदिन ५ वटी अर्क गुलाब से प्रयोग करें।

गुण—हृदय को बल देती है, विषों को नष्ट करती हैं। सब दोषों को नष्ट करती हैं।

हब्ब असतस्का (जलोदर हर वटी)

मुसब्बर ४२ माशे, अफतीमियूं (आकाश वेल) २१ माशे, सकमूनीया भुना हुआ, १४ माशे, ग़ारीकून १०॥ माशे, सम्बल, तज, त्रिवृत, मस्तगी ७-७ माशा, केशर ५। माशा, अमामा (एक प्रकार की बूटी है) ३। माशा, सब औषध को कूट पीसकर चने समान जल से वटी करें।

मात्रा—८॥। माशा।

गुण—कफ़ज जलोदर में उपयोगी है।

हब्ब माज़रियूं

रेवन्दचीनी, असारा ग़ाफ़स, करफ़स बीज प्रत्येक १०॥ माशा, माज़रियूं शुद्ध ३५ माशा, (यह एक प्रकार की बूटी है, जो विरेचक, है और विषैली है) सब औषध को कूट छानकर पानी से वटी करें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—जलोदर में अति उत्तम है।

प्रवाहिका वटी

कशार कुन्दर (कुन्दर के ऊपर का छिल्का), माजू, अनार का छिलका, किकर की फली, बिलकत्थ, जुफ़तबलूत प्रत्येक ५। माशा, सब औषध को कूट छान कर सुरा के सिरके में इतना उबालें, कि गाढ़ा हो जाये, मिरच समान वटी करें।

मात्रा—३ माशे से ४॥ माशे।

गुण—प्रवाहिका में अत्यन्त उपयोगी है।

अहिफ़ेन वटी

सौभाग्य भस्म १ भाग, शुद्ध हिंगुल २ भाग, आहिफेन ४ भाग, सब औषध को यथा विधि बारीक पीस कर दो भाग करें, प्रथम भाग की मधु के संग मिरच समान वटी करें, दूसरे भाग की निंबूरस से वटी करें।

मात्रा—४ से ८ वटी।

गुण—यदि रोगी को अतिसार रात्री समय हों, तो मधु से निर्मित वटी प्रयोग करें, यदि दिन को हों, तो निंबूरस से निर्मित वटी का प्रयोग करें। अतिसार में बहुत ही लाभप्रद योग है।

बाल अतिसार वटी

अनार की वन्द कली १ नग, अहिफ़ेन, जायफ़ल, १–१ माशा, चाकसू, रसौत, नरकचूर, जीरा सफ़ेद छिला हुआ, हलदी (ऊपर से छिली हुई), नीम की कोंपल, महा नीम कोंपल, कीकर की कोंपल २–२ माशे, सब औषध को कूट पीस कर, मिरच के समान् वटी करें।

मात्रा—१ से ४ वटी।

गुण—बालकों के अतिसार में अत्यन्त लाभप्रद है।

माजू योग

अनार का छिलका २माशे, समाक ३।। माशे, माजू सात माशे, कूट छान कर चने समान वटी करें।

गुण—अतिसार में लाभप्रद है।

मोड़ीयों योग

अनार का छिलका, १।।। माशे, माजू ३।। मांशे, समाक ७ माशे, मुनक्का वीज रहित, १०।। माशे, मीड़ीयों बीज ३५ माशे, सब को कूट पीसकर गोंदकीकर के रस की सहायता से चने समान वटी करें।

मात्रा—७ माशे, शीतल जल से दें।

गुण—अतिसार, रक्त अतिसार में लाभप्रद है।

कृमि हर वटी

तूम्बे का शुष्क गूदा ८।।। माशे, सकमूनीया ७ माशे, कालादाना १०।। माशे, अफतीमियूं १४ माशे, मुसब्बर ३१।। माशे, त्रिवृत ३५ माशे।

सब को कूटछान कर जल से वटी बनावें।

मात्रा—३–६ माशे, उष्ण जल से दें।

गुण—कद्दूदाने, केंचवें और छोटे कीड़ों को पेट सें ख़ारज करती हैं।

कृमि हर वटी (२)

सिरख़स, कमीला, कालादाना, दरमना तुरकी, सौंफ़ रूमी, त्रिवृत, अफ़सनतीन रूमी, शफ़तालु पत्र, तुरमस, वायाविड़ंग, प्रत्येक १०॥ माशें, शुद्ध गुग्गुल, सकमूनीया प्रत्येक ३–३ माशे, सब औषध को कूट छान कर चनें समान वटी करें।

मात्रा—आवश्यकतानुसार उष्ण जलसे १ से तीन माशे तक खावें।

गुण—प्रत्येक प्रकार के कृमि के लिये अत्यन्त उपयोगी है।

हब्ब ग़ारीकून

असारा ग़ाफ़स, रेवन्दचीनी, ७–७ माशे, ग़ारीकून ३५ माशे, खाँड ५२॥ माशे, सब औषध को कूट छान कर जल से वटी बनावें।

मात्रा—रात्री को ३॥ माशे प्रयोग करें।

गुण—कबज़ को दूर करती है, यकृत शोधक है।

हब्ब एलाऊस

सकमूनीया, शुद्ध गुग्गुल प्रत्येक ४॥ माशे, मुसब्बर ९ माशे कूट छान कर चनें समान वटी करें।

मात्रा—७ वटी।

गुण—मुख द्वारा पाख़ाना आने में लाभप्रद है।

हब्बलमलूक

त्रिवृत श्वेत, सैंधव लवण प्रत्येक ३५ माशे, मुसब्बर १७॥ माशे, अनज़रूत, हरड़, हरड़ बड़ी प्रत्येक १०॥ माशे, मस्तगी, केशर, तेजपात, कुठ कड़वी, रेवन्द चीनी, सोंठ, सौंफ रूमी, करफ़स बीज, लौंग, मिरच काली, छोटी इलायची, दारचीनी, गोंद कतीरा, बड़ी इलायची प्रत्येक १॥। माशे, कस्तूरी ६ रत्ती, सकमूनीया, ९ माशे, कूट छान कर अर्क गुलाब से वटी करें।

मात्रा—३–६ माशे।

गुण—आन्त्र शूल में लाभप्रद है, दूषित वायू को निकालती है।

हब्ब मक्कल (गुग्गुगुल वटी)

सैंधव लवण, सातर फ़ारसी, मस्तगी रूमी, सुरंजान, उशक, हरमल, पितपापड़ा, अजवायन प्रत्येक, ३।। माशे, सकबीनज (कान्दल) सात माशे, हरड़ कृष्ण, बहेड़ा, आमला, शुद्ध गुग्गुलु प्रत्येक १४ माशे, सम्बल, केशर, दारचीनी, वर्च, बड़ी इलायची, तज, प्रत्येक २८।। माशे, एलवा (मुसब्बर), ७० माशे, प्रथम गुग्गुलु,सकबीनज को गन्दना के रस में हल करें, और बाकी औषध का चुर्ण कर इस में मिला देवें।

मात्रा– ९ माशे।

गुण–इस वटी के तीन दिन के प्रयोग से, अर्श की पीड़ा और कष्ट नष्ट हो जाता है।

हब्ब मफ़तत

हब्ब बलसान, हबुलग़ार, किबर मूल छाल, सौंफ मूल त्वक, मूली बीज, दोको, अजमोद, जाओ शीर, बादाम मग़ज़, अज़ख़र, नागरमोथा, सम्भल, तज, असकोलोकन्द्रयों, हरमल, ज़रावन्द गोल, हबज़त्याना, तग़र, काली जीरी, मुमरकी, उशक, सकबीनज, अजवायन ख़ुरासानी, शुद्ध गुग्गुलु, क़ाली मिरच, वर्च, सब समान भाग लेकर चूर्ण करें, प्रथम गौंदों को जल में हल करें, बाकी औषध को रोग़न बलसान से स्नेहाक्त करें, और सब को मिलाकर एकजीव कर गोलीयां बनावें।

मात्रा–३।। माशे, बजूरी के क्वाथ से दें, यदि इस औषध में ६ रत्ती प्रतिदिन बिच्छू की राख मिला कर प्रयोग करें, तो अधिक लाभप्रद है।

गुण–चिरकाल तक प्रयोग करने से अधिक लाभ होता है, पथरी (अश्मरी) को टुकड़े २ कर के निकाल देती है।

हब्ब सीमाब (पारद वटी)

शुद्ध पारद, (गाढ़े और मोटे कपड़े से ३–४ बार छान लें, इससे और शुद्ध हो जाता है), अहिफेन प्रत्येक १०।। माशे, दोनों को मिलाकर पान स्वरस से ७ बार भावित करें, शुष्क होने पर अकरकरा, अजवायन ख़ुरसानी, पान की जड़, जायफल, लौंग, जावित्री, प्रत्येक ३।। माशे, कूट छान कर पारद अहिफेन से मिला खरल करके चने समान वटी करें।

मात्रा—१ वटी, भोजन से ४ घण्टे बाद खाकर उसके १। घण्टे पश्चात सम्भोग करें।

गुण—स्तम्भक है, जबतक अम्ल वस्तु न खाई जाई, वीर्य पतन नहीं होता।

हब्ब मुशक (कस्तूरी वटी)

लौंग, काली मिरच, पान की जड़, अकरकरा, प्रत्येक ३॥ माशे, गुलाब पुष्प, सन्दल सफेद, तबाशीर सफेद, ऊद हिन्दी, कपूर, कस्तूरी, प्रत्येक ९ रत्ती, सब को कूट पीसकर छानकर अर्क गुलाब से चने समानवटी करें

मात्रा—१ से दो वटी।

गुण—स्तम्भक है, सुगन्धित है, आनन्ददायक है।

हब्ब मनशत

फरफयून, २। माशा, नरकचूर, हब्बुलगार, अकरकरा, लौंग, जावित्री, गोंदकीकर, प्रत्येक ४॥ माशा, तगर, केशर, करफ़स बीज, दारचीनी, रेवन्दचीनी, बालछड़, मस्तगी प्रत्येक ९ माशा, अजवायन खुरासानी, काली मिरच प्रत्येक १३॥ माशा, अहिफ़ेन २२॥ माशा सब औषध को खूटछान कर अर्क गुलाब से चने समानवटी करें।

मात्रा—१ से २ वटी।

गुण—स्तम्भक है, उत्तेजक है।

हब्ब मुशकल कुशा

अकरकरा, जायफल, जावित्री, दारचीनी, लौंग, हरमल, काले तिल, अहिफ़ेन प्रत्येक ७ माशे कूट छान कर शहद संग मिलाकर वटी करें।

मात्रा—१ से ४ वटी।

गुण—प्रमेह, पेशाब के साथ सफ़ेद वस्तु के आने में लाभप्रद है।

गर्भदा वटी

कस्तूरी २ रत्ती, अहिफेन, जायफल, केशर, १—१ माशे, भांग १॥। माशे, गुण पुराना, ५। माशे, गुजराती छालीया ३ नग, लौंग ४ नग, सब को कूट छान कर गुड़ में बेर समान वटी करें।

मात्रा तथा गुण—मासिक धर्म के पश्चात प्रथम तीन दिन १–१ वटी दूध से प्रयोग करें, बांझपन में लाभप्रद है।

हब्ब बरलसायता

मुसब्बर, हरड़, सुरंजान मधुर, खाँड, सनाय, मस्तगी, १–१ तोला, कूट छान कर वटी करें

मात्रा—२ से ४ वटी—

गुण—तीनों दोषों के लिये लाभदायक है, आमवात, वातरक्त, गृध्रसी में उपयोगी है।

हब्ब शैतरज (चित्रक वटी)

मुसब्वर ७० माशे, हरड़ ३५ माशे, शक्कर सफ़ेद १४ माशे, राई १०॥ माशे, पित्तपापड़ा, सोंठ, तुम्बे का शुष्क गूदा, सैंधव लवण प्रत्येक ७माशे, मिरच, पिपली प्रत्येक ३॥ माशे, मिलाकर ४–४ रत्ती की वटी करें, आवश्यकतानुसार, २ से ४ वटी प्रयोग करें।

गुण—गृध्रसी, आमवात, कटिशूल में अति उत्तम है।

हब्ब यशप

यशप सबज़ १ तोला को ७ वार गरम करके अर्क गुलाब में बुझावें, पिस्ता का भीतरी पोस्त, नारयील दरयाई, छोटी इलायची, बड़ी इलायची, ज़हरमोहरा, चांदीपत्र, स्वंर्णपत्र, मुक्ता १–१ तोला, सब को मिलाकर एकजीव करके अर्क गुलाब वा बेदमुशक में खरल कर मूंग समान वटी करें।

मात्रा—१ से दो वटी।

गुण—हृदय को बल देने में बहुत ही उपयोगी है।

हब्ब करामात

कमीला, चूना, नीलाथोथा, हरड़, पापड़ीया कत्थ, सब औषध बारीक करके जल से वटी करें, और छाया में शुष्क करें, आवश्यकतानुसार गौघृत में हल करके फुंसियों पर लगावें।

गुण—प्रत्येक प्रकार की फुंसियों में उपयोगी है।

कुष्ट हरवटी

सोंठ, अयारज फ़ैकरा, मिरच सफ़ेद, कुटकी काली, सम भाग लेकर शराब में बहरोज़ा हल करके मिलावें, और गोलीयाँ बनावें।

मात्रा—३—६ माशा योग्य अनुपान से।

यह लेप भी करें, पितपापड़ा, सुरमा, माजू, फटकड़ी सुरख़, मछली की हड्डी जली हुई, बारीक करें, और जल से टिकियां बनावें, सिरके में हल कर दाग़ों पर लेप करें।

गुण—बरस, श्वेत कुष्ट में लाभप्रद है।

हब्ब हमी

पोस्त कोकनार, अहिफ़ेन, कर्पूर १-१ तोला, तीनों को बारीक पीसकर जल से मूंग समान वटी करें, यदि पोस्त कोकनार के स्थान पर भांगपत्र प्रयोग करें, तो अधिक उपयोगी है।

मात्रा—१ वटी, ज्वर आने से पूर्व प्रयोग करें।

गुण—तृतीयक ज्वर में लाभप्रद है।

हब्ब जरयान

सत शिलाजीत, धस्तूरबीज, २-२ तोला, ख़यारैनबीज मग़ज़, मग़ज़ तूख़म कदू मधुर, ख़शख़ाशबीज श्वेत ३-३ तोले, सबको कूट छानकर रोग़न चरस के साथ चने समान वटी करें।

मात्रा—१ वटी, ताज़ा जल से रात्री सोते समय लें।

गुण—प्रमेह के लिये अत्यन्त उत्तम है।

हब्ब रस कर्पूर

रस कर्पूर, मूसली कृष्ण, कुलंजन, काली मिरच १-१ तोला, पहिले रस कर्पूर को पोटली में बांधकर एक देगची में गिलोय सबज़ के जल के अन्दर पकावें, कि पोटली पानी में इस प्रकार लटकी रहे कि देगची से न लगने पाये, जल समाप्त होने पर रस कर्पूर को निकाल कर बाकी औषध के चूर्ण में मिलाकर खरल करके गिलोय सबज़ के रस से भावित कर ५० वटी बनावें, यदि गिलोय के स्थान पर मकोय रस में गोलीयां बनावें, तो मुंह आने का भय नहीं रहेगा,

मुंह आने पर चम्बेलीपत्र को बकरी के दूध में उबाल कर ग़रारा करें।

मात्रा—२ वटी, शीतल जल से दें। घृत अधिक प्रयोग करें, मट्ठाई, दाल मूंग से परहेज करें।

गुण—आतशक में अत्यन्त उत्तम है।

हब्ब मसीही

शुद्ध भल्लातक, काली मिरच, गिलोयसत्व, तबाशीर सफेद, छोटी इलायची त्वचा समेत सबको बारीक पीसकर माष समान वटी करें।

मात्रा—१-१ वटी, योग्य अनुपान से दें।

गुण—यक्ष्मा में अत्यन्त उत्ताम है।

हब्ब मकवी ममस्क

स्वर्ण वर्क, शुद्ध पारद १-१ तोला, दोनों को ५० नग निंबू स्वरस में खरल करें, जब दोनों एकजीव हो जायें, तो लाहौरी लवण से धोकर करनब शुद्ध ६ माशा, ज्वाहरमोहरा ४ माशा, याकूत भस्म, जुमरद रस्म, शुक्ति भस्म, कुक्कटाण्ड भस्म, चांदी भस्म, ताम्रभस्म, बंगभस्म प्रत्येक २ माशा, कुचला सत्व १२ रत्ती, अफीम ३ माशा, तेलनी मक्खी, अम्बरशहब प्रत्येक २ माशा, धस्तूरबीज ५ तोला, चोया अगर २ तोला, टिंकचर केनथरडीन १० तोला, सबको ब्राण्डी शराब में हल करके ४८० वटी करें।

मात्रा—१ वटी, पाव भर दूध से।

गुण—परम स्तम्भक योग है।

हब्ब ज्वाहर मस्कन

याकूत सुरख़, लालबदख़शान, याकूत ज़रद, याकूत कबूद, अकीक, मरजान, यशप, ज़ुमरद, फैरोज़ा प्रत्येक ६ रत्ती, जदवार, कहरबा शमई, मरवारीद, नारीयल दरयाई, लाजवरद धुला हुआ, फ़ादज़हर हेवानी, कस्तूरी, अम्बरशहब, केशर, चांदीपत्र, कर्पूर, शिलाज़ीत ६-६ माशा, अहिफेन ३ माशा, सोने वर्क १॥ माशा,

अर्क गुलाब १ बोतल सब ज्वाहरात को अर्क गुलाब में खरल करें, और बाकी औषध के बारीक चूर्ण को मिलाकर माष समान वटी करें।

मात्रा—१ से दो वटी, प्रातः सायं प्रयोग करें।

गुण—हृदय को वल देने में अत्यन्त प्रभावशाली औषध है।

हलवे

हलवा वह पौष्टिक औषध है, जिस में मगज़यात तथा घृत विशेष करके मिश्रित होता है, यह जहां औषध रूप में रोगों को नष्ट करते हैं, वहाँ शरीर को भी दृढ करते हैं, यह एक प्रकार के जीवनी औषध हैं, शरद ऋतु में अधिक उपयोग में लाये जाते हैं।

हलवाये बादाम

मग़ज़ बादाम छिले हुयें, २० तोला, मग़ज़ चलग़ोजा, मग़ज़ तुखुम कदू शरीन (मधुर), खशखाश बीज, मग़ज़ चिरोंजी, प्रत्येक ५—५ तोला, सब को कूट लें, और १।। सेर खाँड पानी में हल करके छान लें, ।। पाव अर्क गुलाव मिला कर अग्नि पर पाक करें, अब उपरोक्त पाक में उपरिलिखित औषध का चर्ण डाल कर एकजीव करके थोड़ी देर तक पाक करें, पीछे सब को धीरे से १ थाली में डाल कर बिछा दें, और १ पाव शक्कर (ख़ाँड) छिड़क कर शीतल होने दें, फिर बरफ़ी की तरह छुरी से छोटी २ टुकड़ियां काट लें।

मात्रा—दो, तीन तोले, प्रातः दूध के साथ प्रयोग करें।

गुण—मस्तिष्क को बलवान बनाता है, बुद्धि दुर्बलता को नष्ट करता है, वीर्यप्रद है, वाजीकरण है, शरीर को दृढ बनाता है।

हलवा-बेज़ा मुरग़

बेज़ा मुरग़ (मुरग़ी के अण्डे) २० नग लेकर जल में उबालें, पीछे उनकी ज़रदी निकाल कर ज़रदी को १ पाव घी में भन लें, (सफ़ेदी को फेंक दें) अब खाँड १ पाव को अर्क बहार, नारज, और बेदमुश्क १-१ पाव में डाल कर पाक करें, पाक होने पर ज़रदी मिला दें, इसके उपरान्त जायफल, जाविश्री प्रत्येक ५-५ माशा, केशर, क़स्तुरी, १-१ माशा, अर्क बेदमुश्क में खरल करके मिला दें।

मात्रा—१ से ५ तोला, प्रातः दूध से प्रयोग करें।

गुणा—वीर्यप्रद, वाजीकरण, उत्तेजक, तथा हृदय, मस्तिष्क को बल देता है।

(२) आवश्यकतानुसार अण्डे लेकर उनकी सफ़ेदी तथा ज़रदी निकालें, दोनों को मिला कर चमचा से खूब फेंटें, सम भाग घी और खाँड मिला कर फिर चमचा से भली प्रकार फेंटें, मृदु अग्नि पर पाक करें, जब गाढ़ा होने लगे, तो देखलें, कि घी कम तो नहीं है, यदि कम हो, तो और डालें, गाढ़ा होने पर उतार कर किसी थालीमें डाल कर फैला दें, यदि इसको रोज़ाना बनाया जाये तो उत्तम है,अधिक देर तक रखन से खराब हो जाता है, अत्यन्त वाजीकरण तथा बलप्रद औषध है।

हलवा सहलब

चने का आटा १२ तोला, बाकला का आटा, मेदा गन्दम प्रत्येक ८—८ तोला, सब को पृथक् २ घी में भून लें, मधु उत्तम १। पाव, खाँड२।।पाव, अर्क बेदमुश्क आधी बोतल में पाक करके तीनों आटे इस में मिश्रित कर दें, पश्चात् सहलब मिश्री ३ तोला, पिस्ता, मग़ज़-फिन्दक, (बादाम की तरह यह भी एक प्रकार का फल है), मग़ज़ चलग़ोज़ा, खोपा, चिरोंजी, मग़ज़ बादाम मधुर, मग़ज़ तुख़म ख़रपज़ा, मग़ज़ हबतलख़िज़रा, मग़ज़ हब्बलज़लम, मग़ज़ हब्ब किल-किल, १—१ तोला (यह तीनों एक प्रकार के फल हैं), दारचीनी, जायफल, मस्तगी, पान की जड़, बहमन सुरख़,सफेद, शकाकल मिश्री, बड़ी एलायची बीज प्रत्येक ६ माशा, जावित्री, सोंठ, केशर, कस्तूरी, अम्बरशब प्रत्येक ३—३ माशा कूट छान कर शामल करें।

मात्रा—दो तोला, प्रातः दूध संग प्रयोग करें।

गुण—वीर्यप्रद, बल्य, तथा वाजीकरण है, वीर्य को गाढ़ा बनाता है, शरीर को शक्ति देता है, हृदय तथा मस्तिष्क को बलवान बनाता है।

हलवा चोबचीनी

गन्दम का आटा ५ सेर, रोग़न ज़ैतून और घृत १—१ सेर छ छटांक में मिश्रित कर अग्नि पर चढ़ा कर भून लें, इस के उपरान्त

४सेर १पाव उत्तम मधुका पाक करके भुना हुआ आटा इसमें मिला दें, फिर मग़ज़ चलग़ोज़ा, मग़ज़ नारजील प्रत्येक आठ तोला, पीस कर शामल करें, इसके उपरान्त चोबचीनी ३८ तोला, लौंग, छोटी इलायची, दारचीनी, कचूर, सौंफ़, सोंठ, अनीसून, इन्द्र जौ, सुरंजान मधुर, पिप्पली, पान की जड़, नागरमोथा, प्रत्येक ६ तोला, कूट छान कर हलवे में मिश्रित करें।

मात्रा—१ तोला, खाकर १ पाव दूध पीवें।

गुणा—रक्तशोधक तथा वाजीकरण है।

हलवा सुपारी पाक

कपूर ३॥ माशा, तज, पत्रज, नागकेशर, नागरमोथा, पिप्पली, पोदीना खुष्क, अजवायन खुरासानी, छोटी इलायची प्रत्येक ७ माशा, तालीसपत्र, जावित्रीं, बंशलोचन, सन्दल सफेद, मिरच काली, मग़ज़ तुख़म कनार, प्रत्येक १०॥ माशा, जायफल १४ माशा, जीरा सफ़ेद १ तोला ९ माशा, एरण्ड जड़, नीलोफ़र पुष्प, बनोले का मग़ज़, मग़ज़ तुख़म नीलोफ़र, लौंग, धनियां, पिप्पलामूल प्रत्येक दो तोला ४ माशा सिंघाड़ा खुष्क, शतावर प्रत्येक ३॥ तोला, बला बीज, खिरनी बीज प्रत्येक ४ तोला १ माशा, चरोंजी मग़ज़ वा, बादाम गिरी ८ तोला २ माशा, मग़ज़ पिस्ता ११ तोला आठ माशा, द्राक्षा बीजरहित, १३ तोला, सुपारी दक्षिणी तीन पाव, मग़ज़यात और द्राक्षा बीजरहित के इलावा कूटने वाली औषध का चूर्ण करें, और इन को पृथक् भली प्रकार खरल करके इन का शीरा निकाल लें, सुपारी के छोटे २ टुकड़ों करें, और दस सेर दूध में डाल कर इतना अग्नि पर पकावें कि खोया बन जाये, फिर इन सुपारी को खुष्क करके कूट लें, इस के पश्चात मिश्री ११ छटांक, शतावर मूल स्वरस १ सेर ५ छटांक, दूध (गाय का वा भैंस का) ४॥सेर, खाँड ८ सेर इकट्ठा करके पाक करें, इस के पश्चात् घी १ सेर गरम करके मग़ज़यात, द्राक्षा, सुपारी डाल कर भूनें, फिर सब औषध चुर्ण मिला कर हलवा बनायें।

मात्रा—दो तोला, प्रातः दूध के साथ प्रयोग करें।

गुण—यह हलवा प्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष में अत्यन्त उत्तम

है, शरीर को दृढ़ बनाता है, तथा वाजीकर है, स्त्रियों के प्रदर, श्वेत प्रदर, कटिशूल तथा क्षीणता को नष्ट करता है, गर्भशयके दूषित स्राव को खुष्क करता है, तथा योनी का संकोच करता है, स्त्रियों तथा पुरुषों दोनों के लिये लाभप्रद योग है।

(२) सुपारी ५ तोला, सौंठ तीन तोला, दोनों को कूट छान कर गौ दूग्ध १ सेर में उबालें, कि खोया बन जाये, इसके पश्चात् गन्दम का आटा १ पाव, सिंघाड़ा का आटा ।। पाव, गाय के घी में भून कर ।। सेर खाँड का पाक करके उस में डाल कर हलवा बनावें, तत्पश्चात् माई छोटी तथा बड़ी, सुपारीपुष्प, ढाक की गोंद, कीकर गोंद, तालमखाना, धावी पुष्प, बीजबन्द, मग़ज़ तुख़म इमली प्रत्येक दो तोला, माजू सब्ज़ २ मग, जायफल, जावित्री, लौंग, केशर प्रत्येक ४ माशा कूट छान कर मिलाकर एक जीव करें।

मात्रा—दो तोला की मात्रा में प्रातः दूध के साथ खावें।

गुण—उपरोक्त।

हलवा गाजर

सुरख़ रंग की गाजरें लेकर छिलका तथा भीतरी कठोर भाग निकाल देवें, और कदूकश से बारीक कर लें, फिर दूध में इस कदर जोश दें, कि गाजरें नरम हो जायें, और खुष्क हो जायें, इस के पश्चात् इन को घी में भून कर वज़न करें, उस से दुगनी खाँड लेकर पाक करें, पाकसिद्धि होने पर गाजरें डाल दें, और मग़ज़ चलग़ोज़ा, मग़ज़ अख़रोट, मग़ज़ बादाम मधुर, खोपा, मग़ज़ फिन्दक, पिस्ता, मग़ज़ चरोंजी आवश्यकता अनुसार पीस कर घी में भून कर मिश्रित करें।

मात्रा—तीन तोला प्रातः सायं दूध के साथ प्रयोग करें।

गुण—बलय, वाजीकरण, वीर्यप्रद, तथा हृदय मस्तिष्क को अत्यन्त उपयोगी है।

हलवा गाजर मग़ज़ शिरकंजशक वाला

सुरख़ रंगकी गाजरें (छिलका तथा भीतरी कठिन भाग निकाल लें), १ सेर, छुहारे गुठली रहित ।। सेर, गाजरों को कदूकश कर लें, और छुहारों समेत ५ सेर दूध में उबालें, और लकड़ी के दस्ते से खूब कूट कर

बारीक कर लें, भुने चने का आटा तथा गन्दम का आटा १-१ छटाँक लेकर घी में भून लें, और खाँड़ १ सेर, शहद उत्तम ।।सेर का पाक कर के भुने हुये आटे, गाजरें वा छुहारे शामल कर देवें, इस के पश्चात् ४० घरेलू चिड़ों के शिर का मग़ज़ निकाल कर घृत में भून लें, अब मग़ज़ फिन्दक, बादाम गिरी, मग़ज़ पिस्ता, मग़ज़ चलग़ोज़ा, खोपा, प्रत्येक तीन माशा, साहलब मिश्री, गोक्षरू, दारचीनी, सोंठ, पान की जड़, १-१ तोला, केशर असली, कस्तूरी प्रत्येक ३।। माशा, सबको यथाविधि बारीक कर शामल कर देवें ।

मात्रा—दो तोला से ४ तोला तक प्रातः दूध के साथ प्रयोग करें।

गुण—वीर्यप्रद तथा वाजीकरण है, कटि तथा वृक्कों को दृढ़ करता है, प्रमेह, स्वप्नदोष तथा शीघ्रपतन में लाभकारी है, मस्तिष्क तथा हृदय को शक्ति देता है ।

हलवा घीक्वार

घृतकुमारी का गूदा निकाल कर रात्री को छनी हुई राख में दबा दें, प्रातः जलसे धोवें, धुल जाने पर १ सेर गूदा ५ सेर दूध में पका कर खोया बना लें, इस के पश्चात् मग़ज़ बादाम, मग़ज़ चलग़ोज़ा, मग़ज़ फिन्दक, पिस्ता, नारियल कद्दूकश, छुहारे, मग़ज़ अख़रोट प्रत्येक आध पाव को बारीक पीस कर ५ सेर दूध में इतना पकावें, कि दूध खुष्क हो जावे, इन को सिल बट्टा पर खूब पीस लें. इसी तरह घी कुमारी के गूदे को भी पीस कर मिला लें, फिर एक चौड़े मुख वाली देगची में आवश्यकतानुसार घृत डाल कर अग्नि पर रखें, और घृत में थोड़ी २ औषध डाल कर चलाना शुरू करें, थोड़ी २ खाँड भी साथ मिलाते जायें, जब वह भली प्रकार मीठा हो जाये, और भुनते २ घी छोड़ दे, तो त्यार है ।

मात्रा—प्रातः ३—४ तोला, दूध के साथ प्रयोग करें ।

गुण—अत्यन्त बलप्रद तथा वाजीकरण है ।

ख़मीरे

ख़मीरे की निर्माणविधि माजून की तरह है, परन्तु कुछ अन्तर है, यदि इसे शरबत का घन पाक कहा जाये तो अधिक सत्य है, शरबत का पाक पतला होता है और ख़मीरा का पाक घन कर के घोट दिया

जाता है, जिससे इसकी रंगत श्वेत हो जाती है, इस विधि से यह लाभ है, कि शरबत का पाक पतला होने से उस के ख़राब होने की चिन्ता रहती है,कई शरबत का रंग भी अच्छा नहीं होता, और स्वाद भी ठीक नहीं होता, परन्तु ख़मीरे घन होने के कारण अधिक समय तक ख़राब हुये बिना रह सकते हैं, रंग तथा स्वाद दोनों ही उत्तम होते हैं।

निर्माणविधि---प्रथम औषध का क्वाथ तथा शीत कषाय बनाया जाता है,फिर इस क्वाथ में खाँड डाल कर पाक करते हैं, गाढ़ा पाक हो जाने पर घोंटने से घोंट देते हैं, ख़मीरा का पाक ज़रा सख़त होता है, यदि मृदु रखना हो तो थोड़ा मधु का मिश्रण करना चाहिये, ख़मीरे के पाक को लकड़ी के मंस्सद से घोंटने से यह लाभ होता है, कि वायवीय अंश मिल जाने से ख़मीरे का रंग श्वेत हो जाता है। यदि पाक में अम्बर, कस्तूरी, केशर, पाषाण, मस्तगी, चांदी तथा स्वर्णपत्र डालने, हों तो इन को पृथक खरल कर लीया जाये, इन में से मस्तगी को हलके हाथों खरल करना चाहिये, अब जब ख़मीरे के पाक को घोंटना प्रारम्भ करें, और उसमें सफ़ेदी आनी प्रारम्भ हो, तो इन औषध के चूर्ण को थोड़ा २ ऊपर छिड़क देवें, और शीघ्रता से घोंटें,ध्यान रहे कि अम्बर आदि को किसी रोग़न वा अर्क आदि में हल कर के न डालें, चांदीपत्र आदि श्वेतता आते समय १-१ करके डालें। इस का पाक ऐसा होना चाहिये, कि घोंटने के बाद वह सख़त हो जाये, परन्तु, ध्यान रखें, कि एसा भी सख़त न हो, कि बादमें भुर भुरा हो जाये, और भूरा खाँडकी तरह हो जांये,और न ही इतना पतला हो, कि घोंटते समय सफ़ेद तो हो जाये, परन्तु बाद में उस का गाढ़ा तरल भाग ऊपर आजाये, पाक की सिद्धी देखने की यह विधि है,कि यदि पाक की एक बिन्दु पृथ्वीपर गिराई जाये,तो जमकर गोल स्थिती में आजाये। घोंटने की विधि यह है, कि एक कड़ाही में पाक को डाल लीया जाये, और कड़ाही को किसी कदर त्रिच्छा कर लें, ताकि कड़ाही के सामने वाला भाग पाक से खाली हो जाये, इस ख़ाली भाग में पाक का थोड़ा २ भाग घोंटने में लेकर ∞ इंग्रेज़ी आठ के हिन्से की आकृति अनुसार घोंटने को चलाते जायें, और जब इस तरह करने से पाक

श्वेत हो जाये, तो फिर थोड़ा और पाक घोंटने से लेकर चलावें, इस विधि से जितना भी भाग श्वेत होता जाये, उस को दूसरे पाक में मिलाते जायें, इस विधि से पाक बहुत शीघ्र श्वेत हो जाता है, और इस में नरमी आजाती है ।

ख़मीरा आबरेशम (सादा)

आबरेशम कुतरा हुआ ४२ तोला, अगर, बालछड़, नरंज के ऊपर का छिलका खुष्क, मस्तगी, लौंग, छोटी इलायची, तेजपत्र, चन्दन सफ़ेद प्रत्येक ५ माशा, सब औषध को आबरेशम समेत पोटली में बांध कर अर्क गाऊज़बान, अर्क बेदमुष्क, अर्क गुलाब, सेब स्वरस, अनार स्वरस, मेघ जल (बारश का स्वच्छ जल) प्रत्येक १४ तोले, में रात्री को भगो रखें, प्रातः उबालें, जब एक तिहाई जल शुष्क हो जाये, तो छान लें, और मधु उत्तम १ पाव, खाँड सफ़ेद तीन पाव में मिला कर पाक करें, पाक हो जाने पर इस कदर घोटें, कि पाक चमकदार हो जाये, अब इसमें केशर ५माशा, अर्क कवेड़ा में मिला कर पाक में डाल दें, और बरतन को ढक रखें, जब शीतल होने लगे तो कड़ाही में डाल कर यथाविधि घोंट दें, और चाँदी पत्र १–१ कर के डालते जायें ।

मात्रा—५ माशा, अर्क गाऊज़बान १२ तोले के साथ ।

गुण—यह ख़मीरा, हृदय, मस्तिष्क को बल देता है, उन्माद, दिल का डूबना आदि में लाभप्रद है, चक्षू रोग में लाभप्रद है ।

ख़मीरा आबरेशम हकीम अरशदवाला

अपक्क आबरेशम ४२ तोले (कैंची से कुतरकर भीतरी कीट निकाल लें), ऊद ग़रकी (अगर), बालछड़, नारंज का ऊपरिं खुष्क छिलका, मस्तगी, लौंग, छोटी इलायची, तेजपत्र, चन्दन सफ़ेद प्रत्येक पांच माशा, सब औषध के बारीक चूर्ण को आबरेशम समेत एक पोटली में बांध लें, अर्क गाऊज़बान, बेदमुशक, गुलाब, सेब स्वरस, अनार स्वरस, बही फल स्वरस प्रत्येक १४ तोला, बारश का पानी दो सेर, अर्क, स्वरस तथा मेघ जल को मिलाकर इस मिश्रित पानी में पोटली डालकर इस कदर जोश दें, कि बारश वाला दो सेर जल जाये, तो पोटली निकाल लें, अब इस क्वाथ जल में १पाव मधु और तीन पाव

खाँड सफ़ेद शामिल कर पाक करें, इस के पश्चात अम्बरअशब, स्वर्णपत्र, चांदीपत्र ६–६ माशा, मुक्ता, याकूत, यशप सबज़, कहरूबा-शमई, प्रवाल ९–९ माशा, कस्तूरी, केशर प्रत्येक ५ माशा, खूब भली प्रकार खरल कर के मिश्रित करें, और इस कदर घोटें, कि रंग श्वेत आ जाये, चीनी तथा शीशे के मरतबान में रखें।

मात्रा—३ माशे, अर्क गाऊज़बान ७ तोले, अर्क गाजर ५ तोले, के साथ प्रयोग करें।

गुण—शरीर के विशेष अंगों को बल दोता है, दिल डूबना, उन्माद,तथा वातिक रोगों में अतीव उपयोगी है,पित्त जनित जीर्ण प्रतिश्याय में भी लाभप्रद है,युनानी चिकित्सा की एक विशेष औषध है।

नोट–मेघ जल न होने पर सादा जल ही प्रयोग किया जा सकता है।

खमीरा आबरेशम शीरा उन्नाब वाला

अपक्व आबरेशम १५ तोला, (केंची से कुतर कर कीट आदि निकाल कर जल से धो देवें), पौने दो सेर बारशजल में रात्री को भगो रखें, प्रातः जोश दें, १॥ पाव रहने पर छान लें, मधुर सेब स्वरस, अम्ल सेब स्वरस, मधुर अनार स्वरस, अम्ल अनार स्वरस, मधुर अंगूर स्वरस, बही फल स्वरस, उन्नाब स्वरस, (उन्नाब को पानी में पीस कर छान लें), ३–३ तोले, गाऊज़बान स्वरस ६ माशे, (इसे भी पानी में पीस कर छान लें), चन्दन सफ़ेद स्वरस ३ तोला, (इसे अर्क गुलाब में पीस कर छान लें); यह सब स्वरस लेकर आबरेशम के क्वाथ में मिलावें, और अर्क गुलाब, मिश्री प्रत्येक १५ तोले, मधु १० तोले, मिश्रित कर पाक करें, पाक सिद्धि पर केशर ३ माशे, कस्तूरी, अम्बर २–२ माशे, बंशलोचन आवश्यकतानुसार में खरल कर अन्त में मिलावें, और घोंटने से घोटें, कुच्छ हकीम शीतलता के विचार से इस में अर्क बेदमुष्क १५ तोले, तरबूज़ जल ३ तोला और मिलाते हैं।

मात्रा—५ माशे, अर्क गाऊज़बान १२ तोले के साथ।

गुण—यह खमीरा, उन्माद, हृदय डूबना, यक्ष्मा, रक्तपित

और सूखी खांसी में लाभ प्रद है, पाचक शक्ति तथा दृष्टि को बल देता है ।

ख़मीरा आबरेशम ऊद मस्तगी वाला

ऊद (अगर), मस्तगी, कस्तूरी, प्रत्येक दो माशा, याकूत, मरजान (प्रवाल), यशप प्रत्येक ४ माशे, मुक्ता, अम्बर प्रत्येक आठ माशे, इन औषध को पृथक खरल करके रख लें, बादरंजबोयापत्र, बनतुलसी-पत्र प्रत्येक ७ माशे, अपक्व आबरेशम केंची से कुतर कर ३४ तोले, बादरंजबोया तथा आबरेशम आदि को लौह तप्त जल में इतना उबालें, कि चौथाई भाग रह जाये, अब इन को छान कर मिश्री १। सेर शामिल कर पाक करें, पाक सिद्धि पर बाकी औषध चूर्ण को मिश्रित करें, और घोंटने से खूब घोटें । तयार है ।

मात्रा—५ माशे, अर्क गाऊज़बान १२ तोले के साथ ।

गुण—उपरोक्त हैं, तथा वातिक अर्श में भी उपयोगी है ।

ख़मीरा बनफ़शा

तीन छटांक बनफ़शा पुष्प, तीन सेर पानी में रात्री को भगोवें, प्रातः जोश दें, १ सेर रहने पर छान कर १।। सेर खाँड मिला कर पाक करें, थोड़ा शीतल होने पर कड़ाही में डाल कर घोटें ।

मात्रा—दो से चार तोला तक अर्क गाऊज़बान १२ तोले से दें ।

गुण—यह ख़मीरा मस्तिष्क में तरावट उत्पन्न करता है, विबन्ध-नाशक, वक्ष तथा छाती के रोगों में लाभप्रद है, और पित को ख़ारज करता है ।

(२) बनफ़शा पुष्प की पंखिड़ीया आधा सेर लेकर १।। सेर खाँड में मिलाकर मलना आरम्भ करें, और थोड़ा २ अर्क गुलाब छिड़कें, जब एक जीव हो जाय, तो तीन दिन तक धूप में रखें, और प्रति दिन मल दिया करें, अच्छी तरह एक जीव होने पर शीशे के बरतन में डाल दें ।

मात्रा—रात्री को दो तोले, योग्य अनुपान से दें ।

गुण—मस्तिष्क में तरावट पैदा करता है, पित को रेचन द्वारा

निकालता है, वातकफ़, सन्निपात तथा वातपित सन्निपात में लाभ-प्रद है।

ख़मीरा ख़शख़ाश

पोस्त डोडा (ख़श ख़ाश के फल) १ सौ लेकर उन को तोड़ कर ख़शख़ाश निकाल लें, और पोस्त को २॥ सेर मेघ जल वा सादा पानी में जोश दें, छान कर इसी पानी में ख़शख़ाश बीज को ख़ूब बारीक पीस कर कपड़े से छान लें, अब इस में १॥ सेर खाँड डाल कर ख़मीरा विधि से पाक करें, और घोंट कर किसी चीनी के बरतन में रखें।

मात्रा—१ तोले से दो तोले तक अर्क गाऊज़बान १२ तोले में क्वाथ कर प्रयोग करें, बा किसी योग्य अनुपान से दें।

गुण—यह ख़मीरा पितजनित तीव्र प्रतिष्याय, खांसी, वायु नाली तथा श्वासनाली की ख़राश, जलन, सन्निपात, अनिद्रा, शिरशूल, रक्तपित, प्रदर में लाभप्रद है, पित्त को शान्त करता है।

ख़मीरा सन्दल

बुरादा चन्दन सफ़ेद ७॥ तोला, आध सेर अर्क गुलाब में १ दिन रात्री भिगों रखें, फिर क्वाथ कर छान लें, और १ सेर खाँड मिला कर अग्नि पर रखें, ख़मीरा विधि से पाक कर, पाक सिद्धि पर घोंटने से घोट लें।

मात्रा—७ माशा से १ तोला तक अर्क गाऊज़बान १२ तोले के साथ प्रयोग करें।

गुण—हृदय डूबना, हृदय की अधिक धड़कन, तृषा आदि में बहुत उपयोगी है।

ख़मीरा सन्दल तुरश वरक तिल्लावाला

चन्दन चूरा सफ़ेद ९ तोला, धनिया शुष्क छिला हुआ १॥ तोला, अपक्व अंगूर स्वरस ३० तोला, सिरका अंगूरी तीन तोला, मेघ जल १ सेर, अर्क गुलाब ॥ सेर, अर्क बेदमुश्क॥ सेर, चन्दन सफ़ेद घिसा हुआ, वंशलोचन प्रत्येक तीन तोला, मुक्ता, यशप सबज़, केशर प्रत्येक ३॥ माशा, कर्पूर २। माशा, स्वर्ण वर्क, चाँदीवर्क २–२ माशा, वंशलोचन से आख़ीर तक सब औषध को खरल करें, चन्दन चूरा तथा धनियाँ

को, मेघ जल, सिरका, और अर्कों में २४ घण्टे तक भिगो रखें, इसके बाद क्वाथ करें,आधा भाग रहने पर छान लें,और खाँड१सेर डाल कर पाक करें, शीतल होने पर खरल की हुई औषध पाक में डाल कर घोंटने से घोट दें ।

मात्रा—५ तो ७ माशा, अर्क गाऊज़बान १२ तोले से दें ।

गुण—पैतिक ज्वर, वमन,अतिसार में अति उत्तम है; साथ ही हृदय को बल देता है, हृदय डूबना में लाभ प्रद है ।

ख़मीरा गाऊज़बान सादा

गाऊज़बान ३ तोला, गाऊज़बान पुष्प, धनिया, अपक्व आबेरेशम कैंची से कुतरा हुआ, बहमन सुरख़, सफ़ेद, वालगूँ बीज, बन तुलसी-बीज, बादरंजबोया, दरूनजअकरबी, उस्तोख़दूस, तोदरी सुरख़, सफ़ेद १—१ तोला, मिश्री १ सेर, मधु उत्तम १ पाव, सब औषध को रात्री भर दो सेर पानी में भिगोवें, प्रातः क्वाथ करें, तीसरा भाग रहने पर छान कर मधु तथा मिश्री डालकर ख़मीरा की विधि से पाक करें,शीतल होने पर कड़ाही में डालकर घोटे से भली प्रकार घोटें, क्योंकि इस में गाऊज़बान का लेसदार रस होता है, इसलिये देर तक घोंटने से सफ़ेद होता है ।

मात्रा—१ तोला, ख़मीरा पर चांदी पत्र लपेट कर अर्क गाऊ-ज़बान १२ तोला के साथ वा केवल जल से प्रयोग करें ।

गुण—हृदय, मस्तिष्क के लिये अति उत्तम है, उन्माद, प्यास को दूर करता है, दृष्टि को भी बल देता है ।

ख़मीरा गाऊज़बान अम्बरी

ख़मीरा गाऊज़बान सादा में घोटते समय अम्बरशब ३ माशा, चांदी पत्र ६ माशा, (आवश्यकताअनुसार वंशलोचन में खरल कर) मिश्रित करें, तो यह ख़मीरा गाऊज़बान अम्बरी हो जायगा, यदि इस में स्वर्ण, पत्र भी ६ माशा, डाले जायें, तो इसे ख़मीरा गाऊज़बान, अम्बरी वर्क तिल्ला वाला कहा जायेगा ।

मात्रा—५ माशे ख़मीरा, अर्क गाऊज़बान१२तोले से प्रयोग करें ।

गुण—बुद्धि प्रकाशक है, मस्तिष्क कार्य अधिक करने वालों के लिये अति उत्तम है, बाकी सब उपरोक्त गुण हैं ।

ख़मीरा गाऊज़बान अम्बरी ज्वाहर वाला

ख़मीरा गाऊज़बान अम्बरी वर्क तिल्ला वाले में, मुक्ता, याकूत, ज़मुरद, ज़हरमोहरा प्रत्येक ४।। माशे, खरल कर के मिश्रित करें।

मात्रा—५ माशे ख़मीरा, अर्क गाऊज़बान के साथ प्रयोग करें।

गुण—उपरोक्त।

ख़मीरा गाऊज़बान अम्बरी जदवार ऊदसलीब वाला

ख़मीरा गाऊज़बान अम्बरी के पाक में जदवार, ऊदसलीब १–१ तोला अम्बर के साथ खरल करके मिलायें।

मात्रा—३ माशे।

गुण—शरीर को दृढ़ बनाता है, अर्दित, अर्धांग, वातकम्प, अपस्मार, योषापस्मार, बालग्रह, अपतन्त्रक में अति उपयोगी है, हृदय, मस्तिष्क को बलवान बनाता है।

ख़मीरा मरवारीद

बहमन सुरख़, बहमन सफ़ेद, तोदरी सुरख़, तोदरी सफ़ेद, बादरंजबोया बीज १–१ तोला, बादरंजबोया पत्र, गाऊज़बान पुष्प, ख़ुरफ़ा बीज २–२तोला, इन सबको अर्क गुलाब, अर्क बेदमुष्क प्रत्येक १–१ सेर में रात्री को भिगो रखें, प्रातःक्वाथ करें, आधा भाग रहने पर छान लें, और खाँड दो सेर मिला कर पाक करें, पाक सिद्धि पर घोटते समय जहरमोहरा २ तोला, मुक्ता, केशर, कस्तूरी, अम्बर १–१ तोल,ा खरल कर शामिल करें।

मात्रा—३ माशे ख़मीरा, अर्क गाऊज़बान से दें।

गुण—दिल, दिमाग़ को बल देता है, ख़फकान, घबराहट को दूर करता है, मोती झरा ज्वर में बहुत ही उपयोगी है।

(२) कहरूबा, वंशलोचन, यशप, ज़हरमोहरा, सन्दल सफ़ेद प्रत्येक ३।। माशे, मुक्ता ४।। माशे, चांदी पत्र ३।। माशे, शरबत सेब, शरबत बही, शरबत अनार प्रत्येक ६ तोला, खाँड १५तोला, खाँड और शरबतों को मिला कर पाक करें, पाक सिद्धि पर कहरूबा आदि औषध बारीक खरल कीये हुये मिश्रित करें, और घोटते समय चांदी पत्र १–१ करके डालें।

मात्रा—गुण— उपरोक्त।

खमीरा मरवारीद (बृहतयोग)

मुक्ता १ तोला, यशप, कहरूबा, सन्दल सफ़ेद, तबाशीर, चांदी-पत्र, स्वर्णपत्र प्रत्येक ६माशे, भली प्रकार खरल कर रख लें, अब सेब का शीरा, बही का शीरा प्रत्येक ५ तोलें, खाँड २० तोले, मधु ५ तोले का अर्क केवड़ा में पाक करें, और खरल की हुई औषध मिश्रित कर के खूब घोटें, पीछे चांदी पत्र वा स्वर्ण पत्र १---१ करके मिश्रित करें।

मात्रा---प्रातः सायं २ माशे खमीरा, अर्क गाऊज़बान १२ तोले, शरबत उन्नाब दो तोले मिला कर प्रयोग करें, रक्त अधिक निकल जाने पर २ चावल लौह भस्म भी साथ मिलावें।

गुण---यह खमीरा, दिल दिमाग़ को बल देता है, मोती झरा, शीतला में, हृदय की गरमी तथा घबराहट में लाभप्रद है, अतिसार तथा रक्तपित में अत्यन्त उत्तम है।

खमीरा याकूत

अर्क गाऊज़बान, अर्क चन्दन १-१ पाव, मधु, सेब रस, मधुर बही रस, अमरूद रस, अर्क गुलाब, अर्क बेदमुष्क प्रत्येक आधा सेर, खाँड सफ़ेद २ सेर मिलाकर पाक करें, और पाक सिद्धि पर याकूत-रमानी ३।।तोले, लाजवरद धुला हुआ, ज़हर मोहरा खताई, प्रत्येक ९ माशे, अम्बरअशब ५ माशे खरल करके मिश्रित करें, और घोटने से घोट देवें।

मात्रा---३ माशे।

गुण---यह खमीरा, हृदय दुर्बलता, ख़फकान, उन्माद में उपयोगी है।

(२) मधुर अनार स्वरस, अमरूद स्वरस, बही मधुर स्वरस, प्रत्येक पौने तीन तोला, खाँड सफ़ेद, अर्क गुलाब, अर्क बेदमुश्क, अर्क गाऊज़बान, प्रत्येक ४० तोले, सब को मिला कर पाक करें, और अन्त में कस्तूरी, कर्पूर, अम्बर अशब, स्वर्ण पत्र, चाँदी पत्र, प्रत्येक ४ माशा, याकूत रमानी २।। तोला खरल कर के मिश्रित करें, और घोटने से घोट दें।

मात्रा---३ माशा। गुण---उपरोक्त

ख़मीरा बनफ़शा सनाई

सनायमक्की, बनफशा पत्र प्रत्येक आधा सेर लेकर ८ गुणा जल में उबालें, तीसरा भाग रहने पर १० सेर खाँड मिलाकर पाक करें।

मात्रा—२ तोला।

गुण—विबन्ध नाशक है, उत्तम रेचक है।

दख़ान

दख़ान कुन्दर

यह बालों को लगाने के काम आता है, एक कोरे प्याले में कुन्दर बारीक करके रख दें, ऊपर से एक मोटे काग़ज़ का ख़ोल चढ़ा देवें, और उसे प्याले के किनारों से चिपका दें, और प्याले के नीचे दीपक में मोटी बत्ती डाल कर जलायें, काग़ज़ के ख़ोल में कुछ तिनके टेढ़े, तिरछे दाख़ल कर दें, ताकि कुन्दर का धूम्र इन पर जमता रहे, शरद होने पर धीरे से ख़ोल पृथक कर के दख़ान ले लें।

दख़ान सुन्द्रस

सुन्द्रस को बारीक पीस कर एक कपड़े पर फैला कर बत्ती बना लें, और एक दीपक में तिल तेल डाल कर बत्ती जला लें, और दीपक की लू पर ताम्बे का गहरा तवा ऊंधा कर के रख दें, ताकि इस में धुआं जिमा होता रहे, इस के बाद इस धुआं को पर से उत्तार लें, और थोड़ी मात्रा में कस्तूरी और अम्बर मिला कर प्रयोग करें।

गुण—यह भैंगापन में लाभप्रद है।

दवायें (औषध) (Medicines)

दवाये अहमर

शुद्ध हिंगुल १ तोला को १ साण्डे के उदर में भर कर सूई से सी दें, इसे आध सेर घृतकुमारी के गूदेमें रखकर दो प्यालों में रख कपरोटी कर के १५ सेर उपलों की आंच दे देवें, सरद होने पर निकाल लें।

मात्रा—१ ख़शख़ाश बीज समान, मधु के साथ प्रयोग करें।

गुण—वाजीकरण है। उत्तेजक है।

दवाये असलस्का

सदा सुहागन के पत्र छाया में शुष्क करें, फिर चूर्ण बना लें।

मात्रा—१ माशा, प्रातः सायं प्रयोग करें।

गुण—जलोदर रोग को विरेचन लाकर नष्ट करती है।

दवाये अमसाक

तिल के बीज, पत्र, शाख तथा पुष्प सम भाग लेकर छाया में शुष्क करें, और बारीक चूर्ण कर सम भाग खाँड मिला कर रख लें।

मात्रा—१ माशा, प्रति दिन २१ दिन तक प्रयोग करें।

गुण—स्तम्भक शक्ति को बढ़ाती है।

दवाये बुख़ार

शुद्ध हड़ताल वेर्की, शुद्ध मनशिल १—१ तोला लेकर घृत कुमारी के गूदे में खरल करें, और दो प्यालों में रख कर कपरोटी कर १० सेर उपलों की आग देवें, शीतल होने पर निकाल लें।

मात्रा—दो चावल, पान वा बताशा में रख कर प्रयोग करें, इसके प्रयोग के पूर्व रोगी को विरेचन दे लेना चाहिये।

गुण—विषम ज्वर में अत्यन्त उपयोगी है।

दवाये बवासीर

नागर मोथा, बालछड़, लौंग, जायफ़ल, हालों बीज, बिल्व, अनार-पुष्प प्रत्येक सात माशा, मण्डूर जिसे सिरके में भगो कर शुष्क किया हो, ६ तोला, हरड़ कृष्ण, बहेड़ा, आमला, मोड़ीयों बीज, गुलाब पुष्प प्रत्येक १४माशा, मेथी बीज १॥तोला, गन्दना बीज, शुद्ध गुगुलु, किश-मिश सब्ज़ प्रत्येक तीन तोला, गन्दना बूटी स्वरस ६ तोला, गुगुलु को गन्दना स्वरस में घोल कर छान लें, पीछे बाकी औषध का बारीक चूर्ण मिला भली प्रकार खरल कर एक जीव कर चूर्ण करें।

मात्रा—६ माशा, ताज़ा जल से।

गुण—रक्तज अर्श में रक्त बन्द करने को बहुत उपयोगी है।

दवाये जालीनूस

सरतान (केकड़ा) जला हुआ दो तोला, कुन्दर १ तोला, खाँड सफेद १॥ तोला, सब को पीस कर चूर्ण करें।

मात्रा—प्रातः सायं ३—३ माशा जल के साथ दें।

गुण—पागल कुते के काटे हुये रोगी के लीये लाभप्रद है।

दवाये जरयान (दवाये डिपटी साहिब वाली)

शुद्ध पारद ६ माशा, शुद्ध बंग १ तोला, शुद्ध वत्सनाभ ३ माशा, मिरच्च दक्षिणी दो तोला, बंग को पिघलाकर पारद में मिलावें, और खूब खरल करें, इस के पश्चात वत्सनाभ मिलावें, फिर १—१ सफ़ेद मिरच डाल कर खूब खरल करें। तयार है।

मात्रा—दो चावल, मक्खन में मिलाकर प्रयोग करें।

गुण—प्रमेह में उत्तम योग है।

(२) पोस्त डोडा, ख़शख़ाश बीज, श्वेत खाँड सफ़ेद, सम भाग, सब का बारीक चूर्ण करें।

मात्रा—६ माशा, १ पाव दूध से प्रयोग करें।

गुण—पितज प्रमेह में लाभप्रद है, जिन रोगीयों को मूत्र में पूर्व श्वेत वस्तु आया करती है, उसमें विशेष लाभप्रद है।

दवाये जरयानालरहम

समुन्द्र सोख, बीज बन्द, तालमखाना, सुहिंजना गोंद १—१ छटांक, बंग भस्म ९ माशा, खाँड सब के समान भाग, सबको बारीक पीस कर खाँड मिला कर रखें।

मात्रा—६ माशा, गौ दुग्ध से प्रातः सायं प्रयोग करें।

गुण—स्त्रियों के श्वेत प्रदर में उत्तम है, प्रमेह में भी लाभ कारी है।

(२) गोंद कीकर, गोंद कतीरा, चीना गोंद, बंशलोचन, बंग भस्म, बहरोजा सत्व, छोटी इलायची बीज, कीकर की फली, शतावर, तालमखाना, दोनो मूसली, मोचरस, इन्द्रजौ, नीम की गोंद सब औषध सम भाग लेकर बारीक करें, और सम भाग खाँड मिला लें।

मात्रा—६माशा प्रातः, ६ माशा सायं गौदुग्ध से प्रयोग करें।

गुण—उपरोक्त

दवाये झाड़

वायविड़ंग, समुद्रझाग, लवपुरी लवण, बहरोज़ा खुष्क, सत्र औषध को बारीक कर के रख लें।

मात्रा तथा उपयोग——१ माशे, औषध मलमल के बारीक कपड़े में रख कर तीन पोटली बना लें,और गर्भाशय के समीप धरें,यह औषध गर्भाशय के सब गन्दे दूषित दोष को बाहर निकाल देती है।

दवाये सीमट

पुरानी ईंट का चूरा, छोटी माईं, अनार का छिलका, माजू सबज़, हीरा कासीस, सब को बारीक कर १—१ माशा की तीन पोटलीयां बना भीतर रखें,गर्भाशय के ढीलापन को नष्ट करती है, योनी संकोचक है।

दवाये झाड़ के प्रयोग के बाद अवश्य प्रयोग करनी चाहिये।

दवाये सेलानल रहम

तज, समद्र सोख, गोक्षरू, संगज्राहत, छोटी इलायची, गोंद कतीरा, सम भाग लेकर चूर्ण करें, चूर्ण के सम भाग खाँड मिला लें।

मात्रा——६ माशा, प्रातः सायं दूध के साथ प्रयोग करें।

गुण——श्वेत प्रदर में उपयोगी योग है।

दवाये सिया पेचश

कृष्ण हरीतकी १० तोला को घी में आवश्यकतानुसार लेकर भून लें, फिर कूट छान लें, सम भाग खाँड सफ़ेद मिला लें।

मात्रा—७ माशा, प्रातः को चावल साठी के पानी से प्रयोग करें।

गुण——प्रवाहिका में उत्तम है, तथा ख़ून आने को रोकती है।

दवाये सिया जरयान वा दवाये कढ़ाई वाली

शुद्ध नाग लेकर कड़ाही में पिघलायें, और थोड़ी २ कची शक्कर डाल कर सुहिंजना की लकड़ी से चलाते रहें, जब सीसा की भस्म हो जाये, तो छान लें।

मात्रा——४ चावल, मक्खन में वा माजून छुहारे में मिला कर प्रयोग करें।

गुण——प्रमेह में अत्यन्त उत्तम है।

दवाये सिया मुसहल

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक १–१ तोला को खरल कर कज्जली बनावें, कज्जली के सम भाग संगबसरी शामल कर के खरल करें, फिर इस औषध को मिटी के कोरे बरतन के भीतर लेप कर दें, और खरल का धोया हुआ जल भी इसी में डाल दें, जल औषध से दो ऊंगल ऊपर रहे, अब इसको आग पर चढ़ा कर शुष्क करें, जल शुष्क होने पर छाया में रख कर सब सुखा लें।

मात्रा तथा गुण–१ से २ रत्ती, कर्पूर १ रत्ती औषध में मिला कर दूध की लस्सी से प्रयोग करें, विरेचन के बाद दूध चावल प्रयोग करें, इस से विरेचन के साथ १–२ वमन भी होंगी, शीतल जल पीने से दस्त बन्द हो जायेंगे।

दवाये सुज़ाक

शुद्ध गंधक, कलमी शोरा १–१ तोला, दोनो को लोहे की कड़ाही में डाल कर उसके ऊपर दूसरी कड़ाही देकर ढक दें, कपरोटी करके चूलहे पर चढ़ा कर मृदु अग्नि दें, १ घण्टा पश्चात दोनों पिघल जायेगें, उतार कर उस में १ तोला स्फटिका भुनी हुई डाल कर सब का बारीक चूर्ण करें।

मात्रा—१।। माशा, बकरी के दूध में शरबत बजूरी मिला कर प्रयोग करें।

गुण—नये तथा पुराने सुंज़ाक में लाभप्रद है।

दवाये शफ़ा

छोटी चांद, (सर्पगंधा) (जिसे असरोल भी कहते हैं)–बारीक चूर्ण कर लें।

मात्रा—२ से ४ रत्ती तक योग्य अनुपान से प्रयोग करें।

गुणा—उन्माद, पागलपन, अपस्मार, अपतन्त्रक तथा अनिद्रा में लाभ प्रद है।

दवाये कौलंज रीह

रेवन्द चीनी ६ माशा, सोंठ १ तोला, कसूरबीज कृष्ण, नवसादर,

३-३ माशा, सबको बारीक चूर्ण करें।

मात्रा---२ से ४ रत्ती, भोजनोपरान्त दें।

गुण---वातिक शूल तथा आन्त्र शूल में लाभप्रद है।

दवायें ताकत

पोस्त ढाक, गूलर छाल, गोंदनी छाल, कीकर छाल, प्रत्येक १-१ सेर, लेकर १६सेर पानी में क्वाथ करें, तीसरा भाग, रहने पर इस पानी में १ सेर साठी के चावल डाल कर पकावें, कि पानी सूख जाये, अब चावलों को खुष्क करके पीस लें, और इसमें गन्दम (गेंहू) कानिशास्ता डालकर घी में भून लें, और त्रिगुणा खाँड का पाक करके इसमें मिला दें, यह वस्तु अब हलवे समान हो जायगी, अब इसमें मग़ज़ तरबूज़, मग़ज़ खरपज़ा, मग़ज़ फिन्दक, काले तिल, खोपा, मग़ज़ बादाम, मग़ज़ पिस्ता, मग़ज़ चलगोज़ा, अखरोट मग़ज़, मग़ज़ बनोला, प्रत्येक ५ तोला घी में भून कर मिलायें, और अन्त में सम्भालू बीज, भांग बीज, दोनो मूसली, दोनो तोदरी, दोनो बहमन, तालमखाना बीज, मग़ज़ तुख़म बाकला, छुहारे का चूर्ण प्रत्येक ४ तोले, अम्बरअशब ५ माशा, मुक्ता ३ माशे, केशर दो तोला, कस्तूरी १ तोला, स्वर्ण पत्र, चांदी पत्र प्रत्येक ५० नग, लेकर खरल कर के मिश्रित करें, यदि पाक कम हो, तो मधु थोड़ा डाल कर पाक ठीक करें।

मात्रा--१ तोला प्रातः १ तोला सायं दूध के साथ प्रयोग करें।

गुण---शरीर को दृढ़ बनाती है वाजीकरण तथा वीर्यप्रद है।

दवाये तिहाल

फटकड़ी, सज्जीक्षार, तूतीया सबज़ १-१ तोला, धोबीयों के धोवन का जल १ सेर में बारीक कर डाल दें, २४ घण्टे बाद उसका क्वाथ करें, जल शुष्क होने पर खुरच लें।

मात्रा---दो चावल, दवा बताशा में रखकर खायें, और ऊपर से बकरी का दूध पीवें।

गुण---बढ़ी हुई तिल्ली (प्लीहा) को कम करती है।

दवाये क्वाये अरबा

अनारदाना तुरश (अम्ल) १८ तोला ८ माशा, काला लवण,

३ तोला, सोंठ, जीरा सफ़ेद प्रत्येक दो तोला ४माशा, त्रिवृत, जीरा कृष्ण, तंतड़ीक, हरड़, बेहड़ा प्रत्येक१४ माशा, सब औषध को कूट कर बारीक करें ।

मात्रा–७ माशा औषध, अर्क सौंफ़ के साथ भोजनोपरान्त व पूर्व प्रयोग करें, दस्तों को रोकने के लीये बारीक कपड़े में छान कर प्रयोग करें, और विबन्ध नाश के लीये छलनी में छान कर प्रयोग करें।

गुण—–विबन्ध नाशक है, तथा दस्तों को बन्द भी करती है, दीपक पाचक है ।

दवाये कासर रियाह् व मकवी कलब

सौंफ़, पोदीना, तज, अजवायन, बड़ी इलायची बीज प्रत्येक ९ माशा, सव औषध का चूर्ण कर एक सेर अर्क सौंफ़ में रातको भगो रखें, प्रातः क्वाथ करें,आधाभाग रहने पर छानकर मधुर अनार स्वरस, मधुर सेब स्वरस प्रत्येक १० तोला, खाँड सफ़ेद १सेर डाल कर पाक करें, शीतल होने पर छोटी इलायची बीज, सोंठ, ऊदसलीब, प्रत्येक ९ माशा, सत पोदीना २ माशा, मस्तगी रूमी २ तोला, खरल कर मिलावें ।

मात्रा—–६ माशा, खाना खाने के बाद प्रयोग करें ।

गुण—–वायु को नष्ट करती है, शरीर को दृढ़ बनाती है हृदय के ऊपर वायु के दबाओ के कारण जो दिल डूबने लगता है, उस में लाभप्रद है ।

दवालकबरीत

शुद्ध गन्धक १॥ तोला, बाल छड़, कुठ मधुर, तज, रूमी मस्तगी, हब्बुलग़ार, सोंठ, लौंग, जावित्री प्रत्येक ९ माशा, ज़रावन्द लम्बे, कालीमिरच, करफ़सबीज, अनीसून, अजवायन, जीरा कृष्णा, कन्तरियूँ-दकीक, असारून (तगर), अंजदान (हींग वृक्ष के बीज हैं), पोदीना जंगली, पोदीना बाग़ी, अंजरा बीज, कुन्दर प्रत्येक १॥ तोला, अगर, मिरच सफ़ेद, १–१ तोला दस माशा, केशर ७ माशा, कस्तूरी,अहिफ़ेन, ४॥ माशा, मधु उत्तम दुगना, सब औषध को कूट छानकर मधु में मिलावें, और ६ मास पश्चात प्रयोग करें ।

मात्रा—५ माशा, योग्य अनुपान से दें।

गुण—पाचक तथा दीपक है, बहुत ही गुण प्रद औषध है।

(२) शुद्ध गंधक, बालछड़, कुठ, तज, रूमी मस्तगी, सोंठ, लौंग, जावित्री, ६—६ माशा, काली मिरच, करफ़स, अनीसून, अजवायन, कृष्ण जीरक, जंगली पोदीना प्रत्येक ९माशा, सब औषध को कट छान कर त्रिगुणा मधु मिलायें, और ६ मास पश्चात प्रयोग करें।

मात्रा—५ माशा, योग अनुपान से।

गुण—आमाशय, यकृत को बल देता है, वातकम्प तथा वात के रोगों में लाभ प्रद है।

दवालकरकम कबीर

केशर असली ३॥ तोला, बालछड़ १॥। तोला, रोग़न बलसान १॥ तोला, तगर, अनीसून, करफ़स बीज, रेवन्द चीनी, दूको, मूरमक्की, प्रत्येक १४ माशा, रबुलसूस, तज, मस्तगी, गाफ़स पुष्प प्रत्येक १०॥ माशा, मजीठ ७ माशा, कुठ, दारचीनी, फ़का अज़खर, हब्ब बलसान प्रत्येक ३॥ माशा, सब औषध को कूट छान कर त्रिगुणा मधु के पाक में मिला कर माजून (अवलेह) बना लें।

मात्रा—५ माशा, अर्क मालहम ५ तोला (मको कासनी वाला), और दो तोला शरबत दीनार के साथ प्रयोग करें।

गुण—यह औषध, यकृत, प्लीहा के वात कफ़ रोग तथा तत्जनित जलोदर में उपयोगी है, दूषित मल को निकालती है, वायू को नष्ट करती है, वृक्क तथा मूत्राशय को बल देती है।

दवालकरकम सग़ीर

केशर असली, तज, बालछड़ ७—७ माशा, फ़का अज़खर, मुरमक्की, कुठ, दारचीनी ३॥—३॥ माशा, औषध को कूट छान १ दिनरात्री अंगूरी शराब में भिगो रखें, फिर त्रिगुणा मधु में मिला लें।

गुण तथा मात्रा उपरोक्त।

दवाये अजीब

शुद्ध पारद को ४१ बार लट्ठे के कपड़े में से छान लें, (पारद की यूनानी चिकित्सा अनुसार शुद्धि करने की विधि), तत्पश्चात स्वर्ण

पत्र तीन तोला खरल करें, एक जीव होने पर मुक्ता उत्तम १ तोला, शुद्ध हिंगुल ६ माशा डाल कर आठ दिन तक निबू से खरल करें, फिर टिकिया बना कर कपरोटी कर दो मन उपलों की पुट दें, शीतल होने पर निकाल लें, १ वर्ष के बाद किसी योग्य अनुपान से १ से २ चावल की मात्रा में दें।

गुण—शारीरक बल बढ़ाने के लीये अति उत्तम है वाजीकरण है।

दवालमस्क बारद सादा

अपक्व आबरेशम कुतरा हुआ, तवाशीर, चन्दन सफ़ेद, गुलाब पुष्प, धनियाँ खुष्क, मग़ज़ कदू मधुर, गाऊज़बान पुष्प, प्रत्येक ४।। माशा, कहरबा शमई ९ माशा, कस्तूरी १। माशा, चांदी पत्र ३ माशा, मधुर सेब स्वरस, अर्क केवड़ा प्रत्येक २० तोला, कस्तूरी, कहरूबा, चांदी पत्र को पृथक खरल करें, और बाकी औषध को कूट छान कर खरल की हुई औषध मिला दें, अब अर्क, स्वरस और खाँड १। सेर का पाक कर के चूलहे से उत्तारदें, और शीतल कर के बाकी औषध चूर्ण को मिला कर अवलेह बना लें।

मात्रा—५ माशा, अर्क गाऊज़बान ७ माशा, अर्क बेदमुष्क तीन तोला, शरबत अनार दो तोला के साथ प्रयोग करें।

गुण—यह औषध शरीर के अंगों को दृढ़ बनाती है, ख़फ़कान, हृदय डूबना में लाभ प्रद है, दीपक पाचक है!

दवालमस्क बारद ज्वाहर वाली

यदि ऊपर वाले योग में अम्बर ४।। माशा, मुक्ता, प्रवाल, ज़हर-मोहरा प्रत्येक सात माशा, कस्तूरी ४।। माशा, चांदी वर्क ६ माशे, खरल करके मिश्रित कर दिया जाये तो दवालमस्क बारद जौहर वाली बन जाती है।

मात्रा तथा गुणा—उपरोक्त।

दवालमस्क हार सादा

कचूर, दरून्ज अकरबी, कहरूबा, बुसद प्रत्येक तीन तोले, आब-रेशम कुतरा हुआ, दोनों बहमन, बालछड़, तेजपत्र, छोटी इलायची, लौंग प्रत्येक १।। तोला, पिप्पली, सोंठ, छड़ीला प्रत्येक १ तोला,

कस्तूरी ७ माशा, सब औषध को कूट छान कर त्रिगुणा मधु क पाक कर उस में अच्छी तरह मिश्रित करें।

मात्रा—५ माशा, अर्क गाजर, अर्क अम्बर में मीठा मिला कर प्रयोग करें

गुण—दिल, दिमाग़ को बल देने वाली विशेष औषध है, ख़फ़कान, उन्माद, चितभ्रम, अंदित, अर्धांग, वातकम्प, ढीलापन, अपतन्त्रक, में लाभ प्रद है, दीपक पाचक है।

देवालमस्क हार ज्वाहर वाला

उपरिलिखित योग में मोती, कहरूबा शमई, बुसद प्रत्येक ३ तोले खरल कर के मिश्रित करें।

मात्रा तथा गुण—उपरोक्त।

दवालमस्क सादा मुतदिल

ज़ीरशक १।। तोला, वंशलोचन, चन्दन सफ़ेद, सुरख़, धनियां शुष्क, गाऊज़बान पुष्प, आमला, खुरफ़ा बीज, १—१ तोला, गुलाब पुष्प, आबरेशम कुतरा हुआ, दारचीनी, दोनो बहमन, दरूनज अकरबी प्रत्येक सात माशा, अगर, बादरंजबोया, प्रत्येक ५ माशा, रूमी मस्तगी, छड़ीला, छोटी इलायची बीज, ४—४ माशा सब औषध को कूट छान कर दुगनी खाँड और समभाग मधु और मधुर सेब स्वरस में मिला कर पाक करें, पाक सिद्धिता पर औषध का चूर्ण मिलावें, फिर कस्तूरी, अम्बर २—२ माशा, केशर ७ माशा खरल कर के मिश्रित करें।

मात्रा—५ माशा, अर्क गाऊज़बान ७ तोले, अर्क सोंफ़ ५ तोला, खाँड सफ़ेद दो तोला के साथ प्रयोग करें।

गुण—यह औषध वातज चित भ्रम, उन्माद के लिये उत्तम है, हृदय तथा यकृत को बल देता है, दीपक पाचक है।

दवालमस्क मुतहदिल ज्वाहर वाली

यदि इसी उपरोक्त योग में चांदीपत्र १० माशा, मुक्ता, कहरूबा शमई, कस्तूरी, अम्बर प्रत्येक सात माशा, केशर ७माशे, के साथ खरल करें, तो इसे दवालमस्क मुतहदिल ज्वाहर वाला कहते हैं।

मात्रा—३ से ५ माशा, अर्क गाजर, अर्क अम्बर के साथ प्रयोग करें।

गुण—उपरोक्त ।

दवायेमदर हैज़ (ऋतु प्रवर्तक)

तज , कलौंजी ९–९ माशा, जुन्दबदस्तर, हाऊबेर ७–७ माशा, सब औषध को कूट छान कर मधु में मिलावें ।

मात्रा—प्रतिदिन ५–५ माशा, प्रातः सायं अर्क सौंफ़ के साथ दें ।

गुण—यदि रक्त की कमी न हो, तो इसके प्रयोग से मासिक धर्म्म खुल कर आजाता है ।

दवाये मनूम

लफ़ाह बूटी का मूल, (इसे इंग्रेज़ी में बेलाडोना Belladona Root कहते हैं), अजवायन ख़ुरासानी प्रत्येक १–१ तोला, १०॥ माशा, नागर मोथा मूल ४ तोला ८। माशा, सब को कूट कर चार सेर दूध में उबालें, इसके बाद नीचे उत्तार कर ज़ामन देकर दही जमा लें, फिर उसका मक्खन निकालकर सुरक्षित रखें, ५ नग जायफल लें, और बीच में से ख़ाली कर के उन में उत्तम अहिफ़ेन २। माशा, बत्ती सी बनाकर रखें, अब जायफ़लों को गूंदा आटा लगा कर गौघृत में भून लें, ऊपर का आटा जल जाने पर आग से उतार का आटा पृथक कर लें, अब इसमें स्वर्ण वर्क, चांदी वर्क, अम्बर अशब, कस्तूरी, प्रत्येक ३–३ माशा, केशर ५ माशा ५रत्ती, दारचीनी, बहमन सफ़ेद, बहमन सुरख़, शकाकल मिश्री, गाऊज़बान पुष्प, बनफ़शा पुष्प, गुलाब की कली, धनियां ख़ुष्क, ख़शख़श बीज श्वेत, ख़ुरफ़ा बीज छिला हुआ प्रत्येक ११। माशे, सहलबमिश्री, बादाम मधुर, मग़ज़ पिस्ता, मग़ज़ चलग़ोज़ा, मग़ज़ चरोंजी, मग़ज़ तुख़म कुड़, मग़ज़ हिवतलखिज़रां प्रत्येक १–१ तोला १०॥ माशा, मग़ज़ तुख़म ख़यारैन ६ तोले, पौने सात माशा, मिश्री, मधु प्रत्येक ३३॥। तोले, अब कूटने वाली औषध को कूटकर छान लें, और सबको जायफ़ल के चूरे समेत (जो जायफल को बीच में से ख़ाली करते समय निकाला था) प्रथम मक्खन में मिला कर फिर शहद और मिश्री के पाकमें (जो कि अर्क गुलाब, बेदमुशक, गाऊज़-बान में बनाया गया हो) अच्छी तरह से मिला लें ।

मात्रा—६ माशा से १ तोला तक ।

गुणा—वातकफ़ रोगों में अपूर्व लाभ दायक है, वाजीकरण तथा स्तम्भक औषध है, अनिद्रा, सन्निपात में लाभप्रद है ।

(१) औषध

मिश्री ७ माशा, मिरच सफ़ेद, सुरमा, छोटी इलायची, संगबसरी, मग़ज़ शिरसबीज, फटकड़ी, सबज़कांच प्रत्येक १४ माशा, कोड़ी पीली ८ नग सब को सुरमा समान पीस लें, और आवश्यकतानुसार आंख में लगावें ।

गुण—फोला, नाख़ना, धुन्ध, जाला में बहुत उपयोगी है ।

औषध (२)

संग बसरी (खर्पर) १तोला, मिरचकाली दोनों को बारीक पीस, कर रेशमी कपड़े में छान कर यशद की थालीमें डालकर कुच्छ दिन ख़ूब खरल करें, आवश्यकतानुसार आंख में लगावें ।

गुण—आंख के मेलापन तथा अंधेरा छा जाना (तिमिर) में उपयोगी है ।

औषध (३)

सरू का फल, लवपुरी लवण, नवसादर, समाक, माजू बेसुराख़, अनार की कलीयां, अकाकीया (कीकर छाल घन सत्व) स्फटिका, मधुयष्टि पत्र, मामीरान, रसोंत, मुरमकी, असारा मामीशा (इसी नाम से मिलती है, एक बूटी है) झाऊ फल, झाऊ मूल, गुलाब पुष्प की जड़, गुल अनार, अबाब़ील (एक प्रकार का पक्षी है) की राख समभाग लेकर कट छान कर गले में लगावें ।

गुण—कौआ लटक जाना तथा गले पड़ने में लाभ प्रद है ।

कास औषध

पहाड़ी पोदीना, ईरसा (नीले फूल वाली सोसन की जड़ है), आशा (यह भी एक प्रकार का पहाड़ी पोदीना है), सौंफ़ रूमी १-१

तोला, काली मिरच ६ माशा, सबका बारीक चूर्ण करके मधु में मिला लें।

मात्रा—३ माशा।

गुण—कास, श्वास में उत्तम है, कफ़ को निकालती है।

कास औषध

(२) जूफा शुष्क, पोदीना, मधुयष्टि, राई, काली जीरी, काली मिरच, ऊटंगन बीज, सौंफ़ रूमी सब सम भाग लेकर चूर्ण कर मधु में मिला लें।

मात्रा—३ माशा।

गुण—सीना तथा फेफड़ों से कफ़ को निकालती है, कास, श्वास, में उत्तम है।

कास औषध

(३) मूली यदि काली मिल जाये और बड़ी हो तो बहुत उपयोगी है, नही तो जैसी भी मिल जाये, लेकर चाकू से छोटे २ टुकड़े कर लें, आधा भाग मधु लें, अब यह दोनो वस्तुयें किसी पत्थर वा मिट्टी की हाण्डी में भर दें, हाण्डी इतनी बड़ी होनी चाहिये, कि भरने के पश्चात १ भाग ख़ाली रहे, इस के बाद मुख बन्द कर के कपरौटी कर के एक तन्दूर में जो न अधिक उष्ण हो और न ही शीतल हो, रात्री भर रख दें, तन्दूर का मुख भी अच्छी तरह ढक दें, प्रातः काल हाण्डी निकाल लें, और खोल लें, त्यार है, प्रति दिन इस में से दो चमचे प्रयोग करें।

गुण—कास, श्वास में अत्यन्त उत्तम है।

कास श्वास औषध

(४) घृत कुमारी ५ सेर, शोर लवण आधा सेर, अजवायन १ पाव, पिप्पली १ तोला, घृत कुमारी के छोटे २ टुकड़े कर के एक कोरी हाण्डी में भर दें, इस के ऊपर नमक शोर, अजवायन तथा पिप्पली बिच्छा दें, और कपरोटी कर के ५ प्रहर अग्नि दें, शीतल होने पर निकाल लें।

मात्रा—१ से दो माशा, योग्य अनुपान से दें।

गुण—कास, श्वास में उत्तम है, कफ़ को निकालती है।

नासार्श औषध

जंगार, नवसादर, सज्जी, सम भाग लेकर पीस लें, आवश्यकता पर मधु में मिला कपड़े की बत्ती इस में लतपत कर नासा रन्धर में रखें, नासा के भीतर जो मस्से उत्पन्न हो जाते हैं, इस के प्रयोग से नष्ट हो जाते हैं।

नकसीर औषध

हरीतकी, कुसम्भे के फूल, अपक्क अनार सब को समभाग लेकर पीस लें, और जल में पीस कर नाक में नस्य दें, नकसीर में लाभ प्रद है।

दवालमस्क बारद

स्वर्ण वर्क, अम्बर अशब प्रत्येक आधा माशा, केशर, दारचीनी, छड़ीला, कस्तूरी १-१ माशा, आबरेशम अपक्व २ माशा, कहरूबा, प्रवाल जड़, बंशलोचन, चांदी पत्र, प्रत्येक तीन माशा, मुक्ता ५ माशा, गाऊज़बान, गुलाब पुष्प, धनियां, ख़ुरफ़ा बीज, प्रत्येक ६ माशा, शरबत सेब, शरबत, बही, शरबत मधुर अनार १-१ तोला, अर्क गुलाब, अर्क बेदमुष्क प्रत्येक ४ तोला ८ माशा, मधु उत्तम, खाँड, औषध से त्रिगुणा, प्रथम मधुर औषध का पाक करें, पाक सिद्धि पर बाकी औषध का चूर्ण मिला दें।

मात्रा—५ से ७ माशा।

गुण—ख़वकान, हृदय डूबना आदि में लाभ प्रद है।

दवालमस्क सादा

बंशलोचन, गुलाब पुष्प, धनियां, चन्दन सफ़ेद, ख़ुरफ़ा बीज छिला हुआ प्रत्येक १४ माशे, कहरूबा शमई, मरजान (प्रवाल) मूल, अपक्व आबरेशम कुतरा हुआ, प्रत्येक सात माशा, कस्तूरी, १॥ माशा, खाँड सब औषध से त्रिगुणा, पाक करें, पाक सिद्धि पर बाकी औषध का चूर्ण मिला कर अवलेह बनावें।

मात्रा—५ से ९ माशा।

गुण—उपरोक्त, परन्तु कुच्छ न्यून ।

दवालमस्क बारद अम्बरी

अपक्व आबरेशम कुतरा हुआ, तबाशीर सफ़ेद, चन्दन सफ़ेद, गुलाब पुष्प, धनिया खुष्क, गाऊज़बान पुष्प, कस्तूरी, अम्बरशब, प्रत्येक २। माशा, मुक्ता, कहरूबा शमई, प्रत्येक ४।। माशा, खाँड पौने उनीस तोले, खाँड का पाक कर बाकी औषध का चूर्ण मिला कर पाक करें।

मात्रा—४।। माशा ।

गुण—उपरोक्त ।

दवालमस्क

मुक्ता, कहरबा शमई, प्रवाल, आबरेशम, नरकचूर, दरूनज अकरबी, केशर, बालछड़, बड़ी इलायची, लौंग, तेजपत्र, छड़ीला, जुन्दबदस्तर, पिप्पली, सोंठ, कस्तूरी, मस्तगी, दोनो बहमन, अम्बरशब, प्रत्येक २२।। माशा, यदि कुरस अम्बर हो, तो अम्बर के स्थान पर कुरस अम्बर १० तोला डालें, खाँड सफ़ेद ३७।।तोला, प्रथम खाँड तथा मधु का पाक करें, बाकी औषध का चूर्ण मिला कर अवलेह बनावें।

मात्रा—५ माशा ।

गुण—उपरोक्त ।

दवालमस्क अलो

पिप्पली ६ माशा, मस्तगी ९ माशा, सोंठ, अम्बरशब १-९ तोला, कस्तूरी १। तोले, बहमन सुरख़, सफ़ेद,बालछड़, लौंग, तेजपात, छड़ीला, जन्दबदस्तर, बड़ीइलायची प्रत्येक १।।तोला, मुक्ता, कहरूबा, प्रवाल की जड़, आबरेशम कुतरा हुआ, नरकचूर, दरूनज अकरबी, केशर प्रत्येक २।। तोला, खाँड ३६ तोला, मधु सब औषध से दुगना, पाक करके बाकी औषध का चूर्ण मिला त्यार करें, दो मास बाद इस में अवलेह का चौथा भाग जदवार बनफ़सजी का बारीक चूर्ण करके और मिला दें ।

मात्रा—५ माशा ।

गुण—उपरोक्त, जदवार मिलाने से विषदोषों को नष्ट करने में भी उपयोगी हो जाती है।

दवालमस्क मुतादिल

कर्पूर ३ रत्ती, अम्बर ७ रत्ती, कस्तूरी १।।। माशा, चांदी पत्र, केशर प्रत्येक ३।। माशा, काहूबीज ५। माशा, प्रवाल जड़, आबरेशम कुतरा हुआ प्रत्येक ७माशा, मुक्ता, गाऊज़बान पुष्प, निशास्ता, ख़ुरफ़ा बीज, सन्दल सफ़ेद प्रत्येक पौने ९ माशा, आमला, तथा ज़रिशक का अर्क गुलाब में स्वरस निकाला हुआ प्रत्येक २१ माशा, दारचीनी ४।। माशा, मधु औषध के समान, खाँड दुगनी, अर्कगुलाब, बेदमुशक, गाऊज़बान, प्रत्येक २८ तोले १।। माशा, प्रथम अर्कों में खाँड तथा मधु मिलाकर पाक करें, पाक सिद्धि पर औषध चूर्ण मिला अवलेह बनावें।

मात्रा—५ माशा ।

गुण—उपरोक्त ।

दवायें अजीब

ऊद अपक्व जला कर मधु में मिला कर रोगी को दिन में ३–४ वार चटावें ।

गुण—हिचकी में लाभप्रद है ।

कुठ योग

दारचीनी, तज काली, कुठ प्रत्येक आठ तोला ९माशा, तगर आठ तोला ५।।माशा, शगूफ़ा अज़ख़र, मुरमक्की साफ़की हुई, प्रत्येक सात तोला, अनीसून, करफ़सबीज, रेवन्द चीनी प्रत्येक ३५ माशा केशर २८ माशा, मुरमक्की को गाढ़ी शराब में हल कर के छान लें, और बाकी औषध को कूट छानकर त्रिगुणा मधु मिलाकर पाक करें, प्रथम मुरमक्की को पाक में हल करें ।

मात्रा—७ माशा ।

गुण—आमाशय तथा यकृतशूल में उपयोगी है ।

प्रवाहिका औषध

(२) अजवायन, जीरा सफ़ेद, हरीतकी कृष्ण प्रत्येक २८माशा, सबका बारीक चूर्ण करें ।

मात्रा—४ माशा से १ तोला ।

गुण—प्रवाहिका में उत्तम योग है ।

प्रवाहिका योग

सोंठ, सोंफ़, बिलव प्रत्येक ७ माशा, खाँड १०माशा, सब को कूट छान कर खाँड में मिला लें।

मात्रा तथा गुण—प्रथम दिन ७ माशा, दूसरे दिन १० माशा, तीसरे दिन ४ माशा, पानी के साथ दें। प्रवाहिका में उत्तम है।

कृमिहर ओषध

दरमना तुरकी ७ माशा, निशोथ श्वेत, वायविड़ंग काबुली (छिली हुई) प्रत्येक ३॥ माशा, तुरमस, कमीला, कालादाना, सरख़स, प्रत्येक पौने दो माशा, हिन्दी लवण ६ रत्ती, मिला कर चूर्ण करें, मीठे दूध में मिला कर खिलायें।

गुण—सब प्रकार के कृमियों को नष्ट करती है, और इनकी उत्पत्ति को भी रोकती है।

अतिसार औषध

धावी पुष्प, बिलव गिरी, इन्द्रजौ, ख़स, सम भाग लेकर कूट छान लें।

मात्रा—३ से ६ माशा

गुण—अतिसार, रक्त अतिसार में लाभ प्रद है।

मधुमेहहर औषध

कुटज, सत्यानासी की छाल, कैथ, छितवन, मोखा छाल, सब समान भाग लेकर चूर्ण करें।

मात्रा—६ माशा से १ तोला तक।

गुण—मधुमेह में उत्तम है।

अश्मरी औषध

हिजरलयहूद, संग सर्माही, मूली बीज, कुलथ्थी, प्रत्येक दो माशा, बारीक पीसकर शरबत कसूस में मिलाकर प्रयोग करें, ऊपर से करफ़स बीज ५ माशा, तुख़म ख़रपज़ा बीज १ तोला, तुख़म खयारैन १ तोला, सौंफ़, गोक्षरू ६—६ माशा, का क्वाथ कर के पिलावें।

गुण—अश्मरी में लाभप्रद है।

दवाये तरंजबीन

तरंजबीन साफ़ कीया हुआ ९० माशा, १ सेर ताज़ा दूध में उबालें, जब पाक हो जाये, तो प्रति दिन रोगी को दो चमचे खिलावें ।

गुण—यदि पित के दोष कारण समभोग क्रिया में कमी, हो तो उस में लाभ प्रद है, वीर्य को उत्पन्न करती है ।

वाजीकरण योग

कस्तूरी, केशर, प्रत्येक ३।। माशा, जायफ़ल, शुद्ध शिलाजीत, छोटी इलायची, दारचीनी, मस्तगी, चोबचीनी, तेजबल, पिप्पलामूल, पिप्पली, ऊटंगन बीज, कौंचबीज, गाजर बीज, मालकंगनी, बनफ़शा-की जड़, समुद्रफल, मोचरस, शुद्ध हिंगुल, इन्द्र जौ, नागर मोथा, गिलोय-सत्व, शतावर, नागकेसर, दोनो मूसली, अकरकरा, चोबचीनी, मदन-मस्त प्रत्येक १७।। माशा, नौ वर्ष का पुराना गुड़ आवश्यकतानुसार, सब औषध को कूट पीस कर गुड़ में मिला जंगली बेर समान वटी करें।

मात्रा—प्रातः सायं १–१ वटी का प्रयोग करें ।

गुण—शीघ्रपतन में लाभ प्रद है, वाजी करण है ।

दवाये अर्कलनसा (गृध्रसी हर औषध)

सनाय २१ माशा, सुरंजान १७।। माशा, पितपापड़ा सात माशा, केशर १।।। माशा, सब औषध को कूट छान कर चूर्ण करें ।

मात्रा—५। माशा, समभाग खाँड मिला कर (कुल १०।। माशा), प्रयोग करें ।

गुण—गृध्रसी में उत्तम है ।

गण्डमाला हर औषध

शिरस बीज १ भाग को लेकर चूर्ण कर दुगुणा मधु में मिला कर कोरी हाण्डी में डालें, मुख बन्द कर के कपरौटी कर के दो सप्ताह तक धूप में रखें, दो सप्ताह के बाद निकाल कर प्रतिदिन १ तोला प्रयोग करें

गुण—कण्ठ माला, गल गण्ड, अपची में अत्यन्त लाभ प्रद योग है।

स्वेद हर औषध

चावल, मसूर, समाक, धनियां शुष्क, उन्नाब सम भाग लेकर पानी में भगो कर क्वाथ करें ।

गुण—इसके पिलाने से स्वदे की अधिकता कम हो जाती है ।

औषध

कहरुबा शमई, बहमन्न सफ़ेद, गन्दना, नरकचर, जोज़जन्दम, खशखाश बीज प्रत्येक ४।। माशा, सब को कूट छान कर गौ घृत में भून लें, और जोश दिये गन्धम के सतू २९ तोले २ माशा मिलाकर, बादाम रोग़न, और खाँड के साथ प्रयोग करें।

मात्रा---४ माशा, दूध से प्रयोग करें,शरीर को मोटा करती है।

(२) मग़ज़ बादाम, गोंद कतीरा, निशास्ता, शक्कर सब समान भाग लें, बारीक चूर्ण करें।

मात्रा---१ माशा।

गुण उपरोक्त।

(३) सौंफ़, अजवायन, जीरा क़मानी, सुदाब प्रत्येक १४ माशा, धुली हुई लाख ७ माशा, मरज़नजोश, बूरा अरमनी प्रत्येक ३।। माशा, बारीक चूर्ण करें।

मात्रा---४।। माशा।

गुण---शरीर को दुबला करती है। मेद वृद्धि में उपयोगी है।

औषध

मेथी का आटा, बेरी के पत्ते, अजवायन खुरासानी, माजू, मुर्दासंग, सब वस्तु आपस में मिला कर चूर्ण करें, और बालों में लगावें।

गुण---बालों को घुंघराले बनाती है।

औषध

सरतान नहरी (केकड़ा) जला हुआ दो भाग, कुन्दर १ भाग, दोनो को बारीक पीस लें।

मात्रा तथा गुण---७-७ माशा, शीतल जल से पागल कुत्ते के काटे हुये रोगी को देवें। यह औषध पागल कुत्ते के काटे के विष को नष्ट करती है।

दवाये हाज़म़

हलदी, नवसादर, सधव लवण, पिप्पली सब सम भाग लेकर घृत-कुमारी के गूदे में खरल करें, और दो प्यालों में रख कर कपरौटी कर पुट दे देवें, शीतल होने पर निकाल लें।

मात्रा—२ माशा, भोजनोपरान्त प्रयोग करें।

गुण—दीपक पाचक है, भूख बहुत लगाती है।

दयाकूज़ा

कोकनार (पोस्त डोडा) २० नग, मधुयष्टि ६ तोला, इसपग़ोल ३ तोला, ख़तमी बीज, ख़ुबाज़ी बीज, गोंद कीकर, गोंद कतीरा, मधुर बहिदाना, प्रत्येक १॥ तोला, औषध को तीन सेर मेघजल के पानी में (मेघ जल के बदले साधारण जल भी प्रयोग किया जा सकता है) रात्री को भगोवें, प्रातः क्वाथ करें, आधा भाग रहने पर खाँड २ सेर डाल कर पाक करें। तय्यार है।

मात्रा—७ माशा से १ तोला तक खायें।

गुण—वातज कास, नज़ला को नष्ट करती है, सीना को नरम रखती है।

ज़रवर (धूड़ा) (Dusting Powder)

ज़रवर भोडल कुशता

अभ्रक भस्म श्वेत, स्फुटिका भस्म, धनियां शुष्क जला हुआ, छोटी इलायची बीज, सम भाग लेकर, कूट छान कर अत्यन्त बारीक करें।

गुण—मुखपाक में लाभप्रद है, दिन में तीन बार १–१ चुटकी मुँह में छिड़कें।

ज़रवर कत्थ

ज़रवरद (गुलाब पुष्प का ज़ीरा), कत्थ श्वेत, कबाबचीनी, इलायची बीज, बंशलोचन प्रत्येक ३ माशा, सब को कूट छान लें, १ चुटकी दिन में कई बार मुंह में छिड़कें।

गुण—मुखपाक में उपयोगी है।

ज़रवर गाउज़बान

गाऊज़बान जला हुआ, ऊद बलसान, जौ जले हुये, धनियां शुष्क जला हुआ, सम भाग लेकर कूट छान लें, मुंह में छिड़कें।

गुण—बालकों के श्वेत मुखपाक में उत्तम है।

ज़रवर मुर्दासंग

मुर्दासंग, शादनज धुला हुआ, मुसब्बर, पोस्त कद्दू जला हुआ, सम भाग लेकर कूट छान लें।

गुण—यह धूड़ा व्रण तथा उपदंशजनित शिश्न व्रण में उत्तम है। व्रण को नीम जल से धोकर इसे ऊपर धूड़ा जाये।

ज़रवर वरदी अबीज़

रौप्य माक्षिक, सफ़ेदा काशग़री, मुसब्बर, प्रत्येक सात माशे, अहिफ़ेन दो तोला ११ माशा, गोंद कतीरा ५ तोले १० माशा, निशास्ता पौने ९ तोले, गोंद कीकर ११ तोले आठ माशा, श्वेत पुष्प १७॥ तोला, सब को कूट छान कर सौंफ़ सबज़ के स्वरस से भावित करें, और शुष्क कर के बारीक कर के छान लें।

उपयोग तथा गुण—आवश्यकतानुसार आंख में छिड़कें, आंख दुखने में लाभप्रद है।

(२) रौप्य माक्षिक, गोंद कीकर प्रत्येक १०॥ माशा, केशर, मिरच काली, हिंगुल प्रत्येक सात माशा, अहिफ़ेन ५। माशा, सब को बारीक खरल कर के प्रयोग करें।

गुण—कुक्करे (पोथकी), जाला, नाख़ूना, पपोढों की मांस वृद्धि में उत्तम है।

ज़रवर मामीरान

लौंग, मामीरान, सोंठ, मिरचकाली, पिप्पली, नीलाथोथा धुला हुआ, गोंद कीकर, सब सम भाग लेकर बारीक पीस कर आंख में छिड़कें।

गुण—आंख के हर समय फड़कते रहने तथा चक्षु के जीर्ण वात-कफ़ज़ दोषों को नष्ट करती है, दृष्टि को बल देती है।

लोचन धूड़ा

वंशलोचन, कत्थ सफ़ेद, कबाबचीनी, संगजराहत, कलमी शोरा, बड़ी इलायची बीज, सम भाग लेकर बारीक पीस लें,

गुण—मुखपाक में अत्यन्त उपयोगी है।

अभ्या धूड़ा

हरड़, अकाकीया, गुल अनार, माईं, ज़ैतून के पत्र, बंशलोचन सब सम भाग लेकर बारीक करें,।

गुण—मुख पाक में तथा श्वेत मुखपाक में लाभप्रद है।

ज़रवर सैकोलाम

गिल अरमनी, गिल सुरख (यह दोनो एक प्रकार की मिट्टी हैं), प्रत्येक ३ माशा, जुफतबलूत ४।। माशा, गुल अनार १३।। माशा, मुरमुक्की ५। माशा, कुन्दर सात माशा सब को बारीक पीस लें।

गुण—ज़ख़मों के भरने में उपयोगी है, रसौली वा एसी गिलटी जिस में मवाद न हो, उस पर केवल सखा चर्ण ांध देने से रोगी अच्छा हो जाता है, विशेष गुप्त योग ह

रुब्ब

रुब्ब किसी बनास्पतिक औषधके घन स्वरस को कहते हैं जो उस औषध के पत्र, फल, त्वचा आदि से निकाला जाता है, परन्तु युनानी चिकित्सा में रुब्ब उस औषध के घन शरबत से तात्पर्य है, जो कि उस औषध का क्वाथ तथा शीत कषाय में खाँड डालकर बनाया जाता है उसका लाभ यह है, कि हर ऋतु में प्रत्येक औषध का मिलना कठिन होता है, इस तरह से ज़खीरा रख लीया जाता है, दूसरे शरबत तो शीघ्र ही दूषित हो जाते हैं, परन्तु रुब्ब अधिक समय तक रह सकते हैं।

रुब्ब अम्ल अनार

अम्ल अनार के दाने निकाल कर किसी चीनी के बर्तन में भरें, और भली प्रकार घोट कर उन का रस निकाल लें, फिर सब को मोटे खद्दर के कपड़े में अच्छी तरह से छानलें, अब इसमें से१सेर रस लेकर आध पाव खाँड-मिला कर शरबत तयार करें, और घन पाक करके रख लें।

मात्रा—६ माशा से १ तोला तक अर्क गाऊज़बान के साथ दें।

गुण—पितज वमन तथा अतिसार में उत्तम है, दिल डूबने में तथा ग्रीष्म ऋतु में इस का प्रयोग उत्तम है।

रुब्ब मधुर अनार

अनार के दानों का रस भली प्रकार निकाल कर छान कर १ सेर में आध पाव खाँड मिला कर घन पाक कर शंबत तय्यार करें।

मात्रा—१ तोला रुब्ब, में खाँड मिला कर योग्य अनुपान से दें।

गुण—दिल, दिमाग़ को बल देता है, गर्म्मी को नष्ट करता है, गर्भिणी के लीये लाभप्रद है ।

रुब्ब अंगूर मधुर

उपरिलिखित विधिसे रुब्ब बनावें, यह दिल, दिमाग़ को बल देता है ।

मात्रा—६ माशे से १ तोला ।

रुब्ब अंगूर अम्ल—विधि, गुण, तथा मात्रा उपरोक्त ही है ।

रुब्ब बही मधुर

बही को छील कर छोटे२ टुकड़े कर लें, बीज निकाल दें, खब कूट कर स्वरस निकालें, आध भाग खाँड मिला कर घन शरबत तय्यार करें।

गुण—हृदय, आमाष्य, आन्त्र को बल देता है, वमन तथा अतिसार में भी लाभ प्रद है ।

रुब्ब सेब

उपरिलिखित विधि से तय्यार करें ।

मात्रा—६ माशा से १ तोला तक दें ।

गुण—यह रुब्ब, दिल दिमाग़ को बल देता है ।

रुब्ब जामुन

जामुन मधुर को किसी बरतन में खूब हाथों से मलकर स्वरस निकालें, कपड़े में छान कर आध भाग खाँड मिला कर घन शरबत तय्यार करें ।

मात्रा—६ माशा से १ तोला तक योग्य अनुपान से दें ।

गुण—आमाष्य, यकृत को बल देता है, पित का नाश करता है, अतिसार नाशक है ।

रोग़न (तैल-घृत) (Medicated oils)

तैल एक स्निगध वस्तु है, अग्नि तत्व बहुत समय तक उस में स्थिर रह सकता है, जहाँ भी लगाया जाता है, वहां की रूक्षता को नष्ट कर के स्निग्धता पदा करता है, तैल में जिन गुण वाली औषध का सम्मिश्रण किया जाता है, उन का गुण उस में आ जाता है, और वह गुण भी चिर-

काल तक उस में बना रहता है, तैल की मालिश मर्दन से रक्त संचालन क्रिया विशेष हो जाती है।

औषध से तीन प्रकार से तेल का निष्कासन किया जाता है।

(१) वह बीज जिन के भीतर स्वयं बहुत सा तेल होता है, उन को कोल्हू वा किसी मशीन द्वारा दबाकर तेल निकाला लीया जाता है, यथा, बादाम तैल, सरसों तैल, तिल तैल।

दूसरे वह तैल जो सुगन्धित फूलों से लीये जाते हैं, विधि यह है, कि तैल वाले बीज (यथा तिल, काले अथवा सफ़ेद) को कुच्छ दिनों तक फूलों में रख दिया जाता है, जब इन फूलों की सुगन्धि इन बीजों में भली प्रकार बस जाती है, तो फिर इन बीजोंको पीड़न कर तेल निकाल लीया जाता है।

तीसरे प्रकार के वह तेल होते हैं, जो औषध का क्वाथ करके फिर तेल में डाल कर क्वाथ जला दीया जाता है,यदि औषध रस युक्त हो, तो उस का रस निकाल कर तेल में जला लिया जाता है, नहीं तो शुष्क रस हीन औषध का क्वाथ कर के तेल में जला लीया जाता है।

एक चोथी विधि भी है, कि औषध की गोलीयां बना कर आतशी शीशी में भर दी जायें, और शीशी पर उष्णता पहुंचाई जाये, तो औषध का तेल निकल आता है, जो मात्रा में थोड़ा होता है, परन्तु गुणों में तीव्र होता है, कुच्छ औषध का तेल इस प्रकार से भी निकलता है, कि प्याला पर अच्छी तरह कपड़ा मण्ड कर इस के किनारों पर आटा लगा दिया जाता है, और कपड़े पर औषध फैला कर ऊपर तवा रख कर उस पर जलते हुये कोयले रख दिये जाते हैं। इस विधि से भी जो तेल निकलता है, वह मात्रा में कम परन्तु गुणों में तीव्र होता है।

रोग़न आमला (आमला घृत)

सबज़ आमला स्वरस १ सेर, गाये का, आध सेर घी, दोनों को एक बरतन में डाल कर अग्नि पर चढ़ा दें,स्वरस शुष्क होने पर और घृत भाग शेष रहने पर छान लें।

मात्रा—दो तोले, प्रातः मीठे दूध में डाल कर प्रयोग करें!

गुण—आतशक में लाभप्रद है।

रोग़न बाबूना

१२ तोला बाबूना पुष्प ताज़ा को ४० तोला तिल तैल में डालकर मुख बन्द कर धूप मे रख दें, ४० दिन के बाद छान कर कार्य में लावें।

मात्रा---२-४ बूंद, उष्ण कर कान में डालें।

गुण---शोथनाशक है, पीड़ाशामक है, कर्ण शूल में लाभप्रद है।

(२) यदि शीघ्र तय्यार करना हो, तो बाबूना पुष्प रात्री को पानी में भगोवें, प्रातः को क्वाथ करें, चोथा भाग रहने पर तिल तेल मिला कर फिर उबालें, तेल मात्र शेष रहने पर उतार कर शीतल होने दें, तत्पश्चात् छान कर काम में लावें।

गुण---उपरोक्त।

आमला तैल

सबज़ आमला के छोटे २ टुकड़े कर बोतल के आधे भाग तक भर दें, और शेष भाग में तिल तैल भर दें, धूप में रख दें, जब आमले काले पड़ जायें, तो प्रतिदिन इस तेल से शिर की मालिश करें।

गुण---यह तेल बालों को काला रखता है, मस्तिष्क में स्निग्धता उत्पन्न करता है।

(२) शुष्क आमला को रात्री भर जल में भगोवें, प्रातः क्वाथ करें, चौथा भाग रहने पर छान कर सम भाग तिल तेल मिला कर फिर अग्नि पर पाक करें, तेल मात्र शेष रहने पर उत्तार लें, शीतल होने पर छान कर बोतल में भर लें।

गुण---उपरोक्त।

रोग़न मधुर बादाम

मग़ज़ बादाम मधुर, कोलहू, वा मशीन में पीड़न करवा कर तेल निकाल लें।

(२) यदि बादाम कम हों, तो अच्छी तरह कूट कर जल में उबालें, जब तेल ऊपर आ जाये, तो शीतल कर ऊपर से तेल निथार लें।

(३) मग़ज़ बादाम को भली प्रकार कूट कर थोड़ी सी खांड मिलावें, और कलईदार देगची में डाल कर मृदु अग्नि पर पकावें, और थोड़ा २ जल छिड़कते रहें, देगची को थोड़ा टेढ़ा रखें, ताकि तेल एक ओर को आजाये।

मात्रा तथा उपयोग—मस्तिष्क की रूक्षता को नष्ट करता है, निद्राप्रद है, विबन्ध के लिये ६ माशा से १ तोला तक दूध में डाल कर प्रयोग करें।

कटु बादाम तैल

ऊपरलिखित विधि से कड़वे बादामों का तेल निकालें।

मात्रा—२—४ बूंद, उष्ण कर कर्ण में डालें।

गुण—कर्ण शूल तथा कर्ण नाद में उत्तम है।

रोग़न बनफ़्शा

१ तोला बनफ़शा रात्री को १ पाव भर जल में भगोवें, प्रातः थोड़ा उबाल कर छान लें, और ५ तोला तिल तेल डाल कर फिर उबालें, जल के जल जाने पर उत्तार कर शीतल कर छान लें।

गुण—यह तेल मस्तिष्क की रूक्षता को नष्ट कर के निद्रा लाता है, वक्ष की रूक्षता को भी दूर करता है।

अर्शान्तिक तैल

हिंगुल, मल्ल सफ़ेद १–१ तोला, लोबान कोड़ीया ५ तोला, मोम २० तोला, सौंधव लवण २० तोला, आतशी शीशी लेकर प्रथम उसके ऊपर लवण डाल दें, लवण के ऊपर मोम को टिकिया बना कर रख दें, फिर बाकी वस्तु का चूर्ण कर डाल दें, पाताल यन्त्र विधि द्वारा तेल निकालें।

मात्रा—आवश्यकतानुसार थोड़ा सा मस्सों पर लगावें।

गुण—अंश के मस्से इस के प्रयोग से नष्ट हो जाते हैं।

रोग़न बेंज़ा मुरग़ (कुक्कुट अण्ड तैल)

अण्डों को पानी में उबाल कर उन की ज़रदी निकाल लें, और ताम्रपात्र में डाल कर अग्नि में भून लें, फिर कपड़े में डाल कर निचोड़ लें।

गुण—रात्री समय बालों पर मलें, बालों को लम्बा करता है।

(२) कुक्कुट अण्डे की ज़रदी निकाल कर कड़छे में डाल कर आंच पर रख दें, कड़छे को थोड़ा टेढ़ा रखें, जब ज़रदी जल कर काली पड़न लगे, तो चमचा से इसे दबाते जायें, इस तरह उस में से तेल निकलना

आरम्भ हो जायगा, इस तेल को पृथक करते जायें, जब तेल निकलना समाप्त हो जाये, तो छोड़ दें।

गुण—उपरोक्त।

रोग़न बेदअंजीर (एरण्ड तैल)

बादाम रोग़न की विधि से निकालें।

गुण—यह तेल मर्दन करने से आमवात की पीड़ा नष्ट करता है, विरेचन के लीये बहुत उपयोगी है, बालकों के लीये अमृत है।

रोग़न तुरब (मूली तैल)

मूलीयों को कुचल कर पानी निचोड़ लें, और इस में सम भाग तेल डाल कर पाक करें, तेल शेष रहने पर छान लें।

मात्रा—२—४ बूंद, उष्ण करके कान में डालें।

गुण—कर्ण शूल, तथा वात शूल में उत्तम है।

रोग़न जज़ाम (कुष्ठहर तैल)

महन्दी के सबज़ पत्र १० तोला कूट कर २० तोला तिल तेल में जला लें; फिर इन पतों को निकाल कर, नीम पत्र की टिकिया बनाकर, इसी तरह इस तैल में जला लें, पाक सिद्धि पर उत्तार कर चौथा भाग चालमोगरा आयल मिला लें; आवश्यकतानुसार कुष्ट के व्रणों पर लगावें।

गुण—खाज-कुष्ट तथा चर्म रोगों में अतीव गुणकारी है। कुष्ट नाशक है।

रोग़न चम्बेली

चम्बेली के ताज़े फूल बोतल में भर दें, ऊपर से तिल का तैल डाल कर धूप में रख दें, पुष्प शुष्क होने पर दूसरे ताज़ा पुष्प डाल दें, ३—४ बार एसा करने से उत्तम तेल तय्यार होगा, वा दूसरी विधि यह है, कि पहिले तिलों को कुच्छ दिन तक चम्बेली के पुष्पों में रख दें, जब तिलों से सुगन्धि आने लगे, तो कोल्हू में निप्पीड़न करा लें, इसी विधि से धनियां, संगतरा आदि औषध का तैल निकाला जाता है।

उपयोग विधि—तेल इतना लगावें, कि वह केशों में मिल जाये और तेल लगा कर देर तक शिर को मर्दन कीया जाये।

गुण—मस्तिष्क को स्निग्ध करके निद्रा लाता है, और केशों को सुन्दर तथा काला करता है।

रोग़न चहार बरग (चतुर पत्र तैल)

धस्तर पत्र, आक पत्र, एरण्ड पत्र, हरमल पत्र, सम भाग लेकर इन का स्वरस निचोड़ कर समभाग तिल तेल मिला कर पाक करें, तेल सिद्धि पर उत्तार कर छान लें, उष्ण करके मर्दन करें।

गुण—आमवात के लिये उत्तम है।

रोग़न ज़रद (देवदारू तैल)

हलदी, दारूहलदी, मधुयष्टि, देवदारू, भड़भूंजे के छप्पर का धुआं प्रत्येक तीन तोला, सबको चूर्ण कर २ सेर, पानी में क्वाथ करें तीसरा भाग रहने पर कपड़े में से छान कर ३ पाव तिल तेल डाल कर फिर पाक करें, तेल मात्र शेष रहने पर छान कर उपयोग में लावें।

उपयोग—नये व्रणों को प्रथम साफ़ करलें, फिर तेल से कपड़ा तर कर व्रण पर रखें, चोट लगने पर अर्ध उष्ण तेल को मर्दन करें,

गुण—नये व्रणोंको भरता है, चोट की पीड़ा तथा शोथ को नष्ट करता है।

रोग़न ज़ुफ़त

ज़ुफत रूमी, मस्तगी रूमी प्रत्येक दो तोला, दोनों को बारीक करके १० तोला तिल तेल में पका कर छान लें।

गुण—अर्ध उष्ण कर के मर्दन करें, पट्ठों को बल देता है।

रोग़न सुर्ख़

मंजीठ २० तोला, तज, कायफल, छड़ीला, नागरमोथा, वज, लौंग, नरकचूर प्रत्येक आठ तोला, सब औषध को कूटकर ४ सेर जल में क्वाथ करें, १ सेर शेष रहने पर सम भाग सरसों तेल और तिल तेल डाल कर पाक करें, पाक सिद्धि पर उतार कर छान लें।

उपयोग—उष्ण कर के मर्दन करें।

गुण—अर्धांग, अर्दित, जोड़ों की पीड़ा, आमवात, वातरक्त, ध्रसी में लाभप्रद है, चोट की पीड़ा को भी शान्त करता है।

(२) बीर बहुटी, खरातीन, अकरकरा, लौंग, जावित्री, दारचीनी, सब को समभाग लेकर मिलित औषध से त्रिगुण तिल तेल में डालकर जलायें, औषध जल जाने पर शीतल कर छान लें।

गुण—तथा उपयोग विधि—आवश्यकतानुसार प्रति रात्री को शिश्न पर मर्दन करें, और पान बांध दें, दो सप्ताह के प्रयोग से शिश्न में दृढ़ता तथा मोटा पन पैदा हो जाता है, उत्तम योग है।

रोग़न समात कुशा

अम्ल अनार स्वरस १०तोले(गूदे समेत)को १ सेरपानी में क्वाथ करें, चौथा भाग रहने पर छान कर सिरका ६ माशा, तिल तेल ५ तोला, कुन्दर ३ माशा, मिला कर पाक करें, सिद्ध होने पर तेल को छान लें।

मात्रा—२–४ बूंद, कर्ण में डालें।

गुण—ज्वर से उत्पन्न कर्ण नाद तथा बाधर्य में उत्तम है।

रोग़न सैर

लहसन एक पोथीया ४ तोला, फ़रफीयून, अकरकरा, प्रत्येव तीन तोला, काली मिरच, सुदाब १—१ तोला सब को आध पाव रोग़न ज़ैतन में डाल कर पाक करें, पाक सिद्धि पर उतार कर छान लें,

उपयोग विधि—शिश्न पर अंध उष्ण तेल की मालिश कर के ऊपर पान का पत्र बांध दें।

गुण—शिश्न को दृढ़ करता है, जोड़ों की पीड़ा तथा आमवात में भी लाभ प्रद है, गरम कर के मर्दन करें।

रोगन सरशफ़

धतूर पत्र, आकपत्र प्रत्येक तीन तोला, सोंठ, १ तोला, सब को सरसों तेल आध पाव म पकावं, औषध क जल जाने पर उतार कर छान लें, और इस में ६ माशा अहिफ़ेन मिला लें।

गुण तथा उपयोग विधि—अर्ध उष्ण कर के मालिश करें, वातशल में उत्तम है।

रोग़न शफ़ा

मेथी और कलौंजी सम भाग लेकर भून लें, और थोड़ा २ रोग़न ज़ैतून डालते जायें, जब दोनों औषध से तीन गुणा रोग़नजल

जाये, तो आतशी शीशी में पाताल यन्त्र द्वारा तेल निकालें।

उपयोग विधि—नीमगरम मालिश करें, रूई तर कर के योनी के भीतर रखें।

गुण—अर्धांग, अर्दित, अपतन्त्रक, वातरक्त में लाभ प्रद है, योनीपीड़ा तथा गर्भाशय पीड़ा में भी उत्तम है।

(२) मेथी और कलौंजी प्रत्येक १० तोला को कूट कर १ सेर तिल तेल में जला लें, छान कर रख लें।

गुण—उपरोक्त।

रोग़न अजीब

मालकंगनी ७ तोला, शुद्ध गन्धक आंवलासार ५ तोला, कलौंजी-काली ७ माशा, कुचिला १० माशा, शुद्ध वत्सनाभ २॥माशा, घुंघची-सफ़ेद, कनेर जड़ प्रत्येक सात तोला, सब को अर्ध कुट कर सात दिन तक गौ दुग्ध में भिगोवें, आठवें दिन निकालकर आतशी शीशी में भर कर पाताल यन्त्र द्वारा तेल निकालें।

मात्रा—२-३ बूंद, किसी योग्य अनुपान से खिलावें।

गुण—वाजी करण है, दीपक, पाचक है।

रोग़न अकरब

रेवन्दचीनी, नागरमोथा, किबरमूल छाल प्रत्येक तीन तोला, सब को कूट कर बोतल में भर दें, कड़वे बादाम का तेल आध सेर इस में मिला कर सात दिन तक धूप में रखें, फिर साफ़ करके १० जीवित बिच्छू इस में डालकर १४ दिन तक धूप में रखें, अब इसे छानकर काम में लावें।

गुण तथा उपयोग विधि—पथरी (अश्मरी) के लिये २—३ बूंद शिश्न के सुराख़ में डालें, अर्श में रूई भिगो कर मस्सों पर लगावें, अशमरी तथा अर्श में उपयोगी है।

रोग़न कस्त (कुठ तेल)

कुठ कटु, बालछड़ प्रत्येक ९ तोला, कूट कर रोग़न ज़ैतून वा तिल तेल, और अर्क बहार आध सेर में मिला कर पाक करें, अर्क के जल जाने पर औषध को रोग़न में खूब घोटें, दो तीन बार आध आध सेर

अर्क बहार डाल कर पकावें, तीसरी बार अर्क जल जाने पर उतार कर तेल को छान कर जुन्द बदस्तर, काली मिरच, फरफ़्यूं, मेंहीसाला प्रत्येक ३।। तोला, भली प्रकार हल कर के शीशी में भर लें।

गुण—नीम गरम मालिश करके गरम रूई बांधे। अर्दित, अर्धांग वातकम्प, अपतन्त्रक सुप्तिवात तथा वात शूल में अत्यन्त उत्तम है।

रोग़न काहू

काहू बीज स्वरस १० तोला, तिल तेल वा बादाम रोग़न २० तोला, मिला कर पाक करें, स्वरस के जल जाने पर तेल मात्र शेष रहने पर छान लें।

गुण—निम्नोक्त

रोग़न कदू

ऊपरलिखित विधि से रोग़न निकालें।

गुण—दोनो रोग़न मस्तिष्क को तर करते हैं, रूक्षता तथा शिर-शूल में उत्तम है, निद्राप्रद है, आवश्यकता पर शिर पर मर्दन करें।

रोग़न कुचला

अहिफ़ेन २ तोला, तिल तेल ३०तोला, गौ दुग्ध ६०तोला, कुचिला १० तोला, कुचले को बारीक टुकड़े कर दूध और तेल में इतना पकावें, कि दूध जल कर तेल मात्र शेष रह जावे, अब इस में अहिफ़ेन हल कर शीशी में रखें, नीमगरम करं के मालिश करें।

गुण—जोड़ों की पीड़ा में अत्यन्त उत्तम है।

रोग़न कलान

मग़ज़ बादाम कदु ६ तोला, कलौंजी, एरण्ड बीज, गुग्गुलु प्रत्येक ४माशा, कुठ कटु, फरफ़्यूँ, जुन्द बदस्तर, चिरायता मधुर, अफ़सनतीन (मुसत्यांरा), नकछिकनी, सौंफ़ मूल, पितपापड़ा, महन्दी ३—३ माशा, अकरकरा, काली मिरच, कस्तूरी, बालछड़, सोसन जड़, तज, छड़ीला, सोंठ, दारचीनी, मुरमक्की, लौंग, जायफ़ल, सकबीनज, सातर, अजवायन, करफ़स मूल, करफ़स बीज, अनीसून, तगर, जाओ-शीर, नरकचूर, सोंठ, जावित्री, कबाबचीनी, पिप्पली, कुन्दर प्रत्येक २ माशा, अम्बर १ माशा, फरफ़्यूं, अम्बर, जायफल, कस्तूरी, जुन्द-

बदस्तर के सिवाये सब औषध को अर्ध कुट कर ५ सेर जल में रात्री भर भिगोवें, प्रातः क्वाथ करें, तीसरा भाग रहने पर छानकर गुलाबपुष्प तेल, बाबूना तेल, सोसन तेल तथा एरण्ड तेल प्रत्येक १० तोला मिला कर पाक करें, तेल शेष रह जाने पर छान कर फरफ़यूँ आदि को हल कर के शीशी में भर दें, नीम गरम मालिश कर के गरम रूई बांध दें।

गुण—वात रोगों के लीये अनुभूत तथा सद्यःफल प्रद है।

रोग़न गुल आक (अर्क तैल)

आक पुष्प, सुरंजान कड़वी, सोंठ, अजवायन ख़ुरासानी १–१ तोला, तिल तेल १५ तोला, सब औषध तिल तेल में डाल कर जलायें, और छान कर शीशी में भरें, नीम गरम मालिश कर के ऊपर से गरम रूई बांध दें।

गुण—आमवात, वातरक्त, कटि, पिण्डली, तथा शिरशूल में उपयोगी है।

रोग़न गुल

गुलाब की ताज़ा पत्तियां ८ तोला, तिल तेल २।।पाव, दोनों को एक बोतल में भर कर धूप में रखें, जब पुष्प मुरझा जायें, तो २–३ बार और फूल डालें, तत्पश्चात् छान लें।

उपयोग—शिरशूल, कर्णशूल, सन्निपात तथा विबन्ध में उपयोगी है, शिरशूल में मर्दन करें, कर्णशूल में गरम करके कान में डालें, कोष्ट-बद्धता में १ तोला तेल दूध में मिला कर पीवें, सरसाम (सन्निपात) में सिरका में मिला कर कपड़ा तर कर तालू पर रखें।

रोग़न गुल

(२) गुलाबके शुष्क फूलों को रात्री भर उष्णजल में भिगोयें, प्रातः इतना उबालें, कि तीसरा भाग रह जाये, तत्पश्चात् समभाग तेल तिल मिलावें, और पाक करें, तेल शेष रहने पर छानकर काम में लावें।

गुण—उपरोक्त।

रोग़न गन्दम (गेहूं तैल)

गन्दम (गेहूं) सफ़ेद आध सेर, लेकर आतशी शीशी में डालकर पाताल यन्त्र विधि से तैल निकालें, वा जल में क्वाथ कर तैल में पाक करके छान लें।

गुण—शोथ नाशक है, दाद, गंज, झंझनाहट, तथा त्वचा की कठोरता को दूर करता है।

रोग़न गेलानी

मोड़ीयां पत्र, आमला शुष्क प्रत्येक ३० तोला, हरड़, बहेड़ा प्रत्येक १५ तोला, छालीया ६ तोला, रूमी मस्तगी, लावन, प्रसाशों (हंसराज) प्रत्येक ३ तोला, बंशलोचन १॥ तोला, सब औषध को कूट कर १॥ सेर पानी में रात्री को भिगोकर प्रातः क्वाथ करें, आधा भाग रहने पर छान कर १ सेर गुलाब पुष्प तैल मिला कर पाक करें, पाक सिद्धि पर उतार कर रखदें, गाद नीचे बैठ जाये, तो तैल को निथार लें।

उपयोग—चम्बेली तैल में मिला कर बालों में लगावें।

गुण—बालों की वृद्धि करता है, मृदु तथा काला करता है, मस्तिष्क के लिये भी उत्तम है, इसके प्रयोग से बालों का गिरना बन्द हो जाता है, अत्यन्त उत्तम तेल है—

रोग़न लबूब सहबा

मग़ज़ फ़िन्दक, मग़ज़ पिस्ता, मग़ज़ बादाम मधुर, तिल छिले हुये, मग़ज़ चलग़ोज़ा, मग़ज़ तुख़म कद्दू, मग़ज़ अख़रोट, सम भाग लेकर कोल्हू में तैल निकाल लें, आवश्यकता पर शिर पर मालिश करें।

गुण—मस्तिष्क में स्निग्धता करता है, निद्राप्रद है, नासा व्रण को भरता है।

रोग़न मुजरब

चिरायता मधुर, कुठ कटु प्रत्येक १। तोला, अज़ख़र मकी, सुरंजान-कटु, कबाबचीनी, नारखीन, तगर प्रत्येक ९माशा, नरकचूर, कायफल, अकरकरा, मेदा लकड़ी, बोज़ीदान प्रत्येक ५ माशा, अर्ध कुट्टित कर १॥सेर जल में क्वाथ करें, तीसरा भाग रहने पर छान कर गुलाब तैल, चम्बेली तैल, ज़ैतून तैल, बाबूना तैल, प्रत्येक ४ तोला मिलावें, और पाक करें,तैल मात्र शेष रहने पर जदवार ख़ताई, जुन्दबदस्तर, फरफयूं, प्रत्येक १। तोला, जायफल, सोंठ प्रत्येक ९ माशा, गुग्गुलु ४॥ माशा,

इन सब का बारीक चूर्ण कर इस तैल में खरल करें, एक जीव होने पर शिलाजीत १ माशा हल कर शीशी में भर दें, मालिश करें।

गुण—अर्दित, अर्धांग, सुप्तिवात, वातकम्प, वातरक्त तथा गृध्रसी में लाभ प्रद है।

रोग़न मस्तगी

मस्तगी रूमी ३ तोला, बोतल में डालकर तीन छटांक रोग़न ज़ैतून इस में भर दें, और बोतल को एक देगची में जल डाल कर उबालें, जब मस्तगी पिघल जाये, तो बोतल को निकाल लें और काम में लायें, तय्यार है, नीम गरम मालिश करें।

गुण—पट्ठे तथा आमाशय को बल देता है, कटिशूल में उपयोगी है

रोग़न मख़दर

अजवायन ख़ुरासानी, २ माशा, अहिफ़ेन ३ माशा, भोज पत्र ४ माशा, सब को पीस कर ख़शख़ाश तैल २ तोला में उबाल कर छान लें, तयार है।

गुण—मालिश करने से पीड़ा को नष्ट करता है, पीड़ा शामक है।

रोग़न मोम

मोम १ सेर, नमक शोर तीन सेर, दोनों को देग में डाल कर अर्क की तरह अर्क निकालें, यही रोग़न मोम है।

गुण—अर्दित, अर्धांग तथा वातपीड़ा में उत्तम है।

रोग़न नासूर

तिल तैल ५ तोला में २ तोला बारूद बन्दूक वाली ख़ूब खरल करें, और शीशी में भर दें।

गुण—आवश्यकतानुसार नाड़ीव्रण (नासूर) को नीम जल तथा साबुन से धोकर पिचकारी से यह तैल भीतर पहुंचायें, नाड़ीव्रण में उत्तम है।

(२) कृष्ण सर्प का पित्ता निकाल कर तिल तैल में जला लें, और नासूर में बत्ती से भीतर पहुंचा दें।

गुण—उपरोक्त।

रोग़न हफ़्त बरग (सप्त पत्र तैल)

आक पत्र, महानीम पत्र, एरण्ड पत्र, संभालु पत्र, सुहंजना पत्र, धतूर पत्र, थुहर पत्र (स्नुही पत्र), प्रत्येक १-१ तोला ३ माशा, सब को कूट कर १ सेर तिल तैल में जलायें, फिर छान कर काम में लावें, नीम गरम मालिश कर के ऊपर से गरम रुई बांधें।

गुण—अर्दित, अर्धांग, वातकम्प, वातरक्त आदि वात रोगों में अतीव लाभकारी है।

रोग़न हरमल

काले हरमल आध सेर, सोंठ आध पाव दोनों को कूट कर थोड़े जल में रात्री को भिगो दें, प्रातः तिल तैल दो सेर डाल कर पाक करें, जब औषध जल जायें, तो तैल को कपड़े में छान कर पृथक् कर लें, और इस में २० जायफल बारीक पीस कर मिश्रित करें।

उपयोग विधि—प्रातः सायं मर्दन करें।

गुण—वात रोग, अर्दित, अर्धांग, वातकम्प, हाथ पैर की थकान में लाभ प्रद है।

रोग़न ज़हफ़रान (केशर तैल)

काली जीरी, केशर, प्रत्येक पौने दो तोला, चिरायता १ तोला ५॥ माशा, मुरमुक्की १॥। माशा, प्रथम केशर, चिरायता, मुरमुक्की को सिरका अंगूरीमें ५ दिन तक भिगो रखें, छटे दिन काली ज़ीरी को भी डाल दें, सातवें दिन तिल तैल ७॥ तोले मिला कर मृदु अग्नि पर रखें, सिरका जल जाने पर उतार कर छान लें, तयार है।

गुण—पट्ठों को नरम करता है, वातकम्प को नष्ट करता है, गर्भाशय पीड़ा, शोथ, व्रण आदि को दूर करता है, मुख पर मलने से रंग को सुन्दर बनाता है।

चक्षु रोग हर रोग़न

नीलाथोथा १४ माशा, जायफल १ नग, दोनों के इरद गिरद २१ माशा कच्चा धागा लपेट कर गेंद सी बना लें, और गौघृत २८ तोले में २ घण्टे तक भिगो रखें, इस के पश्चात् गेंद को कांसी के बरतन में रख कर आग लगावें, और जल हुये धागों को काट कर बाकी घृत

भी थोड़ा २ डालते रहें, जब सब धागे जल जायें, और घृत समाप्त हो जाये, तो सात दिन तक ढाक की लकड़ी के डण्डे से (जिस के शिर पर ताम्र का पैसा जड़ा हुआ हो) कांसी के बरतन में रगड़ें, तय्यार है।

गुण—आंख में लगावें, वाह्मनी, जाला, धुन्ध आदि में लाभप्रद है।

कर्ण शूलहर तैल

अजवायन ख़ुरासानी, हरमल प्रत्येक ७ माशा, दानों को अर्ध कुट्टित कर रात्री को आध सेर पानी में भिगो कर प्रातः उबालें, आधा भाग रहने पर छान कर आध सेर तिल तैल मिला कर पाक़ करें। सिद्धि पर उतार लें।

गुण—कर्ण में अर्ध उष्ण डालें, कर्ण शूल में उत्तम है।

अर्शहर तैल

शुद्ध गन्धक, शुद्ध हरिताल, दोनों को सम भाग लेकर तिल के तैल में खरल करें, एक जीव हो जाने पर अर्क विधि से बूँद—बूँद तैल टपकायें, खरल करते समय मृदु अग्नि खरल के नीचे अवश्य रखें।

गुण—अर्श के मस्सों पर लगाने से मस्से नष्ट हो जाते हैं।

रोग़न सोम (लहसुन तैल)

लहसुन छिला हुआ १ भाग, फ़रफ़यून, अकरकरा, प्रत्येक तिहाई भाग, मिरच काली, सुदाब प्रत्येक, चौथाई भाग, सब का चर्ण कर नौ गुने जैतून तैल में पाक करें, औषध के जल जाने पर उतार कर शीतल कर छान लें।

गुण—यह तैल, वातपीड़ा, कटि शूल, अर्श में लाभप्रद है, वाजीकरण है!

रोग़म नमल

मकोड़े कृष्ण १०० (कबरों में मिल जाते हैं) लेकर शीशी में भरें, और इस पर १ तोला ४ माशा रोग़न चम्बेली डाल कर शीशी का मुख बन्द कर तीन सप्ताह तक धूप में रखें।

गुण—शिश्न पर लगाने से उसे दीर्घ करता है तथा दृढ़ता उत्पन्न करता है

रोग़न सुज़ाक

रोग़न राल, रोग़न कबाबचीनी, रोग़न सन्दल, रोग़न बलसान, १-१ तोला, रोग़न बहरोज़ा २ तोला, सबको मिला लें ।

मात्रा—१ माशा, बताशा में डाल कर प्रयोग करें।
गुण—सुज़ाक में अत्यन्त अनुभूत है ।

आमवात हर तैल

कुचला ८ नग, अजवायन ख़ुरासानी आध पाव, कलौंजी १ पाव, सरसों का तैल तीन पाव, सब औषध के चूर्ण को तैल में जला कर छान लें, तय्यार है ।

गुण—मालिश करें, आमवात में उत्तम है ।

गृध्रसी हर तैल

लौंग, अजवायन देसी, सोंठ, अहिफ़ेन, मुसब्बर, लहसुन एक पोथीया, धतूर फल, कर्पूर १–१ तोला, लेकर बारीक कर के टिकिया बनावें, और १।। पाव तिल तैल में जला कर छान लें, मालिश करें ।
गुण—वातपीड़ा, गृध्रसी में बहुत उत्तम है ।

छाजन हर तैल

बावची दो तोला, सिंदूर ४ तोला, भांग ८ तोला, तिल का तैल आध सेर, तैल को जोश दें, झाग समाप्त होने पर सिंदूर डालें, १ घण्टा के बाद बावची चूर्ण डालें, फिर एक घण्टा बाद भांग चूर्ण मिला कर नीचे उतार लें ।

गुण तथा उपयोग विधि—सोते समय हाथ, पैर की छाजन पर लगावें, परन्तु पानी न लगने दें, थोड़ी देर बाद हाथ, पैर को आग पर सेकें, यह ध्यान रहे, कि २-३ घड़ी तक इस तैल को लगाकर आग पर सेकें, छाजन नष्ट हो जाती है ।

दाद हर तैल

पारद, गन्धक १–१ तोला, नीलाथोथा ६ माशा, तिल तैल आध पाव, प्रथम पारद गन्धक की कज्जली कर नीला थोथा मिला

कर एक जीव करें, फिर तैल मिला कर ३–४ प्रहर अच्छी तरह खरल करें, दाद छीब पर लगावें।

गुण—दाद, छीब, चम्बल में बहुत उपयोगी है।

रोग़न शैख़

मुलैहठी, देवदारू, रत्नजोत, हलदी, बबूल वृक्ष छाल, प्रत्येक ३० तोला, कूट कर रोग़न बिनोला और रोग़न अलसी २ सेर १३ छटांक (मिलित), और पानी आठ सेर ७ छटांक में डाल कर मृदु अग्नि पर पाक करें, जल के जल जाने पर तैल मात्र शेष रहने पर छान लें, पाक करते समय जो झाग आते जायें, उन को हटाते रहें।

गुण—नये ताज़ा व्रणों को भरने में बहुत उपयोगी है।

सत (सत्व)

सत किसी औषध के सूक्षम तथा आशू गुणकारी भाग को कहते हैं, जो औषध के स्थूल भाग को पृथक कर के बनाया जाता है, बनास्पतिक औषध के सत्व निकालने की निम्न विधि है, औषध को अच्छी तरह कुचल दिया जाता है, और उसका स्वरस निकाल लिया जाता है, यदि वह शुष्क है, तो कुच्छ समय तक उसे जल में रख कर हाथों से मल लीया जाता है, फिर पानी को छान कर किसी बर्तन में रख लिया जाये, गाढा भाग नीचे तल में बैठ जाये, तो निथरे हुये जल को बत्ती द्वारा निकाल दिया जाये, और नीचे तल में पड़ी हुई औषध को धूप में सुखा लिया जाये, यही उस औषध का सत्व है, परन्तु हमारी सम्मति में उस निथरे हुये जल को बत्ती द्वारा न निकाल कर, धूप में ही सुखा लिया जाये, जल पूर्णतया शुष्क होने पर सत्व पृथक कर लिया जावे, इस तरह से सत्व अधिक गुण प्रद होता है।

बहरोजा सत्व

यथार्थ में यह बहरोजा की शुद्ध करने की विधि है, एक हाण्डी में आधे भाग तक जल भर कर चूलहे पर चढ़ा देवें, और इस के मुख पर मलमल का कपड़ा बांध दिया जाये, जल के वार्ष्प से गन्दा बहरोज़ा पिघल कर जल में गिरता जायगा, जब सारा बहरोज़ा उष्णता से पिघल कर नीचे जल में गिर जाये, तो हाण्डी को अग्नि से

उत्तार कर बहरोज़ा निकाल लें, यही शुद्ध बहरोज़ा अथवा बहरोज़ा सत्व है, यदि अधिक शुद्ध करना हो, तो इसी प्रकार २–४ बार कर लें।

गुण—मूत्र जलन, सुज़ाक में लाभ प्रद है।

शिलाजीत सत्व और गिलोय सत्व निकालने की विधि से वैद्य लोग भली भांति परिचित हैं। इसलिये उनका उल्लेख वृथा है।

सिरका (अम्ल रस) Vinegar

सिरका एक विशेष प्रकार का अम्ल, तथा तीव्र आसव, अरिष्ट है, जो किसी फल आदिके मधुर स्वरस, वा क्वाथ को सड़ा कर बनाया जाता है, जिस वस्तुका सिरका बनाना हो, उसका रस वा क्वाथ एक व्यहवार किये हुये घड़े में भर कर उष्ण स्थान पर रखदें, जब इसमें आसव क्रिया उत्पन्न होकर अम्लता उत्पन्न हो जाये, तो निथार कर छान लें, यदि घड़े में स्वरस भरते समय थोड़ा सिरका भी डाल दिया जाये, तो सिरका शीघ्रता से बनता है, आजकल नगरोंमें दुकानदार लोग चीनी वा गुड़ का शरबत पका कर छान लेते हैं, और इसको बोतलों में भर कर थोड़ा तेज़ाबी सिरका (Acetic acid) डाल कर मुख बन्द कर देते हैं, और बोतलों को २—४ दिन धूप में रख दिया जाता है, बस सिरका तयार हो गया, इस सिरके के गुण पहिली विधि से बनाये सिरके से बहुत ही न्यून होते हैं।

गन्ने का सिरका

गन्ने का उत्तम ताज़ा स्वरस लेकर पुराने घड़े में भर दें, मुख पर कपड़ा बांधकर धूप में रख दें, दो तीन मास बाद जब वह स्वरस सड़कर अम्ल हो जाय, तो ऊपर से निथार कर छान लें।

गुण—आवश्यकतानुसार अजीर्ण तथा उदर विकारों में प्रयोग करें।

नोट—जब गन्ने का स्वरस न मिले, तब गुड़ का शरबत बना कर इसी विधि से सिरका बना लें।

सिरका जामुन

जामुन को कुचल कर स्वरस निकाल लें, और घड़े में डालकर मुख बन्द कर दें—तीन मास तक धूप में रखें, तुरशी (अम्लता) उत्पन्न होन पर छान कर प्रयोग में लावें।

अंगूरी सिरका

५ सेर द्राक्षा (बीज रहित) धोकर २० सेर पानी के साथ एक मटके में भर दें, तीन–चार सप्ताह पश्चात्, फटकड़ी, लवपुरी लवण प्रत्येक ५ तोला डाल कर मुख बन्द कर दें, कुच्छ दिनों के पश्चात् छान कर इस में थोड़ा लवण, वा सिरका मिला कर किसी सिरके वाले मटके में डाल कर बन्द कर दें, धूप में २-३ मास रखने के पश्चात् देखें, तो सिरका बहुत ही तीव्र और उत्तम मिलेगा, छान कर काम में लावें।

सफ़ूफ़ (चूर्ण) (Powders-Pulves)

एक वा अधिक औषध को बारीक कूट पीस लिया जाये, तो उसे चूर्ण कहते हैं, चूर्ण की शक्ति ६ मास तक रहती है, परन्तु जिन में मूल्य-वान पाषाण भी हों, तो उस की गुण शक्ति कभी नष्ट नहीं होती, चूर्ण बनाते समय निम्न लिखित नियमों का पालन करना चाहिये।

(१) बनास्पतिक औषध विशेषतया वर्षा ऋतु में उत्पन्न होती हैं, इस लिये वर्षा ऋतु की समाप्ति पर जब पत्र, बीज, फल आदि पक्व अवस्था में आ चुके हों, संग्रह कर के कार्य में लाना चाहिये, यदि ऐसा किया जाये, तो चूर्ण की गुण शक्ति ६ मास तक रहती है, इस के पश्चात् इस का बल क्षीण हो जाता है, और १ वर्ष के पश्चात् तो वह निर्गुण हो जाता है।

(२) यदि चूर्ण के योग में मूलयवान पाषाण भी हों, तो उन को पृथक खरल करना चाहिये।

(३) यदि रूमी मस्तगी हो, तो इसे भी पृथक हलके हाथों खरल करना चाहिये, ज़ोर से रग़ड़ने तथा कूटने से वह चिमट जाती है।

(४) यदि योग में मग़ज़यात भी हों, तो इन को सिल बट्टा पर पृथक पीस कर और घी में भून कर योग में डालें।

(५) यदि योग में केसर, कस्तूरी हो, तो इन को पृथक भली प्रकार पीस कर मिलावें, फिर थोड़ा २ औषध चूर्ण डाल कर खरल कर एक जीव करें।

(६) पाचक दीपक चूर्ण को बहुत बारीक नहीं पीसना चाहिये।

अलमलाह चूर्ण

भांग क्षार, नकछिकनी क्षार, पोदीना क्षार, मूली क्षार, कण्डयारी-क्षार प्रत्येक दो तोला, अजवायन सत्व १ तोला, सब को बारीक कूट छान कर, फिर अजवायन सत्व मिला कर खरल करें।

मात्रा—४ रत्ती, जारश कमूनी ७ माशा में मिला कर प्रयोग करें, वा भोजनोपरान्त ४ रत्ती जल के साथ दें।

गुण—यह चूर्ण भूख लगाता है, दीपक तथा पाचक हैं।

मधुयष्टि चूर्ण

मधुयष्टि छिली हुई, गुलनार फ़ारसी, गुलाब पुष्प, सुदाब बीज, सम्भालु बीज, प्रत्येक दो तोले, समभाग लेकर चूर्ण करें, सबके समान खाँड मिला लें।

मात्रा—१ तोला, शरबत बज़ूरी के साथ प्रयोग करें।

गुण—वीर्य पतलापन, प्रमेह, शीघ्रपतन के लीये उपयोगी है।

इन्द्री जुलाब चूर्ण

कलमी शोरा, रेवन्दचीनी प्रत्येक ७ माशा, यक्षार ६ माशा, जीरा सफ़ेद १ तोला, खाँड श्वेत १२ तोले सब को कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा—६ माशे, गाये की दूध की लस्सी के साथ प्रयोग करें।

गुण—मूत्र द्वारा मूत्र दोषों को बाहर निकालता है, सुज़ाक में उपयोगी है, जलन, टीस को बन्द कर के मूत्र ख़ोल कर लाता है।

बरस हर चूर्ण

चकासू, पनवाड़बीज, बावची, इंजीर वृक्षकी छाल, नीम वृक्ष की भीतरी छाल, प्रत्येक २ तोला मिला कर चूर्ण करें।

मात्रा तथा उपयोग—६ माशा चूर्ण, रात्री को जल में भगोवें, प्रातः निथार कर छान कर पी लेवें, तलस्थ फोक को दाग़ों पर लगायें, पथ्य में बेसनी रोटी (लवण बिना) घृत से खायें।

गुण—यह चूर्ण चालीस दिन के प्रयोग से श्वेत कुष्ट (बरस) को नष्ट कर के त्वचा की रंगत को सुधार देता है।

बीजबन्द चूर्ण

बीजबन्द कृष्ण, हुलहुल बीज प्रत्येक ३।। तोले, गोक्षरू, ताल-

मखाना, इन्द्र जौ प्रत्येक ७ तोले, लसूड़ा २८ तोले, खाँड सब के समान भाग, सब को कूट छान कर चूर्ण बनावें।

मात्रा—७ माशे, दूध के साथ प्रयोग करें।

गुण—प्रमेह और शीघ्र पतन में उत्तम है।

बीजबन्द चूर्ण

बीजबन्द, हुलहुल बीज, प्रत्येक ३।। तोला, गौक्षरू, तालमखाना, इन्द्रजौ, प्रत्येक ७ तोला, शतावर २८ तोला, खाँड सब के समान भाग, सब को कूट छान कर चूर्ण कर।

मात्रा—७ माशा, दूध के साथ प्रयोग करें।

गुण—उपरोक्त।

स्फटिका चूर्ण

स्फटिका भुनी हुई, खाँड श्वेत, दोनों सम भाग लेकर बारीक करं।

मात्रा—२ माशा, योग्य अनुपान से दें।

गुण—विषम ज्वर में उत्तम योग है, बारी को रोकता है।

वातपित शामक चूर्ण

सौंफ, छोटी इलायची, धनियां, तबाशीर, समभाग लेकर चूर्ण करें

मात्रा—३ माशा, खाना खाने के पश्चात् प्रयोग करें।

गुण—दीपक पाचक है, अजीर्ण नाशक है।

प्रमेह हर चूर्ण

साहलब मिश्री, तालमखाना, अश्वगन्धा, मस्तगी, नेत्रबाला, छोटी इलायची बीज, निशास्ता, भोफली, तज, बंग भस्म, बड़ी इलायची, सब समान भाग लेकर कूट छान कर सम भाग खाँड मिला लें।

मात्रा—६ माशा, दूध के साथ प्रयोग करें।

गण—प्रमेह, शीघ्रपतन, वीर्य का पतलापन, तथा स्वप्न दोष में उत्तम है।

(२) संगजराहत, शतावर सम भाग लेकर बारीक करें, और सम भाग खाँड मिला लें।

मात्रा—आवश्यकतानुसार १ तोला गौदुग्ध के साथ दें।

गुण—प्रमेह में उपयोगी है।

(३) सिंघाड़ा शुष्क, गोंद कीकर, १-१ तोला, माजू, रूमी-मस्तगी प्रत्येक ६ माशा, तालमखाना, साहलब मिश्री, निशास्ता, प्रत्येक आठ माशा, सब औषध को कूट छान कर सम भाग खाँड मिला लें

मात्रा—१-१ तोला, प्रातः सायं गौ दुग्ध से दें।

गुण—कोष्ट बद्धता को ठीक कर के इस चूर्ण को प्रयोग करें, तो प्रमेह में अत्यन्त उत्तम है।

प्रमेह हर चूर्ण

साहलब मिश्री, बोजीदान, शीतल चीनी, दारचीनी, सुरंजान-मधुर, मस्तगी रूमी, गोक्षरू, समभाग लेकर कूट छान कर चूर्ण करें, सम भाग खाँड मिला लें।

मात्रा—१ तोला, गौ दुग्ध से प्रयोग करें।

गुण—प्रमेह में उपयोगी है।

कुष्ट हर चूर्ण

नीम पत्र, बकुन पत्र, सहदेवी, कण्डयारी पंचांग, आमला, अम्बा हलदी, सरफोंका, बावची, सब सम भाग ले कर कूट छान कर चूर्ण करें, यह सब चूर्ण ३५ तोला होना चाहिये, इस के ४ भाग करें।

मात्रा तथा उपयोग—१ भाग, प्रातः १ भाग सायं को प्रयोग करें, पथ्य रूप में चने की रोटी घी के साथ प्रयोग करें, लवण का सर्वथा त्याग करें।

गुण—कुष्ट की प्रारम्भक अवस्था में विरेचन के बाद प्रयोग करें।

संग्राही चूर्ण

माजू सबज़, संगजराहत, माई छोटी, कत्था सफ़ेद, सम भाग लेकर कूट छान लें।

मात्रा—२ माशा, शीतल जल के साथ प्रयोग करें।

गुण—रक्त अतिसार को बन्द करता है।

चुटकी चूर्ण

सेंधव लवण, लवपुरी लवण, मिनहारी लवण, सौभाग्य भस्म, नवसादर, सनाये, चाकसू, सौंफ़, कचूर, हरड़, हरड़ बड़ी, कृष्ण हरीतकी पोदीना शुष्क, छोटी इलायची, बड़ी इलायची, वायविड़ग, गुलाब पुष्प,

जीरा कृष्ण, श्वेत, आमला शुष्क, अपक्व चने, बहेड़ा, काला लवण प्रत्येक १, १ तोला, सब को कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा—४ रत्ती से ३ माशा तक माता दुग्ध वा जल से दें।

गुण—बालकों के अजीर्ण, विबन्ध, तथा अतिसार, शूल, यकृत-विकार, कृमिरोग में उत्तम है।

(२) हरीतकी कृष्ण, पोदीना शुष्क, काली मिरच, सैंधव लवण, नरकचूर, सौहागा भुना हुआ प्रत्येक ३ माशा, सब को कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा तथा गुण—उपरोक्त।

सफ़ूफ़ ख़दर जदीद (सुप्तिवात हर चूर्ण)

सुरंजान मधुर, मस्तगी, दरूनज अकरबी, कचूर प्रत्येक ४ माशा, अपक्व आबरेशम कैंची से कुतरा हुआ, बोज़ीदान, बादरंजबोया बीज, गाऊज़बान पत्र, छोटी इलायची, बहमन सुरख़, सफ़ेद, जदवार, ऊद ग़रकी प्रत्येक तीन माशा, ऊद सलीब, फरंजमुश्क पत्र (बन तुलसी पत्र), दारचीनी, तज, बालछड़, प्रत्येक दो माशा, सब को कूट छान कर सम भाग खाँड मिला कर एक जीव करें।

मात्रा—५ माशा, खा कर ऊपर से नगन्द बाबरी का क्वाथ पिलावें।

गुण—सुप्ति वात, अंगों का सो जाना में उपयोगी है।

राजिका चूर्ण

सौभाग्य भुना हुआ १ तोला, राई ३ तोला, दोनों को कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा—१ माशा, जल से दें।

गुण—प्लीहा वृद्धि के लिये उपयोगी है, दीपक तथा पाचक है।

ख़स्ता चूर्ण

मग़ज़ तुख़म नीम, छोटी इलायची, माजू सबज़, सम भाग लेकर कूट छान लें।

मात्रा तथा गुण—३ माशा, प्रातः सायं जल से दें, रक्त अर्श तथा रक्त अतिसार में अति उत्तम है।

दारचीनी चूर्ण

सीप भस्म २ तोला, साहलब मिश्री १ तोला, दारचीनी ६ माशा, सब औषध को कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा—६ माशा, जल से दें।

गुण—श्वेत प्रदर तथा प्रमेह में उपयोगी है।

दारचीनी चूर्ण (बृहत योग)

तालमखाना भुना हुआ, ख़शख़ाश बीज सफ़ेद, तिल छिले हुये, मग़ज़ पिस्ता, मग़ज़ बनोला, मग़ज़ तुग़म ख़रपज़ा, मग़ज़ तुख़म करतम प्रत्येक ४ तोला, छुहारा १० तोला, तज ३ तोला, मग़ज़ बादाम मधुर छिले हुये, बीजबन्द, मूसली सफ़ेद तथा काली, निशास्ता, गोंद कतीरा, बहमन रक्त तथा सफ़ेद,बड़ी इलायची बीज,मग़ज़ तुख़म कौंच,शकाकल, चीनी गोंद, मोचरस, ऊटंगन बीज, सरवाली बीज, मूसली, खेलाखेली, तोदरी सुरख़ तथा सफ़ेद, मेदा लकड़ी, बंग भस्म, गोक्षरू, भांग बीज, प्रत्येक दो तोला, मस्तगी रूमी, जोज़जन्दम, इलायची बीज छिलके समेत, कबाबचीनी, भोफली, सुरंजान, बोज़ीदान, तबाशीर, दारचीनी, सोंठ, १–१ तोला, अकरकरा ६ माशे, प्रथम मग़ज़यात को बारीक कर के घी में भून लें, और बाकी औषध के बारीक चूर्ण में मस्तगी चूर्ण तथा मग़ज़यात चूर्ण मिला कर एक जीव करें, और सम भाग खाँड मिला लें।

मात्रा—६ माशा, प्रातः सायं दूध से देवें।

गुण—प्रमेह, वीर्यपतलापन तथा श्वेत प्रदर में उत्तम है।

श्वास हर योग

सेंधव लवण ३ माशा, मत्सय पिस्ता १ दोनों को मिला कर घी कुमारी के गूदे में पकावें, फिर चूर्ण कर शीशी में रखें।

मात्रा—१ रत्ती, मधु वा शरबत बनफ़शा से दें।

गुण—कफ़ज कास तथा श्वास में उत्तम है।

श्वास हर रजनी चूर्ण

गन्धम (गेहूं) को मिट्टी के प्याले में डाल कर आग पर रख कर

कोयला कर लें, राख न होने पाये, इससे आधी, हलदी जला लें, (गन्धम से कम जलायें), दोनों को मिला कर चूर्ण करें।

मात्रा—५ माशा, प्रातः को जल से दें, और प्रतिदिन १ रत्ती बढायें, २५ दिन तक ३० माशा तक पहुंच जायें, फिर १—१ माशा कम करके पहिली मात्रा पर आजायें, यह ५१ दिन प्रयोग करें।

गुण—कफ़ज कास तथा श्वास में उत्तम है।

बनफ़सा चूर्ण

बनफ़शा पुष्प बारीक पीस कर सम भाग खाँड मिला लें।

मात्रा—१ तोला उष्ण जल से प्रयोग करें।

गुण—कोष्ठ बद्धता तथा शिर शूल नाशक है।

रक्त चूर्ण

गेरू, स्फटिका भुनी हुई, १—१ तोला, बारीक पीस लें, २ तोले कच्ची ख़ाँड मिला लें।

मात्रा—३ माशा, शरबत बजूरी तथा दूध की लस्सी से लें।

गुण—सुज़ाक में मूत्र जलन को बन्द करता है, तथा पीप को भी बन्द करता है।

श्वेत प्रदर हर योग

धाती पुष्प, सुपारी पुष्प, मोचरस, मोलसरी गोंद प्रत्येक ६ माशा, खाँड २ तोला, सब औषध को कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा—६ माशा, जल से प्रयोग करें।

गुण—श्वेत प्रदर में अति उत्तम है।

सोज़ाक चूर्ण

माजू सबज़, कत्थ सफ़ेद २ तोला, बंशलोचन ६ माशा, प्रवाल भस्म ४ माशा, बारीक पीस कर चूर्ण करें।

मात्रा—४ माशा, चूर्ण में, सन्दल तैल मिला कर प्रयोग करें, ऊपर से शरबत तज़ोरी दूध की लस्सी के साथ दें।

गुण—सुज़ाक (पूय मेह) में लाभ प्रद है।

मधुर चूर्ण

लौंग, छोटी इलायची बीज, नागकेसर, कंकोल, दारचीनी, सोंठ, पिप्पली, नेत्रबाला, ख़स, बालछड़, चन्दन सफ़ेद, अगर अपक्व, तगर, कमलगट्टा, जीरा सफ़ेद तथा कृष्ण, तज, तमालपत्र, प्रत्येक ५ माशा, कपूर, १ माशा, सब को कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा–५ माशा, दोनों समय भोजनोपरान्त प्रयोग करें।

गुण–दीपक पाचक है, अजीर्ण नाशक है, अतिसार तथा कफ़ज ज़्वरों में उत्तम है।

सन्दली चूर्ण

सन्दल सफ़ेद ३। तोला, निशास्ता, गोंद कतीरा, काहु बीज, ख़ुरफा बीज, प्रत्येक ४ तोला, गिलारमनी, गुलनार, गोंद कीकर, समाकदाना (तितंड़ीक), बलूत प्रत्येक ५ तोला, कूट छान कर छान कर चूर्ण करें।

मात्रा–७ माशा, दही जल से दें।

गुण–वृक्कों को बल देता है, मधु मेह में उपयोगी है।

लोचन चूर्ण

तबाशीर, अनारदाना, गोंद कीकर, गोंद कतीरा, मस्तंगी, मोड़ीयों बीज, गुलाब पुष्प, गिलारमनी, सब को, सम भाग लेकर कूट-छानकर चूर्ण करें।

मात्रा–१ माशा, जल से दें, वा माता के दूध से दें।

गुण–बालकों के अतिसार में लाभप्रद है।

प्लीहा हर चूर्ण (विशेष योग)

पीले पत्र आक के १००, काला लवण, सज्जी क्षार, सुहागा, हल्दी, काला लवण, सैंधव लवण, यवक्षार प्रत्येक ६ तोला, हींग ३ तोला, सबका बारीक चूर्ण करें, अब इस चूर्ण में सरसों तैल तथा आक दुग्ध ३–३ तोला डाल कर खरल करें, और आक के पत्तों के दोनों तरफ़ लेप कर दें, और मिट्टी के बरतन में एक के ऊपर एक पत्र रख कर बरतन का मुख बन्द कर कपरौंटी कर दें, कपरौंटी

शुष्क होने पर उपलों में रख कर अग्नि दें, शीतल होने पर औषध निकाल लें।

मात्रा—१ माशा, प्रातः सायं जल से दें।

गुण—प्लीहा वृद्धि के लिये अति उत्तम है।

सफ़ूफ़ तैयन

इसपग़ोल, रेहां बीज, कनोचा बीज, निशास्ता, तुख़्म अमाज़ भूना हुआ, गोंद कीकर, गिलारमनी, बंशलोचन, सम भाग लेकर कूट छान लें, पहिले तीन औषध का चूर्ण न करके साबित ही मिला लें।

मात्रा—७ माशा, चूर्ण को घी में मिला कर प्रयोग करें, ऊपर रेशा ख़तमी का स्वरस जल में निकाला हुआ पिलावें।

गुण—रक्त तथा पितज अतिसार में उपयोगी है, प्रवाहिका में भी गुणकारी है।

लौह चूर्ण

हरड़, हरड़ बड़ी, आमला, सौंफ़, कासनी बीज, बहेड़ा, १—१ तो० साम्भर लवण, लवपुरी लवण, मिनहारी लवण, नमक शोर (समुद्री लवण) १—१ तोला, गिलोय सत्व २ माशा, बुरादा फौलाद (लौह भस्म) सब के आधा भाग, (५ तोला १ माशा), सब को कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा—७, माशा जल से दें, पथ्य रूप में चने की बेसनी रोटी तथा तक्र प्रयोग करें।

गुण—रक्त शोधक है, शरीर की शक्ति तथा पाचन शक्ति को बढ़ाता है, अर्श के रक्त को बन्द करता है।

काकला चूर्ण

छोटी इलायची बीज, तज, तमाल पत्र, नागकेसर, लौंग, जायफ़ल, जीरा सफ़ेद, कालीजीरी, विल्वकत्थ, चित्रक, धावी पुष्प, सुहागा, नागरमोथा, माईं छोटी, पाषाण भेद, नेत्रबाला, शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, अजवायन, तगर, तबाशीर, सज्जी क्षार, यवक्षार, अजमोद, हींग, धनियाँ शुष्क, सोंठ, मिरच, पिप्पली, सौंफ़, अनार की कली, कुटज-

छाल, इन्द्रजौ, राल, लोध्र पठानी, कृष्ण हरीतकी घृत में भुनी हुई, मोचरस, वजतुरकी सम भाग लेकर चूर्ण करें, चूर्ण के समान खाँड मिला लें।

मात्रा—६ माशा, प्रातः ६ माशा सायं दूध के साथ खायें।

गुण—स्तम्भक शक्ति को बढ़ाता है, मुंह की बदबू तथा वायु का नाश करता है, दीपक पाचक है।

बंग भस्म चूर्ण

गिलोय सत्व, शिलाजीत सत्व, छोटी इलायची बीज, पाषाण भेद, मधुयष्टि, तालमखाना, बंशलोचन, बंग भस्म १–१ तोला, मिश्री सब के समान, सब का भली प्रकार चूर्ण करें।

मात्रा—४ माशा।

गुण—प्रमेह, श्वेत प्रदर, नये तथा पुराने सुज़ाक में भी लाभद है।

(२) बंग भस्म, छोटी एला बीज, बंशलोचन, कबाबचीनी सम भाग लेकर कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा—प्रथम दिन १ माशा, दूसरे दिन २ माशा, तीसरे दिन ३ माशा शरबत बजूरी के साथ प्रयोग करें।

गुण—उपरोक्त।

(३) बंशलोचन, ४ माशा, शुद्ध शिलाजीत ३ माशा, छोटी इलायची बीज, गिलोय सत्व, कबाब चीनी २ माशा, बंग भस्म आधा माशा, सब को कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा—५ माशा, चूर्ण खाकर ऊपर से ख़यारैन बीज को पीस कर जल में घोट कर शरबत बजूरी ४ तोला मिला कर पीवें।

गोंद कतीरा चूर्ण

बालछड़, कहरूबा शमई, रूमीमस्तगी, गिल अरमनी, साहलब, मिश्री, शकाकल, इन्द्रजौ, पोदीना शुष्क, पाषाण भेद, मायाशुत्र-अहराबी, पठानीलोध्र १–१ तोला, गोंद कीकर, गोंद कतीरा, गुलनार, सन्दल सफ़ेद, तबाशीर, मोचरस, निशास्ता, गोक्षरू, माई छोटी, बंग भस्म प्रत्येक १६ माशा, भोलसरी छाल, काचनार छाल, झड़बेरी छाल, कीकर छाल, सिंघाड़ा, प्रत्येक २० माशा, तोदरी

सुरख़ तथा सफ़ेद, बहमन सुरख़ तथा सफेद, प्रत्येक ३ तोला, छोटी एलाबीज १।। तोला, मिश्री सबके समान, सब का भली प्रकार चूर्ण कर खाँड मिला लें।

मात्रा–१ तोला, गाय के दूध के साथ प्रयोग करें।

गुण–यह चूर्ण प्रमेह तथा वीर्य के पतलोपन को दूर करके शक्ति उत्पन्न करता है।

मामीरान चूर्ण

गोंद कीकर, गोंद कतीरा, मामीरान चीनी प्रत्येक ४ माशा, गुलनार ६ माशा, ज़रिशक, अहिफ़ेन, ज़रावन्द मदहरज, प्रत्येक आठ माशा, तबाशीर, शुद्ध गन्धक, प्रत्येक ४ तोला आठ माशा, मग़ज़ ख़यारैन ९ तोला ४ माशा, तूख़म ख़ुरफ़ा कृष्ण १ तोला ६ माशा, तिल छिले हुये ९ तोला, मिश्री सब के समान भाग, सब को कूट छान कर चूर्ण कर खाण्ड मिला लें।

मात्रा—४ माशा, चूर्ण शीरा तुख़म ख़यौरन ३ माशा, शीरा तुख़म ख़रपज़ा ३ माशा, शीरा ख़ारख़स्क ३ माशा, शरबत नीलोफर ४ तोला मिला कर प्रयोग करें। (इन चीज़ों को जल में घोंट कर शीरा निकाल लें।)

गुण—यह चूर्ण सुज़ाक के व्रण को भरने में उत्तम है।

कमलगट्टा चूर्ण

गोक्षरू मग़ज़ कमलगट्टा, गूलर वृक्ष छाल, तालमखाना प्रत्येक ६ माशा, बीजबन्द, सरवाली बीज, भोफली, ढाक गोंद प्रत्येक ३ तोला, खाण्ड सब के समभाग सबको कूट छान कर खाण्ड मिला लें।

मात्रा—६ माशा, दूध के साथ।

गुण—वीर्य का पतलापन, शीघ्रपतन तथा प्रमेह में लाभकारी है।

सफ़ूफ़ मग़लज़ा जदीद

निशास्ता ५ माशा, साहलब मिश्री ६ माशा, मोचरस ४ माशा, जायफ़ल २ माशा, जावित्री ३ माशा, इलायची बड़ी २ माशा, अजवायन ख़ुरासानी ४ रत्ती, लौंग ४ रत्ती, दारचीनी ४ रत्ती, सबको कूट छान कर समभाग खाण्ड मिला लें।

मात्रा—७ माशा, दूध के साथ प्रयोग करें।

गुण—प्रमेह तथा शीघ्रपतन में उपयोगी है, वीर्य उत्पन्न करता है तथा स्तम्भक है।

शिलाजीत चूर्ण

शुद्ध शिलाजीत, कस्तूरी प्रत्येक ४ रत्ती, केशर, मण्डूर भस्म, गिलारमनी, गोंदकीकर, दमलखवायन (खूनसाशों) १-१ माशा, लेकर भली प्रकार बारीक चूर्ण करें। आवश्यकता पर इसे गीली रूई पर लगाकर योनी के भीतर रखें।

गुण—गर्भाशय की क्षीणता को दूर करता है, गर्भाशय शोंथ उत्तर जाने पर इसे सात दिन तक प्रयोग करें।

(२) बालछड़, जावित्री, सातर, कुन्दर का ऊपर का छिलका, शगूफ़ा अज़ख़र, मरज़नजोश, किबर वृक्ष जड़ त्वचा, जोज़लसर, गुलाब पुष्प का जीरा, सब का बारीक चूर्ण करें।

उपयोग विधि—चमेली के तैल में रूई की बत्ती स्निग्ध कर, फिर चूर्ण में लतपत कर, योनी के भीतर गर्भाशय के पास रक्खें।

गुण—गर्भाशय को बल देता है।

प्रवाहिका हर चूर्ण (मकलयासा सफ़ूफ़)

जरजीर बीज ६ तोला, जीरा कृष्ण, अलसी, गन्दना बीज, कृष्ण हरीतकी, रोग़न ज़ैतून में भुनी हुई, प्रत्येक ९ माशा, मस्तगी ४॥ माशा, जरजीर बीज के सिवाये बाकी सबका बारीक चूर्ण करें। जरजीर साबत ही मिला लें।

मात्रा—३ माशा, चूर्ण घृत में स्निग्ध कर रेशाख़तमी के स्वरस से प्रयोग करें।

गुण—प्रवाहिका और पुराने अतिसार में लाभप्रद है।

प्रमेह हर (सफ़ूफ़ मोलफ़)

सिंघाड़ा शुष्क, गोंदकतीरा प्रत्येक ६ माशा, निशास्ता, तालमखाना, साहलब मिश्री प्रत्येक ४ माशा, माजू, मस्तगी प्रत्येक ३ माशा, खाण्ड सुफ़ेद सब के समभाग कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा—५ माशा, दूध के साथ प्रयोग करें, वा जल से।
गुण—प्रमेह, वीर्य का पतलापन, तथा शीघ्रपतन में अपूर्व है।

सफ़ूफ़ महज़ल

अजवायन, सौंफ़, जीरा कृष्ण, सुदाब पत्र प्रत्येक १४ माशा, धुली हुई लाक्षा ७ माशा, मरज़नजोश, बूराअरमनी प्रत्येक ३।। माशा, सबको कूट छान कर चूर्ण तयार करें।

मात्रा—५ माशा, जल के साथ प्रयोग करें।

गुण—बदन को दुबला करता है।

सफ़ूफ़ मोया

सौंफ, पोस्त ख़शख़ाश, हरीतकी कृष्ण प्रत्येक ६ माशा, सबको गौ घृत में भून लें, फिर कूट पीस कर चूर्ण करें।

मात्रा—७ माशा, जल के साथ।

गुण—अमाशय तथा आन्त्र की क्षीणता के कारण अतिसार में उपयोगी है, प्रवाहिका में भी उत्तम योग है।

सफ़ूफ़ नना

पोदीना ३ माशा, समाक १।। तोला, कृष्ण लवण १।। तोला, काली मिरच ७ माशा, सबको कूट छान कर चूर्ण तयार करें।

मात्रा—३ माशा, जल से दें।

गुण—वायूनाशक, आध्मान, शूलनाशक तथा दीपक पाचक है।

लवण चूर्ण

नमक इन्द्राणी ९ तोला, (टुकड़े करके गरम तवा पर रखें ऊपर से तेज़ सिरका डालें। शुष्क होने पर दोबारा तिबारा ऐसा ही करें)। धनियां, ज़रिशक घन सत्व, अनारदाना भुना हुआ, समाक़ (तंतड़ीक), प्रत्येक तीन तोला, सबका चूर्ण करें।

मात्रा—३ माशा, भोजनोपरान्त प्रयोग करें।

गुण—भूख बढ़ाता है, दीपक पाचक तथा वायु नाशक है।

नमक सुलेमानी

साम्भर लवण आध सेर, लवपुरी लवण, नवसादर प्रत्येक ५।।

तोला, इन्द्राणी लवण ४ तोला, करफ़स बीज २ तोला, कालीमिरच १॥ तोला, मिरच सफ़ेद, अज़ख़र प्रत्येक आठ माशा, आकश बेल, हींग, बालछड़, जीराकृष्ण प्रत्येक सात माशा, दारचीनी, अंजदान बीज, मगज़ तुख़म करतम, सोंठ, सौंफ़ रूमी, मधुयष्टि प्रत्येक ३॥ माशा, सबको कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा तथा गुण—३ माशा, भोजनोपरान्त प्रयोग करें, दीपक, पाचक।

(नमक सुलेमानी विशेष)

काला लवण, साम्भर लवण, इन्द्राणी लवण, नवसादर, प्रत्येक ७ तोला, अजमोद, अजवायन, कालीमिरच, सोंठ, लौंग, जीरा कृष्ण, जावित्री १-१ तोला, सबको कूट पीस कर सिरका में उबालें, फिर शुष्क करके खरल कर लें।

मात्रा—दो माशा।

गुण—उपरोक्त।

शेख़लरहीस लवण चूर्ण

साम्भर लवण, सफ़ेद मरिच प्रत्येक ७॥ तोला, नवसादर, सोंठ, पोदीना शुष्क, कालीमिरच, प्रत्येक ५ तोला ४ माशा, करफ़स बीज पौने चार तोले, अनीसून, जरजीर बीज, अजवायन, बालछड़ प्रत्येक ढाई तोला, सबको कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा—५ माशा, भोजनोपरान्त।

गुण—अमाशय तथा यकृत को बल देता है, वायु नाशक तथा दीपक पाचक है, जोड़ों की पीड़ा में उपयोगी है।

हिन्दी चूर्ण

नकछिकनी, मूली लवण, पोदीना लवण, भटकटैया लवण, आक लवण, (लवण से अभिप्राय क्षार है), सबका बारीक चूर्ण करें, और दारचीनी तैल की कुछ बूंदें डालकर अच्छी तरह मिला लेवें।

मात्रा—२ माशा, भोजन से पूर्व प्रयोग करें।

गुण—अजीर्ण तथा गुल्म नाशक है, दीपक पाचक है।

नवीन प्रमेह हर चूर्ण

इसपगोल सत्व श्वेत १० तोला, गोंद कतीरा, इमली के बड़े बीज का मगज़ ४-४ तोला, पोस्त डोडा २ तोला, खाँड सफ़ेद २० तोला, सबका बारीक चूर्ण कर खाँड मिला लें।

मात्रा-६ माशा, दूध के साथ प्रयोग करें।

गुण-प्रमेह में बहुत उपयोगी है।

लोलवी चूर्ण

अनारदाना १७॥ माशा, मोती अनविधे १४ माशा, मरजान (प्रवाल) जड़ जली हुई, गुलनार, बंशलोचन, गिलारमनी, ख़रनोब शामी, गिल कबरसी, गुलाब का जीरा, सन्दल सफ़ेद, समाक़, ज़रिशक, मोड़ीयों बीज, झड़बेरी छाल, मोलसरी फल का आटा, हमाज़ बीज, बारतंग भुना हुआ, जौ का छिलका भुना हुआ, धनियां भुना हुआ, बलूत भुना हुआ, इसपग़ोल भुना हुआ, बिल्वगिरी भुनी हुई, खुरफ़ा भुना हुआ प्रत्येक १०॥ माशा, अकाकीया धुला हुआ, कहरूबा, प्रत्येक सात माशा, गिल मख़तूम, मस्तगी प्रत्येक ३॥ माशा, सब औषध को बारीक पीस चूर्ण करें, इसपग़ोल और बारतंग को न कूटें।

मात्रा-३॥ माशा।

गुण-यकृत विकार जनित अतिसार में लाभप्रद है, आमाशय तथा यकृत को बल देता है, पित तथा तृषा को शान्त करता है।

(२) केशर ६ रत्ती, रेवन्दचीनी ९ रत्ती, हमाज़ बीज भुने हुये, गोंद कीकर भुना हुआ, निशास्ता, चन्दन सफ़ेद, तबाशीर, मंजीठ, प्रत्येक १७॥ माशे, लाक्षा धुली हुई, ज़रिशक साफ़ किया हुआ, प्रत्येक २। माशे, कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा-७ माशे, कासनी बीज़ स्वरस और बही स्वरस से दें।

गुण-यकृत अतिसार में लाभप्रद है।

सफ़ूफ़ लना

हरीत की कृष्ण १५ माशे, बादरंजबोया ७ माशा, ग़ारीकून, अफ़तीमियुं प्रत्येक ५ माशा, हिंजल का भीतरी गूदा, सब का कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा—४॥ माशा ।

गुण—वातज दोष, उपदंश, रक्तदोष में उत्तम है ।

सफ़ूफ़ लाजवरद

लाजवरद धोया हुआ, हिजर अरमनी प्रत्येक २ माशा, बादरंजबोया बीज ३ माशा, कृष्ण हरीतकी, बड़ी हरड़ प्रत्येक ४ माशा, सनाय, बनफ़शा पुष्प प्रत्येक ५ माशा, पितपापड़ा बीज ६ माशा, आकाश बेल, बसफ़ाईज फस्तकी प्रत्येक ७ माशा, सब को कूट छान कर खाँड ४८ माशा मिला लें ।

मात्रा—४ माशा ।

गुण—वात दोष, रक्त दोष, कुष्ट, खुजली, दाद आदि में उपयोगी है ।

सफ़ूफ़ मरवारीद

बड़ी हरड़, गाऊज़बान, बहमन सुरख़ तथा सफेद, प्रत्येक २तोला ११ माशा, दरूनज अकरबी, रेहां बीज, बादरंजबोया, गुलाब पुष्प, मस्तगी, बालंगू बीज प्रत्येक १ तोला ५॥ माशा, आबरेशम कुतरा हुआ, हिजर अरमनी धुला हुआ प्रत्येक १०॥ माशा, याकूत सुरख़, मरजान करमज़ी, मोती उत्तम, स्वर्ण पत्र, चांदी पत्र दोनों प्रत्येक ४॥ माशा, सब को यथा विधि चूर्ण करें ।

मात्रा—४॥ माशा ।

गुण—दिल, दिमाग़ को बल देता है, उन्माद, हृदय डूबना में बहुत ही उपयोगी है ।

कास श्वासहर चूर्ण

आक के पीले पत्र जो सूख कर झड़ गये हों १ सेर, चूना, लवण प्रत्येक ४ तोला ४॥ माशा, इन दोनों को जल में पीस कर पतों पर लगा कर सुखा लें, और मिट्टी की हाण्डी में रखकर १ प्रहर उपलों की आग दें ।

मात्रा—१ से ३ माशा ।

गुण—कफज कास, तथा श्वास में अत्यन्त उत्तम है ।

रक्तपित्त हर चूर्ण

कपूर १ माशा, ज़हरमोहरा ३ माशा, अंजबार विलायती, दमलख़्वैयन, गोंद कीकर, कहरबा, अकाकीया, मुक्ता, बुसद, चन्दन रक्त तथा श्वेत, सरतान (केकड़ा) जला हुआ, काहू बीज, निशास्ता प्रत्येक ३॥ माशा, ख़शख़ाश बीज ७ माशा, नीलोफ़र पुष्प १०॥ माशा, गुल दाग़स्तानी २। माशा, गोंद कतीरा, रबुलसूस, गिल अरमनी प्रत्येक ४॥ माशा, ख़ुरफ़ा बीज ९ माशा, कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा—६ माशा से १ तोला तक दें।

गुण—रक्तपित्त के लिये अत्यन्त उत्तम है।

दरूनज चूर्ण

दरूनज अकरबी, गाऊज़बान प्रत्येक २१ माशा, कचूर सात माशा, सब को कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा—४॥ माशा, मधुमें समभाग जल मिला कर प्रयोग करें।

गुण—सरदी के कारण ख़फ़क़ान में उत्तम है।

बीज चूर्ण

शलग़म बीज, अस्पस्त बीज, मूली बीज, गन्दना बीज, प्याज़ बीज, जौ का आटा, सौंफ़, जरजीर बीज, बारीक पीस कर चूर्णकरें।

मात्रा—३॥ माशा।

गुण—दूध तथा, वीर्य बढ़ाता है।

सफ़ूफ़ बज़ूर

शाह ज़ीरा, अनीसून, जीरा करमानी, बड़ी इलायची, तज, अजवायन, करफ़्स बीज प्रत्येक सात माशा, लौंग पौने दो माशा, सोंठ, पिप्पली प्रत्येक १॥ माशा, सब को कूट छान कर १॥ छटांक खाँड मिलाकर चूर्ण करें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—दीपक पाचक है, वातनाशक है।

विड़ंग चूर्ण

हरड़ बड़ी, आमला, वायविड़ंग, (छिली हुई) प्रत्येक ३५ माशा, त्रिवृत सफ़ेद आठ तोला ९ माशा, खाँड सब औषध से दुगनी, मिलाकर चूर्ण करें और फिर खाँड मिला लें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—उदर के लम्बे तथा छोटे कृमियों को नष्ट करता है।

बीनाई चूर्ण

अगर, लौंग प्रत्येक दो माशा, पोदीना, सौंफ़ प्रत्येक १४ माशा, कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा—२ से ४ माशा।

गुण—दीपक पाचक है, कफज स्राव को रोकता है आमाशय विकार जनित प्रतिष्याय में उत्तम है।

सफ़ूफ़ अबाली

बड़ी इलायची, छोटी इलायची, कबाबा, तीनों सम भाग लेकर चूर्ण कर लें, सम भाग खाँड मिला लें।

मात्रा—७ माशा, उष्ण जल से।

गुण—गर्भावस्था में मिट्टी खाने की आदत तथा दूसरी अशुभ बातों को नष्ट करती है।

(२) अनीसून, करफ़स बीज, जीरा करमानी, अजवायन प्रत्येक ३५ माशा, लौंग १७॥ माशा, मिरच सफ़ेद पौने ९ माशा, सब को कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा—४॥ माशा, प्रातः, सायं। गुण—उपरोक्त।

ग्रहणी हर चूर्ण

मोचरस, माईं, धावी, बिलगिरि, पोस्त डोडा, राल, प्रत्येक १४ माशा, मस्तगी २८ माशा, सब को कूटछान कर चूर्ण करें।

मात्रा—४॥ माशा, प्रातः, सायं।

गुण—संग्रहणी में बहुत उत्तम है।

सौंफ़ चूर्ण

गुलाब का ज़ीरा १०॥ माशा, किबर मूल छाल १४ माशा, करफ़स जड़ छाल २१ माशा, बनफ़शा पुष्प २४॥ माशा, मस्तगी, कसूस बीज प्रत्येक १ तोला ४ माशा, अनीसून दो तोला आठ माशा, सोसन जड़ ५ तोला ४ माशा, सौंफ़ आठ माशा, सब को कूट छान कर समभाग खाँड मिला लें।

मात्रा—४॥ माशा।

गुण—दीपक पाचक है, भूख बढ़ाता है, वायु को नष्ट करता है

अगर चूर्ण

बालछड़, मस्तगी प्रत्येक १०॥ माशा, लौंग, कबाबा, प्रत्येक १७॥ माशा, ऊद अपक्व २८ माशा, खाँड सब के समान, सब का चूर्ण कर खाँड मिला लें।

मात्रा—४॥ माशा।

गुण—आमाशय की सरदी में उत्तम है।

कहरुबा चूर्ण

ज़रिशक ३५ माशा, कहरूबा, फूल गुलाब प्रत्येक १७॥ माशा, आमला, वंशलोचन प्रत्येक १०॥ माशा, अगर अपक्व ७ माशा, बाल-छड़ ३ माशा, केशर, कपूर प्रत्येक १॥ माशा, सब को कूटछान कर चूण करें।

मात्रा—३॥ माशा।

गुण—ज्वर के कारण अजीर्ण में लाभप्रद है।

यवक्षार आदि चूर्ण

यवक्षार, दारचीनी, लौंग, निंबू का छिलका, बालछड़, जीरा सफ़ेद, पत्रज, पिप्पली, तज प्रत्येक ३ माशा, कृष्ण हरीतकी, समाक, गुलाब पुष्प, सौंफ़, मस्तगी, पोदीना, अजवायन, तबाशीर, पितपापड़ा, प्रत्येक ४ माशा, हरड़, हरड़ बड़ी, आमला, लघुएला बीज, धनियां, सोंठ, त्रिवृत, आम की कचरियां भुनी हुई, प्रत्येक ६ माशा, अनार-दाना ७ माशा, काला लवण, सैंधव लवण १-१ तोला, सब को कूट छान कर निंबू के रस से भावित करें, और शुष्क करके चूर्ण करें।

मात्रा—४ माशा ।

गुण—दीपक, पाचक तथा अजीर्ण नाशक है ।

अजवायन चूर्ण

अजवायन, करफ़स बीज, समभाग लेकर बारीक करें, और थोड़ी सी खाँड मिला कर ७ माशा की मात्रा में प्रयोग करें ।

गुण—अजीर्ण नाशक है, आमाशय शूल, प्लीहा शूल में उत्तम है ।

सनाय चूर्ण

सनाय, सोंठ, हरड़, काला लवण, सब समभाग लेकर औषध को कूट छान कर चूर्ण करें ।

मात्रा—७ माशे से १ तोला तक ।

गुण—उदरशूल, आन्त्रशूल, तथा कोष्टबद्धता के लिये उपयोगी है।

कुटज़ादि चूर्ण

कुटजछाल २। माशा, नीलोफ़र ४।। माशा दोनों को बारीक चर्ण कर लें, यह एक मात्रा है ।

गुण—अर्श जनित अतिसार के लिये लाभप्रद है ।

लोलवी चूर्ण

अम्बरशब, स्वर्णवर्क प्रत्येक ९ रत्ती, मस्तगी २। माशा, मस्तगी २। माशा, मोती, यशप सबज, ज़हर मोहरा ख़ताई, ज़रिशक साफ किया हुआ, समाक, अनारदाना, दारचीनी प्रत्येक ४।। माशे, चांदी के वर्क ५ माशा २ रत्ती, चन्दन सफ़ेद, आबरेशम कुतरा हुआ, तबाशीर, पिस्ता के बाहर का छिलका, आमला, लघु एला-बीज भुना हुआ, धनियां भुना हुआ, सौंफ़ भुना हुआ, हरीतकी कृष्ण गौघृत में भुनी हुई प्रत्येक पौने सात माशा, सब औषध को कट छान कर चूर्ण करें ।

मात्रा—३ माशा ।

गुण—रक्त अतिसार, अर्श जनित अतिसार, पित्त, ज्वर, पाद-शोथ, खफ़कान तथा आधमान में उपयोगी है ।

रक्त अतिसार हर

गोंद कीकर, गोंद कतीरा, तबाशीर, संगज्राहत १—१ माशा, कहरूबा पिसा १॥ माशा, रसौत २ माशा, मिलाकर बारीक पीस कर चूर्ण करें।

मात्रा—३ माशा।

गुण—अतिसार, रक्त अतिसार में उत्तम योग है।

यहूदी चूर्ण

तेरात्सज़ीक बीज, ईसबग़ोल, हाऊबेर, प्रत्येक भुना हुआ ७-७ माशा, जीरा क़ुमानी, खशखाश बीज, अनीसून,गन्दना बीज,सोये बीज, करफ़्स बीज, प्रत्येक पौने ९ माशा, अहिफ़ेन ११॥ माशा, कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा—१ से ४ रत्ती।

गुण—पुराने अतिसार और प्रवाहिका में उत्तम है

धावी चूर्ण

धावी पुष्प,शाल,दोनों को समभाग लेकर बारीक कर चूर्ण करें।

मात्रा—३ माशा से १ तोला, लौहे गरम से बुझाई छाछ के अनुपान से दें।

गुण—अहिफ़ेन खाने वालों के अतिसार में उत्तम है।

भांग चूर्ण

पोस्त डोडा भुना हुआ ५। माशा, भांग के पत्ते भुने हुये, सोंठ अर्ध भुनी, पिप्पली प्रत्येक २। माशा, मस्तगी रूमी, अनारदाना भुना हुआ, धनियां शुष्क भुना हुआ प्रत्येक ३ माशा, गोंद कीकर ६ रत्ती, सब को कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा तथा गुण—३॥ माशा, जल से। अतिसार में लाभप्रद है।

बाल अतिसार हर चूर्ण

सद, कुन्दर, मोड़ीयों बीज, ख़शख़ाश सम भाग लेकर कूट छान लें।

मात्रा—२ माशा, माता के दुध में दें।

गुण—बालकों के अतिसार मे उत्तम है।

अनार चूर्ण

गुलनार, समाक, फटकड़ी, बलूत, ख़रनूब बती, मोड़ीयों बीज, अनारदाना, कीकर की फली, हरमल, अजवायन खुरासानी, कज़-माज़ज, बेलगिरी, अनार का छिलका, सुरमा, अहिफ़ेन, माजू, बेर का आटा, अभ्रकभस्म, धनियां भुना हुआ, अंगूर के बीज, सब समभाग लें, भुने हुये चने सब औषध के समान, सब को कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा तथा गुण—९ माशा, जीर्णातिसार में उपयोगी है।

अशमरी हर चूर्ण

सुरख़ कबूतर का मल ७ माशा, दारचीनी १०।। माशा, कूट छान कर चूर्ण करें, यदि लाल कबूतर को अलसी खिला कर उसके मल से चूर्ण बनावें, तो अधिक लाभप्रद है।

गुण—अशमरी को टुकड़े २ करके निकालता है।

धनियां चूर्ण

धनिया शुष्क ५ माशा, इसपग़ोल ७ माशा, खुरफ़ा बीज १०।। माशा, सब को कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा—४।। माशा, प्रातः प्रयोग करें।

गुण—पित्त के कारण शीघ्रपतन में लाभप्रद है।

संभालू चूर्ण

संभालू चूर्ण ३५ माशा, सुदाब पत्र, पोदीना पत्र शुष्क, जीरा क़ुमानी, नागरमोथा, गुलनार फ़ारसी, धनियां प्रत्येक १ तोला ५ माशा, सब को कूट छान कर चूर्ण करें।

मात्रा—६ माशा, प्रातः ६ माशा सायंकाल जल से।

गुण—सम्भोग की इच्छा को कम करता है।

श्वेत प्रदर हर योग

इमली के बीज का चूर्ण, बकायन बीज, चन्दन सफ़ेद, समभाग लेकर चूर्ण करें, और समभाग खाण्ड मिला लें।

मात्रा—६ माशा से १ तोला।

गुण—श्वेत प्रदर में उत्तम है।

सुरंजान आदि चूर्ण

केशर १॥। माशा, सकमूनीया ३॥ माशा, हरड़, बादाम मगज़ छिला हुआ प्रत्येक १०॥ माशा, फूल गुलाब २१ माशा, सनाय २४॥ माशा, सुरंजान मधुर ३५ माशा, खाण्ड ८ तोला ६ माशा, सब को कूट छान कर चूर्ण करें, पीछे खाण्ड मिला लें ।

मात्रा—९ माशा, यदि कफ की अधिकता हो, तो त्रिवृत सफ़ेद २२॥ माशा मिला लें, और सकमूनीया १॥। माशा अधिक डालें ।

गुण—आमवात, गृध्रसी और वातरक्त में उत्तम है ।

अकसीर अहतलाम

सिंघाड़ा शुष्क ६ माशा, साह्लब मिश्री, तालमखाना, निशास्ता, ४-४ माशा, माजु सबज़, मस्तगी ३-३ माशा, बंगभस्म २ तोला, खाण्ड ४ तोला, मिला कर चूर्ण करें, ।

मात्रा— ३ माशा, दूध से ।

गुण—प्रमेह, स्वप्नदोष में अत्यन्त उत्तम है ।

दवाये पथरी

कलमी शोरा थोड़े जल में डाल कर अग्नि पर रखें, जब पिघलने लगे, तो हिजरलयहूद का चूर्ण मिलावें, जब शुष्क हो जाये, तो सुहागा १ तोला, नवसादर ६ माशा बारीक पीस कर मिलायें, एकजीव होने पर दो रेठा का ऊपर का छिलका खरल करके मिलावें, और थोड़ी देर बाद उत्तार लें ।

मात्रा—१ माशा, अशमरी के तोड़ने में उपयोगी है

सकंजबीन (अम्लपानक)—(Vinegar Syrup)

सकंजबीन एक प्रकार का शर्बत है, जो सिरका में मधु वा खाण्ड मिला कर बनाया जाता है, मधु से बनाई हुई सकंजबीन को सकंजबीन मधुवाली (असली संकजबीन) कहते हैं । निंबू के रस से भी संकजबीन बनाई जाती है, यदि मधु से बनानी हो, तो मधु को आग पर रखें, झाग उतारते जायें, फिर सिरका मिला कर शर्बत जैसा पाक करें, और यदि खाण्ड से सकंजबीन बनानी

हो, तो खाण्ड और सिरका मिला कर पाक करें, १ सेर खाण्ड के लिये १ पाव वा १।। पाव सिरका पर्याप्त होता है ।

सकंजबीन सादा

सिरका खलास १ पाव में खाण्ड १ सेर मिला कर आग पर रखें, जब तार बंधने लगे, तो ५ तोला गुलाब अर्क डाल का थोड़ी देर बाद छान लें ।

मात्रा—दो तोला, अर्क गाऊज़बान में वा जल में मिला कर प्रयोग करें ।

गुण—तृषा को मिटाता है, पित्तज ज्वर में उत्तम है ।

सकंजबीन बज़ूरी मुतादिल

कासनी बीज, सौंफ़, करफ़स बीज प्रत्येक दो तोला, तीनों को कूट कर १।। सेर पानी में एक रात्री दिन जल में भिगोवें, प्रातः उंबालें, १ सेर पानी रहने पर छान कर खाण्ड १ सेर और सिरका १ पाव मिला कर पाक करें ।

मात्रा—दो तोला सकंजबीन, अर्क गाऊज़बान १२ तोला में मिला कर प्रयोग करें ।

गुण—मूत्र खुल कर लाता है, यकृत, प्लीहा के दोषों को नष्ट करता है । पैत्तिक ज्वर में उत्तम है ।

सकंजबीन बज़ूरी बारद

कासनी मूल छाल २ तोले, सौंफ़, ककड़ी बीज, खीरा बीज प्रत्येक १।। तोला सब को कूट कर संगतरा स्वरस १।। सेर में रात्री को भगोवें, प्रातः जोश दें, १ सेर रहने पर छान कर १ सेर खाँड और १ पाव सिरका मिला कर पाक करें ।

मात्रा—दो तोला, योग्य अनुपान से दें ।

गुण—यकृत दोष को नष्ट करता है, जलोदर, तथा तीव्र ज्वरों में उत्तम है ।

सकंजबीन अनसली

प्याज़, लहसुन १-१ पाव को छोटे २ टुकड़े करें, अब इनको २।। सेर सिरका और २।। सेर पानी में मिला कर उबालें, फिर १०

सेर खाँड मिला कर पाक करें।

मात्रा—२ तोला।

गुण—प्लीहा, यकृत की सख्ती को दूर करता है।

सकंजबीन फोवाका

पोदीना स्वरस, बही स्वरस, बही अम्ल स्वरस, अनार मधुर स्वरस, अंगूर, स्वरस, ज़रिशक स्वरस, फ़ालसा स्वरस, इमली स्वरस प्रत्येक २। तोला, सिरका अंगूरी १८ तोला, मधु १ सेर, खाँड १ सेर, मिला कर पाक करें, इसके बाद दारचीनी ३।। तोला, कस्तूरी ३ माशा, बंशलोचन ४।। तोला खरल करके मिला लें।

मात्रा—२ तोला।

गुण—दीपक पाचक है, वमन तथा मतली को नष्ट करता है। यकृत के दोषों को नष्ट करता है, आमाशय तथा हृदय को बल देता है।

सकंजबीन लिमोनी

सिरका, गुलाब, निंबूरस प्रत्येक ९ तोले, खाँड ३ पाव, सब औषध मिलाकर पाक करें।

मात्रा—२ तोला।

गुण—आमाशय तथा यकृत को बल देता है, दीपक पाचक हैं, पित्तज वमन, मतली तथा तृषा को नष्ट करता है।

सकंजबीन लिमोनी सादा

निंबू कागज़ी २ सेर के चार २ टुकड़े करें, और तीन सेर खाँड और १ सेर पानी में जोश दें, ताकि शर्बत जैसा पाक हो जाये, अब इसको छान कर बोतलों में भर लें।

मात्रा—२ तोले से ४ तोले तक।

गुण—उपरोक्त।

सकंजबीन पोदीना

पोदीना शुष्क २ तोला को पानी में क्वाथ कर छान लें, और इसमें आधा पाव निंबूरस और आधा सेर खाँड डाल कर संकजबीन तय्यार करें।

मात्रा—२ तोला ।

गुण—पित्त को कम करती है, दीपक, पाचक है ।

सकंजबीन तफ़ाई

पोदीना सबज़ ५ तोला, अम्ल अनार स्वरस, निंबू स्वरस, अर्क गुलाब, अर्क बेदमुष्क प्रत्येक ७० माशा, सिरका ११ तोला ८ माशा, मधुर सेब स्वरस ३७।। तोला, खाँड १।। सेर, सबको मिलाकर पकावें, जब उबाल आ जाये, तो पोदीना डालें, पाक सिद्ध होने पर उतार कर छान कर बोतलों में भरें।

मात्रा—दो तोला से ४ तोला तक।

गुण—दीपक पाचक है, आमाशय और हृदय को बल देता है, वमन और मतली को नष्ट करता है।

सकंजबीन तिमिर हिन्दी

इमली १ पाव भर लेकर १ सेर पानी और ५ तोला ४ माशा अर्क गुलाब में भगोयें, प्रातः को मलने बिना १ सेर खाँड मिलाकर उबालें, और इसमें थोड़ी सी अण्डे की सफ़ेदी डाल कर हाथ से मलें, और झाग उतार कर साफ़ करें, अब इसको दूसरी हाण्डी में डाल कर १ पाव सिरका अंगूरी डाल कर फिर पाक करें, पाक सिद्ध होने पर बोतलों में भर दें।

मात्रा—तीन तोला।

गुण—आमाशय, यकृत को बल देती है, पित्त तथा पैत्तिक ज्वरों में लाभप्रद है, कोष्टबद्धता नाशक है।

सकंजबीन यवानिका (नानख़वाह)

अजवायन, जीरा कृष्ण, जूफा, भांगरा प्रत्येक दो तोला ८ माशा, मधु १ पाव, पुराना सिरका ३ पाव, पहिले सब औषध को रात्री भर सिरका में भगोवें, प्रातः उबालें, तीसरा भाग रहने पर छान कर मधु मिलाकर पाक करें।

मात्रा—४ तोला, शीतल जल में मिलाकर प्रयोग करें।

गुण—दीपक पाचक तथा अजीर्ण नाशक है।

सनून (मंजन) (Tooth powders).

सनून उस चूर्ण को कहते है, जो दांतों तथा मसूड़ों पर मलने के लिये बनाया जाये, और खूब बारीक हो ।

कीकर मंजन

कीकर की जड़ का छिलका, ४ तोला, कत्था, सुपारी, संगजराहत १-१ तोला, मरिच, सोंठ १-१ माशा, सब को बारीक पीसें, इस में मस्तगी १ तोला और नागरमोथा दो तोला कई हकीम मिलाते हैं।

प्रयोग विधि––रात्री को दाँतों पर मल कर सो रहें, कुल्ली न करें, प्रातः काल कुल्ली कर के दांत साफ़ करें, वा प्रातः को मल कर दो घण्टे पश्चात कुल्ली कर साफ़ करें ।

गुण––हिलते दांतों के लिये उत्तम है, खून बन्द करता है ।

तमाकू मंजन

तमाकू सुरती, काली मिरच १-१ तोला, सांभर लवण १॥ माशा, कूट पीस कर बारीक चूर्ण करें, दांतो पर दिन में २-३ बार मलें ।

गुण––मसूड़ों की शोथ को नष्ट करता है, गन्दा पानी निकालता है, दंतपीड़ा में उत्तम है ।

पीत मंजन

अनार का छिलका, गुलनार, हलदी, समाक, माजू, फटकड़ी भुनी हुई, समान भाग लेकर बारीक चूर्ण करें ।

गुण––दंतपीड़ा के लिये उत्तम है, दांतो को चमकाता तथा दृढ़ करता है ।

सुपारी मंजन

सुपारी जली हुई, काग़ज़ खताई (मोटा काग़ज़) जला हुआ, हिरण शृगं जला हुआ, ने की जड़ जली हुई, जौ जले हुये, गुलनार-फ़ारसी, समाक, तबाशीर, गुलाब पुष्प, कज़माज़ज, हरड़ की गुठली, मोड़ीयों पत्र, दमलख़वैयन, कुन्दर, नागरमोथा, मसूर छिली हुई प्रत्येक दो तोला, फटकड़ी भुनी हुई ५ तोला, सब को कूट पीस कर बारीक चूर्ण करें ।

गुण—दांतों से रक्त आने को रोकता है, दांतो को चमकाता तथा दृढ़ करता है ।

चोबचीनी मंजन

फटकड़ी सफ़ेद, कत्थ सफ़ेद, लौह चूर्ण, मौलसरी वृक्ष छाल, प्रत्येक ३ तोला, नीलाथोथा भुना हुआ २ तोला, कामीस, चोव-चीनी १-१ तोला, हरड़ ५ माशे, अनार छाल ६ माशा, सव को कूट छान कर मंजन बनावें ।

गुण—उपरोक्त ।

पाईओरिया मंजन

सुपारी जली हुई, हिरण शृंग जला हुआ, कागज़ खताई जला हुआ ६-६ माशा, अकरकरा ७ माशा, इंजबार जड़ ५ माशा, फट-कड़ी भुनी हुई, कज़माज़ज, तबाशीर, गुलनार ४-४ माशा, कुटछान कर बारीक चूर्ण करें ।

गुण—उपरोक्त ।

सनून कलान

मस्तगी, माजू सबज, तूतीया भुना हुआ, फटकड़ी भुनी हुई, हरड़ प्रत्येक ३ माशा, कहरूबा, बुसद ४-४ माशा, हीरा कासीस, छालीया जला हुआ, कत्थ पापड़ीया, संगजराहत प्रत्येक ६-६ माशा, चोबचीनी, मौलसरी जड़ जाल प्रत्येक ७ माशा, हिरण शृंग जला हुआ १ तोला, लोह चूर्ण बारीक १३ माशा, सब को मिला कर अत्यन्त बारीक चूर्ण करें ।

गुण—उपरोक्त ।

अनुभूत मंजन

कहरूबा, संगजराहत, बड़ी एला बीज, कहरूबा शमई, निंबु सत्व, समुद्र झाग, फटकड़ी भुनी हुई, चाकसू छिला हुआ, मधुयष्टि, ज़ुफ़त रूमी, रूमी मस्तगी, गुलाब पुष्प, अकाकीया, गुलनार फ़ारसी, शादनज अदसी, गिल अरमनी, प्रत्येक ६ माशा, ज़ुफ़त बलूत ४ नग, गोंदनी वृक्ष छाल, कीकर वृक्ष छाल, सुहंजना वृक्ष छाल ६-६ माशा, सब को बारीक कर के मंजन बनावें ।

गुण—यह मंजन सोते समय दांतो पर मलें, पाईओरिया के लिये उत्तम योग है।

विशेष मंजन

नीलाथोथा भुना हुआ, फटकड़ी भुनी हुई ३-३ माशा, छोटी एला बीज, लौंग, अकरकरा, अनार का छिलका प्रत्येक ६ माशा, बारीक करके दांतों पर मलें, यदि नीलाथोथा लगता हो, तो २।। तोल कहरूबा मिटी और इस में मिला दें।

गुण—पाईओरिया में उत्तम है।

दृढ़कर मंजन

मस्तगी , गुलाबजीरा, गुलअनार, गुलाब पुष्प, प्रवाल मूल, इलायची बीज, सेवती पुष्प, जीरा कृष्ण, फटकड़ी भुनी हुई, प्रत्येक २ माशा, तबाशीर १ माशा, सब को कूट छान कर चूर्ण करें, औंर प्रातः सायं दांतो पर मलें, और दो घण्टा तक पानी न लगावें।

गुण—हिलते दांतों को दृढ़ करता है, रक्त तथा पीप को बन्द करता है।

(२) माजू ५ नग, मंजीठ ६ माशा, कत्थ सफेद ३ माशा, स्वर्ण माक्षिक १ तोला, लौह चूर्ण बावी पुष्प प्रत्येक दो तोला, हीरा कासीस ३ माशा, छोटी इलायची बीज ६ माशा, चारों लवण ६-६ माशा, चम्बेली छाल जली हुइ, झड़बेरी छाल जली हुइ, कीकर छाल जली हुई प्रत्येक २ तोला, सुपारी जली हुई ५ तोला, छोटी और बड़ी माईं प्रत्येक दो तोला, सब को बारीक करके मंजन बनावें।

गुण—पहिले योग अनुसार।

मस्सी मंजन

लौह चूर्ण अत्यन्त वारीक कीया हुआ १। सेर, माजू सबज़ आधा सेर, नीलाथोथा भुना हुआ ४।। तोला, मस्तगीरूमी १४ माशा, स्वर्णमाक्षिक ४ माशा, सब को कूट छान कर मंजन बनावें, दांतों पर मलें, और कुछ समय तक कुल्ली न करें।

गुण—होंठों को रंगाता है, दांतों को दृढ़ करता तथा चमकाता है।

लवंगादि मंजन

सुची चीनी के टुकड़े, समुद्रझाग, सज्जीक्षार, लवपुरी लवण, प्रत्येक १०॥ माशा, फटकड़ी जलाई हुई, जौ जलाये हुये, अगर जलाया हुआ, बालछड़, माईं, मोड़ीयों बीज, अकरकरा प्रत्येक ७ माशा, लौंग, कबाबचीनी प्रत्येक १॥। माशा, सब को कूट छान कर मंजन बनावें ।

गुण—दांतों को दृढ़ करता है, चमकाता हैं ।

स्फटिका मंजन

फटकड़ी सफ़ेद, कत्था सफ़ेद, लौहचूर्ण, मौलसरी वृक्ष छाल ३-३ तोला, नीलाथोथा, २ तोला, कासीस, चोबचीनी, १-१ तोला, हरड़ ९ माशा, अनारछिलका, ६ माशा, सबको कूट छान कर मंजन बनावें, दांतों पर मलने के बाद गुलाब तैल लगावे ।

गुण—दांतों तथा मसूडों को दृढ़ करता है ।

सुपारी मंजन

छालीया जलाई हुई ४ नग माजू ३ नग, चमड़ा बूदार जला हुआ १ तोला, संगज्राहत, मस्तगी, बड़ी इलायची प्रत्येक ६ माशा, (माजू गन्दम के आटे में रख कर भून लें) इसके पश्चात सब को बारीक पीस लें ।

गुण—उपरोक्त ।

(२) मस्तगी, गुलाब जीरा, गुलनार, गुलाब पुष्प, बुसद सफ़ेद खरल किया हुआ, इलायची छोटी, सेवती पुष्प, जीरा काला भुना हुआ, फटकड़ी भुनी हुई प्रत्येक २ माशा, बंशलोचन १ माशा, सब को कूट छान कर बारीक चूर्ण करें ।

गुण—उपरोक्त ।

(३) मस्तगी, माजू सबज़, नीलाथोथा भुना हुआ, फटकड़ी भुनी हुई, हरड़ ३-३ माशा, कहरूबा, मूंगे की ज़ड़ ४-४ माशा, हीराकासीस, छालीया जलाई हुई, कत्थ पापड़ीया, संगज्राहत प्रत्येक ६ माशा, चोबचीनी, मौलसरी जड़ छाल, ७-७ माशा, बारासिंघे का

शृंग जलाया हुआ, लौहचर्ण १–१ माशा, मिलाकर अत्यन्त बारीक चूर्ण करें।

गुण—दांतों पर मलें, दांतों तथा मसूडों का खून रोकने में अपूर्व है, बहुत ही गुणदायक मंजन है।

(४) लवपुरी लवण, धनियां शुष्क, कासीस प्रत्येक ७ माशा, नीलाथोथा, कुठ, कत्थ सफ़ेद, जीरा सफ़ेद, मस्तगी प्रत्येक ३।। माशा, वज्रदंती, सोंठ, कपूर कचरी, कबाब चीनी, प्रत्येक १।।। माशा, नीले थोथे को गरम तवे पर रख कर सफ़ेद कर लें, जीरा और धनियां को भी भून लें, सबको बारीक पीसकर मंजन करें।

गुण—उपरोक्त।

(५) मस्तगी, कासीस, सुरमा, संग सफ़ेदा, मैनफ़ल, सोंठ भुनी हुई, संगज्राहत भुना हुआ, सुहागा भुना हुआ प्रत्येक १४ माशा, मिरच सफ़ेद, कत्था सफ़ेद, धनियां भुना हुआ, जीरा भुना प्रत्येक २ तोला ४ माशा, नागरमोथा ४ तोला ८ माशा, सब को बारीक कूट छान कर मंजन करें।

गुण—उपरोक्त, दंतपीड़ा को भी नष्ट करता है।

तुत्थ मञ्जन

नीला थोथा भुना हुआ, जीरा सफ़ेद भुना हुआ, धनियां शुष्क, कत्थ, लवण, कुठ, सोंठ प्रत्येक १४ माशा, पिप्पली ७ माशा, सब को कूट छान कर मंजन बनावें।

गुण—दंत पीड़ा नाशक है, दांतों को दृढ़ करता है।

शरबत—पानक (Syrups)

शरबत उस मधुर घन जल को कहते हैं, जो अंगूर, अनार सेब जैसे फलों के रस, वा शुष्क औषध के क्वाथ वा शीत कषाय में खाँड डाल कर अग्नि पर पाक कर बनाया जाता है, इसमें औषध के गुण अधिक देर तक रहते है, साथ ही औषध का कड़वा पन भी बहुत मात्रा तक छप जाता है।

शरबत में औषध आँठवा भाग होनी चाहिये, औषध से आठ गुना जल डाल कर क्वाथ करें, तिहाई भाग रहने पर छान लें

औषध को छानते समय मलना नहीं चाहिये, इससे औषध का गाढ़ा पन भी आ जाता है, -जो शरबत को थोड़े दिनों पश्चात दुर्गन्धित कर देता है, क्वथित जल से तिगुनी खाँड मिला कर पाक करें, यदि ताज़े फलों के रस से शरबत बनाना हो, तो इनको निचोड़ कर इनका स्वरस निकालें, ६ छटांक स्वरस में १ सेर खाँड डालकर पाक करें, परन्तु सरदियों में आधा सेर स्वरस होना चाहिये

यदि आलूबख़ारा, इमली, ज़रिशक जैसी शुष्क फल और अम्ल रस प्रधान फलों से शरबत बनाना हो, तो इनको पानी में भगो कर मलछान लें, और १॥ सेर जल में १ सेर खाँड डालें और यदि मधुर रस प्रधान शुष्क फलों से बनाना हो, यथा उन्नाब, अंजीर, द्राक्षा आदि, तो इनका क्वाथ कर पाक करें, यदि शुष्क जड़, फूल, पत्र से शरबत बनाना हो, तो इनकों १० गुणा जल में रात्री को भगोवें, प्रातः क्वाथ करें, तिहाई भाग रहने पर छान कर खाँड मिला पाक करें, यदि शरबत में खाँड के साथ तुरंजबीन, शीरख़-शत भी योग में लिखे हों, तो तुरंजबीन आदि को पहिले औषध के क्वाथ में वा जल में घोल कर छान लें, ताकि तिनके काटें आदि से रहित हो जाये, घोल कर कुछ समय तक ठेरें, ताकि मिट्टी नीचे तल में बैठ जाये, फिर धीरे से निथार लें, इसके पश्चात पाक करें, यदि मधु से शरबत बनाना हो, तो उसको पहिले छान लें, ध्यान देने योग्य विशेष बात यह है, कि शरबत न ही पतला हो, और न ही घन हो, पतला रहने से शीघ्र ही शरबत ख़राब हो जाता है, और घन होनें से नीचे कुच्छ दिनों तक चीनी जम जाती है, दो चार बार बनानें से ठीक पता चल जाता है, अच्छे पाक के यह चिन्ह हैं, कि यदि पाक को दो ऊंगलियों में मला जाय तो तार निकले, और यदि चमचा से उठाकर गिरायें, तो आख़री कतरे से तार निकलें और पृथ्वी पर गिरने से नहीं फैले, शरबत का पाक ठीक होने से वह अधिक समय तक ख़राब नहीं होता।

(२) जिन बोतलों में शरबत रखना हो, उनको धोकर अच्छी तरह ख़ुशक कर लें, यदि जल तथा उसकी ज़रा सी नम भी रह गई, तो शरबत ख़राब हो जायगा।

(३) बोतल को शुद्ध रखें, शरबत को धात के बरतन में न रखें।

(४) यदि शरबत में लुआवदार औषध, लसूड़े तथा बहिदाना आदि हों, तो शरबत को उसी तरह पूरे समय तक पकायें।

(९) यदि शरबत में बंशलोचन, रेवन्दचीनी आदि डालनी हों, तो पाक सिद्धि पर इनका बारीक चूर्ण डालें।

शरबत वरद सनाई

सनाय १। सेर, गुलाब पुष्प दो सेर, जल आठ गुणा में डाल कर क्वाथ करें, तिहाई भाग रहने पर २० सेर खाँड मिलाकर पाक करें।

मात्रा—२ तोला।

गुण—कोष्ट बद्धता नाशक है

शरबत अरज़ानी

बनफ़शा पुष्प, उन्नाब, गुलाब पुष्प प्रत्येक आठ तोला, सपस्तान (लसूड़े), इसपग़ोल प्रत्येक १० तोला, बहिदाना ४ तोला, गाऊज़बान, ६ तोला, सब औषध को ८ गुणा जल में रात्री भर भगोवें, प्रातः क्वाथ करें, तीसरा भाग रहने पर इसमें चौथा भाग तुरंजबीन डाल कर छान लें, और जल से त्रिगुण खाँड मिला कर पाक करें, यदि इसपग़ोल शरबत में न डाला जाये, तो शरबत प्रयोग करते समय पहिले ६ माशा इसपगोल फांक कर ऊपर से शरबत पी लिया जाये।

मात्रा—२ तोले से ४ तोले।

गुण—आन्त्र की शुष्कता को दूर करता है, विबन्ध नाशक है।

शरबत आबरेशम

अपक्व आबरेशम कुतरा हुआ ३८ तोला, गाऊज़बान पत्र, बादरंजबोया, उस्तोख़दूस प्रत्येक १९ तोला, जल आठ गुना, इस जल में लौह को ७ वार गरम करके भुझायें, फिर इन चारों औषध को इस जल में पांच दिन तक भगोवें, फिर क्वाथ करें, तिहाई भाग रहने पर छान कर त्रिगुण खाँड मिला कर पाक करें।

पाक सिद्धि पर, फरंजमुशक बीज ३।। तोला, सन्दल सफेद १ तोला दस माशा, ऊद हिन्दी १।। तोला, बिजौरा निंबू का छिलका, तमाल पत्र, दरूनज अकरबी प्रत्येक १३।। माशा, कूट छान कर चूर्ण कर मिलावें ।

मात्रा–दो से चार तोला, अर्क गाऊज़बान में मिलाकर प्रयोग करें ।

गुण–दिल, दिमाग़ को बल देता है, उन्माद, दिल डूबना में लाभप्रद है ।

शरबत अहमदशाही

गाऊज़बान २ तोला, बादरंजबोया पत्र, नीलोफ़र पुष्प, फरंज-मुशक बीज, कृष्ण हरीतकी, अफतीमियूं विलायती, बसफ़ाइंज फसतक्की, फरंजमुशक पत्र, उस्तोखद्दूस, सनाय पत्र, प्रत्येक ९ माशा, बनफ़शा पुष्प ६ माशा, गुलाब पुष्प ४।। माशा, सब औषध को रात्री समय आठ गुना जल में भिगो कर प्रातः काल क्वाथ करें, तीसरा भाग रहने पर त्रिगुण खाँड़ डालकर पाक करें, १ पाव अर्क गुलाब भी पाक में डाल दें ।

मात्रा–दो तोला, रक्तशोधक अर्क में मिलाकर वा जल में दें ।

गुण–उन्माद, भ्रम, रक्त विकार में उत्तम है ।

शरबत उस्तोखद्दूस

मधुयष्टि छिली हुई, परसाशों (हंसराज), उस्तोखद्दूस, ऊद-सलीब, गाऊज़बान, सौंफ़, करफ़स बीज, खतमी बीज, प्रत्येक ५ तोला, बनफ़शा पुष्प, गुलाब पुष्प, ७–७ तोला, द्राक्षा बीज रहित २० तोला, सपस्तान ५० नग, सब को आठ गुणा जल में भिगो कर प्रातः क्वाथ करें, तीसरा भाग रहने पर छान कर त्रिगुण खाँड मिला कर पाक करें ।

मात्रा–२ से ४ तोला ।

गुण–वात तथा कफ़ दोषों को नष्ट करता है, मस्तिष्क को शुद्ध करके बल देता है ।

शरबत अहज़ाज़

उन्नाब विलायती २० दाना, सपस्तान (लसूड़े) ६० दाना, गोंद कतीरा, गोंद कीकर, प्रत्येक १०।। माशा, बहिदाना १।। तोला मधुयष्टि छिली हुई, ख़बाज़ी बीज, नीलोफ़र पुष्प, बनफ़शा पुष्प, प्रत्येक दो तोला, अडूसा पत्र आधा सेर, गोंद के सिवाये सब को आठ गुणा जल में भिगो कर प्रातः क्वाथ करें, तीसरा भाग रहने पर त्रिगुणा खाँड डाल कर पाक करें, पाक सिद्धि पर गोंद को खरल करके डालें।

मात्रा—दो तोला, अर्क गाऊज़बान के साथ प्रयोग करें।

शरबत आलू बालू

आलू बालू आधा सेर लेकर २ सेर पानी में रात्री को भिगोवें, प्रातः क्वाथ करें, तीसरा भाग रहने पर छान कर २।। सेर खाँड डाल कर पाक करें।

मात्रा—२ से ४ तोले।

गुण—मूत्र खोल कर लाता है, वृक्क तथा मूत्राशय की अश्मरी में लाभप्रद है।

शरबत अम्ल अनार

अम्ल अनार स्वरस २ सेर, पोदीना सबज १० तोला, ऊद ख़ाम, मस्तगी, आमला, प्रत्येक सात माशा, पोस्त पिस्ता, १।। तोला, अनार स्वरस के सिवाये बाकी औषध को कूट कर पानी में जोश देकर छान लें, फिर अनार स्वरस मिला कर और त्रिगुणा खाँड मिला कर पाक करें, पाक सिद्धि पर मंस्तगी चूर्ण मिला लें।

मात्रा—दो तोला।

गुण—वमन, मतली, पित्त को नष्ट करता है, हृदय को बल देता है।

शरबत अनार सादा

बाकी औषध न मिला कर, केवल अनार स्वरस में ही खाँड मिला कर पाक करें।

गुण—उपरोक्त।

शरबत मधुर अनार

मधुर अनार स्वरस १ सेर में तीन सेर खाँड मिला कर पाक करें।

मात्रा–दो तोला।

गुण–हृदय, यकृत, को बल देता है, पित्त तथा तृषा को शान्त करता है।

वक्षरोग हर शरबत

अपक्व आबरेशम कुतरा हुआ पौने दो तोला, गाऊज़बान १। तोला, गाऊज़बान पुष्प २ तोला, परसाशों (हंसराज) पौने दो तोला, अलसी बीज पौने दो तोला, मुलैठी ९ माशा, पोस्त ख़शख़ाश ६ नग, सब को रात्री को १ सेर पानी में भिगोवें, प्रातः क्वाथ करें, तीसरा भाग रहने पर छान कर पानी से त्रिगुणा खाँड मिला कर पाक करें।

मात्रा–दो तोला।

गुण–श्वास यन्त्र तथा वक्ष के रोगों में लाभकारी है, कास श्वास, जीर्ण प्रतिष्याय में उत्तम है, कफ़ स्रावी है।

शरबत अंजबार मुरकब

अंजबार जड़ छाल २॥ तोला, ख़रनोब शामी १ तोला १० माशा, चन्दन सफेद, रक्त, मोड़ीयों बीज ९ माशा, सब को लोहे के बुझाये आठ गुना जल में २४ घण्टे भिगोवें, प्रातः क्वाथ करें, तीसरा भाग रहने पर त्रिगुण खाँड डाल कर पाक करें।

मात्रा–दो तोला, योग्य अनुपान से दें।

गुण–रक्त अतिसार, रक्तपित्त में उत्तम है, हृदय तथा यकृत की पित्त को शान्त करता है।

शरबत अंजबार सादा

अंजबार १० तोला, को आठ गुणा पानी में भिगो कर प्रातः क्वाथ करें, तीसरा भाग रहने पर छान कर त्रिगुण खाँड (१ सेर) डाल कर पाक करें।

मात्रा—२ तोला।

गुण—उपरोक्त।

शरबत अंजीर

अंजीर ज़रद (पक्व) लेकर आठ गुणा जल में भिगो कर क्वाथ कर यथा विधि खाँड मिला कर पाक करें।

मात्रा—४ तोला शरबत, योग्य अनुपान से।

गुण—कोष्ट बद्धता नाशक है, कफ़स्रावी है, प्लीहा वृद्धि में लाभप्रद है।

शरबत अंगूर अम्ल

अंगूर स्वरस १ सेर में तीन सेर खाँड मिला कर पाक करें।

मात्रा—दो तोला।

गुण—आमाशय, हृदय को बल देता है, पाचक है।

शरबत अंगूर मधुर

विधि, मात्रा, गुण उपरोक्त। पित्तज ज्वर में उत्तम ह।

शरबत अन्नास

अन्नास स्वरस १ सेर, गुलाब अर्क, बेदमुष्क अर्क प्रत्येक आधा पाव, खाँड त्रिगुण, मिला कर पाक करें, पाक करते समय निंबू कागज़ी का स्वरस भी अल्प मात्रा में डाल दें।

मात्रा—४ तोला।

गुण—हृदय को बल देता है, मूत्रल है।

शरबत बजूरी शीतल

कासनी जड़ छाल २ तोला, ख़रबूज़ा बीज, ककड़ी बीज, खीरा बीज प्रत्येक १॥ तोला, मग़ज़ तुख़म तरबूज़ ८ माशा, आठ गुणा जल में भिगोकर क्वाथ करें, तीसरा भाग रहने पर त्रिगुणा खाँड मिला कर पाक करें।

मात्रा—४ तोला।

गुण—पैतिक तीव्र ज्वरों में उत्तम है, यकृत रोग तथा पाण्डू में लाभप्रद है।

शरबत बजूरी उष्ण

कासनी मूल छाल ९ तोले, कासनी बीज, सौंफ जड़ छाल, प्रत्येक ६ तोला, सौंफ, करफ़स बीज, करफ़स जड़ छाल, प्रत्येक तीन तोला, कसूस बीज (पोटली में बांध कर क्वाथ में डालें) १।। तोला, सब औषध का यथाविधि क्वाथ कर छान कर त्रिगुण खाँड मिला पाक करें।

मात्रा—दो से ४ तोला

गुण—यकृत, आमाशय, वृक्क, मूत्राशय की सरदी को नष्ट करता है

शरबत बजूरी मुतहदिल

कासनी बीज, ककड़ी बीज, खीरा बीज, ख़रबूज़ा बीज, सौंफ की जड़, प्रत्येक ५ तोला, कासनी जड़ १०।। तोला, यथा विधि क्वाथ कर छान कर खाँड मिला पाक करें।

मात्रा—दो से ४ तोला।

गुण—मिश्रित ज्वरों में उत्तम है, यकृत, वृक्क तथा मूत्राशय को दोषों से शुद्ध करता है।

शरबत बनफ़शा

बनफ़शा पुष्प १० तोला को आठ गुणा जल में भिगो कर यथा-विधि क्वाथ कर छान कर खाण्ड मिला कर पाक करें।

मात्रा—दो से ४ तोला।

गुण—कफ़ज ज्वर, कास, श्वास, प्रतिश्याय, शिरशूल में उत्तम है

शरबत बही

बही अम्ल तथा मधुर के छिलके और दाने निकाल कर दोनों का मिलित १। सेर स्वरस लेकर ३ सेर १२ छटांक खाण्ड मिला कर पाक करें।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—हृदय तथा आमाशय को बल देता है, वमन, अतिसार में उत्तम है।

शरबत तिमिर हिन्दी

इमली आधा सेर लेकर आवश्यकतानुसार जल में रात्रीं को भिगोवें, प्रातः हलका उबाल कर छान लें, और दो सेर खाण्ड मिला कर पाक करें।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—आमाशय को बल देता है, कोष्टबद्धता नाशक है पित्त को नष्ट करता है, वमन, जी मतलाना में लाभप्रद है।

शरबत शहतूत कृष्ण

शहतूत कृष्ण को जल में अच्छी तरह मल कर छान लें, और इस छने हुये १ सेर पानी में तीन सेर खाण्ड मिला कर पाक करें।

मात्रा—दो तोला अवलेह की तरह चाटें।

गुण—गले की पीड़ा, शोथ, जलन को हटाता है।

शरबत अबलास

कीकर फली, बिल्वगिरी ३-३ तोला, मोडीयों बीज, अमरूद, ताज़ा प्रत्येक १४ माशा, बही स्वरस, सेब स्वरस, अनार स्वरस प्रत्येक १-१ सेर, जल १ सेर, अब औषध को इन स्वरसों तथा जल में डाल कर क्वाथ करें १ सेर शेष रहने पर छान कर तीन सेर खाण्ड मिला कर पाक करें।

मात्रा—दो तोला।

गुण—रक्तपित, प्रदर, रक्त अतिसार में लाभ प्रद है।

शरबत अमाज़

अमाज़ स्वरस ३० तोला में ५० तोला खाण्ड मिला कर पाक करें।

मात्रा—दो तोला।

गुण—दिल, दिमाग को बल देता है, खफ़कान, दिल धड़कना, हृदय की पित्त तथा घबराहट को दूर करता है, पित्त को खारिज करता है, वमन को रोकता है।

शरबत खशख़ाश

पोस्त डोडा बीजों समेत १ सेर लेकर यथा विधि क्वाथ करें, तिहाई भाग रहने पर छानकर त्रिगुण खाण्ड मिला कर पाक करें।

मात्रा—दो तोला।

गुण—पित्तज प्रतिष्याय, प्रतिष्याय जनित कास में उत्तम हैं।

शरबत दीनार

कासनी जड़ छाल ११ तोला, कासनी बीज, गुलाब पुष्प, प्रत्येक ५॥ तोला, नीलोफर पुष्प, गाऊज़बान प्रत्येक तीन तोला कसूस बीज (पोटली में बांध कर) ८ तोला १० माशा, सब औषध को अर्ध कुट्टित कर क्वाथ करें, तिहाई भाग रहने पर खाण्ड मिला पाक करें, पाक सिद्ध पर रेवन्द असारा ४ तोला बारीक चूर्ण कर मिलावें।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—यकृत शूल, उदर शूल, गर्भाशय शूल, मूत्राशय शूल विषम ज्वर, विबन्ध, जलोदर को नष्ट करता है, रेचक तथा मूत्रल है

शरबत रङ्गतरा

रंगतरा का स्वरस १॥ पाव में ४॥ पाव खाँड मिला कर पाक करें।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—पित्त की उग्रता को नष्ट करता है, तृषा को मिटाता है।

शरबत जूफ़ा

१ पाव जूफ़ा लेकर लकड़ीयों से साफ़ करके आठ गुना पानी में उबालें, तिहाई भाग रहने पर शेष जल से दुगनी खाँड़ और समभाग शहद मिला कर पाक करें।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—कास, श्वास में अत्यन्त उत्तम है।

शरबत जूफ़ा मरकब

अंजीर १० नग, ख़तमी बीज, मधुयष्टि, ईरसा प्रत्येक १०॥ माशा, मेथी १४ माशा, सौंफ़, करफ़स बीज प्रत्येक १॥ तोला,

परसाशों १ तोला ४ माशा, जूफा शुष्क दो तोला, द्राक्षा बीज रहित ४ तोले, सब औषध का यथा विधि क्वाथ करें, तिहाई भाग रहने पर दुगनी खाँड और एक भाग गुलकन्द मिला कर पाक करें, पाक सिद्धि पर छान कर बोतलों में भरें।

मात्रा—दो तोला।

गुण—कफज़ कास में उत्तम है और श्वास में कफ़ का स्राव करता है।

शरबत सेब मधुर

मधुर सेब को छिलके और बीज रहित करके इस का स्वरस निचोड लें, इस में त्रिगुण खाण्ड मिला कर पाक करें।

मात्रा—२ तोला।

गुण—वमन को रोकता है, आमाशय और हृदय को बल देता है, पित्तज अतिसार को नष्ट करता है।

शरबत सद्धर

गाऊज़बान पुष्प पौने तीन तोला, गाऊज़बान, अलसी बीज, अपक्व आबरेशम कुतरा हुआ, परसाशों मधुयष्टि, अजवायन देसी, सौंफ़ प्रत्येक १। तोला, ऊन्नाब पौने ४ तोला, पोस्तडोडा, खतमी-बीज प्रत्येक २। तोला, लसूड़े ३। तोला, बहिदाना १ तोला, आठ गुणा जल में क्वाथ करें तिहाई भाग रहने पर छान कर त्रिगुण खाण्ड मिला कर पाक करें।

मात्रा—२ तोला।

गुण—कास, श्वास, रक्तपित, प्रतिश्याय में उत्तम है।

शरबत सन्दल

चन्दन चूरा सफेद १० तोला को १ सेर अर्क गुलाब जल में भिगो कर क्वाथ करें तिहाई भाग रहने पर छान कर १ सेर खाण्ड मिला कर पाक करें।

मात्रा—दो तोला,

गुण—ख़फ़कान, यकृत तथा आमाशय की पित्त को नष्ट करता है।

शरबत उन्नाब

उन्नाब आधा सेर लेंकर दो सेर पानी में क्वाथ करें, तिहाई भाग रहने पर छान कर २ सेर खाण्ड मिला कर पाक करें।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—खांसी, वक्ष पीड़ा, रक्तदोष, शीतला में बहुत लाभप्रद है

शरबत फ़ालसा

फ़ालसा पक्व को खूब भली प्रकार मलकर छान लें, यदि स्वरस १।। पाव हो, तो १। सेर खाण्ड मिलाकर पाक करें।

मात्रा—दो तोला।

गुण—आमाशय, हृदय को बल देता है, वमन, अतिसार और प्यास को नष्ट करता है, यकृत पित्त तथा मूत्र जलन को नष्ट करता है

शरबत फ़रयादरस

गाऊज़बान, सन्दल सफेद, परसाशों, ऊदसलीब, ख़शख़ाश बीज सफेद २-२ तोला, मधुयष्टि छिली हुई, सौंफ, ख़तमी बीज, गुलाब पुष्प १-१ तोला, द्राक्षा बीज रहित २५ नग, पोस्तडोडा ५ नग, सब औषध को आठ गुणा जल में भिगो कर क्वाथ करें। तिहाई भाग रहने पर मल छान कर त्रिगुणा खाण्ड मिला कर पाक करें।

मात्रा—दो तोला, खांसी और नज़ला में उपयोगी है।

शरबत फोवाका

मधुर अनार स्वरस, अम्ल अनार स्वरस, मधुर वही स्वरस, मधुर सेब स्वरस, अम्ल सेब स्वरस, अमरूद स्वरस, ग़ोरा स्वरस, स्माक स्वरस, ज़रिशक स्वरस, प्रत्येक आधा पाव, सबको त्रिगुण खाँड मिला कर पाक करें।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—सब अंगों को बल देता है।

शरबत कसूस

सौंफ़ जड़, गुलाब पुष्प, सौंफ़ रूमी प्रत्येक ९ माशा, कसूस बीज (पोटली में बांधकर), कासनीबीज, कसूस पुष्प, ख़यारंन बीज, ख़रबूज़ा बीज, कासनी जड़ छाल १–१ तोला २ माशा सबको आठ गुणा जल में भिगोकर क्वाथ करें, तीसरा भाग रहने पर छान कर १ सेर खाँड मिलाकर पाक करें।

मात्रा—२ से ४ तोला, सौंफ़ अर्क में मिला कर प्रयोग करें।

गुण—यकृत तथा आमाशय को बल देता है, मिश्रित ज्वरों में उत्तम है, यकृत को शुद्ध करता है, रेचक है।

केवड़ा शरबत

अर्क केवड़ा तीव्र सुगन्धित १॥ पाव को १। सेर खाँड मिला कर पाक करें।

मात्रा—दो से ४ तोला।

गुण—हृदय को बल देता है, तृषा को शान्त करता है।

शरबत गाऊज़बान

गाऊज़बान १ पाव को आठ गुणा जल में भिगो कर क्वाथ करें, तीसरा भाग रहने पर छानकर अर्क गुलाब ८ तोला और दो सेर खाँड मिलाकर पाक करें।

मात्रा—२ तोला।

गुण—ख़फ़कान को नष्ट करता है, दिल को ताकत देता है।

शरबत गुढ़हल

१०० गुढ़हल पुष्प सुरख़ की सबज़ पतियां दूर करके चीनी के बरतन में डालें और सायं को निंबू रस २० तोला वा टाटरी १ माशा जल १ पाव में मिलाकर डालें, जब रंग कट जाये तो मल कर छान लें, अब दो सेर खाँड का शरबत तयार करके इस शरबत में गुड़हल का शीत कषाय डाल कर बोतलों में भरें कि चौथाई बोतल खाली रहे। बोतलों का मुख बन्द करके शीतल जल में डाल दें, जब शरबत में ज़ोश पैदा हो जाये, तो साफ़ करके प्रयोग में लावें।

मात्रा—दो तोला ।

गुण—ख़फ़कान, उन्माद, हृदय रोगों में उपयोगी हैं ।

शरबत लोकाट

लोकाट का पानी आधा सेर, १॥ सेर खाँड में मला कर पाक करें ।

मात्रा—२ से ४ तोला ।

गुण—पित्त की उग्रता को शान्त करता है ।

शरबत शोथ नाशक

बहिदाना, इसगग़ोल, १—१ तोला, सपस्तान (लसूड़ें) ५ तोला, ख़तमी बीज २ तोला, सौंफ़ जड़, कासनी जड़, हर एक ४ तोला, गुलाब पुष्प १ तोला द्राक्षा बीज रहित, १० तोला, करफ़स जड़ २ तोला, अज़ख़रमकी १ तोला, अंजीर पक्व १० तोला, सुहागा-कच्चा, रेशाख़तमी, प्रत्येक ६ माशा, कासनी स्वरस छना हुआ, मको स्वरस छना हुआ, बथुआ सबज़ स्वरस, मूली सबज़ स्वरस, प्रत्येक १० तोला, खाँड २ सेर, पहिले शुष्क औषध को रात्री के समय दो सेर पानी में भिगो दें, प्रातः क्वाथ करें, तीसरा भाग रहने पर छान लें, अब इस क्वथित जल में, कासनी, मको आदि का स्वरस मिलाकर ४ सेर खाँड मिलाकर पाक करें ।

मात्रा—४-४ तोला, अर्क बरनजासफ़ १२ तोला में मिला कर प्रयोग करें ।

गुण—यकृत, आमाशय, आन्त्र तथा भीतरी अंगों की शोथ को नष्ट करता है ।

रक्त शोधक शरबत

उन्नाब, पितपापड़ा, नीलोफ़र, आकाशबेल, कासनी, ख़ुबाज़ी, हरड़, कृष्ण हरीतकी, मुण्डी, चन्दन रक्त, चन्दन सफ़ेद, बुरादा शीशम, बनफ़शा पुष्प १-१ तोला, आठ गुणा जल में भिगोकर क्वाथ करें, और त्रिगुण खाँड मिलाकर शरबत, का पाक करें ।

मात्रा—दो तोला, दूध में वा अर्क रक्त शोधक में मिलाकर प्रयोग करें ।

गुण—रक्त शोधक है, फोड़े, फुन्सी को नष्ट करता है ।

शरबत मुसफ़ी

सन्दल सुरख़, नीलकण्ठी, पितपापड़ा, सरफोंका प्रत्येक १। तोला, नकचूर, चोबचीनी, प्रत्येक ४ माशा, उशबा, मेहन्दी पत्र, कमीला, १।-१। तोला, चिरायता, मुण्डी, उन्नाब, हरड़ प्रत्येक ३। तोला, सनाय, नीमपत्र, ब्रह्मडण्डी, कृष्ण हरीतकी, प्रत्येक २। तोला, शीशम बुरादा १ तोला, यथाविधि क्वाथ कर छानकर खाँड मिला शरबत तयार करें। पाकसिद्धि पर पौटेष्यम आयोडाईड १० तोला (Potassium Iodide) मिलाकर बोतलों में भरें।

मात्रा—१ चमचा (६० बूंद से १२० बूंद) दूध से।

गुण—परम रक्तशोधक है।

शरबत मुरकब मसफ़ी ख़ून

(२) उन्नाब ५ तोला, सन्दल सुरख़, सन्दल सफेद, सरफोंका, महन्दी पत्र, पितपापड़ा, नीलोफर पुष्प, मको शुष्क, कासनीबीज, शीशम बुरादा, मुण्डी प्रत्येक १॥ तोला, यथा विधि क्वाथ करें। तीसरा भाग शेष रहने पर त्रिगुण खाँड डालकर शरबत तय्यार करें।

मात्रा—४ तोला, शरबत अर्क मुसफी खून में डाल कर प्रयोग करें।

गुण—उपरोक्त।

शरबत विरेचक

गुलाब पुष्प, सनाय प्रत्येक पौने ४ तोला, बनफ़शा पुष्प ७॥ तोला, त्रिवृत, अफ़सनतीन रूमी, ग़ारीकून प्रत्येक २१ माशा, कसूस बीज, ऊस्तोख़दूस, मस्तगी प्रत्येक १४ माशा, बालछड़ ९ माशे, उन्नाब, लसूड़े प्रत्येक ३० नग, मस्तगी और ग़ारीकून के सिवाये बाकी सब औषध को आठ गुणा उष्ण पानी में भिगो दें, प्रातः को क्वाथ करें, तीसरा भाग रहने पर इसमें तुरंजबीन २८ तोला हल करके छान लें, फिर इसमें त्रिगुण खाँड डालकर पाक करें, पाक सिद्धि पर मस्तगी, ग़ारीकून का वारीक चूर्ण कर शरबत में मिला दें।

मात्रा—४ तोला।

गुण—विरेचक ह, तीनों दोषों को निकालता हैं!

शरबत आमाशय दोषहर

सौंफ़, द्राक्षा बीज रहित, सौंफ़ जड़, कासनी जड़, मधुयष्टि, सौंठ, अजवायन, गाऊज़बान पत्र, उन्नाब, बनफ़शा पुष्प, १-१ तोला, सबको आठ गुणा जल में रात्री को भिगो कर प्रातः क्वाथ करें, तीसरा भाग रहने पर छानकर त्रिगुण खाँड मिलाकर पाक करें, पाक कुछ गाढ़ा होना चाहिये।

मात्रा—दो से ४ तोला।

गुण—आमाशय के रोगों में अतीव गुणकारी है।

शरबत बाबूना

मको शुष्क २ तोला, बाबूना पुष्प, मुण्डी, पोदीना शुष्क, १-१ तोला, आठ गुणा जल में क्वाथ कर तीसरा भाग शेष रखें, छानकर १॥ पाव खाँड मिलाकर पाक करें।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—भीतरी अंगों की शोथ को नष्ट करता है।

द्राक्षा शरबत

काले अंगूर को हाथ से मलकर स्वरस निकालें, और चीनी के बरतन में तेज़ धूप में रख दें, यदि तेज़ धूप न हो तो पृथ्वी में गाड़कर ऊपर से घोड़े की ताज़ा लीद भर दें, १ सप्ताह पश्चात निकालें खाँड १॥ सेर, बालछड़ १॥ तोला, लौंग, दारचीनी, तेजपत्र छोटी इलायची, १-१ तोला (का बारीक चूर्ण) अंगूर स्वरस में मिला कर ५ दिन तक धूप में रखें, फिर छान कर बोतलों में भरें।

मात्रा–४ तोला, शरबत भोजनोपरान्त प्रयोग करें।

गुण–बल देता है, दिल दिमाग़ को ताकत देता है, रक्त वर्धक है।

शरबत नारंज

आधा सेर खाँड का अर्क गाऊज़बान १० तोला में पाक करें, फिर नारंगी स्वरस १२ तोला डाल कर दुबारा पाक करें, पाक सिद्धि पर केशर १ माशा हल करके डाल दें।

मात्रा–दो तोला, अर्क गाऊज़बान के साथ।

गुण–हृदय तथा पाचक शक्ति को बल देता है।

शरबत नीलोफ़र

नीलोफ़र पुष्प १० तोला आठ गुणा जल में रात्री को भिगोवें, प्रातः क्वाथ करें, तीसरा भाग रहने पर छान कर त्रिगुण खाँड मिला कर पाक करें।

मात्रा—दो तोला।

गुण—पैतिक ज्वर में लाभप्रद है, हृदय को बल देता है ज्वर तथा तृषा को शान्त करता है।

शरबत वरद मकरर

गुलाब पुष्प ताज़ा १। सेर, दस सेर पानी में क्वाथ करें, जब दो सेर पानी जल जाये, तो छानकर १ सेर गुलाब पुष्प और डाल कर उबालें, जब और दो सेर जल जल जाये, तो तीसरी बार १ सेर गुलाब पुष्प फिर डाल कर उबालें, अब जब दो सेर पानी और जल जाये, तो छान कर समभाग खाँड डाल कर पाक करें ।

मात्रा—दो तोला ।

गुण—मिश्रित ज्वरों में लाभ प्रद है, आमाशय, वृक्क मूत्राशय को बल देता है, पैतिक अतिसार में उत्तम है, कफ़ को ख़ारज करता है, आमाशय की जलन, तथा रक्त दोष में उत्तम है।

शरबत हालों

हालों बीज ४ तोला, कबाब चीनी, ख़रबूज़ा बीज, १—१ तोला, आठ गुणा जल में रात्री को भिगो कर प्रातः क्वाथ करें, तीसरा भाग शेष रहने पर छान कर त्रिगुणा खाँड मिलाकर पाक करें ।

मात्रा—दो तोला ।

गुण—वृक्क तथा मूत्राशय की अशमरी वा रेत को मूत्र द्वारा बाहर निकालता है ।

कासनी शरबत

सौंफ जड़, कासनी की जड़, करफ़स जड़, अज़ख़र जड़, अंजीर-ज़रद, प्रत्येक तीन पाव उन्नाब, गाऊज़बान, बहिदाना, मधुयष्टि, द्राक्षा बीज रहित, बनफ़शा पुष्प, गुलाब पुष्प, सनाय, इमली, प्रत्येक १। सेर, लसूड़े, सौंफ, परसाशों, प्रत्येक २। सेर, रेशाखतमी १ पाव,

अर्ध कुट्टित चूर्ण कर आठ गुणा जल में रात्री को भिगो कर प्रातः क्वाथ करें. तीसरा भाग रहने पर छान कर दो सेर गुड़ जला कर मिलावें, फिर ३८ सेर गुड़ मिला कर पाक करें।

मात्रा--२ तोला।

गुण—आमाशय के सब रोगों में उत्तम है।

ऋतु प्रवाही शरबत

बहिदाना, इसपग़ोल, अज़ख़र जड़, प्रत्येक १–१ पाव, सौंफ़ जड़, कासनी जड़ प्रत्येक १। सेर, लसूड़े, अंजीर, बनफ़शा पुष्प, मधुयष्टि, प्रत्येक १। छटांक, सुहागा, रेशाख़तमी, कासनी स्वरस, मको स्वरस, मूलीपत्र स्वरस, बथुआ स्वरस प्रत्येक १० तोला, उन्नाब, गाऊज़बान १५ तोला, द्राक्षा बीज रहित २॥ सेर, सब औषध को आठ गुना जल में भिगो,कर, क्वाथ करें, तीसरा शेष रहने पर छान कर २ सेर गुड़ देगची में जलाकर, क्वथित जल और ३८ सेर गुड़ मिला कर पाक करें।

मात्रा—दो तोला।

गुण--गर्भाशय के सब विकारों में उत्तम हैं।

शरबत बालंगू

बालंगू ताज़ा १ सेर, (यदि बालंगू ताजा न मिले, तो शुष्क ११। तोला लें), गाऊज़बान पौने ४ तोला को पानी में उबाल कर छान लें, १ सेर मधु ड़ाल कर शरबत का पाक करें। (खाँड डाल कर के भी बना सकते हैं)

मात्रा--५ तोला।

गुण—वात तथा कफ़ज रोगों में लाभप्रद है, आमाशय और हृदय को बल देता है।

शरबत गाऊज़बान

गाऊज़बान, बादरंजबोया, उस्तोख़द्दूस सम भाग लेकर उबाल कर छान लें, आवश्यकतानुसार खाँड डाल कर शरबत तैयार करें।

मात्रा ४ तोला।

गुण—दिल, दिमाग़ को बल देता है।

वासा शरबत

अडूसा पत्र ११ तोला ८ माशा, द्राक्षा बीज रहित ८ तोला ८ माशा, मधुयष्टि, जूफ़ा, पोदीना, परसाशों प्रत्येक ३५ माशा, मग़ज बादाम, मग़ज चलग़ोज़ा, मेथी, सौंफ़, सौंफ़ रूमी प्रत्येक १७॥ माशा, मस्तगी, दारचीनी, सोंठ, प्रत्येक ७ माशा उन्नाब, लसूड़े प्रत्येक १०० नग, अंजीर सफ़ेद २० नग, सब को १२ सेर पानी में १ दिन रात्री भिगोवें, प्रातः मृदु अग्नि पर पकावें कि आधा रह जायें, फिर साफ़ करके २॥ सेर खाँड मिला कर पाक करें।

मात्रा—२॥ तोला से ५ तोला।

गुण—कफ़ के कारण यदि कास श्वास हो, तो गुणकारी हैं।

शरबत बादरंजबोया

बादरंजबोया घन सत्व, गाऊज़बान घन सत्व सम भाग, गुलाब दोनों के सम भाग लेकर शरबत सेब डाल कर पाक करें।

मात्रा—२ तोला।

गुण—दिल को बल देने में बहुत गुणकारी है।

शरबत सेब

मधुर सेब लेकर छील लें, और बीज निकाल दें, इनको कूट कर आधा सेर रस निकालें, इसमें ५ सेर बारश जल वा सादा जल डाल कर उबालें, चौथाई भाग जल जाने पर शेष जल को अग्नि पर से उतार कर छान लें, छठा भाग नारंगी स्वरस वा निंबू स्वरस डालें और हर आधा सेर स्वरस के पीछे अनीसून १ तोला ५॥ माशा, मस्तगी रूमी १४ माशा, छोटी एला बीज, जावित्री, लौंग, प्रत्येक ७ माशा का बारीक चूर्ण पोटली में बांध कर जल में डाल दें, और पाक होते समय पोटली को हाथ से मलते रहें, ताकि इन औषध का गुण भी आ जायें, पाक हो जाने पर पोटली को फेंक दें।

मात्रा—२–४ तोला।

गुण—हृदय को बल देता है।

शरबत विशेष

अम्ल अनार स्वरस, अम्ल नारंज का स्वरस, अपक्व अंगूर स्वरस, निंबूरस, आलूबख़ारा स्वरस, इमली स्वरस, सब सम भाग लेकर और सब के समान खाँड मिला कर पाक करें।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—हृदय की पित्त को शान्त करता है, तृषा बुझाता है।

शरबत इसपग़ोल

इसपग़ोल २ तोला ८ माशा को आधा सेर जल में फेंट कर इसका स्वरस निकालें, और ३ पाव कूज़े की मिश्री डाल कर नरम आंच पर पाक करें, यदि जल के स्थान पर अर्क गुलाब, अर्क बेदमुशक में इसपग़ोल का रस निकालें तो अधिक लाभप्रद है।

मात्रा—४ तोला।

गुण—वात पित्त कास तथा छाती की ख़ुशकी में लाभप्रद है।

शरबत अफ़सनतीन

अफ़सनतीन रूमी १७॥ माशा, त्रिवृत ३५ माशा, गुलाब पुष्प १७ माशा, सब को दो सेर पानी में उबालें, छान कर १ सेर खाँड मिला कर पाक करें।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—आमाशय तथा यकृत को दूषित दोषों से निवृत करता है।

शरबत अनीसून

अनीसून, जीरा, पोदीना, कुन्दर, सम भाग लेकर यथा विधि क्वाथ कर शरबत तैयार करें, यदि हिचकी का कारण सरदी हो, तो सोंठ, अनीसून, करफ़स बीज का शरबत तैयार करें।

मात्रा—दो तोले।

गुण—अजीर्ण वा दूषित भारी अन्न खाने से यदि हिचकी हो तो यह शरबत लाभप्रद है।

शरबत मण्डूर

करफ़स बीज, सौंफ, जीरा क्रमानी, अजवायन, अनीसून, सातर, अंजदान, काशम्, शाह जीरा, धनियां मरिच, पिप्पली, कुन्दर,

दारचीनी, तज, जायफल, बालछड़, जरजीर बीज, प्याज बीज, नागरमोथा सोंठ, प्रत्येक, ४॥ माशा, मण्डूर भस्म ३५ माशा, सब औषध को ६ गुणा उत्तम सुरा में उबालें, आधा भाग रहने पर छान कर १॥ सेर खाँड मिला कर शरबत तैयार करें।

मात्रा–२ तोला से ४ तोला।

गुण–आमाशय, यकृत को बल देता है, खून पैदा करता है वात अर्श में उपयोगी है।

शरबत अम्बर

मधु २ सेर को २ सेर जल में उबालें, जो झाग आवें, उतारते जायें, पाक सिद्धि पर अम्बर, केशर प्रत्येक ४॥ माशा मिला दें, तैयार है।

मात्रा–१ तोला।

गुण–आमाशय शूल को नष्ट करता है, उत्तेजक तथा बलप्रद है।

शरबत पोदीना

पोदीना स्वरस, राजिका रक्त प्रत्येक ९० माशा, फटकड़ी बारीक की हुई ४॥ माशा, शराब ३५ तोला ५ माशा, इन सब को १४ छटांक ज़ल में उबालें, आधा भाग रहने पर छान कर ३२ तोला ७ माशा शक्कर मिला कर पाक करें।

मात्रा–४ से ६ तोला।

गुण–दीपक, पाचक है, अजीर्ण नाशक है।

शरबत बही

बही ताज़ा, छुहारा अर्धपक्व, १–१ भाग, ख़शख़ाश बीज तिहाई भाग, पोस्त डोडा आठवां भाग, पोदीना जड़ छाल तेरहवां भाग, ऊद ख़ाम चौदहवां भाग, पोदीना स्वरस इतना डालें, कि सब औषध डूब जायें, इसके बाद अर्क गुलाब इतना डालें, कि औषध से १ अंगुल ऊपर रहे, शुद्ध जल औषध से त्रिगुण, सब को मिला कर क्वाथ करें, जब छुहारे अच्छी तरह गल जायें, तो सब को अच्छी तरह छान कर खाँड मिला शरबत तैयार करें।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—वमन रोकने में अपूर्व है।

शरबत असूल

द्राक्षा बीज रहित ११ तोला ८ माशा, सौंफ जड़ छाल, करफस जड़ छाल, कासनी जड़ छाल प्रत्येक ८ तोला ९ माशा, सौंफ़ बीज, करफ़स बीज, कासनी जड़ प्रत्येक ७० माशा, किबर जड़-छाल ५२।। माशा, शगूफ़ा अज़ख़र, सम्भल, तगर, तज, वर्च, रेवन्द-चीनी, अफ़सनीतीन, अनीसून प्रत्येक ३५ माशा, अंजीर ज़रद २० नग, सबको अर्ध कुट्टित कर क्वाथ कर छान लें, १ सेर खाँड मिला कर पाक करें।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—यकृत रोगों में अपूर्व है, जलोदर के लिये उपयोगी है। मूत्रल है।

शरबत दीनार कबीर

बसफाइंज फस्तकी, त्रिवृत, प्रत्येक ७० माशा, गुलाब पुष्प, कासनी जड़ प्रत्येक ५२।। माशा, कासनी बीज़ ३५ माशा, सौंफ जड़ छाल २६। माशा, सौंफ़ १७।। माशा, नीलोफ़र पुष्प, बनफ़शा, गाऊज़बान, आकाशबेल, उस्तोख़दूस, प्रत्येक १४ माशा, सनाय, कालादाना प्रत्येक ३१।। माशा, कसूस बीज २२।। माशा, सब औषध को ४। सेर जल में रात्री को भिगोवें, प्रातः इतना उबालें, कि १।। सेर बाकी रह जाये, छान कर १ सेर खाण्ड मिला कर पाक करें, अब पाक सिद्धि होने पर ११ तोला ९ माशा रेवन्दचीनी खूब बारीक कर के मिलावें, कई इस योग में पितपापड़ा ५२।। माशा और ४० दाने उन्नाब के भी डालते हैं।

मात्रा—३ तोले से ६ तोला।

गुण—यकृत के सब रोगों में लाभ प्रद है।

शरबत रेवन्द

रेवन्द ३५ माशा, त्रिवृत, गारीकून, बसफ़ाइंज, कासनी बीज,

प्रत्येक १७ माशा, सोंठ २ रत्ती, खाँड सफेद २९ तोला १ माशा, सब का क्वाथ कर खाँड मिला कर पाक करें।

मात्रा–२ से ४ तोला।

गुण–यकृत, प्लीहा में उत्तम है, विबन्ध नाशक है।

शरबत ज़रिशक

ज़रिशक साफ़ किया हुआ ९ तोला ४।। माशे रात्री को ७५ तोले जल में भिगोयें, प्रातः क्वाथ करें, आधा भाग रहने इसमें मीठे सेब का स्वरस, मधुर बही स्वरस, मधुर अनार स्वरस, अम्ल सेब का स्वरस, अम्ल अनार स्वरस, निंबूका का स्वरस, सिरका अंगूरी प्रत्येक १९ तोला ९ माशा मिलायें और दो भाग कर के उबालें, पीछे नीचे उतार कर शीतल करें, ताकि नीचे इसकी तलछट बैठ जाये, अब ऊपर से नित्थार कर आधा सेर खाँड मिला कर पाक कर शरबत तैय्यार करें।

मात्रा–दो तोले आठ माशा।

गुण–यकृत, आमाशय, और हृदय की पित्त को शान्त करता है।

शरबत ज़रिशक बजूरी

ज़रिशक साफ किया हुआ ९० माशा, कासनी बीज १८ माशा, ख़यारैन बीज, कासनी जड़ छाल, सौंफ जड़ छाल प्रत्येक १३।। माशा, कसूस बीज ४ माशा, कूटने वाली औषध को कूट कर एक दिन रात जल में भिगोवें और उबाल कर छान लें, इसमें एक सेर खाँड मिला कर पाक करें और उतार कर अगर, मस्तगीरूमी प्रत्येक ९ माशा रेवन्दचीनी १३।। माशा का बारीक चूर्ण कर मिलावें।

मात्रा–२ से ४ तोला।

गुण–यकृत, प्लीहा, आमाशय में लाभ प्रद है।

शरबत काकनज

अनीसून, करफ़स बीज, प्रत्येक ७ माशा, परसाशों, बनफ़शा, गाऊज़बान, प्रत्येक १७।। माशा, गोक्षरू २४।। माशा, काकनज ३५ माशा, ककड़ी बीज ८ तोला ४ माशा, सब औषध का क्वाथ कर

मल छान कर आधा सेर खाँड मिला कर शरबत का पाक करें।

मात्रा—४ तोला।

गुण—मूत्राशय के व्रण और सुज़ाक में लाभ प्रद है।

गोक्षरू शरबत

गोक्षरू (यदि ताज़ा मिल जाये) तो बारीक करके थोड़ा सा पानी मिला कर इसका शीरा निकालें, अब इसमें (आधा सेर शीरा में) ५ तोला मधु और १ सेर खांड मिला कर पाक करें।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—मूत्राशय की अश्मरी को तोड़ कर निकालता है, मूत्रल है।

पानपत्र शरबत

पान पके हुये सफ़ेद रंग के बारीक काटें, जल में डाल कर क्वाथ करें, छान कर खाँड मिला कर शरबत का पाक करें, पाक सिद्धि पर, केशर, लौंग, जावित्री, योग्य मात्रा में चूर्ण कर डालें, यह शरबत जिस कदर पुराना होगा, उतना ही गुणकारी होगा।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—वाजीकरण है, उत्तेजक तथा हृदय को बल देता है।

शयाफ़ (वर्ति) Suppository (Collyrium)

यह यव आकर छोटी २ वर्तियां होती हैं, जिनका मध्य का भाग मोटा होता है, दोनों शिर पतले होते हैं, यह चक्षू रोग के लिये बनाई जाती हैं, जल वा अर्क गुलाब में घिस कर सलाई से आंखों में लगाई जाती हैं।

श्वेत वर्ति

निशास्ता ३ माशा, सफेदा कशग़री, गोंद कीकर, गोंद कतीरा प्रत्येक ९ माशा, सबको कूट, छान कर इसपगोल के जल से वा अण्डे की सफेदी में गूंद कर वर्ति बना लें, ताज़ा जल वा अर्क गुलाब में घिस कर सलाई से आंखों में लगावें।

गुण—आंख दुखने तथा अन्य आंख के रोगों में उपयोगी है।

(२) सफेदा काशग़री १ तोला, गोंद कतीरा, निशास्ता ६ माशा,

बारीक पीस कर इसपग़ोल के पानी से वा केवल जल से वर्ति बनावें।

गुण—उपरोक्त।

शयाफ़ अहमर आद

शादनज अदसी धुला हुआ पौने दो तोला, गोंद कीकर १॥ तो० जंगार ७ माशा, ताम्र जला हुआ, फिटकरी जली हुई, प्रत्येक ६ माशा, अहिफेन, मुसब्बर, १॥-१॥ माशा, केशर, मुरमकी, ६–६ रत्ती, बारीक पीस जल से वर्ति बनावें।

गुण—जाला और फूला में उपयोगी है।

शयाफ़ अहमरलीन

शादनज अदसी धुला हुआ २॥ तोला, ताम्र जला हुआ, बुसद, मुक्ता, तेजपात प्रत्येक १ तोला, गोंदकीकर, गोंदकतीरा, मुरमकी प्रत्येक ६ माशा, दमलख़वैयन, केशर प्रत्येक ३ माशा, बारीक पीस कर जल से वर्ति वनावें।

मात्रा—जल वा गुलाब अर्क से घिस कर आंख में लगावें।

गुण—आंख दुखते तथा बामनी में गुणदायक है।

(२) सफेदा काशग़री १ तोला, कतीरा, निशास्ता, दमलख़वयन प्रत्येक ६ माशा, बारीक पीस जल से शयाफ़ बनावें।

गुण—उपरोक्त।

शयाफ़ अख़ज़र

जंगार शुद्ध ९ माशा, रूपामखी, उशक, गोंदकीकर, सफ़ेदा रांगा (बंग) प्रत्येक ६ माशा, बारीक पीस कर जल से वर्ति बनावें।

गुण—आंख की ख़ारश, फोला में लाभ प्रद है।

(२) सफेदा काशग़री १ तोला, निशास्ता ६ माशा, नीलाथोथा, कतीरा ६–६ माशा, जल से वर्ति बनावें।

गुण—उपरोक्त।

शयाफ़ असवद

सफेदा काशग़री १ तोला, कंतीरा, निशास्ता, सुरमा ख़ालस, ६–६ माशा, बारीक पीस जल से वर्ति बनावें।

गुण—चक्षु व्रण में उत्तम है।

शयाफ़ दीनार जून

सफेदा काशग़री, रूपामखी २॥–२॥ तोला, कतीरा ४॥ माशा, अहिफेन, निशास्ता, ३–३ माशा, पीस छान कर जल से वर्ति बनावें।

गुण—चक्षु रोग में उपयोगी है।

शयाफ़ ज़फ़रा

तेजपात ५ माशा, जंगार ५। माशा, रूपामखी ७ माशा, उशक, सकबीनज, पिप्पली २–२ माशा, पहिले उशक और सकबीनज को शराव में हल करें, फिर औषध को इतना बारीक करें, कि सुरमा की तरह हो जायें, सबको मिला कर यथा बिधि वर्ति बनावें।

गुण—नाख़ूना रोग में उपयोगी है।

(२) चाकसू छिला हुआ, संगबसरी, फटकड़ी, खाँड सफेद, कलमी शोरा, जदवार, समभाग लेकर निंबूरस में इतना खरल करें कि औषध सुरमे की भांति बारीक हो जाये, अब वर्ति बना लें।

उपयोग विधि—जल से घिस कर आंख में लगावें।

गुण—उपरोक्त।

(३) नवसादर २ माशा, कलमी शोरा १ तोला, शिरस बीज २ नग, मिरच काली १२ नग, नीलाथोथा ४ रत्ती, सब को बारीक पीस कर, निंबू रस से भावित कर वर्ति बना लें।

गुण—उपरोक्त।

नेत्र दुख हर बिन्दु

अहिफेन, फटकड़ी, रसौत, गुड़, १–१ छटाकं, नीलाथोथा ४ माशा, अर्क गुलाब ३ पाव, सब औषध को भली प्रकार मिलाकर फिलटर पेपर से छान लें। प्रातः सायं आंख में डालें।

गुण—आंख दुखने में उपयोगी है, पीड़ाशामक है।

शयाफ़ दहना फ़रङ्ग

नागरमोथा, मिरचकाली, हाथी का नख प्रत्येक ५ माशा, केशर ३ माशा, हरड़ २ माशा, हरड़ काली ३ माशा, दहनाफरंग मस्सी २ माशा, सोना मखी, ४ माशा, शिरस बीज ५ माशा, खिरनी बीज, जंगली कबूतर की बीठ (मल) की सफेदी ४–४

माशा, संगबसरी ५ माशा, लौंग १ माशा, सबको कूट छान कर कड़ाही में डालें, और निंबू रस मिला कर वाराह श्रृंग के श्रृंग से तीन दिन तक खरल करें, फिर वर्ति बनावें, यदि दहना फ़रंग मस्सी न मिले तो नीलाथोथा डालें, जल से घिस कर आंख में लगावें।

गुण—मोतियाबिन्दु, जाला, फूला, नाख़ूना में लाभप्रद है।

शयाफ़ रोशनाई

रूपामखी, सोनामखी, मुक्ता, ६—६ माशा कपूर, कस्तूरी, ३—३ रत्ती, बारीक कर मेघ जल से खरल कर वर्ति बनावें।

गुण—आंखों की ख़ारश, नाखूना और मोतियाबिन्दु की प्रारम्भिक अवस्था में लाभप्रद है।

शयाफ़ श्वेत अफ़यूनी

सफेद काशग़री २८ माशा, गोंद कीकर १७॥ माशा, गोंदकतीरा, अहिफ़ेन प्रत्येक ३॥ माशा, बारीक पीस कर अण्डे की सफेदी में गूंद कर बर्ति बनावें।

गुण—पीड़ा को शान्त करता है, आंख दुखने में उपयोगी है।

मुसब्बर वर्ति

दमलख़वैयन, मुसब्बर, अकाकीया, शयाफ़मामीशा, केशर, अहिफ़ेन, गोंदकीकर, कूट छानकर कासनी स्वरस में गूंद कर वर्ति बनावें।

मात्रा तथा गुण—आंख दुखने में अपूर्व है।

मोतिया हर वर्ति

सोनामख़ी जलाई हुई, पिप्पली, सोने का मैल, ताम्रधूम्र, (जो ताम्र पिघलाने के स्थान में जिम्मा होता है।) समभाग लेकर सौंफ़ के जल में पीस कर वर्ति बनावें।

गुण—मोतियाबिन्दु में उत्तम है।

कुन्दर वर्ति

मुसब्बर, कुन्दर, गुलनार, अनज़रूरत, दमलख़वैयन, सुरमा, फिटकरी प्रत्येक ३॥ माशा, जंगार ९ रत्ती, कूट छान कर वर्ति बनावें।

गुण—नासूर को शुद्ध करके इसे लगावें आंख के नासूर में उत्तम है

यशद वर्ति

शुक्ति जलाई हुई, यशद जलाया हुआ, उत्तम सुरमा, नीलाथोथा, सफेदा कलई, गोंद कीकर प्रत्येक २ तोला ४ माशा, मुरमकी, अहिफ़ेन प्रत्येक पौने दो माशा सब को बारीक पीस कर अण्डे की सफेदी में गूंद कर वर्ति बनावे।

गुण---चक्षू व्रण, फुंसी के चिन्ह, तथा आंखसे पानी का स्राव में उत्तम है।

ज़माद (लेप) (Paste-Plaster)

एक, वा एक से अधिक औषध को पानी में पीस कर वा किसी तैल में मिला कर किसी अंग पर गाढ़ा २ लगाया जाये, उसे ज़माद (लेप) कहते हैं। उष्ण रोगों में शीतल लेप लगायें, और शीत रोगों में उष्ण लेप लगाया जाता है, परन्तु चोट के स्थान पर अंध उष्ण लेप लगाया जाता है।

उशक लेप

सुदाब पत्र २। तोला, छड़ीला, कज़माजज प्रत्येक १।। तोला, उशक, गुग्गुल, बूरा अरमनी, सैंधव लवण प्रत्येक १। तोला, गन्धक ७ माशा, अंजीर ज़रद १० नग, पहिले अंजीर को आवश्यकतानुसार सिरका में उबालें, तत्पश्चात इसी सिरका में गुग्गुलु और उशक को मिला कर अग्नि पर खूब नरम करलें, फिर बाकी औषध कूट कर मिश्रित करें, यह लेप प्लीहा शोथ और प्लीहा वृद्धि पर उत्तम है

ध्वज भंगहर लेप

वत्सनाभ, हड़ताल तबकी, सुहागा, ३।।-३।। माशा कुठ कड़वी, १तोला, तिल तैल दो तोला, सब औषध को बारीक पीस कर चम्बेली के ताज़ा पत्र स्वरस २० तोला में इतना खरल करें, कि स्वरस शुष्क हो जाये।

गुण तथा उपयोग विधि—आवश्यकतानुसार, मुण्ड तथा नीचे सीवन का भाग छोड़ कर रात्री समय शिश्न पर लेप करें, और ऊपर से बंगलपान वा एरण्ड का पत्र बांध दें, प्रातः उष्ण जल

स धोवें, १ सप्ताह प्रयोग करने के बाद छोड़ दें, शिश्न में दृढ़ता उत्पन्न करता है ।

कुष्ट हर लेप

अंजीर जंगली की जड़, बावची, पनवाड़ बीज, नरकचूर, प्रत्येक ३ माशा, सब को निंबू रस में पीस कर लेप करें, परन्तु लेप करने से पहिले स्थान को खुरदरे कपड़े से रगड़ लें ।

गुण—दाद, छीप, सफेद दाग़ में उत्तम है ।

अर्शहर लेप

गुग्गुल ६ माशा, बंग का सफेदा, रसौत, मोम, रोग़न अलसी प्रत्येक ३ माशा, ख़तमी पुष्प ६ माशा, प्रथम ख़तमी पुष्प को जल में क्वाथ कर छान लें फिर बाकी औषध मिला कर पकावें और सोते समय मस्सों पर लगावें ।

गुण—अंश के मस्सों को शुष्क करता है, पीड़ा शान्त करता है ।

जालीनूस लेप

सोंठ, जाऊशीर, प्रत्येक ६ तोला, मुसब्बर, गन्दा बहरोज़ा प्रत्येक ९ तोला, मोम १७ तोला, सोसन तैल ५ तोला, पहिले सोसन तल को आग पर गरम करें, फिर मोम और दूसरी पिघलने वाली वस्तुयें डाल कर पिघलायें, फ़िर शुष्क औषध कूट कर मिलावें ।

गुण—आमाशय, तथा अन्य पट्ठों की सख़ती को दूर करता है ।

(२) अमलतास गूदा १ तोला, मको शुष्क ९ माशा, जौ का आटा, बाबूना पुष्प, अकलीलमलक, बालछड़ प्रत्येक ६ माशा, सब को बारीक पीस कर मको स्वरस ३ तोला, सिरका १ तोला, गुलाब रोगन ६ माशा, मिला कर लेप तय्यार करें, जालीनूस लेप की तरह गुण हैं ।

खुजली लेप

गन्धक आंवलासार, नीलाथोथा, कमीला, मुरदारसंग, १-१ तोला, कूट छान कर रखें, प्रतिदिन १ तोले से दो तोले तक ५ तोला मक्खन मे मिला कर धूप में बैठ करें शरीर की मालिश करें, १

घण्टा पश्चात महन्दी और चने का आटा मल कर अंधोष्ण जल से स्नान करें।

गुण—खुजली में उपयोगी है।

मीरचादि लेप

मरिच, अकरकरा, प्रत्येक १।। तोला, लौंग, फरफयून प्रत्येक १४ माशा, कलोंजी ९ माशा, सोंठ २२ माशा, सब को कूट कर गुलाब तैल में मिला कर लेप करें, शरीर के किसी अंग के सुन्न हो जाने पर लेप किया जाता है।

राजिका लेप

राई १ माशा सिरका में पीस कर कौड़ी के स्थान पर लेप करें, १५ मिण्टपश्चात लेप को पृथक करके कोई तैल लगा देवें।

गण—वमन को रोकता है।

कण्ठमाला हर लेप

मुरमकी, मुसब्बर, अजवायन, ईरसा, अलसी प्रत्येक २ माशा, ज़रावन्द गोल, मरिच, पिप्पलामूल, चिरायता, उशक, गुग्गुलु, रातीनज, हींग, कुठ कड़वी, फरफ़यून, बहरोज़ा, प्रत्येक १-१ माशा; मेथी आधा माशा, सब को कूट छान कर पानी में वा मको संबज़ के पानी में पीस कर अर्धंउष्ण लेप करें।

गुण—कण्ठमाला में उत्तम है।

निद्राकर लेप

नीलोफ़र पुष्प, काहु बीज, खुरफ़ा बीज, सन्दल सफेद प्रत्येक ३ माशा, कर्पूर १ माशा, अहिफेन, केशर प्रत्येक आधा माशा, सब को पीस कर गुलाब तैल १ तोला, धनियां सबज़ स्वरस और थोड़ा सिरका मिला कर तालु, शिर और माथे पर लेप करें।

गुण—निद्रा लाता है।

दादहर लेप

नारीयल का ऊपर का छिलका जला हुआ, सोहागा भुना हुआ, कर्पूर, गन्धक, प्रत्येक [illegible] लेकर निंबु स्वरस में खरल कर चूर्ण

करें, और नीम पत्र लेकर जल में उबाल कर छान लें, इस नीम जल से घी को १०० बार धोकर औषध चूर्ण घी में मिला कर लेप करें।

गुण—दाद को नष्ट करता है।

बालछड़ लेप

बालछड़, तगर, मस्तगी, प्रत्येक ७ माशा, कड़वे बादाम, करफ़स बीज, अजवायन प्रत्येक ९ माशा, बाबूना, नाखूना, बरंजासफ़, प्रत्येक तीन तोला, सबको सौंफ सवज के जल से वा सौंफ के क्वाथ में पीस कर और गुलाव तैल, सिरका मिला कर आमाशय तथा दूसरे रूग्ण स्थान पर लगावें।

गुण—शोथ नाशक है।

केशरीय लेप

मोम खालस ६ माशा, गुलाब तैल २ तोला में पिघलायें, केशर, मुसब्बर, लोबान, प्रत्येक १—१ माशा बारीक पीस कर इसमें मिलायें, और रूग्ण स्थान पर अर्धोष्ण लेप कर एरण्ड पत्र बांधे।

गुण—वातकफ़ सन्निपात, (नमोनीया) तथा वक्ष पीड़ा पर उत्तम है।

शीरशुत्र लेप

ऊंटनी का दूध, भैंस का दूध, एरण्ड तैल प्रत्येक, १—१ सेर, तीनों को मिला कर इतना पकावें कि गाढ़ा हो जाये, अब सोंठ, अजवायन, १—१ तोला कूट छान कर मिला दें, उष्ण करके नाभि के नीचे लेप करें।

गुण—यह, लेप गर्भाशय शोथ के लिये उत्तम है।

प्लीहा हर लेप

सुदाब पत्र १० माशा, उष्क ७ माशा, पोदीना शुष्क, बूराअरमनी ३—३ माशा, सब को सिरका में पीस कर अर्धोष्ण लेप करें।

गुण—शोथ नाशक है, प्लीहा की सख्ती को नष्ट करता है।

यकृतशोथ हर लेप

मुरसकी, आशा, अफ़सनतीन, नागरमोथा, बरंजासफ़, अकलीलमलक, बाबूना पुष्प, बालछड़, मको शुष्क ६–६ माशा, रसौंत, जदवार ३–३ माशा, सब को कूट छान कर मको सबज़ के पानी में पीस कर लेप करें।

गुण—यकृत शोथनाशक है।

शोथहर लेप

मको शुष्क १ तोला, मग़ज़ अम्लतास ९ माशा, जौ का आटा, बाबूना पुष्प, नाख़ूना, बालछड़, चन्दन लाल प्रत्येक ६ माशा, बारीक पीस, मको सबज़ के स्वरस में भावित कर गुलाब तैल और सिरका, २–२ तोला मिला कर लेप करें।

गुण—शोथनाशक है।

अण्डकोषशोथ हर लेप

बाबूना, अकलीलमलक, कैसूम, प्रत्येक दो तोला, बनफ़शा पुष्प, खतमी पुष्प प्रत्येक १। तोला, गुलाब पुष्प ९ माशा, सबको कूट छान कर चूर्ण करें, अलसी के जलीय स्वरस में मिला कर लेप करें।

गुण—अण्डकोषों की शोथ के लिये गुणकारी है। शोथनाशक है।

गन्धक लेप

गन्धक २॥ तोला, गुगुलु, उशक, सकबीनज, तुरमस, मेथी, हरमल, अलसी, सुदाबपत्र, अकलीलमलक ३–३ तोला, अंजीर ज़रद १० नग, प्रथम गोंददार औषध को और अंज़ीर को सिरका अंगूरी में एक दिन रात भिगोयें, फिर अच्छी तरह से खरल कर बाकी सब औषध का चूर्ण कर मिला दें, अर्ध उष्ण करके प्लीहा पर लेप करें।

गुण—प्लीहा वृद्धि में उत्तम लेप है।

स्तनशोथ हर लेप

जौ का आटा, मसूर का आटा, बाकला का आटा, गुलाब पुष्प, समभाग लेकर गुलाब पुष्प के तैल में मिला कर और सिरका

में गूंद कर अर्धोष्ण अवस्था में कपड़े पर फैला कर स्तन शोथ पर लेप करें।

गुण—स्तन शोथ में उत्तम है।

लाक्षा लेप

लाक्षा धुली हुई, तगर, रेवन्दचीनी, चिरायता अज़ख़र जड़, अफ़सनतीन ७—७ माशा, मस्तगी, ख़तमी पुष्प, असारा मामीशा, प्रत्येक ३॥ माशा, बालछड़, मुरमकी, मुसब्बर, गुलाब पुष्प, ३—३ माशा, कसूस बीज ९ माशा, बनफ़शा पुष्प, बाबूना पुष्प, ख़तमी जड़, नाख़ूना प्रत्येक पौने सात माशा, सब को कूट छान कर सबज़ मको के जल में और थोड़े से अर्क गुलाब में उबाल कर कपड़े पर लगाकर शोथ पर लगावें।

गुण—यकृत शोथ में बहुत उत्तम योग है।

जलोदरी शोथ हर लेप

बकरी की शुष्क मेंगनी, गौ गोबर शुष्क १—१ तोला, जीरा काला, गिल अरमनी, नागरमोथा, बाबूना, मको प्रत्येक ४ माशा, मुसब्बर, रेवन्दचीनी, नाख़ूना प्रत्येक ३ माशा, बूरा अरमनी २ माशा, सब औषध को कूट छान कर जल से लेप बना अर्धोष्ण कर जलोदरी के हाथ, पैर पर लगावें।

गुण—जलोदरी के हाथ पैर की शोथ को नष्ट करता है।

फ़ैसाग़ोरस लेप

जूफा, मोम प्रत्येक ९ तोला, केशर, बतख़ की चरबी, मुरग़ाबी की चरबी प्रत्येक ४॥ तोला, मुसब्बर, मेहीसाला, गुग्गुलु, उशक, मस्तगी प्रत्येक ४॥ माशा, सब औषध को कूट छान कर यथाविधि लेप बनावें।

गुण—जलोदर, यकृत क्षीणता तथा गर्भाशय क्षीणता में उत्तम है।

कांच शोथहर लेप

मसूर छिली हुई, अनार का छिलका, जुफतबलूत, सरू फल, १—१भाग, सब औषध को कूट पीस कर मोड़ीयों पत्र स्वरस में

उबालें, फिर गुलाब तैल मिला दें, गुदा स्थान में जब कांच निकल कर शोथ उत्पन्न हो जाती है, उस पर लेप करें।

गुण—शोथ के साथ २ कांच में भी लाभप्रद है।

आन्त्र वृद्धि हर लेप

सेरू का फल, फटकड़ी, माजू, अम्ल अनार की कलीयां, जुफत-बलूत, कुन्दर का आटा, बिल्वगिरी, कीकर फली, मोड़ीयों बीज, सरेशम माही, १—१ भाग, कूटने वाली औषध को कूट लिया जाये, और गोंददार औषध को उशक के जल में हल करके, सब को मिला एक जीव करें, आवश्यकतानुसार रुग्ण स्थान पर लगावें।

गुण—आन्त्र वृद्धि में उत्तम है।

(२) सरू का फल, कज़माज़ज, फटकड़ी, गुलाब पुष्प, सरेशम-माही, सरेश, मोड़ीयों पत्र, माजू, गलनार, कुन्दर का आटा, जुफ़त बलूत, गोंद कीकर, अनार की कलियां, मण्डूर, मुसब्बर, बाकला का आटा, समभाग लेकर, कूटने वाली औषध को कूट कर बारीक करलें, गोंद और सरेशम माही को पिघला कर बाकी औषध मिला कर एक जीव करें।

गुण—फतक, उभरी हुई नाभी, और अण्डकोषों पर लगा कर पट्टी से बांध दें, गुणकारी तथा उत्तम योग है।

कण्ठमाला हर लेप

सकबीनज, १०॥ माशा, गुग्गुलु १४ माशा, हींग, उशक, प्रत्येक १७॥ माशा, जाग्रोशीर, फरफियून प्रत्येक २४॥ माशा, बहरोज़ा शुष्क ३५ माशा, सबको बारीक पीस कर सिरका में हल करके लेप करें।

गुण—कण्ठमाला तथा रसौली में लाभप्रद है।

तिल्ला (ध्वजभंग हर तैल) (Paint-Liniment)

तिल्ला उस तरल औषध को कहते हैं, जो किसी अंग पर लगाई जाती है, परन्तु आज कल यह शब्द उस तैल वा मरहम के लिये बोला जाता है, जो शिश्न पर ध्वज भंग को नष्ट करने के लिये प्रयोग किया जाता है, तिल्ला बनाने की विधि बहुत सी हैं, ऐसी औषध जिनमें स्वयमेव तैल होता है, उनको बारीक पीस कर जल से वटी बनाई जाती है, फिर आतशी शीशी में भर कर पातालयन्त्र विधि से तैल निकाला जाता है, और जिनमें तैल नहीं होता है, उनमें दूध, अण्डे की ज़रदी मिलाकर वा कोई तैल ही मिला कर पातालयन्त्र विधि से तैल निकाला जाता है, जिसे तिल्ला कहते हैं।

कई बार औषध को बारीक पीस कर तैल वा मोम में मिला कर रख लिया जाता है और आवश्यकतानुसार अर्धोष्ण प्रयोग किया जाता है।

तिल्ला की निर्माण विधि में निम्न बातों का ध्यान आवश्यक है।

(१) तिल्ला के योग में मल्ल तथा हरिताल औषध हों तो इस बात का ध्यान रखें, कि इनका कोई अंश तैल में न जाये।

(२) बनाते समय अग्नि मन्द होनी चाहिये, तीव्र आंच से तिल्ला जल जाता है।

नवीन तिल्ला

मल्ल सफेद २॥ तोला को आक के ५ तोला दूध में खरल करें। इसके पश्चात् दीरबहुटी, जावित्री, लौंग, अकरकरा, जायफल, प्रत्येक ६ तोला इसमें खरल करें, फिर केशर, कस्तूरी प्रत्येक १ तोला ८ माशा मिलाकर खरल करें, अन्त में १ सेर गौ घृत में खरल करके रखें।

मात्रा तथा उपयोग विधि—चार चावल वा १ रत्ती मुण्ड और सीवन छोड़कर केवल ऊपर के भाग में लगा कर ज़ज़ब करें, ऊपर से बंगला पान गरम करके लपेट दें, और पान पर

कच्चा सूत लपेट दें, प्रातः को उष्ण जल से धो डालें, यदि उपयोग समय फुंसिया निकल आयें, तो तिल्ला न लगाकर केवल चम्बेली तैल कुछ दिन लगावें, फुंसिया अच्छी होने पर फिर तिल्ला लगावें।

गुण—यह तिल्ला ध्वजभंग में लाभप्रद है, शिश्न में उत्तेजना तथा दृढ़ता उत्पन्न करता है।

नवीन तिल्ला जाहफ़री

चित्रक, सुरमा, माजु, फिटकरी लाल, हिंगुल, मच्छली की हड्डी जली हुई १–१ तोला, बीरबहुटी, अफीम प्रत्येक २–२ तोला, गिरगट, मरिच प्रत्येक ५ तोला, साण्डा की चरबी, शेर की चरबी, धस्तूर बीज, मालकंगनी, लौंग प्रत्येक सात तोला, प्रथम की ९ औषध को बारीक पीस लें, बाकी की औषध को कूट कर गोलियां बना लें, और आतशी शीशी में डालकर पाताल-यन्त्र विधि से तैल निकालें, अब इस तैल में बाकी औषध का बारीक चूर्ण मिलाकर इतना खरल करें, कि एक जीव हो जाये, तैयार है।

गुण तथा उपयोगविधि—उपरोक्त।

जयपाल तैल

कनेर जड़ छाल श्वेत, घुंघची सफ़ेद (रत्तिका) प्रत्येक १० तोला, कुठ कड़वी, शुद्ध जयपाल प्रत्येक २ तोला, सबको कूट छान कर १५ सेर भैंस के दूध में उबालें और दही जमाकर मक्खन निकालें, मक्खन से घी बना लें, छाछ को पृथ्वी में गाड़ दें, यह घी एक रत्ती पान में लगा कर खा भी सकते हैं और शिश्न पर मालिश करें, ऊपर एरण्ड तथा पानपत्र बांधें।

गुण–तथा उपयोग विधि–उपरोक्त।

अस्पन्द तिल्ला

हरमल, एरण्ड बीज, राई प्रत्येक १० माशा सबको कूट छान कर चम्बेली तैल ६० माशा में खरल करके रखें।

गुण तथा उपयोग विधि–उपरोक्त।

वृक्क अशमरी हर तैल

कनेर वृक्ष छाल (सफ़ेद और लाल) प्रत्येक ५ तोला, को कूट कर भैंस के दूध में मिलाकर दूध को उबाल कर जमावें और मक्खन निकालें।

मात्रा—२ रत्ती खाने के लिये, और १ माशा, पीड़ा स्थान पर मर्दनार्थं।

गुण—गुरदे की अशमरी को निकालता है। पीड़ा शान्त करता है।

विशेष तिल्ला

चरबी शेर, चरबी सूकर प्रत्येक १।। तोला, लौंग, जावित्री, केशर, मालकंगनी, अजवायन खुरासानी, लहसुन, हीरा हींग, कर्पूर, सौभाग्य, मनुष्य की कर्ण मैल, हिंगुल, कनेर जड़ छाल प्रत्येक पौने दो तोला, बीरबहुटी, जायफल, ख़रातीन, वत्सनाभ, घुंघची सफ़ेद, अकरकरा, दारचीनी, जुन्दबदस्तर प्रत्येक १४ माशा, ७ जोंक शुष्क, छह घरेलु चिड़े के शिर का मग़ज़, मेण्डक का मग़ज़, भल्लातक प्रत्येक ४ नग, प्याज़ नरगस, मग़ज़ तथा चरबी साण्डा, मग़ज़ तथा चरबी नेवला प्रत्येक २ नग सबको १२ प्रहर तक खरल कर एक जीव करें।

गुण तथा उपयोग—यह तिल्ला शिश्न के टेढ़ापन वा कमज़ोरी को दूर करता है, उसे लम्बा, मोटा तथा दृढ़ करता है।

तिल्ला दारचीनी कस्तूरी वाला

हिंगुल, हड़ताल, पारद, कमीला, अकरकरा, प्याज़ नरगस, दारचीनी समभाग लेकर कूट छान लें और थोड़ी मात्रा में कस्तूरी मिलाकर रखें।

गुण तथा उपयोग विधि—उपरोक्त।

आनन्ददायक तिल्ला

अकरकरा, सुहागा, कर्पूर, समभाग लेकर सुरमे की तरह बारीक खरल करें, मधु में मिलाकर शिश्न पर लेप कर एक घण्टे पश्चात् कपड़े से साफ़ करके सम्भोग करें।

गुण—भोग क्रिया में बहुत आनन्द देता है।

कस्तूरी तिल्ला

कस्तूरी उत्तम ६ रत्ती, फ़रफ़ीयून पौने दो माशा, अकरकरा ३॥ माशा, सब औषध को कूट पीस कर चम्बेली तैल में पका कर खरल करें।

गुण—यह तिल्ला शिश्न की कमजोरी को दूर करके उसे दृढ़ करता है।

(२) कस्तूरी १ माशा, कालीमिरच, जुन्दबदस्तर, हींग प्रत्येक ५। माशा, बनोले का मग़ज़ ७ माशा, सबको कूट छान कर चम्बेली तैल में हल करके प्रयोग करें।

गुण—उपरोक्त।

स्तम्भक तिल्ला

आकजड़ दो तोला, कुचला चूर्ण १ तोला, सफ़ेद कनेर जड़ छाल ४ तोला, सबको कूट छान कर केवड़ा की लकड़ी के अर्क में खरल कर तथा शेर की चरबी में खरल कर गोलियां बनावें, आवश्यकता पर गोली को ख़शख़ाश डोडा के पानी में खरल कर लेप करें, और १ घण्टा बाद सम्भोग करें।

गुण—स्तम्भक तथा वाजीकरण है।

तिल्ला मजलूक

ख़रातीन शुद्ध (केंचवे), शुद्ध वत्सनाभ, आम्बाहल्दी प्रत्येक १-१ तोला, मल्ल पीत २ माशा, हिंगुल ३ माशा, मक्खन २ तोला, सब औषध को मक्खन में खरल करें, इसके पश्चात् आधा गज़ कपड़ा त्रिधारा थुहर के दूध, प्याज़ रस और आक के दूध में बारी बारी भिगोकर शुष्क करें, फिर इस कपड़े में उपरोक्त औषध अच्छी तरह लेप कर बत्ती बनावें, और एक लोहे की तार में लटका कर दूसरे सिरे पर आग लगावें, और इसके नीचे कोई चीनी का प्याला रखें, जो तैल टपक कर प्याला में संग्रह हो, उस तैल की मुण्ड तथा सीवन छोड़ कर मालिश करें, इसके ऊपर निम्नलिखित

मांस पका हुआ (कबाब) बांधे, प्रतिदिन मालिश कर ताज़ा कबाब बांधे, एक सप्ताह प्रयोग करें, शीतल जल न लगने दें।

कबाब—युवा मुरग़ के सीना का मांस लेकर खूब कूट कर बारीक करें, इसमें पोहकरमूल, अकरकरा, हाथी दांत बुरादा प्रत्येक ३ माशा, बारीक पीस कर और बंगला पान ५ नग मिलाकर, बेरी की लकड़ी की अग्नि पर कबाब तैयार करें, कबाब तैयार करते समय शेर की चरबी ऊपर डालते रहें, जब पक कर सुरख़ हो जाये, तो उतार कर शिश्न पर पहिले तैल की मालिश कर इसे ऊपर से बांध दें।

गुण—इस तरह प्रयोग करने से शिश्न की शिथिलता दूर होकर पूर्ववत् दृढ़ तथा उत्तेजक हो जाता है, अपूर्व तिल्ला है।

(२) मारू बैंगन १ लेकर उसमें ५० नग पिप्पली चुभो कर साये में शुष्क करें। आठ दस दिन बाद यह बैंगन और लहसुन ६ तोला, तिलों का तैल आधा सेर लेकर कड़ाही में डालकर पकावें, कि वह जल जाये, इसके पश्चात् कैंचवे ५ तोला शामिल कर इस कदर खरल करें, कि मरहम की तरह हो जाये, यथाविधि प्रयोग करें।

गुण—उपरोक्त, उत्तम तिल्ला है।

(३) सफ़ेद कनेर जड़ छाल २ तोला, अहिफ़ेन, जायफल प्रत्येक ३ माशा सबको बारीक करके गोह की चरबी में खरल करें, फिर धत्तूर पत्र जल स्वरस में इतना खरल करें कि गोली बन सके, अब गोलियां बनालें, १ वटी जल में घिस कर शिश्न पर लेप करें, ऊपर से पानपत्र बांधे, प्रातः उष्ण जल से धो देवें।

गुण—उपरोक्त।

मत्सय तिल्ला

मत्सय काली, सफ़ेद तथा सुरख़, १-१ नग, कुचला, बीरबहुटी, प्रत्येक २ तोला, इन सबको शराब उत्तम में तीन रोज़ तक भिगो रखें, अब अकरकरा, लौंग, असगन्ध, जावत्री, शिलाजीत, अहिफेन

जायफल प्रत्येक ६ माशा, खूब बारीक करके शेर की चरबी में पका, कर और सबको मिला खरल कर एकजीव करें।

प्रयोगविधि तथा गुण—उपरोक्त।

रक्त तिल्ला

हिंगुल, जायफल प्रत्येक २–२ तोला, मोम श्वेत ४ तोला, गौ मक्खन १२ तोला, मल्ल सफ़ेद ३ माशा, प्रथम औषध को बारीक खरल कर मोम को मक्खन में पिघला कर, औषध चूर्ण मिला दें। उपरोक्त विधि से प्रयोग करें।

गुण—उपरोक्त।

मजलूक तिल्ला

मल्ल सफ़ेद को सात दिन तक आकदुग्ध में भिगों रखें, फिर तीन दिन तक गौ के मक्खन में खरल करें, खूब खरल होने के बाद एक मोटे कपड़े में बांध कर एक लकड़ी पर लटकावें, लकड़ी को तेज़ धूप पर लटकावें, नीचे प्याला रखें, इस तरह करने पर प्याले में घी पोटली से टपक कर गिरेगा, जब सब घी निकल आवे, तो प्रति तोला घी के पीछे, कस्तूरी २ रत्ती, केशर २ रत्ती, लौंग, जायफल, जावित्री, अकरकरा, बीरबहुटी १–१ माशा बारीक पीस कर घृत में मिला कर खरल कर एक जीव करें, शिश्न पर मालिश कर ऊपर पानपत्र तथा भोजपत्र बांधे, जब फुंसिया उत्पन्न हो जायें, तो चम्बेली का तैल लगावें। यदि इसी तिल्ला में, मोतीया अत्तर, मेंहदी अत्तर, दारचीनी अत्तर, मेण्डक की चरबी, जोंक, केंचवे, हींग, फासफोरस प्रत्येक ३ माशा मिला दिया जाये, तो बहुत ही उपयोगी होगा।

गुण—उपरोक्त।

(२) केंचवे, जौंक, प्रत्येक ३ माशा सब को दो तोला मक्खन में खरल कर रात्री को शिश्न पर मालिश करें, प्रातः उष्ण जल से धो देवें।

गुण—उपरोक्त।

सुप्ति तिल्ला (मुख़दर)

मेथीलेटिड सिपरिट (Methylated Spirit) ५ तोला, अहिफेन, एकसट्रकट बेलाडोना प्रत्येक ३ माशा, सबको खरल कर २-३ दिन धूप में रखें, आवश्यकता पर रूई से शिश्न पर लगावें।

गुण—यह तिल्ला शिश्न की त्वचा में बेहिसी उत्पन्न करके प्रमेह को लाभ करता है, उत्तेजना को कम करता है।

तिल्ला मुहासा (यौवन पिडिका)

सोसन जड़, सिरसछाल, नीमपत्र समभाग लेकर मुख पर लेप करें, प्रातः को धो देवें।

गुण—यौवन पिडिका में लाभप्रद है।

तिल्ला हीरे वाला

मल्ल ज़रद मोमिया ३ तोला, स्वर्ण भस्म १ माशा, अलमास चूर्ण ३ रत्ती, शुद्ध पारद १ तोला, सबको तीन दिन तक निंबूरस में खरल करें, १-१ रत्ती की वटी करें, १ वटी थूक से, वा बासी पानी से घिस कर शिश्न पर लेप करें, ऊपर पान पत्र बांधे, फुंसी उत्पन्न होने पर छोड़ कर चम्बेली तैल लगावें।

गुण—अत्यन्त उत्तम तिल्ला है। हकीम अजमल खान का विशेष योग है।

नोट—(मल्ल मोमीया विधि) अपामार्ग की राख १॥ सेर को एक कपड़े में पोटली बांध कर सुराख़दार घट में डालें, और इस पर ९ सेर जल, बूंद २ टपकावें, घट के नीचे एक बरतन रखें, ताकि जल अपामार्ग की राख से गुज़रता हुआ नीचे टपकता रहे, जब सब जल टपक जाये, फिर वही जल इसी विधि से टपकावें, इस तरह ३-४ बार करें, ताकि जल का रंग सुरख़ हो जाये, और वह तीन पाव के करीब रह जाये, इसके पश्चात मल्ल पीत तीन तोला की डली लेकर कड़छे में डाल कर आग पर रखें, और उस पर यह उपरोक्त जल बूंद २ टपकायें, मल्ल मोमीया हो जायेगा।

(स्वर्ण-भस्म विधि) स्वर्णपत्र को कचनारपुष्प सफेद १ पाव के नुगदे में रखकर ५ सेर उपलों की पुट दें, भस्म हो जायगी, न हो तो दुबारा इसी प्रकार करें।

(पारद शोधन विधि) पारद ५ तोला को लेकर निंबुरस में खरल करें और मृदु आंच पर जौहर उड़ायें, जौहर लेकर फिर निंबुरस में खरल कर जौहर उड़ायें, इस तरह तब तक जौहर उड़ायें, जब कि पारद केवल १ तोला रह जाये।

नवसादर तिल्ला

अनज़रूत, नवसादर, जंगार सम भाग लेकर साबुन के पानी में खरल कर मस्सों पर लगावें।

गुण—मस्सों को नष्ट करता है।

कत्थ तिल्ला

कत्थ, कमीला, गेरू, नीलाथोथा, कल्मीशोरा १—१ भाग, मुर्दासंग, मिरचकाली २ भाग, महन्दी पत्र ४ भाग, सब को कूट छान कर, कड़वे तैल को जला कर उसमें हल कर लगावें।

गुण—गंज, व्रण, शिर की फुंसियाँ, तथा बालकों की फुंसियों में उपयोगी है।

गंजहर तिल्ला

फटकड़ी तन्दूर की जली हुई १ भाग, सैंधालवण दोनों को सिरका में हल करके शिर पर लगावें।

गुण—गंज में उपयोगी है।

सुन्दर उबटन

तरमस ३॥ माशा, ख़रपज़ा बीज, ज्वार की भूसी, कतीरा प्रत्येक ७ माशा, जौ १४ माशा, मसूर छिली हुई, मूली के बीज, १—१ तोला, बारीक पीस कर जल में भिगोवें, रात्री को लेप करें, प्रातः धो डालें, तीन दिन तक ऐसा करें।

गुण—मुख की झाईं तथा दाग़, धब्बों को दूर करता है।

दादहर लेप

गन्धक, पांरद, हड़ताल, नीलाथोथा, बावची १—१ तोला कड़वा तैल ६ तोला, सब को कूट छान कर तैल में हल करके मालिश करें, और धूप में बैठें, तीन घण्टा पश्चात कड़वे तैल की खल्ली मर्दन कर उष्ण जल से स्नान करें, तीन दिन ऐसा करें।

गुण—खारिश और दाद में उत्तम है।

पारद तिल्ला

पारद २८ माशा, मनशिल, जुन्दबदस्तर प्रत्येक ३॥ माशा, सोहागा, बछनाग, कुठ कड़वी, कुठ मधुर, प्रत्येक ७ माशा, काले तिलों का तैल १ पाव, शराब दो आतशा १ पाव, चम्बेली पत्र अर्क आधा सेर, प्रथम अर्क चम्बेली और तैल मिला कर उबालें, जब अर्क तथा शराब जल कर केवल तैल ही रह जाये, तो बाकी औषध का बारीक चूर्ण कर तैल में मिला कर जला लें, छान लें, २ रत्ती शिश्न पर लेप करें, और पान बांध दें, १ सप्ताह तक प्रयोग करें।

गुण—शिश्न में दृढ़ता उत्पन्न करता है, और इसके दोषों को हटाता है।

घुंघची तिल्ला

घुंघची सफेद छिलका समेत, कुचला, अकरकरा, बछनाग, सफेद कनेर जड़, जयपाल बीज, प्रत्येक २८ माशा, जयपाल और वत्सनाभ के सिवाय बाकी औषध को बारीक करें और इन दोनों को पोटली में बांध कर १ सेर बकरी के दूध में डाल कर २—३ जोश दें, फिर सब औषध को मिला कर ३॥ सेर बकरी दूध में भली प्रकार खरल करें, दूध शुष्क होने पर इसकी गोलीयां बना कर पातालयन्त्र द्वारा तैल निकालें, इस तैल को यथाविधि प्रयोग करें।

गुण—उपरोक्त।

अतिसार हर लेप

गुलाबपुष्प १७।। माशा, अकाकीया, गुलनार, माजू, फटकड़ी सरू का फल, सन्दल सुरख़, सन्दल सफ़ेद, मसूर, मोड़ीयों पत्र, प्रत्येक १०।। माशा, तबाशीर ७ माशा, सब को कूट छान कर बही स्वरस में मिला कर, उदर, आमाशय तथा कमर पर लेप करें।

गुण—वमन तथा अतिसार को रोकता है।

स्तन दृढ़ कर तिल्ला

अनार पत्र, पुष्प, फल तथा छाल ले कर, खूब बारीक पीस कर १ दिन रात इतने जल में भिगोवें कि पानी औषध से ऊपर रहे, दूसरे दिन क्वाथ कर के छान लें, जितना जल शेष हो, उस का चौथाई भाग तैल सरसों डाल कर पाक करें, कि तैल मात्र शेष रहे।

मात्रा—थोड़ा सा तैल स्तनों पर प्रति दिन मल लिया करें।

गुण—स्तनों को दृढ़ करता है।

हरीतकी तिल्ला

हरीतकी कृष्ण, हलदी, अफ़ीम, १—१ माशा, फटकड़ी, लोध्र, २–२ माशा, कूट छान कर जल में पीस कर आँख पर लेप करें।

गुण—आँख दुखने में उपयोगी है।

हिन्दी तिल्ला

पारद, वत्सनाभ १–१ भाग, मरिचकाली ४ भाग, धस्तूरबीज-राख ८ भाग, पारद और विष को मिला कर खरल करें, इस के पश्चात मरिच तथा धस्तूरबीज राख मिला कर खरल करें, फिर आकपत्र स्वरस में खूब खरल करें।

गुण—जो स्थान सन्न हो जाये, उस पर लेप करें, उपयोगी है।

अर्क-(औषध वाष्पीय जल)

Distilled Medicated Aquas

अर्क उस शुद्ध और परिस्रुत जल को कहते हैं, जो देग, भपका वा परिस्रावी यन्त्र द्वारा निकाला जाता है, परिस्रावी यन्त्र का चित्र देखने से पता लग जाता है कि किस तरह से अर्क निकाला जाता है।
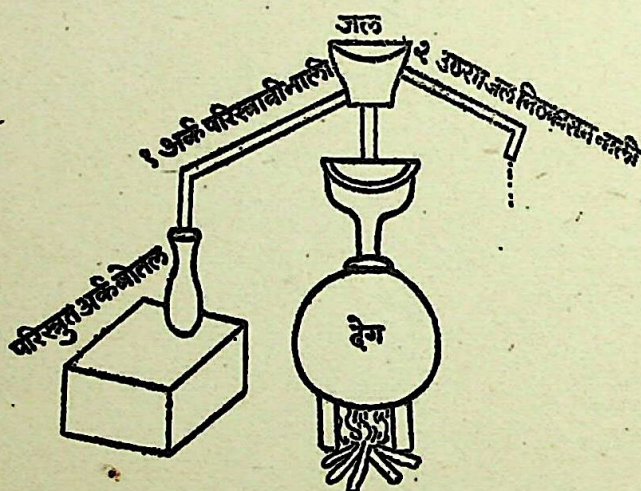
अब देग में औषध का शीत कषाय डाला जाता है, देग के ऊपर एक बरतन रखा जाता है, जिस में दो नाली लगी होती हैं, और वह बरतन देग पर ठीक आ जाता है, एक नाली उस के उभार में लगी होती है और दूसरी उभार के ऊपर, ऊपर के भाग में जल डाला जाता है, नं० १ नाली के नीचे अर्क संग्रह करने के लिये बोतल वा कोई और बरतन रखा जाता है, अब देग के नीचे अग्नि जलाई जाती है, देग में एक प्रकार का क्वाथ होता रहता है, उस क्वाथ के वाष्प ऊपर उठ कर ऊपर के बरतन के तल भाग में लगते हैं, ऊपर में पड़े शीतल जल की स्पृशता से वह वाष्प जलीय रूप धारण कर ऊपर के बरतन के तल भाग में लगी नाली द्वारा बोतल में टपकता रहता है, और शनैः शनैः बोतल भर जाती है, उसके भर जाने पर दूसरी बोतल लगा दी जाती है, ऊपर के बरतन में पड़ा जल वाष्पों की उष्णता से उष्ण हो जाया

करता है, उसे ऊपर के भाग में लगी नाली द्वारा बार २ निकाल दिया जाता है, और उस के स्थान पर शीतल जल भर दिया जाता है, जिसकी शीतलता के कारण ही बाष्प जलीय रूप धारण करते ह। दूसरी विधि निम्नलिखित है, भपका विधि इस का नाम है।
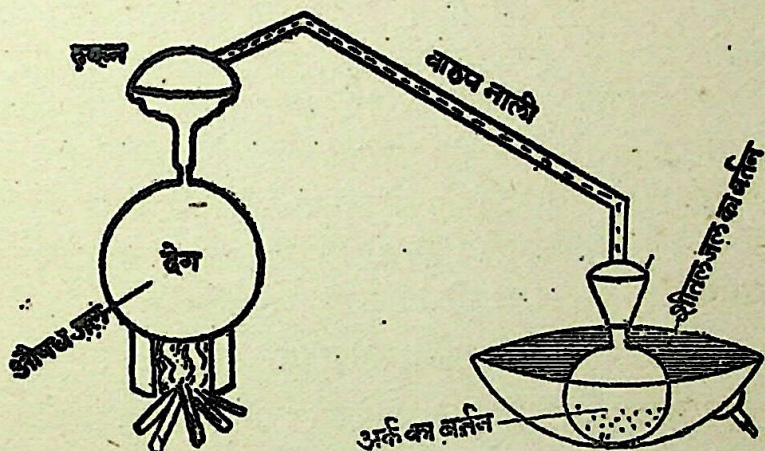
देग पर बन्द ढकन दिया जाता है और उस में एक सुराख होता है, इस में एक बीच में सुराख वाला चौड़े बांस का नल लगा दिया जाता है, और इस का दूसरा शिर बोतल वा घट में फंसा दिया जाता है, अब देग में औषध जल समेत डाल दी जाती हैं, और नीचे अग्नि जलाई जाती है, अब बाष्प उठते हैं, ऊपर जा कर नल द्वारा सुराही में गिरते हैं, सुराही को जल से भरी नांद में रखा जाता है, इस जल के स्पर्श से वह वाष्प जलीय रूप धारण करते हैं, नांद का जल उष्ण हो जाने पर निकाल दिया जाता है और शीतल जल भर दिया जाता है। प्रारम्भ में अग्नि तेज़ नहीं होनी चाहिये, ताकि उबाल न आ जाये।

(३) तीसरी विधि यह है कि जिस औषध का अर्क निकालना हो, उसे इतने जल में भिगोवें, कि वह उस में ही मिल जाये, प्रातः एक प्याला पर कपड़ा बांध कर किनारों पर आटा वा गीली मिट्टी लगा

कर सुखा कर कपड़े के ऊपर गिली औषध फैला दें, और औषध पर तवा रख कर उस पर सुलगते कोयले रखें, इस उष्णता से जो बाष्प उठेंगे, वह नीचे प्याले में जाकर शीतल हो जायेगें, इस विधि से यद्यपि अर्क थोड़ा निकलेगा परन्तु बड़ा तेज़ होगा। इसी तरह गर्भयन्त्र द्वारा भी अर्क निकाला जा सकता है। विविध प्रकार के अंकों में जल तथा औषध मात्रा विविध होती है, परन्तु साधारणतया यदि औषध १ पाव हो, तो जल ४ सेर होना चाहिये, और २ सेर अर्क निकालना चाहिये, यदि अर्क के योग में कस्तूरी, अम्बर, केशर जैसी सुगन्धित औषध हों, तो उन को पोटली में बांध कर अर्क परिस्रावी नाली के नीचे इस तरह से बांधें कि अर्क की बूंद २ पोटली में से होती हुई बोतल में गिरे, यदि अर्क में दूध भी शामिल हो, तो इसे अर्क निकालते समय मिलावें, मग़ज़यात हों, तो इन का शीरा निकाल कर शामिल करें।

अर्क उस्तोख़दूस

उस्तोख़दूस, धनियां शुष्क, प्रत्येक १२ तोला, हरड़, हरड़ बड़ी, बहेड़ा, आमला, कृष्ण हरीतकी प्रत्येक ९ तेले, गुलाब पुष्प ५ तोला, सब को १६ गुना पानी में तीन दिन तक भिगो कर जल से आधा भाग अर्क निकालें।

मात्रा—१० तोला अर्क शरबत उन्नाब २ तोला में डाल कर पीवें।

गुण—नींद में डरने के रोग में लाभप्रद है।

अर्क अफ़सनतीन

अफ़सनतीन रूमी १ पाव को ४ सेर पानी में रात्री को भिगोवें, प्रातः को २ सेर अर्क निकालें।

मात्रा—६ तोला।

गुण—यकृतशोथ, तथा यकृतदोषों को नष्ट करता है।

अर्क अजवायन

अजवायन देसी १ सेर रात्री को १६ सेर पानी में भिगोवें, प्रातः को आंठ वा दस बोतल अर्क निकालें।

मात्रा—६ तोला ।

गुण—दीपक पाचक है, उदरशूल, आध्मान, आदि में लाभप्रद है

अर्क इलायची

इलायची छोटी १ पाव आठ सेर पानी में एक दिन भिगो कर प्रातः ४ सेर अर्क निकालें ।

मात्रा—५ तोला ।

गुण—यह अर्क हृदय को बल देता है, वमन, अतिसार तथा विसूचिका में लाभप्रद है, वायु को खारज करता है ।

अर्क अन्नास सादा

अन्नास पक्व पीले रंग का २ सेर छील कर और कुचल कर १० सेर जल में एक दिवस रात्री भिगो कर प्रातः को ४सेर अर्क परिस्रुत करें।

मात्रा—१० तोला ।

गुण—वृक्क, मूत्राशय तथा हृदयको बल देता है तथा पित्तनाशक है।

अर्क अन्नास विशेष

अन्नास १२ लेकर छिलके दूर कर के छोटे २ टुकड़े कर लें, सौंफ़ १ सेर, प्याज़ सफ़ेद २ सेर, मंजीठ १ सेर, गोक्षरू २ सेर, सब को १६ सेर जल डाल कर दो दिन भिगो रखें, तीसरे दिन आधा अर्क निकालें ।

मात्रा—४ से ७ तोला ।

गुण—वृक्क तथा मूत्राशय की अश्मरी को बाहर निकालता है ।

अर्क सौंफ़

सौंफ़ १ पाव को ४ सेर जल में रात्री को भिगोवें, प्रातः दो सेर अर्क निकालें ।

मात्रा—१२ तोला ।

गुण—यकृत, आमाशय, वृक्क, मूत्राशय के रोगों में लाभप्रद है। दोषों को बाहर निकालता है, विशेषतया वातदोष में उत्तम है ।

अर्क बरनजासफ़ मुरकब

बरनजासफ़, शकाही, बादावरद, बादरंजबोया, सौंफ़, द्राक्षा बीजरहित, प्रत्येक १० तोला लेकर रात्री को १२ सेर जल में भिगोवें, प्रातः को मको सबज़ ३ पाव डाल कर अर्क खींच लें ।

मात्रा—१२ तोला ।

गुण—शोथ, कफ़ज ज्वर और यक्तरोगों में लाभप्रद है ।

अर्क बरनजासफ़ सादा

बरनजासफ़ १ पाव को ४ सेर जल में रात्री समय भिगोवें, प्रातः दो सेर अर्क निकालें ।

मात्रा—४ से ८ तोला ।

गुण—उपरोक्त ।

अर्क बेदमुशक

बेदमुशक पत्र १ पाव ४ सेर जल में भिगो कर प्रातः को २ सेर अर्क निकालें ।

मात्रा—१० तोला ।

गुण—दिल, दिमाग़ को बल देता है, तृषा तथा खफकान को मिटाता है ।

अर्क बहार

नारंज के पुष्प ५ सेर, गुलाब पुष्प १ सेर, सौंफ़, द्राक्षा बीजरहित, सबज़ द्राक्षा प्रत्येक १५ तोला, ऊद, बहमन लाल, शकाकल मिश्री १—१ तोला, अम्बर पौने दो माशा, अम्बर के सिवाये बाकी औषध को २५ सेर जल में एक दिवस रात्री भिगोवें, फिर १२ सेर अर्क निकालें, अर्क निकालते समय अम्बर की पोटली नाली के अन्त में बांधें ।

मात्रा—६ तोला ।

गुण—हृदय डूबना तथा तृषा में अत्यन्त उपयोगी है ।

अर्क बेद सादा

बेद वृक्ष के पत्र १ पाव लेकर ४ सेर जल में रात्री भर भिगोवें, प्रातः दो सेर अर्क निकालें ।

मात्रा—१० तोला ।

गुण—यह ख़फ़कान तथा पित्तरोगों में उपयोगी है ।

अर्क पान

गुलाबपुष्प, गाऊज़बान, पोदीना, ताम्बूलपत्र प्रत्येक १—१ पाव, अजवायन, सातर, दारचीनी, लौंग, पान की जड़, सोंठ, छोटी इलायची प्रत्येक आध पाव, अर्क गुलाब ४ बोतल, अर्क बेदमुशक, मेघजल प्रत्येक दो बोतल, अब इस में २५ सेर जल और डाल कर १ दिन रात्री औषध को भिगोवें, प्रातः २० सेर अर्क निकालें।

मात्रा—५ से १० तोला।

गुण—आमाशय शूल तथा आन्त्रशूल में लाभप्रद है।

अर्क ताम्बूल

पान पक्व १०० पत्र, गुलाबपुष्प, लौंग, गाऊज़बान, प्रत्येक २० तोला, गाऊज़बान पुष्प, आबरेशम अपक्व प्रत्येक ३ तोला, चन्दन सफ़ेद ४ तोला, कस्तूरी ३ माशा, अर्क गुलाब २ बोतल, जल १४ गुणा सब को मिला कर जल से आधा अर्क निकालें।

मात्रा—१० तोला।

गुण—हृदय के शीत रोगों में लाभप्रद है।

अर्क पोदीना

पोदीना शुष्क १ पाव को ४ सर जल में रात्री को भिगो कर प्रातः दो सेर अर्क निकालें।

मात्रा—१० तोला।

गुण—उदरशूल, वमन, जी मचलाना तथा वातशूल में उत्तम है।

अर्क जूफ़ा

बनफ़शा पुष्प, मधुयष्टि, जूफा, खतमीबीज, खबाज़ी बीज प्रत्येक १० तोला, गाऊज़बान, परसाशों, उन्नाब, अजवायन खुरासानी प्रत्येक ५ तोला, गन्धम का छिलका, अड़ूसा पत्र प्रत्येक २० तोला, सब औषध को १६ गुना जल में दो दिन भिगो कर जल से आधा अर्क निकालें।

मात्रा—१० तोला, लऊक सपस्तान २ तोला में मिला कर प्रयोग करें।

गुण—नज़ला, ज़ुकाम में लाभप्रद है।

अर्क सुजाक

सबज्ञ धनिया का स्वरस १० तोला, ब्राण्डी शराब २ तोला, सन्दल तैल ६ माशा, तीनों को मिला लें, यदि धनियां सबज़ न मिले तो शष्क धनियां का क्वाथ कर के मिलावें।

मात्रा—१—१ तोला प्रातः सायं।

गुण—सुज़ाक में लाभप्रद है, पीप तथा ख़ून को बन्द करता है।

अर्क सदबरग

सदबरग पुष्प (गेंदे के पुष्प) १ पाव ले कर केला के स्वरस ४ सेर में रख दें, प्रातः अर्क निकालें।

मात्रा—२ तोला।

गुण—पिती (शीतपित) निकलने में लाभप्रद है।

अर्क अजीब

कर्पूर, पोदीना सत्व, १—१ तोला, अजवायन सत्व ६ माशा, पोटेश्यम ब्रोमाईड, क्लोरल हाईड्रेट, ३—३ माशा सब को खरल में हल कर के धूप में रख दें, तैलवत हो जायगा, शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा—२ से ४ बिन्दू तक मिश्री में रख कर वा जल में डाल कर पिलावें, पीड़ा स्थान पर रूई से लगावें।

गुण—विसचिका, अतिसार, वमन, अजीर्ण, उदरशूल में पिलावें, शिरपीड़ा, दंतपीड़ा तथा बिच्छु आदि काटने पर रूई से पीड़ा स्थान पर लगावें। अत्यन्त प्रभावशाली सिद्ध औषध है।

अर्क उशबा

उशबा मग़रबी १५ तोला, चोबचीनी १० तोला, रात्री को ६ सेर जल में भिगोवें, प्रातः अर्क निकालें।

मात्रा—१० तोला अर्क, शरबत उन्नाब में मिला कर पीवें।

गुण—रक्तशोधक है, आमवात, उपदंश तथा सुज़ाक में उपयोगी है।

अर्क उन्नाब

उन्नाब १ पाव लेकर ४ सेर जल में एक दिन रात्री भिगोवें, प्रातः दो सेर अर्क निकालें।

मात्रा—१० तोला, शरबत उन्नाब २ तोला में मिला कर प्रयोग करें।

गुण—रक्तदुष्टि के लीये उत्तम है, कफ़ को निकालता है।

अर्क फोवाका

अम्ल अनार स्वरस, मधुर अनार स्वरस, बही स्वरस आध २ सेर, ज़रशक ज़ल २० तोला, अंगूर स्वरस, अमरूद स्वरस आध सेर, सन्दल सफ़ेद आध सेर सब को मिला कर यथाविधि अर्क निकालें।

मात्रा—१० तोला।

गुण—यह अर्क आमाशय तथा हृदय को बल देता है, खफकान, उन्माद तथा वात रोगों में उत्तम है।

अर्क फ़िलफ़िल

लाल मरिच ४ छटाँक को चार सेर जल में भिगोवें, प्रातः २ सेर अर्क निकालें।

मात्रा— २ तोला, रात्री सोते समय पिलावें।

गुण—अपस्मार में उत्तम है।

अर्क करनफ़ल (लवंगादि अर्क)

सौंफ़ रूमी, अजवायन, लौंग, सौंफ़ प्रत्येक ७ माशा, कस्तूरी केशर, बाबूनापुष्प; करफ़सबीज प्रत्येक ३॥ माशा, दारचीनी १४ माशा, कस्तूरी, केशर के सिवाये बाकी औषध को १६ गुना जल में रात्री के समय भिगोवें, प्रातः अर्क निकालें, केशर तथा कस्तूरी को अर्क निकालते समय पोटली में रख कर परिस्रावी नलकी के मुख पर बांध दें।

मात्रा—७ तोला, भोजनोपरान्त प्रयोग करें।

गुण—हृदय को बल देता है, वायु नाशक है।

अर्क कासनी

कासनीबीज १ पाव को ४ सेर जल में एक दिन भिगोवें, फिर दो सेर अर्क निकालें।

मात्रा—१० तोला।

गुण—रक्त की गरमी, पित्त की उग्रता को कम करता है, शिरःशूल, तृषा तथा यकृतशोथ में उत्तम है।

अर्क केवड़ा

केवड़ापुष्प १ पाव लेकर रात्री को ५ सेर जल में भिगोवें, प्रातः को २ सेर अर्क निकालें।

मात्रा—१० तोला, शरबत अनार २ तोला डाल कर प्रयोग करें।

गुण—दिल को बल देता है, तृषा को कम करता है।

अर्क मको

मको शुष्क १ पाव को ४ सेर जल में भिगो कर प्रातः को दो सेर अर्क निकालें, अर्क निकालते समय प्रारम्भ में अग्नि कम होनी चाहिये।

मात्रा—१० तोला।

गुण—पित्त तथा यकृत रोगों में उपयोगी हैं।

अर्क गाऊज़बान

१ पाव गाऊज़वान पत्र को कपड़े की ढीली पोटली में बांध कर ४ सेर जल में रात्री को भिगो दें, प्रातः दो सेर अर्क निकालें, इसमें तेज़ आँच नहीं देनी चाहिये, नहीं तो तत्काल उबाल आ जायगा, जब ४—५ बोतल अर्क निकाल चुकें, तब आँच कुछ तेज़ करें।

मात्रा—१० तोला।

गुण—दिल, दिमाग़ को वल देता है, संतत ज्वरों में लाभप्रद है, प्यास को बुझाता है, ज्वर को कम करता है।

अर्क गाऊज़बान अम्बरी

गाऊज़बानपुष्प, उस्तोख़दूस, बसफ़ाईज, गुलाबपुष्प, चन्दन सफ़ेद प्रत्येक तीन तोला, अर्क गुलाब, अर्क बेदमुशक १—१ सेर में मिला कर अर्क निकालें, कस्तूरी, अम्बर प्रत्येक २—२ माशा पोटली में बांध कर नाली के मुख पर बांधें।

मात्रा—२ तोला, प्रातः सायं।

गुण—उन्माद तथा ख़फ़कान को नष्ट करता है।

अर्क गुलाब

गुलाबपुष्प ताज़ा सुगन्धित १ पाव लेकर ४ सेर पानी में भिगो कर प्रातः २ सेर अर्क निकालें, यदि इसे दो आतशा, त्रि आतशा करना हो, तो इसी अर्क में और गुलाब पुष्प डाल कर अर्क निकालें।

मात्रा—५ तोला।

गुण—दिल दिमाग़ को बल देता है, उदरशूल तथा वात नाशक है।

अर्क गज़र सादा

ताज़ा गाजर की ऊपर की त्वचा तथा बीच का सख़्त गूदा दूर कर के १ सेर लें, गाऊज़बान २ तोला, गाऊज़बान पुष्प १॥ तोला, चन्दन सफ़ेद पौने दो तोला, बह्मन सफ़ेद, तोदरी सुरख़ प्रत्येक १। तोला, सब को ६सेर जल में भिगोवें, १दिनके बाद ४सेर अर्क निकालें।

मात्रा—१० तोला।

गुण—दिल दिमाग़ को बल देता है, तथा शारीरिक क्षीणता को दूर करता है।

अर्क फवाका

मधुर अनार स्वरस, सेब स्वरस, बही स्वरस, नाशपाती स्वरस प्रत्येक आध सेर, निंबू बिजौरा स्वरस १। सेर, काहू स्वरस १॥ सेर, धनियां स्वरस १ सेर, गाजर स्वरस, कद्दू स्वरस प्रत्येक १। सेर, गन्ना स्वरस, तरबूज़ स्वरस, १—१ सेर, गाऊज़बान, नीलोफ़रपुष्प, बादरंजबोया, जौ छिले हुये, चन्दन सफेद १—१ पाव, बंशलोचन सफ़ेद ६ तोला, धनियां छिला हुआ १० तोला, बकरी दूध १० सेर, जल २० सेर, दूध के सिवाय सब स्वरसों, जल तथा औषध को एक स्थान पर भिगो दें, प्रातः समय दूध मिला कर ३० सेर अर्क निकालें।

मात्रा—१० तोला

गुण—आमाशय, हृदय, मस्तिष्क को बल देता है, खफ़कान, उन्माद तथा वातिक रोगों में उपयोगी है।

अर्क मुण्डी

मुण्डी १ पाव लेकर ४ सेर जल में रात्री को भिगो कर प्रातः २ सेर अर्क निकालें।

मात्रा—१० तोला ।

गुण—रक्तशोधक है, नेत्रों को बल देता है ।

आजवायन अर्क

अजवायन आध सेर, पान जड़, तालीसपत्र, नरकचूर, १–१ पाव लेकर अर्क गुलाब ३ बोतल, जल १६ गुना, सब को मिला कर रात्री को भिगो कर प्रातः यथाविधि अर्क निकालें ।

मात्रा—१० तोला ।

गुण—आमाशय तथा आन्त्र की वातिक पीड़ा में उत्तम है ।

अर्क नीलोफ़र

नीलोफ़रपुष्प १। सेर लेकर २० सेर जल में भिगो कर प्रातः अर्क निकालें ।

मात्रा—५ से १० तोला ।

गुण—दिल दिमाग़ को ताकत देता है, प्रतिश्याय, शिरशूल में उत्तम है, तृषा शान्त करता है ।

अर्क नज़ला

बनफ़शापुष्प, उन्नाब, सपस्तान (लसूड़े), ख़तमीबीज, ख़ुबाज़ी बीज, नीलोफ़रपुष्प, सम भाग, बहीदाना आधा भाग, गन्धम का छिलका सब के समान, सब को ४ दिन तक १६ गुना जल में भिगोवें, आधा भाग अर्क निकालें ।

मात्रा—१० तोला, शरबंत सदर २ तोला में डाल कर प्रयोग करें ।

गुण—कास, श्वास तथा प्रतिश्याय में बहुत उत्तम है ।

अर्क नानख़्वाह

अजवायन १। सेर, सौंठ १ पाव, वर्च आध पाव, अकरकरा पौने दो तोला, नकछिकनी १० माशा, सब को यवकुट कर १६ गुना जल में रात्री को भिगोवें, प्रातः आधा भाग अर्क निकालें ।

मात्रा—८ तोला, भोजनोपरान्त प्रयोग करें ।

गुण—प्लीहा, आध्मान, तथा वात शूल को नष्ट करता है।

अर्क हाज़मूम (पाचक अर्क)

लहसुन १ पोथीया, अजवायन देसी, भांगरा १—१ सेर, असगन्ध, नारंज त्वचा, बादरंजबोया प्रत्येक आध सेर, लौहचूर्ण आध पाव, इन सब को १।। सेर जल में भिगो कर बरतन में डाल दें, और पृथ्वी में गाड़ कर गधे की लीद से ढांक दें, सात दिन के बाद निकाल कर अद्रंक रस १ पाव, घृत कुमारी गूदा १५ तोला, जल औषध से १६ गुना डाल कर जल से आधा अर्क निकाल लें।

मात्रा—५ तोला अर्क, भोजनोपरान्त दें।

गुण—प्लीहा तथा आमाशय को बल देता है, दीपक पाचक है।

हरीतकी अर्क

उस्तोख़दूस १२ तोला, धनियां शुष्क ३ पाव, हरड़ १ सेर, गुलाब-पुष्प, गाऊज़बान प्रत्येक १० तोला, द्राक्षा बीजरहित, हरीतकी कृष्ण, हरड़, आमला प्रत्येक २० तोला, ऊदग़रकी ४ तोला, सब को ४ दिन तक १६ गुना पानी में भिगो कर जल से आधा अर्क निकालें।

मात्रा—१० तोला।

गुण—स्वप्न में डरने के रोग में लाभप्रद है।

अर्क खुलंजान

अजवायन, सोंठ, पानजड़, प्रत्येक १० तोला, लौंग, दारचीनी, जायफल, जावित्री, सातर, त्रिवृत, रेवन्द चीनी, उस्तोख़दूस, हरड़, बादायन ख़ताई, बालछड़ प्रत्येक ५ तोला, लहसुन छिला हुआ १ पाव, आक पुष्प १५ तोला, सब औषध को १६ गुना जल में रात्री को भिगोवें, प्रातः आधा अर्क निकालें।

मात्रा—७ तोला।

गुण—अर्दित, अर्धांग, वातकम्प तथा आम वात में उत्तम है।

अर्क हराभरा

चन्दन सफ़ेद, चन्दन सुरख़, खस, पद्माख, नागरमोथा, गिलोय सबज़, पितपापड़ा, नीमछाल, नीलोफ़रपुष्प, कासनीबीज, सौंफ़, कदूबीज, धनियां, नेत्रवाला १०—१० तोला, तुलसीबीज २ तोला,

गन्ने की जड़, यवासा जड़, धमासा, मुण्डी ५—५ तोला, छोटी इलायची, पोस्त डोडा २—२ तोला, सब को १६ गुणा जल में भिगो कर प्रातः आधा अर्क निकालें।

मात्रा—६ तोला,

गुण—यक्ष्मा, जीर्ण ज्वर, सुज़ाक, मूत्रजलन तथा हृदय रोगों मं उत्तम है।

अर्क चोबचीनी

दारचीनी, गुलाबपुष्प, रेहांबीज प्रत्येक ६ तोला, बालछड़, तमालपत्र, लौंग, छोटी एलांबीज, कचूर, बादरंजबोया, गाऊज़बान पुष्प, अपक्व आबरेशम कुतरा हुआ प्रत्येक ३ तोला, बहमन लाल, बहमन सफ़ेद, ऊद हिन्दी, छड़ीला, प्रत्येक १॥ तोला, केशर १० माशा, रूमी मस्तगी ७ माशा, अम्बर ३॥ माशा, कस्तूरी पौने दो माशा, चोबचीनी ५७ तोला, मधुर सेब पक्व ५० नग, अर्क गुलाब १ सेर, सेब के टुकड़े २ करें और कूटने योग्य औषध को कूट कर देग में रख कर औषध से १६ गुना जल डालें, और अर्क निकालते समय केशर, कस्तूरी, अम्बर, मस्तगी को पोटली में बांध कर नलकी के मुख पर पोटली को बांध दें, जिस कदर जल डाला गया हो उस का तीसरा भाग अर्क निकालें।

मात्रा—१० तोला।

गुण—रक्तशोधक है, फोड़े, फुन्सी तथा पित्त को नष्ट करता है, शरीर को बल देता है।

अर्क शीर

नीलोफ़रपुष्प, बेदपुष्प, कसेरू ताज़ा छिला हुआ, प्रत्येक आध पाव, काहुपत्र, लम्बा कदू, प्रत्येक ४॥ तोला, ख़ुरफ़ा ३ तोला, गाऊ-ज़बानपुष्प, गुलाबपुष्प, कमलपुष्प ताज़ा, धनियां शुष्क, मग़ज़ मधुर कदू, मग़ज़ तुख़म ख़यारैन, काहुबीज प्रत्येक दो तोला। कासनीबीज, वंशलोचन सफ़ेद १—१ तोला, चन्दन सफ़ेद बुरादा, बुरादा चन्दन सुरख़ प्रत्येक ६ माशा, मधुर अनार, मधुर सेब २—२ नग, खीरा ताज़ा छिला हुआ, बही, नाशपाती १—१ नग, अर्क मको, अर्क

नीलोफ़र ४—४ सेर, अर्क बेदमुशक १ सेर, सब औषध को देग में भर कर अर्क डाल दें, ऊपर से बकरी का दूध १० सेर डाल कर २४ घण्टे के बाद १२ सेर अर्क निकालें।

मात्रा—५ से १० तोला।

गुण—रक्त शोधक है, हृदय को बल देता है, जीर्ण ज्वर तथा यक्ष्मा में लाभप्रद है।

अर्क मरकब मस्फ़ीखून

नीमपत्र, नीमछाल, महानीम छाल, महानीम पत्र, कचनार, मौलसरी छाल, दूधी लघु, भांगरा कृष्ण, यवासा पत्र तथा शाख़, गूलर-छाल, मेहन्दी पत्र, मुण्डी, पितपापड़ा, सरफोंका, धमासा, विजयसार, नीलोफ़रपुष्प, बुरादा चन्दन रक्त तथा सफ़ेद, गुलाबपुष्प, धनियां, कासनीबीज, कासनीजड़, मंजीठ, बेदपत्र, शीशम वृक्ष का बुरादा आध २ पाव, सब औषध का अर्ध कुट्टित चूर्ण कर १६ गुना जल में २४ घण्टे भिगो कर आधा भाग अर्क निकालें।

मात्रा—१० तोला।

गुण—महान रक्त शोधक है, उपदंश में भी उत्तम है।

अर्क अम्बर

कस्तूरी ४।। माशा, अम्बर, केशर, मस्तगी प्रत्येक ९ माशा, रेहांपत्र ताज़ा, नागरमोथा, कुरफ़ा, धनियां शुष्क, गाऊज़बानपुष्प, अनीसून, दरूनज, पोस्त बेरून पिस्ता १—१ तोला १० माशा, नरकचूर, ऊदग़रकी, कबाबा खन्दान, छड़ीला, दारचीनी, लौंग, बोज़ीदान, गुलाबपुष्प, बालछड़, बहमन सुरख़, बहमन सफ़ेद, शकाकल मिश्री, तमालपत्र, बंशलोचन, इलायची छोटी, इलायची बड़ी, नारंज का छिलका, अपक्व आब़रेशम कुतरा हुआ, चन्दन सफ़ेद प्रत्येक २ तोला, सेब स्वरस आध सेर, अनार स्वरस १ सेर, अर्क बेदमुशक, अर्क गाऊ-ज़बान, अर्क बादरंजबोया, प्रत्येक २।। सेर, अर्क गुलाब ५ सेर, कूटने वाली औषध को कूट कर देग में भर कर अर्क भी शामिल कर दें, और १ दिन बाद अनार, सेब स्वरस डाल कर अर्क निकालें, कस्तूरी आदि

को पोटली में बांध कर नलकी के मुख पर बांधें, ताकि अर्क की बूंदें पोटली में से हो कर बोतल में गिरें, दो तिहाई भाग अर्क निकालें।

मात्रा—५ से ७ तोला।

गुण—दिल, दिमाग़, यकृत को बल देता है, क्षीणता तथा ग़शी में लाभप्रद है।

अर्क गाजर (बृहत् योग)

गाजर सुरख़ छील कर तथा मध्य का सख़त भाग निकाल कर ५ सेर, किशमिश, द्राक्षा प्रत्येक २॥ सेर, बही, सेब, प्रत्येक आध सेर, अनार स्वरस, गुलाबपुष्प, छोटी इलायची, इलायची बड़ी, आबरेशम कुतरा हुआ, सन्दल सुरख़, सन्दल सफ़ेद, रेहां पत्र, धनियां शुष्क, गाऊ-ज़बान, फरंजमुशक बीज, बालंगू बीज, प्रत्येक ४ तोला, वंशलोचन, गाऊज़बानपुष्प, कासनीबीज, ख़यारैनबीज प्रत्येक दो तोला, गुलाब अर्क, केवड़ा अर्क, गाऊज़बान अर्क प्रत्येक दो सेर, सब औषध को १ रात दिन २ मन जल में भिगोवें और अर्क शामिल कर ५० बोतल अर्क निकालें, अर्क निकालते समय, कस्तूरी, अम्बर ९—९ माशा, केशर २ तोला की पोटली नलकी के मुख में बांधें।

मात्रा—६ तोला।

गुण—दिल दिमाग़ को बल देता है, क्षीणता को नष्ट करता है।

अर्क हाज़मूम (विशेष योग)

कीकर छाल ५ सेर, किशमिश, गुड़ प्रत्येक २॥ सेर, लहसुन, लौंग प्रत्येक ६ तोला, ऊदग़रकी १ तोला, सन्दल सफ़ेद ११ माशा, बनफ़शा जड़ ९ माशा, नागरमोथा ९ माशा, नारंज छिलका, बहमन सुरख़, बहमन सफ़ेद, शकाकल मिश्री, तमालपत्र, दारचीनी, गाऊ-ज़बान, १—१ तोला, ख़स २ तोला, बड़ी इलायची बीज २॥ तोला, जायफल, जावित्री १—१ तोला, केशर ६ माशा, अम्बर ३ माशा, अम्बर और केशर के सिवाये, सब औषध को आठ गुना जल में भिगो कर १ मटका में बन्द कर के पृथ्वी में १ सप्ताह के लीये गाड़ दें, एक सप्ताह पश्चात ८ गुना और जल डाल कर जल से आधा अर्क निकालें, केशर और अम्बर की पोटली नलकी के मुख पर बांधें।

मात्रा—५ तोला, भोजनोपरान्त ।

गुण—दीपक, पाचक, तथा शरीर को बल देता है ।

अर्क मोम

मोम अपक्व १ सेर, लवण आध सेर, रेत आध सेर, लवण को बारीक पीस लें, अब तीनों को कपरौटी कीये हुये घड़े में रख कर इस के मुख पर दूसरा घड़ा रख कर माश के आटे से दोनों का मुख अच्छी तरह मज़बूती से जोड़ दें, ऊपर वाले घड़े के पर्श्व में एक सुराख़ कर के नलकी लगा दें, औषध वाले घड़े को टेढा कर चूल्हे पर जमा कर अग्नि दें, और नलकी को बोतल के मुख में डाल कर बोतल को शीतल जल में रखें, उत्तम मोम का अर्क निकलेगा, इसी को रोग़न मोम भी कहते हैं। पीड़ा स्थान पर मालिश कर गरम रूई बांधें।

गुण—वक्षपीड़ा, छातीपीड़ा, निमोनीया, चोटें, आमवात आदि में उत्तम है ।

अर्क मबूतख़ हफ़्त रोज़ा

नीमवृक्ष छाल, काचनार छाल, हिंजिल जड़, कीकर की फली, कण्डयारी, लघु पंचांग, पुराना गुड़, प्रत्येक आध पाव, सब को तीन सेर जल में उबालें, १ सेर शेष रहने पर छान लें, इस की सात मात्रा करें, इस में से १ मात्रा प्रति दिन प्रातः को प्रयोग करें, और सायं को खिचड़ी खावें, यदि प्रवाहिका हो जाये तो अर्क पीना बन्द कर लुआब बहीदाना ३ माशा, लुआब रेशाख़तमी ५ माशा, जल में निकाल कर खाण्ड सफ़ेद २ तोला मिला कर प्रयोग करें, यदि एक दिन छोड़ कर और प्रति दिन नया अर्क निकाल कर प्रयोग करें, तो प्रवाहिका नहीं होगी।

गुण—रक्त विकार, फोड़े, फुंसी, आमवात तथा उपदंश में अतीव उपयोगी है ।

अर्क मुरकब मुसफ़ी ख़ून (विशेषयोग)

नीमपत्र, बकायनपत्र, पोस्त नीम सबज़, नीम की निंबोली, प्रत्येक १॥ सेर, शिरस पत्र, हरड़, हरँड़ बड़ी, हरड़ कृष्ण, पितपापड़ा, धनियां, सेब पत्र सबज़, बुरादा शीशम, आमला, चोबचीनी, नीलकण्ठी,

ब्रह्मडण्डी, गुलाब पुष्प प्रत्येक १० तोला, मुण्डी, मेहन्दी सबज़, कासनी-बीज, सरफोंका, बुरादा सन्दल सफ़ेद, बुरादा सन्दल सुरख़, तूत पत्र कृष्ण, प्रत्येक २० तोला, नीलोफ़र पुष्प, कासनी पत्र, सौंफ़, गोक्षरू, प्रत्येक आध सेर, मको सबज़, काचनार, १५—१५ तोला, बादरंज-बोया, आकाशबेल, चिरायता ५—५ तोला, जदवार ख़ताई, उन्नाब, उशबा ४—४ तोला, नीम पुष्प १ सेर, सब को १६ गुणा जल में २ दिन तक भिगो रखें, फिर जल से आधा भाग अर्क निकाल।

मात्रा—१० तोला, शरबत उन्नाब में मिला कर।

गुण—परम रक्तशोधक अर्क है।

अर्क मालहम कासनी वाला

बरंजासफ़, शकाही, बादावरद, बादरंजबोया, सौंफ़ अर्ध कुट्टित, द्राक्षा बीज रहित, किबर जड़, अज़ख़र जड़, मधु यष्टि, गिलोय सबज़, मको शुष्क प्रत्येक ५ तोला, गाऊज़बान, गाऊज़बान पुष्प ५—५ तोला, रात्री को १६ गुणा उष्ण जल में भिगोवें, प्रातः को कासनी पत्र स्वरस २ सेर, गिलोय पत्र स्वरस २ सेर, बकरे का माँस ४ सेर मिला कर जल से आधा अर्क निकालें।

मात्रा—१० तोला अर्क, शरबत कसूस में मिला कर प्रयोग करें।

गुण—परम शोथ नाशक है, आमाशय तथा यकृत क्षीणता को नष्ट करता है।

अर्क मालजोबन

मछेछी बूटी ४० तोला, हरड़, हरड़ काबुली, हरीतकी कृष्ण, बहेड़ा, नीमपत्र, वकायन पत्र, नीमवृक्ष छाल, मग़ज़ तुख़म नीम, विजयसार पुष्प, गाऊज़बान, कासनी बीज, कासनी जड़, हिरणखुरी, इमलीबीज मग़ज़, आमला, धनियां शुष्क, मौलसरी छाल, गिलोय सबज़ प्रत्येक १—१ तोला, पितपापड़ा, चिरायता, सरफोंका, मेहन्दी पत्र, शीशम बुरादा, सन्दल सुरख़, सन्दल सफ़ेद, मको शुष्क, झड़-बेरी जड़ छाल, पेड़ा चटाई की जड़ की छाल (यह एक प्रकार की घास है, नदी के किनारे होती है, मनुष्य जैसा कद होता है), गन्ने की जड़,

चम्बेली पत्र, आबनूस का बुरादा, उन्नाब प्रत्येक ५ तोला, अम्लतास गूदा आध सेर, मालजोबन ५ सेर, जल २७ सेर, मिलाकर २४ घण्टे पश्चात २० सेर अर्क निकालें

मात्रा—६ तोला ।

गुण—रक्त शोधक है, रक्त दुष्टि में उत्तम है ।

अर्क मालहम

चोबचीनी २६ तोला, गाऊज़बान पुष्प, बादरंजबोया, बालछड़, प्रत्येक १९ तोला, लौंग, दारचीनी, इलायची बड़ी, जायफल, जावित्री, बादायन ख़ताई, बहमन सफ़ेद, उशबा मग़रबी, सन्दल सफ़ेद, सन्दल सुरख़, मस्तगी, केशर, कबाबचीनी, छड़ीला, गुलाब कली, नरकचूर, शकाकल, बनतुलसी बीज, ऊद हिन्दी, हालों बीज प्रत्येक पौने ४ तोला, बोज़ीदान, अम्बर प्रत्येक १ तोला १० माशा, कस्तूरी ९ माशा, बकरी का माँस, मुरग़ का माँस, कबूतर माँस १—१ सेर, चिड़े ५० नग, अर्क बादरंजबोया, अर्क बेदमूशक, अर्क गुलाब, अर्क गाऊज़बान, अर्क बहार नारंज, जल इस कदर डालें कि अर्क समेत औषध मात्र से १६ गुणा हो, पहिलें माँस की यख़नी बना लें (अर्थात् मांस को पका कर मांस रस निकाल लें) केसर, कस्तूरी, मस्तगी, अम्बर के सिवाये सब औषध जल में २४ घण्टे तक भिगो कर आधा अर्क निकालें, केशर आदि को पोटली में डाल कर नाली के मुख पर बांधें ।

मात्रा—८ तोला, शरबत अनार के साथ ।

गुण—दिल, दिमाग़ तथा सारे शरीर को बल देता है ।

अर्क मालहम चोबचीनीवाला

चोबचीनी २२ तोला, गाऊज़बान पुष्प, बादरंजबोया, बालछड़ प्रत्येक दो तोला, लौंग, दारचीनी, बड़ी इलायची, जायफल, जावित्री, बादायन ख़ताई, बहमन सुरख़, बहमन सफ़ेद, उशबा मग़रबी, चन्दन लाल, चन्दन सफ़ेद; कबाबचीनी, छड़ीला, कचूर, गुलाब पुष्प,तज, शकाकल, फ़रंजमुशक, हालों बीज, ऊदग़रकी, बोज़ीदान, प्रत्येक ९ माशा, अम्बर, कस्तूरी, केशर, मस्तगी प्रत्येक ९ माशा, भेड़ माँस, मुरग़ मांस, जंगली कबूतर मांस प्रत्येक पौने दो सेर, चिड़े ५० नग, अर्क

बादरंजबोया, बेदमुशक, गुलाब पुष्प, गाऊज़बान, बहार प्रत्येक का ४ सेर अर्क, जल ५ सेर, प्रथम चारों मांसों को अर्क और पानीमें मिला कर १६ सेर अर्क खीचें, फिर इस अर्क में उपरिलिखित औषध चूर्ण भिगो कर दुबारा अर्क निकालें, कस्तूरी आदि को पोटली में बांध कर नलकी के मुख में बांधें।

मात्रा—५ तोला, शरबत उन्नाब १ तोला में मिलाकर प्रयोग करें।

गुण—बाजीकर, शरीर पोषक, वृक्क तथा मूत्राशय को बल देता है, आमवात, उपदंश, तथा रक्त दुष्टि में उपयोगी है।

अर्क मालहम (विशेष)

बकरे का मांस २४ सेर, बटेर मांस २४ नग, झींगा मच्छली ३ सेर, मुरग़ के छोटे बच्चे १४ नग, साण्डा १० नग, बालछड़, तमाल पत्र, बहमन सफ़ेद, छोटी इलायची, इलायची बड़ी, लौंग, दारचीनी, ऊद ख़ाम, बिजौरा निंबू त्वक, गाऊज़बान, बोज़ीदान, छलीड़ा, चन्दन सफ़ेद, बादरंजबोया, फरंजमुशक बीज, गाऊज़बान पुष्प, धनियां शुष्क, कचूर, सौंफ, दरूनज, मस्तगी, नागरमोथा प्रत्येक ४।। तोला, साहलब मिश्री, शकाकल मिश्री, गुलाब पुष्प, आबरेशम मकरज़ (कुतरा हुआ), प्रत्येक ९ तोले, अंगूर ३ सेर, सेब ३ सेर, अर्क गुलाब ९ सेर, अर्क बेदमुशक ६ सेर, प्रथम सब मांसों को १।। मन जल में डाल कर इतना पकावें, कि जल एक मन रह जाये, अब इस मांस स्वरस को छान कर, गुलाब बेदमुशक अर्क मिला दें, और औषध चूर्ण को मिला कर इस में भगो दें, दूसरे दिन ५० बोतल अर्क निकालें।

मात्रा—५ तोला, शरबत अनार के साथ।

गुण—उपरोक्त।

अर्क मालहम (विशेष बृहत योग)

बकरी मांस १२ सेर, चिड़े १०० नग, लवा, बटेर, ममोला प्रत्येक ५० नग, मुरग़ के छोटे बच्चे, तीतर २० नग, मांस को अस्थी तथा रेशा से साफ़ कर के २ मान जल में पकावें, १।। मन रहने पर छान लें, अब इस में शिलाजीत, जुन्दबदस्तर, नागरमोथा, जदवार, केशर,

कस्तूरी १—१ तोला, गाऊज़बान पुष्प, कबाबचीनी, बालछड़, तबाशीर, बसफ़ाईज, दरूनज अकरबी, राई, ऊदसलीब, सातर, कन-तरीयून दकीक, चित्रक, जावित्री, जायफल, हब्ब किल किल, माया-शुत्रअहराबी, रेगमाही प्रत्येक २। तोला, अजवायन, जूफ़ा, वज-तुरकी प्रत्येक ३ तोला ४ माशा, दारचीनी, अपक्व आबरेशम कुतरा हुआ, प्रत्येक ७ तोला, हालों बीज, अंजरा बीज, मूली बीज, असपस्त बीज, बालंगू बीज, शरबती बीज, रेहाँ बीज, फरंजमुशक-बीज, फरंजमुशक पत्र, सोसन जड़, बाबूंना पुष्प, मेदा लकड़ी, बोज़ी-दान, तज, दारचीनी, मस्तगी, नागकेसर, छलीड़ा, तमालपत्र, चन्दन सुरख़, उस्तोख़दूस, जरावन्द गोल, तालीसपत्र, तगर, पोस्तडोडा, प्रत्येक ५ तोला, बहमन सफ़ेद, बहमन सुरख़, तोदरी रक्त, तोदरी सफ़ेद, शकाकल मिश्री, सुरंजान मधुर, गाऊज़बान, इन्द्रजौ, सौंफ़, बादायन ख़ताई, चाय ख़ताई, लघु एला, बृहतएला, ऊद ग़रकी, गुलाब पुष्प, बादरंजबोया, परसाशों, पोदीना, हिबज़ल्याना, पानजड़, गाजर बीज, ख़रापज़ा बीज, ख़तमी बीज, ख़बाज़ी बीज, बुन बीज, मग़ज़ चरोंजी, इन्द्रजौ का मग़ज़, मग़ज़ बनौला, लसूड़, झींगा मच्छली, प्रत्येक १० तोला, चोबचीनी, अंजीर पक्व, द्राक्षा बीज रहित, सबज़ किशमिश प्रत्येक आध सेर, गोक्षरू स्वरस, सेब स्वरस, बही स्वरस, अनार स्वरस, १—१ सेर, खाँड तीन सेर, रेहां पत्र ताज़ा आध सेर, उन्नाब विलायती १०० नग, केशर, कस्तूरी, अम्बर, सब औषध को कूट कर ऊपर के माँस स्वरस में १ दिन भिगोवें, दूसरे दिन, अर्क गुलाब, बेदमुशक प्रत्येक २-२ बोतल, अर्क गाऊज़बान, अर्क अम्लतास ताज़ा प्रत्येक ३ सेर, गाजर स्वरस, गन्ना स्वरस, प्रत्येक २० सेर, जल ३० सेर मिला कर १०० बोतल अर्क निकालें, अर्क निकालते समय केशर आदि की पोट्टली अर्क की नाली के मुख पर बांधे, अन्त में सब बोतलों के अर्क को एक मट में डाल कर फिर बोतलों में भरें, ऐसा करने से सब अर्क एक जैसा गुणकारी होगा।

मात्रा—५ तोला, शरबत अनार में मिला कर प्रयोग करें।

गुण—क्षीणता, दुर्बलता को नष्ट कर शरीर को बलवान तथा मोटा बनाता ह।

अर्क कीकर

कीकर छाल १० सेर, गुड़ ३५ सेर ३६ तोला, इन दोनों को २॥ मन पानी में एक मटके में डालकर पृथ्वी में गाड़ें, जब लाहन उठ जाये, तो ३० सेर अर्क निकालें, फिर इस अर्क में लौंग ६ माशा, जावित्री, जायफल, दारचीनी, इलायची छोटी, खस १—१ तोला, चन्दन सफ़ेद, २ तोला, गुलाब पुष्प ५ तोला, १ दिन रात्री भिगोने के पश्चात दूसरे दिन २० सेर अर्क निकालें, अब इस २० सेर अर्क में उपरोक्त औषध चूर्ण का आधा भाग डालकर १ दिन रात्री रखकर फिर १२ सेर अर्क निकालें। यदि इत्तर गुलाब ३ माशा भभका में डाल दें, तो और उत्तम है।

मात्रा—५ तोला।

गुण—खफ़कान, हृदय धड़कन, क्षीणता को दूर करता है।

अर्क आसव बारद

गुड़ ६६॥ सेर, कीकर छाल ८ सेर ३५ तोला, दोनों चीज़ों को एक मटके में डाल कर ऊपर से इतना पानी डालें, कि मटके का तीसरा भाग खाली रहे, इस मटके का मुख बन्द करके घोड़े की लीद में दबा दें, उबाल खा कर बैठ जाने पर अर्क खींच लें, इस अर्क में चन्दन सफ़ेद ७॥ तोला, नीलोफ़र १५ तोला, धनियां ७॥ तोला, बेहड़ा, आमला, द्राक्षा बीजरहित ३७॥ तोला, गाऊज़बानपुष्प, काहूबीज ३५ तोला, मग़ज़ तुख़म कदु ७५ तोला, कासनीबीज अर्ध कुट्टित, खुरफ़ाबीज छिले हुये, मग़ज़ तुख़म ख़यारैन प्रत्येक ९० तोला, बड़ी हरड़, बेद सादा, और बहार प्रत्येक १२॥ तोला, गुलाब पुष्प प्रत्येक ११। सेर, सब औषध डाल कर १ दिन रात्री भिगोवें, इस के बाद नाली के मुख में अम्बर शहब ९ माशा की पोट्टली बांधें और अर्क निकालें।

मात्रा—८ से १२ तोला।

गुण—उन्माद तथा हृदयरोगों में लाभप्रद है।

कुरस (टिकिया) (Tablet-trochinacus)

यह भी एक प्रकार की वटी है, परन्तु वटी गोल आकार की होती है, और यह गोल और चिपटे आकार की होती है, आजकल मशीन से यह सुन्दर रूप में बनाई जाती हैं।

कुरस अकाकीया

अकाकीया (कीकर की छाल तथा पत्र के घनसार को अकाकीया कहते हैं), कागज़ जला हुआ प्रत्येक ९ माशा, हड़ताल पीत, हड़ताल सुरख प्रत्येक १३॥ माशा, सब को बारतंग स्वरस १। सेर में खरल कर के टिकिया बनावें, यदि थोड़ी मात्रा में पूय (पीप) आ रही हो, तो दो तीन रत्ती खा कर चावलों की पिच्छ पी लें, यदि अधिक मात्रा में पीप आ रही हो तो जल में घोल कर वस्ति करें।

गुण—पुरानी प्रवाहिका तथा पीप आने में लाभप्रद है।

कुरस अंजबार

अंजबार की जड़ १ तोला, गुलाबपुष्प, गोंद कीकर, खुरफ़ाबीज, कहरूबा प्रत्येक ९ माशा, गुलनार, निशास्ता, गिल अरमनी, बसुद, तबाशीर, रबुंलसूस प्रत्येक ६ माशा, अकाकीया ४॥ माशा, सब को कूट छान कर स्वरस में गूंद कर टिकिया बनावें।

मात्रा—३ से ५ माशा।

गुण—रक्तातिसार, रक्तपित्त, रक्त प्रदर में उत्तम है।

कुरस असकील

जंगली प्याज़ पर गन्धम का आटा लपेट कर गरम भुभल में रखें, पक जाने पर आटा उतार कर भीतरी नरम भाग निकाल लें, और इसं के सम भाग मटर का आटा मिला कर पीस लें, और थोड़ी मात्रा में शराब मिला कर गुलाब तैल के संयोग से कुरस बनावें, दो मास के पश्चात प्रयोग करें, परन्तु ४ मास के पश्चात प्रयोग न करें।

गुण—जलोदर, श्वास, तथा विषों को नष्ट करता है।

कुरस ज़याबतीस

खुरफ़ाबीज, काहुबीज, प्रत्येक ७ तोला, तबाशीर ५ तोला, तुख़म हमाज़, गुलाबपुष्प, धनियां शुष्क, गिल अरमनी प्रत्येक ३

तोला, चन्दन सफ़ेद, गुलनार, समाक प्रत्येक २ तोला, कर्पूर आधा तोला, सब को कूट छान कर खुरफ़ा सबज़ के पत्र स्वरस से भावित कर टिकिया बनावें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—मूत्र की अधिकता तथा मधुमेह में उपयोगी है।

कुरस ज़रिशक

ज़रिशक ७॥ तोला, गुलाब-पुष्प २॥ तोला, कासनीबीज, खुरफ़ा-बीज, मग़ज़ तुख़म ख़यारैन प्रत्येक १॥ तोला, रेवन्दचीनी, बालछड़, प्रत्येक ६ माशा, सब को कूट छान कर इसपग़ोल के लुआब में गूंद कर टिकिया बनावें।

मात्रा—५ माशा।

गुण—संसत पैत्तिक ज्वर में उत्तम है, यकृत की उष्णता को नष्ट करता है।

कुरस सरतान कर्पूरी

कर्पूर केसूरी १ माशा, सन्दल सफ़ेद, सन्दल ज़रद, सन्दल सुरख़, प्रत्येक २ माशा, काहुबीज ३ माशा, गोंद कीकर, गोंद कतीरा, तबाशीर, गुलाबपुष्प प्रत्येक ४ माशा, मधुयष्टि, रबुलसूस प्रत्येक ५ माशा, निशास्ता, खुरफ़ा काला प्रत्येक सात माशा, मग़ज़ तुख़म कदू मधुर, मग़ज़ तुख़म खरपज़ा, ख़शख़ाशबीज, प्रत्येक ९ माशा, सरतान (केकड़ा जला हुआ) १ तोला, सब को कूट छान कर इसपग़ोल के लुआब से टिकिया बनावें।

मात्रा—७ माशा, प्रातः को अर्क गाऊज़बान से दें।

गुण—यक्ष्मा, रक्तपित्त, खांसी तथा जीर्ण ज्वर में उत्तम है।

कुरस तबाशीर

खुरफ़ाबीज, गुलावपुष्प, गिलारमनी, गुलनार, बंशलोचन, काहुबीज प्रत्येक १—१ तोला, सब को कूट छान कर जल से टिकिया बनावें।

मात्रा—५ तोला, अर्क गाऊज़बान १२ तोले के साथ दें।

गुण—मधुमेह में उत्तम है।

कुरस तबाशीर काबज़

वंशलोचन, गुलाबपुष्प, काहूबीज, कासनीबीज, खुरफ़ाबीज, समाक ६—६ माशा, गुलनार, सन्दल सफ़ेद, तुख़म अमाज़ ३—३ माशा, अफ़ीम १॥ माशा, सब को कूट छान कर गुलाब अर्क से टिकिया बनावें।

मात्रा—३ माशा।

गुण—पित्त अतिसार, तथा पैत्तिक जीर्ण ज्वरों में उत्तम है।

कुरस तबाशीर काफ़ूरी लोलवी

मुक्ता, तबाशीर, केकड़ा जला हुआ, ख़शख़ाशबीज, काहुबीज, खुरफ़ा बीज छिला हुआ, कतीरा १—१ तोला, कहरूबा शमई, रबुलसूस, गुलाबपुष्प की कलियां प्रत्येक ४ माशा, कर्पूर केसूरी ३ माशा, केशर, आबरेशम ६—६ रत्ती सब को कूट छान कर बारतंग सबज़ के जल से टिकिया बनावें।

मात्रा—३ माशा।

गुण—यक्ष्मा, रक्तपित्त, संग्रहणी, यकृत अतिसार, रक्त अतिसार, अतिसार युक्त जीर्ण ज्वर में उत्तम है।

कुरस तबाशीर मुलैयन

तबाशीर सफ़ेद २ तोला, तुरंजबीन १॥ तोला, मग़ज़ ख़यारैन, मग़ज़ कदू मधुर, निशास्ता, गोंद कीकर, गोंद कतीरा, ख़शख़ाशबीज सफ़ेद प्रत्येक ६ माशा, सब को कूट छान कर इसपग़ोल के जल से कुरस, बनावें।

मात्रा—७ माशा कुरस, १२ तोला अर्क गाऊज़बान के साथ।

गुण—जीर्ण ज्वर, यक्ष्मा, रक्तपित्त, खांसी, तृष्णा, विबन्ध को नष्ट करता है, श्वास नलिका को स्निगध रखता है।

कुरस ग़ाफ़स

असारा ग़ाफ़स ९ तोले, तबाशीर ११॥। तोला, गुलाब पुष्प १७॥ तोला, सब को कूट छान कर चूर्ण कर गोंद जल से कुरस बनावें।

मात्रा—७ माशा, अर्क गाऊज़बान से ।

गुण—कफज़ जीर्ण ज्वर, चार्तुथिक ज्वर तथा यकृत विकारों में उत्तम है ।

कुरस काफ़ूर

काहू बीज १० तोला, खुरफ़ा बीज ७।। तोला, तबाशीर, रबुलसूस ५—५ तोला, गुलाब पुष्प, धनियां २।।—२।। तोला, अकाकीया, सन्दल सफ़ेद, गिल अरमनी, गुलनार १—१ तोला, कर्पूर १।।। माशा, सब को कूट छान कर गुलाब जल से टिकिया बनावें ।

मात्रा—७ माशा, अर्क गाऊज़बान से ।

गुण—मधु मेह, वृक्क तथा मूत्राशय रोगों में उपयोगी है ।

(२) ज़रिशक, तबाशीर, गुलाब पुष्प ७–७ माशा, काहू बीज, कासनी बीज, गोंद कतीरा ३—३ माशा, मग़ज़ तुख़म ख़रपज़ा, मग़ज़ तुख़म कदू मधुर ५—५ माशा, सन्दल सफ़ेद, रबुलसूस २—२ माशा, कर्पूर १ माशा, कूट छान कर इसपग़ोल जल से टिकिया बनावें ।

मात्रा—७ माशा ।

गुण—यक्ष्मा, जीर्ण ज्वर, पाण्डु ज्वर सहित और पैत्तिक ज्वर में विशेष कर उपयोगी है ।

कुरस काफ़ूर लोलवी

मोती, तबाशीर, ८—८ माशा, चन्दन सफ़ेद, नीलोफ़र पुष्प, धनियां शुष्क, चन्दन सुरख़, खुरफ़ा बीज छिला हुआ, गुलाब पुष्प, मग़ज़ तुख़म कदू मधुर, मग़ज़ तुख़म तरबूज़ १—१ तोला, कतीरा, निशास्ता ८–८ माशा, कर्पूर केसूरी २ माशा, सब को कूट छान कर इसपग़ोल रस से टिकिया बनावें ।

मात्रा—४ माशा ।

गुण—पित्त ज्वर, रक्त पित्त, यक्ष्मा, में लाभप्रद है, साथ अतिसार भी हो, तो भी उपयोगी है ।

कुरस काकनज

मग़ज़ तुख़म ख़यारैन, हव्व काकनज, मग़ज़ बादाम छिले हुये, रब्बुलसूस, निशास्ता, गोंद कीकर, दमलखवैयन, कतीरा, कुन्दर, करफ़स बीज ५—५ तोला, अहिफेन ६ माशा, कूट छान कर जल से टिकिया बनावें।

मात्रा—५ माशा।

गुण—वृक्क तथा मूत्राशय के व्रण को भरता है, अश्मरी तथा रेत को बाहर निकालता है।

कुरस कहरूबा

धनिया शुष्क भुना हुआ, ख़शख़ाश बीज कृष्ण, ख़शख़ाश बीज सफ़ेद ६—६ तोला, कहरूबा, बुसद, मोती, ख़ुरफ़ा बीज प्रत्येक ५ तोला, हिरण शृंग जला हुआ, कुक्टाण्ड का ऊपर का सफ़ेद छिलका जला हुआ, गोंद कीकर, गोंद कतीरा, ३—३ तोला, कौड़ी जली हुई २ तोला, अजवायन ख़ुरासानी २ तोला, सब को कूट छान कर इसपग़ोल के जल से टिकिया बनावें!

मात्रा—५ माशा।

गुण—रक्तपित्त में अत्यन्त उत्तम तथा उपयोगी है।

कुरस गुल

गुलाब पुष्प, मधुयष्टि छिली हुई प्रत्येक ४ तोला, तबाशीर सफ़ेद, बालछड़, अफ़सनतीन २—२ तोला, तुरंजबीन ख़ुरासानी ३ तोला, कूट छान कर अर्क गुलाब के साथ टिकिया बनावें।

मात्रा—५ माशा, शरबत कासनी से प्रयोग करें।

गुण—कफ़ज़ जीर्ण ज्वरों में उत्तम है।

(२) गुलाब पुष्प २ तोला ४ रत्ती, असारा गाफ़स, तबाशीर, रब्बुलसूस प्रत्येक ३॥ तोला, सब को कूट छान कर अर्क गुलाब वा जल से टिकिया बनावें।

मात्रा तथा गुण—उपरोक्त।

कुरस गुलनार

गुलनार, गिलारमनी, गोंद कीकर १—१ तोला, गुलाब पुष्प, अकाकीया प्रत्येक ९ माशा, गोंद कतीरा ६ माशा, कूट छानकर गुल-नार के पानी से टिकिया बनावें।

मात्रा—४ माशा।

गुण—रक्तपित्त तथा श्वेत प्रदर में उत्तम है।

कुरस मास्कलबोल

माईं, अक़ाकीया, हरड़ बड़ी, धनियां भुना हुआ, गुलनार, गिलार-मनी, जुफ़ुत बलूत, मोड़ीयों बीज १—१ तोला, कूट छान कर जल से टिकिया बनावें।

मात्रा—५—५ माशा, प्रातः सायं जल से वा अर्क गाऊज़बान से प्रयोग करें।

गुण—बिन्दु २ मूत्र आने तथा विस्तर पर मूत्र निकल जाने के रोग में लाभप्रद है।

कुरस मुसलस

मुरमुकी, लावन, कर्पूर, अहिफेन, केशर, अजवायन खुरासानी, पोस्त बेख़ लफ़ाह (बेलाडोना की जड़ का छिलका) २॥—२॥ तोला, कुन्दर, अनज़रूत, आमला, गिलअरमनी ५—५ तोला, कूट छान कर गुलाब तथा काहु जल से टिकियां बनावें, १ टिकिया जल में घिस कर माथे पर लेप करें।

गुण—अर्धभेदक तथा अन्य शिरशूल में उत्तम है, निद्राप्रद है।

कुरस मुलैयन

हरड़ बड़ी, बहेड़ा, आमला, त्रिवृत, हरड़ काली १॥—१॥ तोला, सौंफ़, मस्तगी, उस्तोख़दूस, रेवन्दचीनी प्रत्येक ३॥ तोले, सकमुनीया ७॥ तोला सब को बारीक कर के १—१ माशा की टिकिया बना लें।

मात्रा—२ से ४ टिकिया जल से।

गुण—कोष्ठबद्धता नाशक है, उदर को शुद्ध करती है।

कुरस मुखदर

कर्पूर, लफ़ाह् की जड़ प्रत्येक १।।। माशा, फ़रफ़्यून, अहिफ़ेन, केशर, अजंवायन खुरासानी प्रत्येक ३।। माशा, मुरमुकी, उशक, कुन्दर, दारचीनी प्रत्येक ७ माशा, सब को कूट छान कर सबज़ धनिये और सबज़ काहु के जल से गूँद कर कुरस बनायें, आवश्यकता पर पैत्तिक शिरशूल में सिरका, सबज़ धनियां अथवा सबज़ काहु के जल में घिस कर मस्तक पर लेप करें, सरदी के कारण शिरशूल में करफ़स वा हिंज़ल के जल से घिस कर लेप करें, और यदि शिर शूल मिश्रित दोष से हो, तो गुलाब तैल में पीस कर लेप करें ।

गुण—प्रत्येक शिरशूल तथा अन्य पीड़ा में लाभप्रद है ।

कुरस बनफ़शा

बनफशा ३५ माशा, सकमूनीया भुना हुआ ४।। माशा, रबुलसूस, गोंद कतीरा, निशास्ता प्रत्येक ३।। माशा, सबको बारीक करके इसपग़ोल के लुआब से कुरस बनावें ।

मात्रा—४।। माशा ।

गुण—निमोनीया, कास, छाती की रूक्षता तथा रक्तपित्त में उत्तम है, पित्त को दस्तों द्वारा निकालता है ।

कुरस सरतान

कतीरा ७ माशा, रबुलसूस १०।। माशा, गिल अरमनी, गिल रूमीं, गुलाब पुष्प, निशास्ता प्रत्येक १४ माशा, शादनज अदसी धुली हुई, वंशलोचन, प्रत्येक १७।। माशा, कहरूबा, मोड़ीयों बीज प्रत्येक २१ माशा, सरतान (केकड़े) जले हुये ३१।। माशा, सब को कूट छान कर जल से टिकिया बनावें ।

मात्रा—४।। माशा ।

गुण—यक्ष्मा, रक्तपित में अत्यन्त उत्तम है ।

(२) केशर १।। माशा, रेवन्दचीनी १।।। माशा, अनार का छिलका वा अनार का गूदा, माजू सबज़ प्रत्येक ३।। माशा, रसौत, गुलाब पुष्प ७—७ माशा, असारा लीयालतीस, गिल अरमनी, गिल

मख़तूम, कहरूवा शमई प्रत्येक १०।। माशा, निशास्ता भुना हुआ १२। माशा, कुन्दर १४ माशा, सब औषध को बारीक चूर्ण करें, और इसपग़ोल को जल म उबाल कर लुआब निकाल कर पिसी हुइ औषध मिला कर ४।। माशा की टिकिया बनावें।

मात्रा—१ से दो कुरस।

गुण—रक्तपित्त, रक्त अतिसार, सर्व प्रकार के रक्त निकलने के रोग में लाभप्रद है।

कुरस अम्बर

अम्बर शहब ३।। तोला, मिश्री ७०तोला, अर्क गुलाब १ बोतल, अब मिश्री और अर्क गुलाब मिला कर साफ़ कर पाक करें, इस के पश्चात पाक में अम्बर डालकर घोटे से खूब घोटें, और थोड़ा २ गुलाब डालते रहें, जब सफ़ेद हो जाये, और उस का पाक टिकिया बनाने के योग्य हो जाये तो टिकिया बना लें, यदि अम्बर का दसवाँ भाग स्वर्ण जल वा स्वर्ण वर्क और मिला दें, तो और गुणप्रद होगा।

मात्रा—३ से ५ माशा।

गुण—हृदय, मस्तिष्क, और सब शरीर को बल देता है, रोगोपरान्त क्षीणता में बहुत लाभप्रद है।

कुरस अफ़सनतीन

मंजीठ १४ माशा, बालछड़, अज़ख़र, रेवन्दचीनी, तज, चिरायता, प्रत्येक १०।। माशा, मुरमुकी, अनीसून, मस्तगी, ज़रावन्द गोल, तगर, अफ़सनतीन, सोया बीज, करफ़स बीज प्रत्येक ७ माशा, सब को कूट छान कर सकंजबीन के साथ टिकिया बनावें।

मात्रा—४।। माशा।

गुण—उदर शूल में अत्यन्त उत्तम है।

कुरस मस्तगी

ऊद ख़ाम (अपक्व), मस्तगी प्रत्येक ७ माशा, पोस्त बीरून पिस्ता (पिस्ता के बाहर का छिलका) १४ माशा, गुलाब पुष्प, आमला घन सत्व प्रत्येक १७।। माशा, सब को कूट छान कर कुरस बनावें।

मात्रा——७ माशा, शीतल जल से ।

गुण ——वमन तथा हिक्का में लाभप्रद है ।

कुरस माज़रियून

कासनी बीज ३५ माशा, गुलाब पुष्प, मग़ज़ तुख़म कद्दु, मग़ज़ तुख़म ककड़ी प्रत्येक ३५ माशा, माज़रियून, ग़ारीकून, ग़ाफ़सघन सत्व (असारा) प्रत्येक ६॥ माशा, सब औषध को कूट छान कर दस कुरस बनावें, और प्रतिदिन १ कुरस प्रयोग करें ।

गुण——जलोदर में उत्तम है ।

कुरस ख़रदल

हालों, लहसुन मूल दोनों को सिरके में वा जल में एक दिन रात भिगो रखें, दूसरे दिन १ सेर सुदाब शुष्क डाल कर एक दिन और पड़ा रहने दें, तीसरे दिन सब औषध को कूट कर कुरस बनायें, और नीमगरम तन्दूर पर रख कर शुष्क करें, शुष्क होने के साथ २ वह भुन कर जल जायें, तो फिर कूट कर कुरस बनायें ।

मात्रा——७ माशा, सकंजबीन के साथ प्रातः प्रयोग करें ।

गुण——प्लीहा के वातिक शूल में उपयोगी है ।

कुरस कज़माज़ज

कज़माज़ज १८ माशा, मिरच सफ़ेद, सम्भल, तगर, उशक प्रत्येक ९ माशा, प्रथम उशक को जंगली प्याज़ के सिरके में हल करें, बाकी औषध को कूट कर इसी सिरके में मिला कर कुरस बनावें ।

मात्रा——४॥ माशा, सकंजबीन से ।

गुण——प्लीहा की सख़ती को नष्ट करता है ।

कुरस बनफ़शा मुसहल

बनफ़शा पुष्प ३५ माशा, त्रिवृत, मस्तगी रूमी, गुलाब पुष्प प्रत्येक १७॥ माशा, रबुलसूस १२। माशा, सकमूनीया भुना हुआ १०॥ माशा, कतीरा सफ़ेद १॥। माशा, कूट छान कर जल से टिकिया बनावें ।

मात्रा—पौने ९ माशा, शरबत बनफ़शा से ।

गुण—आन्त्रशूल को नष्ट करता है, कास, श्वास, कफ़ ज्वर में अत्यन्त उत्तम है, विरेचक है ।

कुरस ज़हफ़रान

केशर, चन्दन सफ़ेद प्रत्येक ७ माशा, गोंदकीकर, खाँड सफ़ेद, गुलाब पुष्प प्रत्येक १७।। माशा, त्रिवृत छिला हुआ ७० माशा, सब को कूट छान कर जल से टिकिया बनावें, और छाया में शुष्क करें ।

मात्रा—४।। माशा, जल से प्रयोग करें ।

गुण—विबन्ध नाशक है, जले हुये पित्त को निकालता है दिल की घबराहट और तृष्णा को नष्ट करता है ।

कुरस बजूरी

मोड़ीयों बीज, सौंफ़, अफ़ीम, अजवायन, करफ़स जड़, अजवायन खुरासानी सफ़ेद, दोको प्रत्येक दो तोला ८ माशा, अफ़ीम २१ माशा, सब औषध को कूट पीसं कर शरबत रेहां से टिकिया बनावें । छमास बाद प्रयोग करें ।

मात्रा—पौने दो माशा ।

गुण—प्रवाहिका, रक्त अतिसार, आन्त्र व्रण, अर्श, रक्त प्रदर, मरोड़ में लाभप्रद है, दीपक पाचक है ।

शिलाजीत कुरस

बंग भस्म, शिलाजीत सत्व, कतीरा, गिलारमनी, ख़शख़ाश सफ़ेद, गोंद कीकर, मग़ज़ बहीदाना, मग़ज़ तुख़म ख़यारैन, तुख़म ख़ुरफ़ा छिला हुआ, मग़ज़ तुख़म तरबूज़, मग़ज़ तुख़म कदू मधुर, सब को सम भाग लेकर बारीक करें, और इसपग़ोल के लुआब से कुरस बनावें ।

मात्रा—१ माशा से २ माशा, गौ दुग्ध लस्सी से लें ।

गुण—सुज़ाक में लाभप्रद है ।

बनफ़शा कुरस

बनफ़शा, गोंद कतीरा, मग़ज़ बादाम मधुर, मग़ज़ तुख़म कदू मधुर, मग़ज़ तुख़म ककड़ी, प्रत्येक १७।। माशा, रबुलसूस, निशास्ता,

गिलअरमनी प्रत्येक १०।। माशा, सम्भल ३।। माशा, मस्तगी ४।। माशा, सब को कूट छान कर कुरस बनावें।

मात्रा---४।। माशा।

गुण---ज्वर के साथ जब खांसी होती है, उस में उत्तम है।

कुरस मुबारक

गुलाब पुष्प, तुरंजबीन प्रत्येक १७।। माशा, कासनी बीज १४ माशा, काहु बीज १२। माशा, ख़रपजा बीज १०।। माशा, मग़ज़ तुख़म ख़यारैन, तबाशीर प्रत्येक पौने ९ माशा, मग़ज़ तुख़म कदू मधुर ७ माशा, रबुलसूस ४ माशा, कर्पूर ९ रत्ती, सब औषध को कूट छान कर जल से कुरस बनावें।

मात्रा---२ से ३ माशा।

गुण---यक्ष्मा, जीर्ण ज्वर, सन्निपात ज्वर तथा अन्य पैत्तिक ज्वरों और पाण्डु में लाभप्रद हैं।

कैरूती (लेप) (Liniments-Embrocation)

कैरूती वास्तव में मोम और तैल के मिश्रण को कहते हैं, जो मरहम के रूप की होती है, और पीड़ा के स्थान पर पीड़ानिवारणार्थ मर्दन की जाती है, मंदन के पश्चात सेक कर उष्ण रूई बांध दी जाती है। निर्माण विधि यह है, कि तैल को अग्नि पर उष्ण कर के मोम मिला दें, मोम पिघल जाने पर दोनों को घोंट कर एक जीव कर लें, यह कैरूती सादा कहलाती है, परन्तु मिश्रित योग में और कई औषध भी पीड़ा तथा शोथा निवारण के लीये डाले जाते हैं।

कैरूती आरद करसना

आरद करसना (मटर का आटा), (निष्पाव का आटा) मेथी का आटा १।।-१।। तोला, कलौंजी, मधु यष्टि ७---७ माशा, अकरकरा ५ माशा, सब को बारीक पीस लें, फिर मोम को सोसन तैल, चम्बेली तैल अथवा मीठा तिल तैल में डाल कर पिघलायें, पिघल जाने पर उतार कर औषध चूर्ण को थोड़ा २ डालकर खूब घोटें, ताकि सब एक जीव हो जाये।

प्रयोग विधि—आवश्यकता पर नीमगरम (अंर्धोष्ण) मालिश करें, यदि एलवा (मुसब्बर) और केशर भी मिला दिये जायें, तो अधिक उपयोगी होगा।

गुण—निमोनीया, वक्षशोथ में लाभप्रद है, शोथ तथा पीड़ा नाशक है।

कैरूती आरद बाकला

बनफ़शा, गन्दम का छान, जौ का आटा, बाकला का आटा, बाबूना, अकलीलमलक, ख़तमी पुष्प सम भाग ले कर कूट छान लें, और मोम तैल में (जो कि बनफ़शा के तैल और मोम को पिघला कर बनाया गया हो) मिला कर एक ज़ीव करें।

नोट—यदि दोष गाढ़े हों, तो इसी योग में अलसी तथा मेथी का चूर्ण भी बारीक करके मिलावें, और करनब का जल भी मिला लें।

गुण—अर्धोष्ण मालिश करें, निमोनीया तथा वात रोगों में लाभप्रद है।

कैरूती करनब

चकन्दर स्वरस, शलग़म स्वरस, करनब पत्र स्वरस, ख़तमी पुष्प स्वरस, लुआब बनफ़शा मोम सफ़ेद, प्रत्येक २॥ तोला, गुलाब तैल १२ तोला, प्रथम मोम को गुलाब तैल में पिघलायें, पिघल जाने पर ऊपर के स्वरसों को थोड़ा २ डाल कर एक जीव करें।

गुण—हाथ, पैर तथा होंट फटने पर उपयोगी है, उक्त अंग पर मालिश करें।

कैरूती आरद जो वाली

बनफ़शा, चन्दन सफ़ेद, जौ का आटा, ख़तमी बीज, बाबूना पुष्प, नाखूना, गन्धम की भूसी, सब को बारीक करें, और मोम को बनफ़शा तैल में पिघला कर औषध चूर्ण डाल कर घोट कर एक जीव करें, यदि शोथ को शीघ्र पकाना हो तो बाकला और मेथी का आटा भी डालें, छाती तथा पीड़ा स्थान पर मर्दन कर सेंक करें।

गुण—निमोनीया में उपयोगी है, शोथ तथा पीड़ाको नष्ट करता है, कफ़ को ख़ारज करता है।

कैरूती बाबूना वाली

बनफ़शा पुष्प, बाबूना, नाख़ूना आवश्यकतानुसार लेकर जल में क्वाथ करें, और छान कर बादाम तैल १० तोला में ४ तोला मोम पिघला कर एक तोला इसपग़ोल का लुआब और दो तोला ख़तमी पुष्प का लुआब और औषध का क्वाथ मिलाकर इतना पाक करें, कि केवल मोम तैल बाकी रह जाये, आवश्यकता पर अर्धोष्ण मालिश करें।

गुण—उपरोक्त ।

कैरूती कतीरे वाली

कतीरा ४॥ माशा लेकर बारीक करें, अब ५ माशा मोम को १॥ तोला गुलाब तैल में पिघला कर कतीरा का चूर्ण इस में मिलावें, और खूब घोंट दें, यदि अधिक उष्णता पहुंचानी है, तो गुलाब के स्थान पर नरगस तैल, शिरसतैल, वा चम्बेली तैल का प्रयोग करें ।

गुण—निमोनीया में लाभप्रद है ।

कैरूती मको वाली

मको शुष्क, अलसी, ख़तमी बीज प्रत्येक ६ माशा सब को १ पाव जल में उबालें, आधा भाग रहने पर छान कर मोम सफ़ेद और गुलाब तैल डाल कर पकायें, क्वाथ के जल जाने पर उतार लें ।

गुण—उपरोक्त है ।

कैरूती सिल

ग़रीलमस्क (मच्छली का सरेश), मग़ज़ बनौला १—१ तोला, रासन बीज, मस्तगी प्रत्येक ६ माशा, नीम पत्र स्वरस, मेहन्दी पत्र स्वरस, प्रत्येक १० तोला, घी और बादाम तैल १॥—१॥ तोला, अलसी तैल १ तोला, गुलाब तैल ६ माशा, अफ़ीम, ऊंट की हड्डी जली हुई ३॥ माशा, मोम पीत २ तोला, प्रथम मोम और तैल को एक साथ पिघलायें, स्वरसों को डाल कर जला लें, पीछे बाकी सब औषध का बारीक चूर्ण डालकर घोट लें, आवश्यकता पर थोड़ी कैरूती, ख़शख़ाश तैल में हल कर सीना पर मालिश करें, और चर्म परमाण खिलायें ।

गुण—सिल (रक्तपित सहित यक्ष्मा) में लाभप्रद है ।

कुहल (सुर्मे अंजन) (Alcohol)

सुरमा औषध के उस बारीक चूर्ण को कहते हैं, जो सलाई आदि से आंख में डाला जाता है, युनानी धारणानुसार इसका अविष्कार करने वाला हकीम फ़ैशाग़ोरस हुआ है, जिस ने सर्प को देखकर इस का अविष्कार किया, इस ने देखा कि सांप का बच्चा अन्धा होता है और वह सौंफ़ के वृक्ष से अपनी आंखें रग़ड़ कर रोशन करता है। सुरमा बनाते समय निम्न बातों का ध्यान आवश्यक है।

(१) आंख एक मृदु तथा सुकुमार अंग है, ज़रा सा भी कष्ट इस के लिये बड़े दुख का कारण होता है, इस लिये जो भी सुरमा बनाया जाया, वह अत्यन्त बारीक होना चाहिये, खरल करने के पश्चात बारीक रेशमी वस्त्र से छान कर कांच की शुद्ध शीशी में सुरक्षित रखें।

(२) खरल करते समय धूल धप्पा से सुरक्षित स्थान पर बैठना चाहिये और खरल को ढांक कर रखें।

(३) यदि सुरमा को किसी अर्क से भावना देनी हो, तो थोड़ा २ अर्क डाल कर खरल करें, यहाँ तक कि सब अर्क समाप्त हो जाये।

(४) यदि कुहल में सुरमा भी हो, तो उसे शुद्ध कर के इतना खरल करें कि उस की चमक न रहे, फिर बाकी औषध का चूर्ण डालें।

(५) कुहल के सब औषध को शुद्ध कर के पृथक २ पीस कर फिर तौल कर मिला कर खरल करें, तो अधिक अच्छा है।

(६) यदि सुरमा में तूतीया, शादनज, अनज़रूत, संगबसरी जैसी औषध हों, तो शुद्ध करके डालें।

(७) सुरमा सदैव न घिसने वाले खरल में खरल करें, संग समाक का खरल मिले तो अति उत्तम है।

(८) शीतल सुरमा पित्त रोग में ग्रीष्म ऋतु में तथा उष्ण काल में प्रयोग करने चाहिये, इस के विपरीत उष्ण गुण वाले सुरमे शीत रोग तथा शीत समय प्रयोग करने चाहिये।

(९) सुरमा लगाने के लीये, सोना, चाँदी, यशद, ज़रिशक जड़, तथा नीम की लकड़ी की सलाई प्रयोग करनी चाहिये।

कुहल ज्वाहर

कर्पूर १ माशा, कस्तूरी ख़ालिस २ माशा, लवण सैंधव १४ माशा, लौंग, छलीड़ा, प्रत्येक १४ माशा, इन्द्राणी लवण, तेजपात, कलई का सफ़ेदा, काली मिरच, बालछड़, सुरमा असहफ़ानी, सुरमा सुरख़, केशर, बुसद अहमर प्रत्येक २। तोला, ताम्र जला हुआ, मामीरान चीनी, मुरमकीं शुद्ध, नवसादर, हलदी प्रत्येक ३।। तोला, हरड़, मोती, प्रत्येक ४।। तोला, मुसब्बर, असारा मामीशा, याकूत, फ़ैरोज़ा, प्रत्येक ५ तोला, १० माशा, समुद्रझाग, स्वर्ण मैल, चाँदी मैल, प्रत्येक १२ तोला, सब औषध को बारीक पीस कर दो बोतल अर्क गुलाब से भावना दें।

गण—यह सुरमा ज्योतीको तेज़ करता है, ऐनक की आवश्यकता नहीं पड़ती, रात्री को सोते समय लगावें।

कुहल बियाज़

ताम्र जला हुआ, शादनज मख़सोल (धुला हुआ) प्रत्येक ५ माशा, चाँदी का मैल २ माशा, जंगार, मुसब्बर, बूरा अरमनी १–१ माशा, काली मिरच, पिप्पली, केशर, प्रत्येक ४ रत्ती, सब को खरल कर सुरक्षित रखें।

गुण—धुन्ध, जाला, फोले और नाखूना में उपयोगी है।

कुहल जरब

प्रथम ख़ालस ताम्र के पैसों को शोरा वाली मिट्टी से धो कर साफ करें और अंजनहारी के घर की मिट्टी को जल में गूंद कर पैसों पर मोटा २ लेप कर के छाया में शुष्क करें, अब खड़िया मिट्टी का बोता बना कर पैसों को ऊपर तले रख दें, और ऊपर से पिघला हुआ जस्त डाल कर बन्द कर दें, और गढ़े में रख कर बीस सेर ऊपलों की अग्नि दें, शीतल होने पर निकाल लें, काले रंग के पैसे निकलेंगे, इन को निंबू रस में खरल कर सुरमा की तरह प्रयोग करें।

गुण—कुक्करों में अत्यन्त उपयोगी है।

कुहल चिकनी दवा

साबन ६ तोला, नीला थोथा ३।। माशा, राल ३।। माशा, साबुन को चाकु से बारीक कर लें, और लोहे के बरतन में डाल कर आग पर

रख, जब साबुन गलने लगे तो नीलाथोथा को बारीक कर के साबुन में मिश्रित कर लोहे के दस्ते से खूब हल करें, जब सावुन जलवत पतला हो जाये, तो राल का बारीक चूर्ण डाल कर दस्ते से खूब हल करें, आँच तेज़ कर दें, जब साबुन शुष्क हो कर काला हो जाये, तो बरतन को आग से पृथक कर के शीतल होने पर औषध निकाल लें।

गुण—मोतीयाबिन्दु की प्रारम्भिक अवस्था में उपयोगी है, पानी जाने को रोकता है, जाला, फोला को काटता है, धुन्ध में लाभप्रद है, खशखाश बीज समान औषध सीपी में लेकर ज़रा सा जल डाल कर मिला कर सलाई से सोते समय लगाबें।

कुहल रोशनाई

पिप्पली, एलवा, बालछड़, लौंग, शादनज, तोबालमिस प्रत्येक १५ माशा, सोनामक्खी, तमालपत्र, बूरा अरमनी, प्रत्येक १४ माशा, मिरच काली, मिरच सफेद, समुद्र झाग प्रत्येक १०॥ माशा, सोंठ, कालादाना प्रत्येक ७ माशा, केशर, नवसादर, प्रत्येक ३॥ माशा, सब को बारीक ख़रल सुरमा बनावें।

गुण—यह ज्योती की कमी, आंख की ख़ारश, और नाखूना में लाभप्रद है।

कुहल बराये दर्द चशम

शुद्ध अनज़रूत, शुद्ध चाकसू छिला हुआ, सफ़ेद काशग़री, समुद्र-झाग ३—३ माशा, रसौंत २ माशा, खाँड सफ़ेद २ तोला, सब को बारीक करें।

गुण—चक्षु की पीड़ा में उत्तम है, सलाई से आंख में लगावें।

कुहल रमद

यशद, सुरमा कृष्ण २०—२० माशा, जंगार, अहिफेन ३—३ माशा, सफ़ेदा काशग़री, समुद्र झाग प्रत्येक ४ माशा, सब औषध को बारीक पीस लें, आवश्यकता पर सलाई से आंख में लगावें।

गुण—आँख दुखने में विशेष कर जब इस का कारण प्रतिश्याय हो, इस के लीये विशेष उपयोगी है।

कुहल मुक्ता

सुरमा असहफ़ानी २ तोला, मोती ६ माशा, मरजान, शादनज-अदसी प्रत्येक ४ माशा, सब औषध को पृथक २ अर्क गुलाब में खरल करें, फिर सब को मिला कर सुरमा तय्यार करें, यदि इस में ६ माशा संगबसरी और मिलावें, तो अधिक गुणकारी होगा, आवश्यकता पर सलाई से लगावें।

गुण—जाला तथा आंख दुखने में लाभ प्रद है।

कुहल रोशनाई

सुरमा असहफ़ानी ३० तोला, संगबसरी १ तोला, मोती २ तोला, मामीरान चीनी ६ माशा, मरजान (प्रवाल) १। तोला, सोने के वर्क ४ माशा, वर्कों के सिवाये सब औषध के बारीक चूर्ण को हरीतकी क्वाथ में ४ दिन तक खरल करें, फिर ४ दिन तक अर्क गुलाबमें खरल करें, नवें दिन सोने के वर्क मिला कर खरल कर सुरक्षित रखें।

गुण—ज्योती को तेज करता है, आंख के सबं रोगों में उत्तम है।

कुहल सुबल

ताम्र जला हुआ, शादनज धुला हुआ, ताम्र का मैल, प्रत्येक ५ माशा, जंगार, मुसब्बर, बूराअरमनी १—१ माशा, काली मिरच, पिप्पली ४—४ माशा, केशर २ रत्ती, सब को कूट छान कर बारीक करें।

गुण—जाले को दूर करता है।

कुहल सुबल शबकोरी

नवसादर, फटकड़ी, दोनोंको पृथक २ भून लें, सम भाग ले बारीक कर चूर्ण करें, सुरमा की तरह लगावें।

गुण—रतोंधी और जाले के लीये उपयोगी है।

कुहल सदफ़

सीप जले हुये २। तोला, नीला थोथा भुना हुआ तथा धुला हुआ दो तोला, खाँड सफ़ेद १ तोला, सब को सुरमे की भांति खरल कर सुरक्षित रखें।

गुण—ज्योती को तेज़ करता है, आंख की लाली को काटता है और आंख को शीतल करता है।

कुहल कर्पूर

मिरच काली १४ माशा, पिप्पली १४ माशा, केशर १४ माशा, बालछड़ १४ माशा, रसौंत सात माशा, कर्पूर ३ माशा, सब को सुरमा की भांति खरल करें।

गुण—आंख की गरमी, सुरखी को दूर करता है, प्रातः सायं सलाई से आंख में लगावें।

कुहल गुल कुंजद

तिल पुष्प कली, चम्बेली पुष्प कली, काली मिरच प्रत्येक ४०० नग, फटकड़ी भुनी हुई ३॥ तोला, खूब खरल कर सुरमा बना लें।

गुण—आंख के जाले, फोले, नाख़ूना को नष्ट करता है।

कुहल माजू

शादनज अदसी, तेजपत्र, प्रत्येक ९ माशा, रूई जली हुई, माजू ३—३ माशा, पिप्पली, दमलख़वयैन १॥—१॥ माशा, काकला (इलायची), कस्तूरी प्रत्येक ३ रत्ती, कर्पूर १ रत्ती, सब को खूब खरल कर सुरक्षित रखें, प्रातः सायं सलाई से लगावें।

गुण—नेत्रों को बल देता है, ढलका, ख़ारश के लीये उपयोगी है।

कुहल ज़हफ़रानी

केशर, बालछड़ प्रत्येक सात माशा, नवसादर पौने दो माशा, पिप्पली, मिरच सफ़ेद ४—४ रत्ती सब को बारीक पीस कर सुरमा बनावें, और सोते समय आंख में लगावें।

गुण—आंख की ख़ारश और पानी आने में लाभप्रद है।

कुहल शाहजानी

कर्पूर २ रत्ती, केशर, तेजपात, कस्तूरी प्रत्येक ४॥ माशा, तोतीया किरमानी भुना हुआ तथा धुला हुआ तीन तोला, सुरमा असहाफ़ानी

४।। तोला, सब को बारीक पीस कर मेंघ के जल से खूब खरल कर शष्क करें।

गुण—यह सुरमा नेत्रों की रक्षा के लिये अत्यन्त उपयोगी है।

कुह्ल मकवी बसर

सुरमा असहफ़ानी ३ तोला, मोती १।। तोला, मरजान (प्रवाल) ५ तोला, अपक्व आबरेशम कुतरा हुआ ५ माशा, मामीरान चीनी, संगबसरी, मग़ज़ तुख़म नीम, कर्पूर प्रत्येक ५ माशा, स्वर्ण वर्क, चाँदी वर्क ५–५ पत्र, सब औषध को बारीक पीस कर, सौंफ़ अथवा गुलाब अर्क में तीन दिन तक खरल कर सुरक्षित रखें। सोते समय प्रयोग करें।

गुण—नेत्र ज्योती को बढ़ाता है।

कुह्ल महमूल

यशद ५ तोला ४ माशा, सुरमा असहफ़ानी १४ माशा, चम्बेली की अपक्व कली ७ माशा, संगबसरी ५ माशे, मामीरान चीनी, मिरच सफ़ेद, दाना मोठ सफ़ेद १–१ माशा, प्रथम यशद को लोहे के कड़छे में पिघला कर चम्बेली के पुष्प का बारीक चूर्ण उस पर चुटकी २ डालते जायें, और लोहे की सीख़ से चलाते जायें, यशद की भस्म हो जायेगी, अब इस भस्म को छान कर बाकी औषध चूर्ण डाल कर अर्क गुलाब से खरल करें, जितना अर्क गुलाब से खरल करेंगे, उत्तम रहेगा (भस्म छानने के पश्चात यदि कुछ कर्ण रह गये हों, तो उन को दुबारा उसी विधि से भस्म करें)।

गुण—नेत्र ज्योती को बढ़ाता है, मोतीयाबिन्दु में उत्तम है। ढलका और नेत्र के अंधेरे पन को दूर करता है।

कुह्ल

कस्तूरी ४ रत्ती, अण्डे के छिलके धुले हुये जलाये हुये, रत्नजोत, सोनामखी १—१ माशा, संगबसरी २ माशा, केशर ४ माशा, सब को बारीक पीस सुरमा तैयार करें।

गुण—जाले तथा धुन्ध में उत्तम है।

कुहल अज़ीज़ी

हिन्दी लवण, समुद्र झाग, नक्सादर प्रत्येक ५। माशा, स्वर्ण मैल, ताम्र मैल, नीला थोथा, लौंग, मुसब्बर, फरंजमुशक के पत्र प्रत्येक ३॥ माशा, कस्तूरी ६ रत्ती, सब को यथा विधि बारीक पीस कर सुरमा तैयार करें।

गुण—नेत्र के सब रोगों में उत्तम है।

कुहल

तोतीया किरमानी धुला हुआ ५ तोला १० माशा को मरज़न-जोश के निथरे हुए स्वरस में भिगो कर शुष्क कर लें, फिर सोंठ,मिरच, पिप्पली, मामीरान चीनी प्रत्येक ७ माशा, नवसादर २॥ माशा पीस कर सौंफ़ के जल में खरल कर शुष्क कर रेशमी कपड़े में छान कर सुरक्षित रखें।

गुण—मोतीया विन्दु को लाभ देता है, ज्योती को बढ़ाता है।

(२) सोनामखी की राख, ताम्र की भट्ठी का धुआँ, सोने की मैल १–१ भाग, मिरच आधा भाग, सब को खरल कर पुरानी शराब में भिगो कर शुष्क करें, फिर सौंफ़ जल से भावित कर शुष्क करें।

गुण—उपरोक्त।

कुहल साज़ज

सुरमा असहफ़ानी, रोपामखी १४—१४ माशा, स्वर्ण मैल, मोंगे की जड़, हर एक सात माशे, तेजपात्र ३॥ माशा, मोती, केशर, प्रत्येक १।।। माशा, कस्तूरी १ माशा, सब को कूट छान कर सुरमा तैयार करें।

गुण—कहते हैं कि ऐतवार और बुध वार यदि स्वर्ण की सलाई से इसे आंख में डालें, तो नेत्र कभी कमज़ोर नहीं होंगे, इस के सिवाये सफ़ेदी परदा, ढलका तथा आंख की खुजली में उत्तम है।

सन्यासी कुहल

मामीरान ७ माशा, यशद, लौंग, संगबसरी, साग चोलाई प्रत्येक २ तोला ४ माशा, मिरच काली ४ तोला ८ माशा, नीम के सबज़ पते,

घीक्वार के पते १०—१० पत्र, लौंग, और मरिच को पृथक पीस कर रखें, यशद को लोहे के कड़छे में तीव्र अग्नि पर पिघला कर लवंग के क्वाथ में ७ बार बुझावें, फिर पिघला कर घृतकुमारी के रस में ७ बार बुझावें, इस के पश्चात लौह के दस्ते से रगड़ें, ताकि यशद राख हो जाये, अब इस में मामीरान, संग बसरी पीस कर मिलावें, और मिरचचूर्ण मिला कर बारीक पीस कर सुरमा तैयार करें।

गुण—नेत्र ज्योती बढ़ाने में अतीव उत्तम है।

नेत्रपीड़ा हर लेप (घरहा)

निंबू काग़ज़ी आध सेर, फटकड़ी आध पाव, अहिफेन ३॥ तोला, पहिले फटकड़ी को लौहपात्र में भून लें, इस के बाद अफ़ीम मिलावें, फिर थोड़ा २ निंबू रस डाल कर दस्ते से घोटें, ताकि सब एकजीव हो जाये, और निंबू रस भी सारा जज़्ब हो जाये, तो गोलीयाँ बनाने के योग्य होने पर गोलीयां बना लें, आवश्यकता पर गोली जल में घिस कर थोड़ा उष्ण कर नेत्र के चारों ओर लगावें, और नेत्र में भी डालें।

गुण—आंख दुखने, चक्षू पीड़ा, ढलका, तथा आंख की सुरखी में अत्यन्त उत्तम है।

सियाल औषध द्रव (Liquids)

कबरीयत सियाल

गन्धक आमलासार ५ तोला, सीप भस्म १० तोला, दोनों को बारीक करें, और दो सेर जल में हल कर के आतशी शीशी में भर कर मृदु अग्नि दें, एक पाव जल शेष रहने पर निथार कर फिलटर करें, आवश्यकता पर २ बिन्दु जल में डाल प्रयोग करें।

गुण—भूख बढ़ाती है, रक्त दोष को निवृत करती है।

नकरा सयाल

चांदी बुरादा १ तोला, शोरा तेज़ाब ५ तोला, जल ३ तोला सब को मिला कर मृदु आंच पर रखें, पिघलने पर उतार कर छान लें, और १० भाग और जल मिला कर बोतल में भर दें।

मात्रा—४ बूंद, जल में मिला कर प्रयोग करें।

गुण—शरीर को बल देता है ॥

फौलाद सयाल

बुरादा फौलाद शुद्धको तेज़ाब शोरा ३ भाग, जल १ भाग में मिला कर अग्नि पर रखें, हल होने पर उतार कर छान कर १० भाग और जल मिला कर बोतल में डाल दें।

मात्रा—५ बिन्दु, जल में मिला कर प्रयोग करें।

गुण—आमाशय, यकृत को बल देता है, रक्तहीनता को नष्ट करता है।

कर्पूर सयाल

कर्पूर ख़ालिस १ तोला, रेकटीफाईड सिपिरट ४ तोला, दोनों को एक शीशी में बन्द कर के रखें, कर्पूर हल हो जायगा।

मात्रा—३ बूंद से ५ बूंद, २ तोले जल में मिला कर प्रयोग करे।

गुण—विसूचिका, और आध्मान में उपयोगी है।

मरवारीद सयाल

मरवारीद १ माशा में निंबू रस थोड़ा २ मिला कर खरल करें, जब मोती हल हो जायें, तो अच्छी तरह से छान लें।

मात्रा—५ बूंद, अर्क गुलाब १ तोला में मिला कर प्रयोग करें।

गुण—हृदय तथा मस्तिष्क को बल देता है, शारीरिक क्षीणता को नष्ट करता है, मोतीझरा ज्वर में उपयोगी है।

मालज़हब स्वर्ण जल

तेज़ाब शोरा ३ भाग, तेज़ाब लवण ४ भाग, दोनों को एक बड़ी शीशी में डाल दें, और शीशीका मुख किसी कदर खुला रखें, अब इस तेज़ाब में से १ तोला ले कर १ माशा स्वर्ण डाल दें, कुच्छ समय पश्चात स्वर्ण हल हो जायगा, फिर इस में ३ तोला और जल मिला दें।

मात्रा—३ से ५ बूंद, मालहम अम्बरी ५ तोला में मिला कर प्रयोग करें।

गुण—शारीरिक क्षीणता, तथा स्तम्भक दुर्बलता को दूर करता है यक्ष्मा में भी लाभप्रद है।

नवसादर स्याल (नृसार द्रव)

बिना भुझा चूना ४ सेर लेकर इस में आधा भाग चूना एक मिट्टी की हाण्डी में बिच्छावें और उस पर नवसादर देसी १ पाव भर रख कर ऊपर से बाकी २ सेर चूना डालें, और हाण्डी के मुख पर एक ढकना रख कर कपरौटी करें, इस के बाद हाण्डी के नीचे अग्नि ४ प्रहर तक जलायें, शीतल होने पर नवसादर को निकाल लें, और चूने को १० सेर जल में घोल कर बार २ हिलायें, और रख दें, २४ घण्टे बाद ऊपर का निथरा पानी लेकर इस में बाकी नवसादर भी हल करें, अग्नि पर रख कर शुष्क करें, केवल लवण रह जाने पर चीनी की तशतरी में डाल कर रात्री को शबनम पर रखें, सब नवसादर द्रवित हो जायगा।

गुण—प्लीहा तथा यकृत में उत्तम है, दीपक पाचक है, कफ़ स्रावी है।

(२) नवसादर बारीक कर के हाण्डी में रखें, दूसरी हाण्डी इस के ऊपर रख कर संधि बन्द कर के अग्नि पर रख कर जौहर उड़ायें, शीतल होने पर जौहर को निकाल कर जल में घोल लें और फिलटर पेपर से छान लें।

मात्रा—५ बिन्दू, भोजन के बाद।

गुण—उपरोक्त।

कुश्ता जात (भस्म)

(Reduced and Calcinied Metals)

कुश्ता उस अल्प मात्रा तथा तीव्र गुणकारी औषध को कहते हैं, जो किसी धातु (सुवर्ण, चांदी, बंग आदि) वा उपधातु (हिंगुल, हड़ताल, पारद आदि) वा हिजरियात (मूल्यवान पाषाण) को विशेष विधि से अग्नि द्वारा बनाते हैं। भस्म को यूनानी चिकित्सा में मक्कलस और भस्म बनने को तक्कलीस कहते हैं। भस्म बनाने की विधियों से वैद्य लोग भलीभांति परिचित हैं। परन्तु फिर भी युनानी हकीम जिन

विशेष विधियों से भस्में बनाते हैं, हम उन का भी उल्लेख कर देते हैं। ता कि वैद्य लोग इस से भी लाभ उठा सकें।

भस्म बनाते समय अधोलिखित बातों का ध्यान रखें :—

(१) जिस वस्तु की भस्म बनानी हो वह उत्तम हो। और भली प्रकार यथाविधि शुद्ध की गई हो।

(२) भस्म बनाने में यदि किसी बूटी का स्वरस डालना हो, तो उस बूटी का स्वरस निकाल कर और निथार कर प्रयुक्त किया जाये। किसी औषध को यदि किसी बूटीके रस में खरल करके टिकिया बनाई गई हो, तो उसे अग्नि देने से पहले भली प्रकार शुष्क कर लेना चाहिये।

अपक्व और पूर्ण भस्म को पहिचानने की विधि—

(१) एक ग्लास में पानी भर थोड़ी सी भस्म जल में डालो, यदि भस्म नीचे बैठ जाये तो अपक्व है, और यदि तैरती रहे, तो सिद्ध है।

(२) भस्म को चुटकियों में लेकर रगड़ें, यदि रगड़ते समय कर-कराहट प्रतीत होती हो तो अपक्व है, और यदि न हो और भस्म अंगु-लियों की रेखाओं में घुस जाये, तो सिद्ध है।

कुछ धातुओं की सिद्ध भस्मों की पहचान—

(१) यदि स्वर्ण भस्म को निम्बु रस में हल कर लिया जाये, तो उस की रंगत लालिमा पर आ जायेगी, और यदि ऐसा न हो, तो वह स्वर्ण भस्म ही नहीं, और यदि वह स्वर्ण भस्म ही है, तो अपक्व है।

(२) चांदी की भस्म को लौंग के साथ खरल किया जाये, तो वह कृष्ण वर्ण की हो जानी चाहिये, और यदि कृष्ण न हो, तो वह अपक्व है, या कोई अन्य वस्तु है।

(३) ताम्र भस्म दधि में मिलाने से यदि हरी हो जाये, तो भस्म कच्ची है।

(४) नाग की भस्म यदि आग पर रखने से लाल हो जाये, तो सिद्ध है, अन्यथा अपक्व समझो।

(५) अभ्रक भस्म मोड़ियों पत्तों के रस में खरल करने से यदि चमक दृष्टि गोचर हो, तो भस्म अशुद्ध है।

यहां पर हमने धातुओं के भस्मों की पहिचानने की विधि का उल्लेख इस लिये किया है, कि अपक्व और अशुद्ध भस्मों के प्रयोग से शरीर में नाना प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

(१) अपक्व तथा अशुद्ध पारद भस्म के प्रयोग से शरीर में कुष्ट तथा फोड़े फुंसियां हो जाते हैं।

(२) अशुद्ध गंधक की भस्म के प्रयोग से नाना विधि के ज्वर उत्पन्न होते हैं।

(३) अशुद्ध स्वर्ण भस्म रक्त के विकारों को जन्म देती है।

(४) अशुद्ध चांदी की भस्म खुजली, आन्त्र शूल और शिर शूल उत्पन्न करती है।

(५) बंग की अशुद्ध भस्म के प्रयोग से वातगुल्म, पाण्डु और मधुमेह उत्पन्न होते हैं।

(६) लोह की अशुद्ध भस्म के प्रयोग से हृदय दुर्बलता, नपुंसकता, जी मचलाना, वृक्क तथा मूत्राशय अश्मरी उत्पन्न करती है। इस लिये वैद्य महानुभावों से अनुरोध पूर्वक निवेदन है, कि वे भस्म बनाते समय धातुओं की अच्छी तरह शुद्धि करके पूर्ण रूप से अग्नि देकर लिखित विधि से भस्म बनावें, और किसी प्रकार की त्रुटि न रहने दें।

अपक्व भस्मों से उत्पन्न रोगों के निवारण की विधि—

जिस पुरुष ने अपक्व भस्म खाई हो और उस के शरीर पर फोड़े फुंसियां उत्पन्न हो गये हों, उस को राम तुलसी पत्र स्वरस, सबज़ मको पत्र स्वरस निथार कर पिलावें, कुछ दिन के प्रयोग से सब दोष निवृत्त हो जायेंगे। और अपक्व भस्म मूत्र द्वारा बाहर निकल जायेगी।

प्रत्येक भस्म निर्माण करने की विधि उसके अपने विवरण में लिखी जायेगी।

हम यहां पर उन्ही धातुओं की भस्मों की निर्माण विधि का उल्लेख करेंगे, जिन का उल्लेख आयुर्वेद में नहीं है। और जो युनानी चिकित्सा में विशेष रूप से प्रयुक्त की जाती हैं

कुशता बैज़ा मुर्ग़ (कुक्कुट अण्ड भस्म)

कुक्कुट अण्डे को चूना और लवण के जल से धो कर भीतरी झिल्ली को पृथक कर लें। फिर एक चीनी के पात्र में भर कर निम्बू रस इतना डालें कि तीन अंगुल उपर रहे, जब निम्बु रस शुष्क हो जाये, तो निकाल कर दो मिट्टी के प्यालों के मध्य में रख कर कपरोटी करके गजपुट की अग्नि देवें। शीतल होने पर निकाल कर गज पुट की दो और अग्नि देवें, शीतल होने पर निकाल कर बारीक पीस कर शीशी में भर कर सुरक्षित रखें।

मात्रा—एक रत्ती, भस्म मक्खन या मलाई में मिला कर प्रयोग में लावें।

गुण—प्रमेह श्वेत प्रदर और मधुमेह में लाभ कारी है।

(२) अण्डों की भीतर की झिल्ली को उपरिलिखित विधि से दूर करके आठ प्रहर तक आक के दूध में खरल करके टिकिया बनाकर सुखाकर मिट्टी के प्यालों में रखकर पन्द्रह सेर उपलों की आंच दें, इस प्रकार नौ आंचें देवें, तय्यार है।

मात्रा—दो चावल से चार चावल तक।

गुण—उपरोक्त।

हिजरलयहुद भस्म

हिजरलयहूद ५ तोले, कलमी शोरा १० तोले, मूली स्वरस ३ सेर, मिट्टी के प्याले में नीचे एक छटांक कलमी शोरा डालें, और कलमी शोरे के उपर हिजरल यहूद के टुकड़े रखें, उपर बाकी का कलमी शोरा डाल दें, और आध सेर मूली का पानी डाल कर कपरोटी कर १० सेर उपलों की आंच दें, शीतल होने पर निकाल कर फिर आधा सेर मूली का रस डालकर ५ सेर उपलों की आंच दें, इसी तरह से चार और पुट दें, कुल ६ पुटों में सुन्दर भस्म बन जायेगी।

मात्रा—६ चावल भस्म में दो रत्ती यव क्षार मिला कर जल के साथ प्रयोग में लायें।

गुण—वृक्क तथा मूत्राशय की अश्मरी के टुकड़े २ करके निकाल देता है।

फटकड़ी भस्म

फटकड़ी १ पाव लेकर बारीक करें, मिट्टी के प्याले में आधी फैला कर उस पर १ तोला अफ़ीम रख कर बाकी फटकड़ी चूर्ण ऊपर रख दें, अब कपरोटी कर ५ सेर उपलों की आंच दें, शीतल होने पर निकाल लें।

मात्रा—४ चावल।

गुण—गर्भिणी की प्रवाहिका में उत्तम है, संग्राही तथा स्तम्भक है।

हिजरलयहूद भस्म

बड़े बिच्छु ५ नग लेकर उन को कूट कर मध्य में १ तोला हिजरल-यहूद रख कर २ मिट्टी के प्यालों में बन्द कर के कपरोटी कर के ५ सेर जंगली उपलों की आंच दें, शीतल होने पर निकाल लें, और बिच्छु की राख समेत पीस लें।

मात्रा—१ रत्ती, शीरा तुख़म ख़रपज़ा, शीरा तुख़म ख़यारैन, शीरा गोक्षरू प्रत्येक ३ माशा, शरबत बज़ूरी दो तोला के साथ प्रयोग करें।

गुण—वृक्क तथा मूत्राशय की पथरी में अत्यन्त उपयोगी है। वृक्क शूल तथा मूत्रावरोध में भी लाभकारी है।

हिजरलयहूद भस्म (विशेष)

हिजरलयहूद अभ्रक भस्म, (जो दुगना कलमीशोरा डाल कर बनाई गई हो) बिच्छु प्रत्येक ३ तोला, इन को मूली पत्र स्वरस निथारे हुये में ३—४ प्रहर खरल करें, तत्पश्चात ५ सेर उपलों की आंच दें, इसी प्रकार मूली पत्र रस से भावित कर के ३० आंच दें, परन्तु अन्त की पुट कम उपलों की हो।

मात्रा—४ चावल, योग्य अनुपान से ।

गुण—उपरोक्त ।

(३) ५ तोला हिजरलयहूद को मूली के पानी में खरल करें, जब एक सेर मूली का रस समाप्त हो जाये, तो टिकिया बना कर कुलथी के नुगदा के मध्य में रख कर ७ सेर उपलों की आंच दें, शीतल होने पर निकाल लें ।

मात्रा—१ से २ रत्ती ।

गुण—उपरोक्त ।

दारचिकना भस्म

दारचिकना १ तोला, जयपाल बीज, लहुसन छिला हुआ, भल्लातक प्रत्येक ४ तोला को आक दूध में खरल कर नुगदा तैयार करें, और इस में दारचिकना की डली रख कर कपरोटी कर २ सेर उपलों की पुट दें, यदि एक पुट में न हो, तो दो पुट दें ।

मात्रा—२ से ४ चावल ।

गुण—आतशक, सुज़ाक, आमवात में उत्तम है ।

रसकपूर भस्म

रसकर्पूर की १ तोला की डली लेकर २—३ तह कपड़े में लपेट कर १ पाव गुड़ के मध्य में रख कर गरम भूभल में दबा दें, गुड़ जल जाने पर भस्म निकाल लें इस भस्म को अग्नि पर डाल कर देखें, यदि धुआं दें, तो दुबारा ऐसा ही करें ।

मात्रा—२ चावल ।

गुण—दारचिकना भस्म की तरह ।

ज़मुरद भस्म

ज़मुरद १ तोला ले कर अर्क गुलाब में खरल कर टिकिया बनायें, और एक प्याले में घृतकुमारी का गूदा रख कर १० सेर उपलों की आंच दें, शीतल होने पर निकाल कर बारीक पीस लें ।

मात्रा—२ चावल भस्म, ज्वारश मस्तगी में मिला कर प्रयोग करें।

गुण—हृदय को बल देता है, यकृत, वृक्क की दुर्बलता को नष्ट करता है, मूत्र की अधिकता तथा बार २ आने को रोकता है।

हिंगुल भस्म

हिंगुल रूमी की एक तोला की डली को कड़ाही में रख ऊपर मालकंगनी चूर्ण डाल दें, कड़ाही में नीचे आग जलायें, जब मालकंगनी जल जाये, तो निकाल कर आक जड़ रस में दो प्रहर तक खरल करें, और टिकिया बना कर ७ नग भल्लातक के चूरे में दबा कर कपरोटी कर दो सेर उपलों की आंच दें। शीतल होने पर निकाल लें।

मात्रा—२ चावल।

गुण—वाजीकरण है, उत्तेजक तथा स्तम्भक है।

स्वर्ण भस्म

स्वर्ण बुरादा ३ माशा को गुलाब जड़ रस, काचनार जड़ छाल रस, नीम छाल रस, तुलसी रस के १०—१० तोला रस में क्रमानुसार खरल करें, और गलोला बना कर प्यालों में रख कपरोटी कर १०—१२ सेर उपलों की पुट दें, शीतल होने पर निकाल लें, लालिमा लिये मटियाले रंग की भस्म बनेगी।

मात्रा—दो चावल, मक्खन वा मलाई में रख कर प्रयोग करें।

गुण—शरीर को बल देता है, वाजीकर, स्तम्भक तथा वीर्यप्रद है

अकीक भस्म

५ तोला अकीक को अर्क गुलाब में ७ बार गरम करके बुझाओ, फिर एक पाव अर्क गुलाब में खरल करें, कि अर्क समाप्त हो जाये, अब इस की टिकिया बना कर कमलगट्टा के नुगदा में रख कर कपरौटी कर १० सेर उपलों की आंच दें, शीतल होने पर दुबारा खरल कर के आंच दें, इस प्रकार ३ आंच दें, पीस कर सुरक्षित रखें।

मात्रा—४ चावल, हृदय दुर्बलता के लिये ५ माशा दवालमस्क में मिला कर, मस्तिष्क के लिये १ तोला ख़मीरा गाऊज़बान में और रक्तपित्त में शरबत अंजबार से प्रयोग करें।

गुण—हृदय, मस्तिष्क को बल देता है, यक्ष्मा, रक्तपित्त में उत्तम है।

कतीरा भस्म

गोंद कतीरा उत्तम १ पाव लेकर कड़छे में गरम करें, जब ख़ूब गरम हो जाये, तो मीठा तैल में ४—५ बार बुझावें, एसा करने से कतीरा ख़ूब फूल जायेगा, अब एक उपले पर अजवायन आध पाव फैला कर भांग पत्र चूर्ण की एक तह बिच्छावें, और उस पर कतीरा फैला कर ऊपर फिर भांग बिच्छा दें, इस के ऊपर अजवायन की तह दे कर उपला रख दें, और आग दें, शीतल होने पर निकाल लें।

मात्रा—दो रत्ती, मक्खन वा मलाई में प्रयोग करें।

गुण—जीर्ण कास तथा यक्ष्मा कास में उत्तम है।

कुशता मरजान ज्वाहरवाला

मरजान १ तोला, याकूत ३ माशा, अम्बर, स्वर्णवर्क १—१ माशा, चांदी वर्क ३ माशा, ज़मुरद ५ माशा, सब को अर्क केवड़ा में खरल कर के टिकिया बना लें, और प्यालों में रख कपरौटी कर के १० सेर उपलों की आंच दें, शीतल होने पर निकाल पीस लें।

मात्रा—२ चावल, ख़मीरा गाऊज़बान १ तोला के साथ।

गुण—दिमाग़ को बल देता है, जीर्ण प्रतिश्याय को नष्ट करता है, यकृत, हृदय दुर्बलता को दूर करता है, प्रमेह में उत्तम है।

कुशता याकूत ज्वाहरवाला

याकूत सुरख़ ६ माशा, बुसद मरजान (प्रवाल) प्रत्येक ३ माशा, मोती १ माशा, स्वर्ण वर्क १॥ माशा, सब को १ सप्ताह तक अर्क गुलाब में खरल कर शीशी में रख लें, यदि अग्नि द्वारा भस्म करना चाहें, तो अर्क गुलाब और ह्र राब में खरल कर कुरस बना लें, और घृतकुमारी

का गूदा डाल कर कपरौटी कर २०सेर उपलों की आंच दें, इस तरह से १० बार खरल कर १० आंच दें, भस्म तयार हो जायगी।

मात्रा—४ चावल, ख़मीरा गाऊज़बान १ तोला में।

गुण—शरीर के सब अंगों प्रत्यंगों को बल देता है, ख़फ़कान अपस्मार, उन्माद में उत्तम है।

तकलीस सीमाब

शुद्ध पारद १ तोला को ५ सेर सोये के जल में मिला कर मिट्टी के प्याले में डाल कर आंच पर रखें और थोड़ी २ देर बाद गन्धक की चुटकी डालते जायें, जब९ माशा गन्धक समाप्त हो जाये, तो सीमाब (पारद) मकलस (भस्म) हो जायगा, यह पारद यदि आग पर डाला जाये और धुआं दे तो ठीक नहीं, इस को दुबारा उपरोक्त विधि से तयार करें, यह पारद आतशक में लाभप्रद है।

(२) एक चीनी की प्याली में १ तोला पारद और ५ तोला गन्धक का तेज़ाब मिला कर आंच पर रखें, तेज़ाब शुष्क होने पर उतार लें, यह पारद नेत्र रोगों में उत्तम है।

तकलीस जस्त

जस्त को कड़छे में डाल कर आग पर रखें और थोड़ा २ बथुआ का पानी डालते रहें, जब यह फूल जाये, तो निकाल कर बथुए के पानी में खरल करें, जिस कदर यह पानी जज़ब होगा, उत्तम है।

गुण—नेत्र रोग में उत्तम है, मोतीया बिन्दु को रोकता है।

तकलीस कलई

बंग को मिट्टी के बरतन में डाल कर आंच पर रखें, और बकायन वा सुहंजना के डण्डे से चलाते रहे, ५ घण्टा में यह चूर्ण हो जायगा, इस को दुसरी योग्य औषध के साथ मिला कर प्रयोग करें।

मात्रा—सुज़ाकों में १ रत्ती योग्य अनुपान से दें।

गुलकन्द

गुलकन्द उस मिश्रिण को कहते हैं, जो किसी वृक्ष के पुष्पों को शकर वा मधु में मिला कर बनाया जाता है, गुलकन्द साधारणतया ताज़ा पुष्पों से बनाया जाता है, परन्तु ताज़ा पुष्प न मिलने पर आवश्यकता पर शुष्क पुष्पों से भी बनाया जा सकता है।

विधि—ताज़ा पुष्प लेकर उन की सबज़ी तथा पत्र आदि दूर कर के त्रिगुणा खाँड मिला कर हाथ से खूब मसलें, जब फूलों की पंखड़ीया और खाँड अच्छी तरह मिल जावें, तो मरतबान में डाल कर मुख बन्द कर के दो सप्ताह तक धूप में रख दें, परन्तु इस समय २—३ बार हाथों से मल कर उलट पलट करते रहें, बस गुलकन्द तैयार हो गया, इसे गुलकन्द आफ़ताबी (सूर्यतापी) कहते हैं, यदि गुलकन्द को दिन में छाया में और रात्री को चांदनी में रखें, तो यह महताबी (चन्द्र पुटी) कहलाता है, कभी २ गुलकन्द के बरतन को सप्ताह २ सप्ताह तक जल से भरे हुये बरतन में रख देते हैं, उस को गुलकन्द आबी (जलीय) कहते हैं यदि गुलकन्द खाँड के बजाये मधु में बनाया जाये, तो इसे गुलकन्द असली (मधु वाला) कहते हैं।

शुष्क फूलों से गुलकन्द बनाने की विधि यह है, कि इन को अर्क गुलाब, अर्क बेदमुशक में कुच्छ देर तक तर रखें, जब इन में नमी अच्छी तरह मिल जाये, अर्थात् गीले हो जायें, तो उपरोक्त विधि से खाँड मिला कर गुलकन्द बनावें।

गुलकन्द बनफ़शा

बनफ़शा के ताज़े पुष्प १ पाव ले कर ३ पाव खाँड में हाथ से मसलें, १ सप्ताह धूप में रखने के बाद प्रतिदिन दो तोला योग्य अनुपान से प्रयोग करें।

गुण—मस्तिष्क का शोधन करता है, आन्त्र को शुद्ध करता है।

गुलकन्द ख़यारशन्वेरी

अम्लतास के ताज़े फूलों को बनफ़शा के पुष्पों की तरह खाँड मिला कर गुलकन्द तैयार करें।

गुलकन्द

गुलाब पुष्प ताज़ा १ पाव लेकर ३ पाव खाँड मिलायें, और थोड़ा अर्क गुलाब छिड़क कर हाथों से मल कर धूप में रखें, २ सप्ताह के बाद प्रयोग करें।

मात्रा—४ तोला गुलकन्द, १२ तोले अर्क सौंफ़ अर्थोष्ण से लें।

गुण—आमाशय, दिमाग़ को वल देता है, विबन्ध दूर करता है

गुलकन्द सेवती

गुल सेवती १००, खाँड २९ तोला, सेवती पुष्प पर अर्क बेदमुष्क छिड़क कर हाथ से मलें और खाँड मिला कर ४ दिन तक छाया में रखें

मात्रा—२ तोला गुलकन्द, १२ तोला अर्क गाऊज़बान से लें।

गुलकन्द महताबी

चांदनी पुष्प २००, खाँड २९ तोला में थोड़ा अर्क गुलाब छिड़क कर खूब हल करें, और रात्री को चन्द्रमा की चांदनी में रखें, ४ दिन के पश्चात प्रयोग करें।

गुण—हृदय डूबना, डरना, घबराहट तथा उन्माद में उपयोगी है।

लबूब (Confection)

लबूब का अर्थ मग़ज़यात है, परन्तु चिकित्सा क्षेत्र में उस बल प्रद औषध को कहते हैं, जिस में मग़ज़यात अधिक मात्रा में डाले जायें, इन के बनाने की विधि माजून सदृश है, परन्तु इस का पाक कुच्छ पतला होता है, मग़ज़यात मिलाने की विधि यह है कि इनको प्रथम बारीक पीस लीया जाये, फिर इनको घी में भून कर औषध में मिला दिया जाये।

लबूबल सरार

कस्तूरी ६ रत्ती, दारचीनी, बालछड़, तगर, जावित्री, कबाब-चीनी, नागरमोथा, तज, पिप्पली, अगर, जायफल, केशर, अम्बर प्रत्येक ४॥ माशा, सोंठ, बोज़ीदान, कुठ मीठी, दरूनज अकरबी, मिरच सफ़ेद, ख़शख़ाश सफ़ेद, दूको, गोक्षरू दूध से भावित, हब्ब बलसान, हब्बलबान, मग़ज़ हब्बलज़म, मग़ज़ ख़रबूज़ा, तुख़म ख़यारैन, मग़ज़ तुख़म गाजर, तुख़म प्याज़, शलग़म बीज, तुख़म अस्पस्त, तुख़म तरह-तीज़क, सोये बीज, गन्दना बीज, हालों बीज, प्रत्येक ७ माशा, शकाकल, पानजड़, ख़सयालसहलब, दोनो बहमन, दोनों तोदरी, वज तुरकी, इन्द्रजौ, सकनफ़ूर प्रत्येक १३॥ माशा, नारजील (खोपा), मग़ज़ हबतलखिज़रा, मग़ज़ बादाम मधुर, मग़ज़ पिस्ता, मग़ज़ चलग़ोज़ा, मग़ज़ बनौला, तिल छिलके रहित प्रत्येक २ तोला, सब को कूट छान कर औषध के मान से त्रिगुणा मधु का पाक कर के औषध मिला कर सुरक्षित रखें।

मात्रा—६ माशा, दूध के साथ प्रयोग करें।

गुण—यह लंबूव वाजीकरण है, वीर्य प्रद है, दिल दिमाग़ और सब शारीरक अंग प्रत्यंग को वल देता है, काम शक्ति को बढ़ाता है, वीर्य को उत्पन्न करता है।

लबूब बारद

मग़ज़ बादाम मधुर छिलका रहित, ख़शख़ाश बीज श्वेत प्रत्येक १॥। तोला, मग़ज़ तुख़म मधुर कद्दू, सोंठ, पान जड़, शकाकल प्रत्येक १॥ तोला, मग़ज़ तुख़म ख़रपज़ा, ककड़ी बीज, मग़ज़ तुख़म खीरा, खुरफ़ा बीज प्रत्येक १०॥ माशा, कतीरा ७ माशा, मग़ज़ चलग़ोज़ा, दोनो तोदरी, गाजर बीज, हालों बीज प्रत्येक ३॥ माशा, सब औषध को कूट छान कर तुरंजबीन १ सेर जल में घोल कर निथार कर सम भाग खाँड मिला कर पाक करें, और इसी में बाकी औषध चूर्ण मिला कर लबूब बनावें।

मात्रा—७ माशा

गुण—पित्त के कारण उत्पन्न शीघ्रपतन, प्रमेह, स्वप्नदोष, इत्यादि में लाभ प्रद है।

लबूब सग़ीर (लघु)

मग़ज़ बादाम मधुर, मग़ज़ अख़रोट, हिब्बलखिज़रा, मग़ज़ चलग़ोज़ा, मग़ज़ हब्बलज़लम, फिन्दक, पिस्ता, नारियल ताज़ा, मग़ज़ हब्वकिलकिल, ख़शख़ाश सफ़ेद, दोनों तोदरी, तिल छिलके रहित, दोनों बहमन, तज, सोंठ, पिप्पली, अकरकरा, कबाबचीनी, शकाकल, पानजड़, जरजीर बीज, प्याज़ बीज, शलग़मबीज, अस्पस्त बीज, हालों बीज, सब सम भाग ले कर बारीक चूर्ण करें, त्रिगुणा मधु का पाक कर के औषध डाल लबूब बनावें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—वृक्क तथा मूत्राशय को बल देता है, वाजीकर है, तथा वीर्य को बढ़ाता है।

लबूब कबीर (बृहत)

खसतीयालसहलब, नारियल ताज़ा, मग़ज़ शिर चिड़ा (चटक) घरेलु भुना हुआ, ख़शख़ाश श्वेत प्रत्येक तीन तोला, मग़ज़ पिस्ता, मग़ज़ बादाम, मग़ज़ फिन्दक, हिब्बतलखिज़रा मग़ज़, मग़ज़ अख़रोट, मग़ज़ चलग़ोज़ा, मग़ज़ हब्बलज़लम, माही रोबीयान, पानजड़, शकाकलमिश्री, दोनों बहमन, दोनों तोदरी, सोंठ, तिल छिले हुये, दारचीनी प्रत्येक १॥ तोला, सुरंजान, बोज़ीदान, पोदीना शुष्क प्रत्येक १ तोला २ माशा, बालछड़, नागरमोथा, लौंग, कबाबचीनी, इन्द्रजौ, दरूनजअकरबी, कचूर, हब्बकिलकिल, गाजर बीज, प्याज़ बीज, मूली बीज, शलग़म बीज, अस्पस्त, हालों बीज, प्रत्येक १०॥ माशा, जायफल, जावित्री, छड़ीला, पिप्पली प्रत्येक ७ माशा, केशर, मस्तगी, मायाशुत्रअहराबी प्रत्येक १३॥ माशा, ऊद ख़ाम ९ माशा, अम्बरशहब ४॥ माशा, कस्तूरी २। माशा, स्वर्ण वर्क ३० नग, वर्क चांदी ५० नग, सब औषध को कूट छान कर त्रिगुण मधु का पाक कर औषध मिला लबूब तैयार करें।

मात्रा—६ माशा, दूध से।

गुण—यह अत्यन्त उत्तम बल प्रद लबूब है, अत्यन्त वाजीकरण तथा वीर्य प्रद औषध है, उत्तेजक, स्तम्भक तथा शरीर पोषक औषध है

लहूकात (चटनी-अवलेह) (Linctus)

लहूक (चटनी) भी एक प्रकार का अवलेह है, जो माजून से पतला और शरबत से गाढ़ा होता है और आसानी से चाटा जासकता है, यह साधारणतया कास, श्वास जैसे रोगों में प्रयुक्त किया जाता है—

निर्माण विधि—औषध को कूट छान कर खाँड वा मधु औषध से ५ गुणा लेकर पाक कर के उस पाक में औषध चूर्ण मिला लेवें, परन्तु यदि लहूक में क्वाथ की औषध हों, तो इन का क्वाथ कर के इस क्वाथ जल में खाँड वा मधु मिला कर पाक करें, पाक समाप्ति पर औषध चूर्ण अच्छी तरह मिला लेवें, यदि लहूक में मग़ज़ अम्लतास भी हो, तो इसे न उबालें, परन्तु इसको बाकी औषध क्वाथ में मल कर छान लेवें, और मिश्री मिला कर पाक करें।

लहूक नज़ली आब तरबूज़ वाला

ख़शख़ाश बीज, गोंद कीकर, कतीरा, निशास्ता प्रत्येक १४ माशा, मग़ज़ कदू, मग़ज़ ख़यारैन, ख़ुरफ़ा बीज, काहू बीज प्रत्येक १॥ तोला, मग़ज़ बादाम मधुर ३ तोला, रोग़न बादाम ६ तोला, तुरंजबीन १४ तोला, तरबूज़ जल १० तोला, मग़ज़ कदू से मग़ज़ बादाम तक जिस कदर औषध हैं, इन में जल डाल कर घोट कर इनका शीरा निकालें, और तुरंजबीन हल कर के छान लें, फिर तरबूज़ जल इस में मिला कर पाक करें, और ख़शख़ाश बीज से निशास्ता तक की औषध का बारीक चूर्ण और बादाम तैल मिला कर लहूक तैयार करें।

मात्रा—५—५ माशा, दिन में कई बार चाटें।

गुण—यक्ष्मा, रक्तपित्त, तथा वातज कास में उत्तम है।

लहूक आब नेशकर वाला

लुआब इसपग़ोल, लुआब बहीदाना, लुआब ख़तमी बीज, अनार रस मधुर, अम्ल अनार रस, ख़यार जल, कदू जल, ख़ुरफ़ा पत्र जल,

गन्ने का ताज़ा स्वरस प्रत्येक ६—६ तोला, गोंद कीकर, गोंद कतीरा, मग़ज़ बादाम मधुर, आक शकर, ख़शख़ाश बीज, प्रत्येक ७।। तोला, खाँड आध सेर, शुष्क औषध को कूट छान कर लुआबों तथा जलों में खाँड मिला कर पाक कर के औषध चूर्ण को मिला दें, और लहूक तैयार करें।

मात्रा—७ माशा, अर्क गाऊज़बान में मिला कर।

गुण—यक्ष्मा, रक्तपित्त तथा शुष्क कास में उपयोगी है।

लहूक बहीदाना

बहीदाना, इस्पग़ोल, ख़तमी बीज प्रत्येक १।। तोला का लुआब निकालें, और इस के भीतर मधुर अनार, ककड़ी, और घीया का जल, ख़ुरफ़ा पत्र का फाड़ा हुआ जल प्रत्येक १० तोला, खाँड आध सेर मिला कर पाक करें, पाक सिद्धि पर गोंद कीकर, गोंद कतीरा, मग़ज़ बादाम मधुर छिले हुये, ख़शख़ाश बीज प्रत्येक १—१ तोला, रबुलसूस, शकरतैग़ाल प्रत्येक ६ माशा का चूर्ण कर मिला देवें।

मात्रा—५—५ माशा, दिन में कई बार चाटें।

गुण—शुष्क कास, ज्वरयुक्त रक्तपित्त में लाभ कारी है।

लहूक ख़शख़ाश

मुलैठी १। तोला, ख़तमी बीज, बहीदाना प्रत्येक १।।। तोला, रात्री को एक सेर जल में भिगोवें, प्रातः इतना उबालें कि आधा भाग रह जाये, इस को छानकर खाँड आध सेर मिलाकर पाक करें, तत्पश्चात मग़ज़ बहीदाना, गोंद कीकर, कतीरा सफ़ेद, ख़शख़ाश बीज श्वेत और कृष्ण प्रत्येक १—१ तोला, बारीक पीस कर मिलावें, दिन में कई बार थोड़ा २ चाटें।

गुण—खांसी, रक्तपित्त, ज्वर जीर्ण ज्वर में उत्तम है।

लहूक सपस्तान

सपस्तान (लसूड़े) ५० नग, उन्नाब २० नग, पोस्त ख़शख़ाश २ तोला, मधुयष्टि १ तोला, ख़तमीबीज सफ़ेद १ तोला, ख़यारैन बीज प्रत्येक ४ माशा, बहिदाना ३ माशा, सब को दो सेर जल में उबाल

गुण—यह अत्यन्त उत्तम बल प्रद लबूब है, अत्यन्त वाजीकरण तथा वीर्य प्रद औषध है, उत्तेजक, स्तम्भक तथा शरीर पोषक औषध है

लहूकात (चटनी-अवलेह) (Linctus)

लहूक (चटनी) भी एक प्रकार का अवलेह है, जो माजून से पतला और शरबत से गाढ़ा होता है और आसानी से चाटा जासकता है, यह साधारणतया कास, श्वास जैसे रोगों में प्रयुक्त किया जाता है—

निर्माण विधि—औषध को कूट छान कर खाँड वा मधु औषध से ५ गुणा लेकर पाक कर के उस पाक में औषध चूर्ण मिला लेवें, परन्तु यदि लहूक में क्वाथ की औषध हों, तो इन का क्वाथ कर के इस क्वाथ जल में खाँड वा मधु मिला कर पाक करें, पाक समाप्ति पर औषध चूर्ण अच्छी तरह मिला लेवें, यदि लहूक में मग़ज़ अम्लतास भी हो, तो इसे न उबालें, परन्तु इसको बाकी औषध क्वाथ में मल कर छान लेवें, और मिश्री मिला कर पाक करें ।

लहूक नज़ली आब तरबूज़ वाला

ख़शख़ाश बीज, गोंद कीकर, कतीरा, निशास्ता प्रत्येक १४ माशा, मग़ज़ कदू, मग़ज़ ख़यारैन, ख़ुरफ़ा बीज, काहू बीज प्रत्येक १॥ तोला, मग़ज़ बादाम मधुर ३ तोला, रोग़न बादाम ६ तोला, तुरंजबीन १४ तोला, तरबूज़ जल १० तोला, मग़ज़ कदू से मग़ज़ बादाम तक जिस कदर औषध हैं, इन में जल डाल कर घोट कर इनका शीरा निकालें, और तुरंजबीन हल कर के छान लें, फिर तरबूज़ जल इस में मिला कर पाक करें, और ख़शख़ाश बीज से निशास्ता तक की औषध का बारीक चूर्ण और बादाम तैल मिला कर लहूक तैयार करें ।

मात्रा—५—५ माशा, दिन में कई बार चाटें ।

गुण—यक्ष्मा, रक्तपित्त, तथा वातज कास में उत्तम है ।

लहूक आब नेशकर वाला

लुआब इसपग़ोल, लुआब बहीदाना, लुआब ख़तमी बीज, अनार रस मधुर, अम्ल अनार रस, ख़यार जल, कदू जल, ख़ुरफ़ा पत्र जल,

गन्ने का ताज़ा स्वरस प्रत्येक ६—६ तोला, गोंद कीकर, गोंद कतीरा, मग़ज़ बादाम मधुर, आक शकर, ख़शख़ाश बीज, प्रत्येक ७।। तोला, खाँड आध सेर, शुष्क औषध को कूट छान कर लुआबों तथा जलों में खाँड मिला कर पाक कर के औषध चूर्ण को मिला दें, और लहूक तैयार करें।

मात्रा—७ माशा, अर्क गाऊज़बान में मिला कर।

गुण—यक्ष्मा, रक्तपित्त तथा शुष्क कास में उपयोगी है।

लहूक बहीदाना

बहीदाना, इस्पग़ोल, ख़तमी बीज प्रत्येक १।। तोला का लुआब निकालें, और इस के भीतर मधुर अनार, ककड़ी, और घीया का जल, ख़ुरफ़ा पत्र का फाड़ा हुआ जल प्रत्येक १० तोला, खाँड आध सेर मिला कर पाक करें, पाक सिद्धि पर गोंद कीकर, गोंद कतीरा, मग़ज़ बादाम मधुर छिले हुये, ख़शख़ाश बीज प्रत्येक १—१ तोला, रबुलसूस, शकरतैग़ाल प्रत्येक ६ माशा का चूर्ण कर मिला देवें।

मात्रा—५—५ माशा, दिन में कई बार चाटें।

गुण—शुष्क कास, ज्वरयुक्त रक्तपित्त में लाभ कारी है।

लहूक ख़शख़ाश

मुलैठी १। तोला, ख़तमी बीज, बहीदाना प्रत्येक १।।। तोला, रात्री को एक सेर जल में भिगोवें, प्रातः इतना उबालें कि आधा भाग रह जाये, इस को छानकर खाँड आध सेर मिलाकर पाक करें, तत्पश्चात मग़ज़ बहीदाना, गोंद कीकर, कतीरा सफ़ेद, ख़शख़ाश बीज श्वेत और कृष्ण प्रत्येक १—१ तोला, बारीक पीस कर मिलावें, दिन में कई बार थोड़ा २ चाटें।

गुण—खांसी, रक्तपित्त, ज्वर जीर्ण ज्वर में उत्तम है।

लहूक सपस्तान

सपस्तान (लसूड़े) ५० नग, उन्नाब २० नग, पोस्त ख़शख़ाश २ तोला, मधुयष्टि १ तोला, ख़तमीबीज सफ़ेद १ तोला, ख़यारैन बीज प्रत्येक ४ माशा, बहिदाना ३ माशा, सब को दो सेर जल में उबाल

कर छान लें, खाँड औषध से त्रिगुणा लेकर पाक करें, पाक सिद्धि पर जौ छिले हुये, मग़ज़ बादाम छिले हुये, ख़शख़ाश (बीज श्वेत) भुना हुआ १—१ तोला, गोंद कीकर, गोंद कतीरा, रबुलसूस ३—३ माशा चूर्ण कर के पाक में मिलावें ।

मात्रा—७ माशा ।

गुण—यह लहूक कफ़ स्रावी है, और कास, प्रतिश्याय में उत्तम है।

लहूक सपस्तान ख़यारशन्बरी

उन्नाब, लसड़े १५–१५ नग बनफ़शा ९ माशा, ख़तमी ५ माशा, सनाय १।। तोला, शीरख़िशत २।। तोला, मग़ज़ अम्लतास ४।। तोला, ख़मीरा बनफ़शा ३ तोला, तुरंजबीन ६ तोला, मधुर बादाम तैल ५ माशा, मिश्री १।। तोला, प्रथम सनाय तक की औषध को ३ पाव जल में उबालें, आधा भाग रहने पर छान लें, इस में शीरख़िशत, मग़ज़ अम्लतास-तुरंजबीन-ख़मीरा मिश्री मिलाकर छान कर मध्य आंच पर पाक करें-गाढ़ा होने पर बादाम तैल मिला कर सुरक्षित रखें।

मात्रा—१—१ तोला प्रातः सायं अर्क गाऊज़बान से ।

गुण—निमोनीया, खांसीं में उपयोगी है, विबन्ध नाशक है ।

लहूक कतान

लुआब अलसी आध सेर में खाँड, मधु उत्तम प्रत्येक आध सेर मिला कर पाक करें ।

मात्रा—१ तोला, अर्क गाऊज़बान के साथ प्रयोग करें ।

गुण—कफ़ज़ कास तथा श्वास में उत्तम है ।

(२) अलसी बीज भुने हुये, मधुर बादाम छिले हुये १—१ तोला, बारीक पीस कर ४ तोला मधु में मिला कर रखें, दिन में थोड़ा थोड़ा कई बार चाटें ।

गुण—उपरोक्त ।

लहूक मुतहदिल

मग़ज़ बादाम मधुर, मग़ज़ तुख़म कदु मधुर, गोंद कीकर प्रत्येक १०।। माशा, कतीरा, निशास्ता, रबुलसूस, प्रत्येक १।। तोला, सब को

कूट छान कर खाँड ६ तोला का पाक कर औषध चूर्ण डाल कर लहूक तैयार करें।

मात्रा—१ तोला, अर्क गाऊज़बान के साथ।

गुण—प्रतिश्याय, कास, पित्तज कास में उत्तम है।

लहूक मसीह

ख़तमी बीज, गाऊज़बान पत्र, ख़शख़ाश बीज १—१ तोला, लसूड़ं २ तोला, बहीदाना, मधुयष्टि प्रत्येक ६ माशा, इन को त्रिगुणा जल में उबालें, जब आधा भाग रह जाये तो छान कर १॥ सेर खाँड मिला कर पाक करें, पाक सिद्धि पर रबुलसूस, गोंद कीकर, गोंद कतीरा, प्रत्येक ६ माशा का चूर्ण कर के मिलावें।

मात्रा—२ तोला, आवश्यकतानुसार चटावें।

गुण—प्रतिश्याय तथा प्रतिश्याय जनित कास में उत्तम है।

लहूक नज़ली

मधुयष्टि १॥ तोला, ख़तमी बीज ३ तोला, बहीदाना २ तोला, सब को रात्री को जल में भिगोवें, प्रातः उबाल कर छान लें, फिर त्रिगुणा खाँड मिला कर पाक करें, और मग़ज़ बहीदाना, गोंद कीकर प्रत्येक १०॥ माशा, कतीरा १४ माशा, ख़शख़ाश बीज श्वेत तथा कृष्ण प्रत्येक १॥ तोला, बारीक चूर्ण कर भली प्रकार पाक में मिलावें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—प्रतिश्याय तथा कास में लाभकारी है।

लहूक बादाम

मग़ज़ बादाम छिलका रहित, मग़ज़ कदू मधुर १—१ तोला ५॥ माशा, गोंद कीकर, गोंद कतीरा, निशास्ता, रबुलसूस प्रत्येक दो तोला ११ माशा, खाँड सफ़ेद ५ तोला १० माशा, सब को कूट छान कर बादाम तैल मधुर से मिश्रित करें और अर्क गुलाब में गूंद कर लहूक बनावें, कुच्छ योगों में मग़ज़ बहीदाना १ तोला ५॥ माशा भी डाला हुआ है।

गुण—स्वरयन्त्र के खरखरेपन और कास में उत्तम हैं।

लहूक ज़ूफ़ा

ज़ूफ़ा शुष्क, सोसन जड़ आसमानी रंग की प्रत्येक ७० माशे लेकर १।। सेर जल में क्वाथ करें, आधा भाग रहने पर आध सेर खाँड मिला कर पाक करें, यदि सोसन जड़ न हो, तो उस के स्थान पर कलौंजी डालें।

मात्रा—दो तोला ।

गुण—जीर्ण कास तथा सांस फूलने में उत्तम है ।

लहूक सनोबर

मेथी को जल में भिगो कर छील डालें और कूट कर शीरा निकालें, अब अंगूर का शीरा वा मधु द्विगुण मिला कर उबालें, गाढा होने पर मेथी के सम भाग मग़ज़ चलग़ोज़ा (छिला हुआ) का चूर्ण मिला कर अच्छी तरह पाक करें।

मात्रा—३ तोला ।

गुण—पुरानी कास, श्वास, स्वर भेद में उपयोगी है ।

लहूक तबाशीर

गोंद कीकर, निशास्ता, ख़शख़ाश बीज श्वेत प्रत्येंक ७० माशा, मग़ज़ तुख़म कद्दू मधुर, मग़ज़ ख़यारैन प्रत्येक ३५ माशा, बंशलोचन १४ माशा, ख़बाजी बीज, ख़तमी बीज प्रत्येक १०।। माशा, सब को बारीक कर के आवश्यकता अनुसार मधु और बादाम तैल मिश्रित कर लहूक बनावें ।

मात्रा—२ तोला ।

गुण—पुप्फुस तथा सीने के व्रण, ज्वर तथा शुष्कता के लीये उत्तम है ।

(२) वंशलोचन १४ माशा, मग़ज़ तुख़म ककड़ी, मग़ज़ चलग़ोज़ा, गोंद कीकर, बड़ी इलायची, प्रत्येक २४।। माशा, निशास्ता, कतीरा, प्रत्येक ७ माशा, खाँड १७।। माशा, सब को कूट छान कर बादाम तैल में मिश्रित कर मधु का पाक कर के लहूक तयार करें ।

मात्रा—१ से २ तोला ।

गुण—पित्त की उग्रता को कम करता है, सिल, फुप्फुस के व्रण तथा पित्तज कास में लाभ कारी है ।

लहूक ख़सक

ताज़ा गोक्षरू ले कर क्वाथ करें, फूल जाने पर निचोड़ कर छान लें, फिर इस पानी में और ताज़ा गोक्षरू डाल कर क्वाथ करें, फूल जाने पर निचोड़ कर छान लें, फिर इसी प्रकार तीसरी बार भी करें, अब इस पानी में सोंठ २ तोला ८ माशा वा पिप्पली ३।। माशा मिला कर मधु तथा खाँड के साथ पाक करें, लहूक तैयार करें।

मात्रा—२ तोला।

गुण—मूत्रल है, अशमरी में उपयोगी है, तथा वाजीकर है।

मालजोबन (Whey)

मालजोबन दूध के पानी को कहते हैं, निर्माण विधि इतनी है, कि ऐसी बकरी का दूध लें, जिसने २ से अधिक बच्चे न प्रसव किये हों, ४० दिन प्रसवोपरान्त उस का दूध ग्रहण करें, बकरी को मको, कासनी तथा पितपापड़ा खाने को दें, इस दूध को कलईदार देगची में उबालें, और निबूँ रस, सत निम्बु, वा सिरका थोड़ा सा डाल दें, दूध फट जायगा, फट जाने पर उत्तार कर मोटे कपड़े में से छान लें, यह छना हुआ जल ही मालजोबन कहलाता है, पहिले दिन ७ तोला शरबत उन्नाब २ तोला मिला कर पिलायें, और इस के पश्चात १—१ तोला मालजोबन और थोड़ाथोड़ा शरबत बढ़ाते रहें, ताकि मालजोबन की मात्रा २१ तोला और शरबत की ४ तोला हो जाये, इसी तरह क्रमानुसार कम करके प्रारम्भिक मात्रा पर ले आयें, और तीन दिन पीने के पश्चात छोड़ दें। यह मालजोबन उन्माद, उपदंश, कुष्ठ तथा अन्य रक्त दोषों में प्रयोग कराया जाता है।

मुरब्बा (Preserve)

प्रत्येक मुरब्बे की विधि उस के साथ ही लिख दी गई है, परन्तु साधारणतया जिस फल का मुरब्बा डालना हो, वह पक्व हो, उस को छील कर वा बिना छीले जल में उबालें, कि वह थोड़ा मृदु हो जाये, निकाल कर फैला दें, फिर खाँड के पाक में डाल दें, दूसरे दिन यदि पाक पतला हो जाये, तो दुबारा अग्नि पर चढ़ा कर पाक कर लें।

मुरब्बा आमला

आमला सबज़ ताज़ा को जल में उबालें, आमला के नरम होने पर थोड़ा शुष्क कर के खाँड के पाक में डालें, दूसरे दिन पाक को आमलों समेत पकावें, कि पाक ठीक हो जाये, तीसरे दिन फिर देखें कि यदि पाक पतला हो जाये, तो फिर अग्नि पर चढ़ा कर पाक ठीक कर लें।

मात्रा—१ नग मुरब्बा, जल से धो कर चाँदी वर्क लपेट कर खायें।

गुण—मस्तिष्क, आमाशय, हृदय तथा यकृत को बल देता है, वमन, अतिसार में उपयोगी है, शिरोभ्रम में उत्तम है।

मुरब्बा अन्नास

अन्नास को छिलकों तथा कांटों से रहित कर के गोल २ काशें छील लें, जल में उबाल कर नरम कर लें, और खाँड के पाक में काशें डाल कर यथाविधि मुरब्बा तैयार करें।

मात्रा—१ से २ तोला।

गुण—ख़फ़कान, शिरोभ्रम में उत्तम है, हृद्य है।

मुरब्बा बही

बही को छिलके से रहित कर के मुरब्बा आमला की विधि अनुसार मुरब्बा तैयार करें।

मात्रा—दो तोला, प्रातः को प्रयोग करें।

गुण—हृदय, मस्तिष्क को बल देता है, संग्राही तथा पाचक है।

मुरब्बा बेलगिरी

बिलव पक्व तथा बड़े लेकर छिलके रहित करें, और गोल काशें काट लें, और एक देग में आधा भाग तक जल भर कर देग के मुख पर साफ़ कपड़ा बांधें, और उस कपड़े पर काशें रख कर किसी ढकन से बन्द कर के नीचे आग जलावें, ताकि जलीय वाष्प से काशें नरम हो जायें, इन काशों को खाँड के पाक में डाल दें, यदि दूसरे दिन पाक पतला हो, तो काशों को पृथक कर के फिर पाक कर लें, और काशें डाल दें।

मात्रा—२ तोला ।

गुण—प्रवाहिका तथा अतिसार में उत्तम है।

मुरब्बा पेठा

इस को भी छिलके तथा बीज रहित कर काशें काट कर बेलगिरी के मुरब्बे विधि अनुसार मुरब्बा बनावें ।

मात्रा—दो तोला ।

गुण—दिल दिमाग़ को बल देता है ।

मुरब्बा ज़ंजबील (शुण्ठी मुरब्बा)

अद्रक ताज़ा तथा मोटी रेशा बिना लेकर ऊपर से छिलका उतार लें, और लवण के पानी में उबालें, मृदु होने पर निकाल कर खाँड के पाक में डालें, दूसरे दिन यदि पाक पतला पड़ जाये, तो दुबारा पाक कर लें ।

मात्रा—१ तोला ।

गुण—कफ़ दोष को निवारण करता है, वात दोष, वातशूल में उत्तम है, वृक्कों को बल देता है ।

मुरब्बा सेब

सेब का मुरब्बा भी पेठे के मुरब्बे की तरह बनावें ।

मात्रा—२ तोला ।

गुण—दिल दिमाग़ को विशेष कर बल देता है ।

मुरब्बा गाजर तथा मुरब्बा नाशपाती

इन दोनों फलों के मुरब्बे बही की विधि अनुसार बनावें ।

गुण—दोनों मुरब्बे दिल दिमाग़ को बल देते हैं ।

मुरब्बा हरीतकी

मुरब्बा आमला की तरह बनावें, यदि हरीतकी शुष्क हो, तो पहिले इसे कुछ दिन जल में भिगो रखें, फिर दूसरे पानी में डाल कर उबालें, नरम होने पर गूँद कर घी में अर्धभुनी करें, फिर स्निगधता दूर कर के खाँड के पाक में डाल दें ।

मात्रा—१ वा दो नग जल से धो कर रात्री को प्रयोग करें।

गुण—आमाशय, दिमाग़ तथा नेत्रों के लिये उत्तम है। विबन्ध नाशक है।

मुरब्बा बादाम

ताज़ा बादाम छील कर मधु में २—४ उबाल दें, ३—४ दिन पश्चात ताज़ा मधु आवश्यकतानुसार डाल कर जोश दे कर मरतबान में रख दें।

मात्रा—१ तोला।

गुण—खांसी और सीना की खरखराहट में लाभप्रद है।

मुरब्बा तरंज

बिजौरा निंब के छिलके जल में उबाल लें, मृदु होने पर निकाल कर पानी निचोड़ दें, और खाँड के पाक में डाल दें।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण—दिल तथा आमाशय को बल देता है, दीपक पाचक है।

मरहम (Ointments)

यह एक अर्धघन मिश्रण है, जिस में मोम, घृत, सरसों तैल, तिल तैल में औषध चूर्ण मिलाया जाता है।

निर्माण विधि—प्रथम मोम और तैल को पिघलाया जाता है, और बाकी औषध का बारीक चूर्ण इस में मिला कर शीतल होने तक हल करते रहते हैं, यदि मरहम में गुग्गुल, साबुन, गन्दा बहरोज़ा आदि हो, तो उनको भी मोम तैलके साथही पिघला लेना चाहिये, यदि अण्डे की जरदी वा सफेदी भी मिलानी हो, तो आगसे उतारकर शीतल अवस्था में इसे मिलावें, लुआबदार वस्तुओं के लुआब को उष्ण अवस्था में थोड़ा २ कर के डालें, और इतना पकावें कि वह मरहम जैसा ही नरम रहे। (ऐसा न हो कि अधिक आंच के कारण जल जाः)।

मरहम आतशक

चोबचीनी १॥। माशा, हिंगुल ३ तोला, नीलाथोथा शुद्ध ६ तोला, इन का बारीक चूर्ण करें, अण्डों को गरम राख में थोड़ी देर दबा कर

गरम कर लें, और ज़रदी निकाल कर इसी ज़रदी में ऊपर का बारीक चूर्ण मिला कर खूब घोंट दें।

मात्रा—नीम के जल से धो कर लगावें।

गुण—आतशक के व्रण को शीघ्रता से भरता है।

मरहम उशक

राई, समुद्र झाग, ज़रावन्द लम्बे, गुग्गुल, उशक, गन्धक आंवलासार, अंजरा बीज २—२ तोला, पुराना तैल ज़ैतून १२ तोला, प्रथम उशक, गुग्गुल को ज़ैतून तैल में हल करें, फिर मोम डाल कर अग्नि पर पिघलावें, और इस में औषध चूर्ण मिला कर खूब घोंट दें।

रोग़न ज़ैतून और गुलाब तैल में मिला कर लगावें।

गुण—प्लीहा की शोथ पर लगावें, कण्ठमाला में भी उपयोगी है।

मरहम बवासीर

करनब पत्र आवश्यकतानुसार ले कर जल में डाल कर क्वाथ करें, गल जाने पर पत्रों को निकाल कर थोड़ी अफ़ीम डाल कर खूब कूट लें, और तैल से स्निगध कर के अर्धोष्ण मस्सों पर बांधे।

गुण—यह मरहम अर्शमस्सों को नष्ट करती है।

(२) रसोंत १॥ तोला, छोटी इलायची बीज ४ तोला, दोनों को खरल कर ककरोंदा रस में हल कर के मस्सों पर बांधे।

गुण—उपरोक्त।

मरहम जदवार

जदवार ४॥ माशा, गन्दाबहरोज़ा १॥ तोला, हलदी, देवदारू, मधुयष्टि, मेहन्दीपत्र, भड़भूंजे की छत का धुआं प्रत्येक ३ तोला, कीकर वृक्ष छाल, नीम छाल, रत्नजोत ५—५ तोला, बहरोज़ा के सिवाये बाकी औषध को खूब बारीक कर के ढाई सेर जल में इस कदर जोश दें, कि दो तिहाई जल शेष रह जाये, अब छान कर तिल तैल ५६ तोले डाल कर दुबारा उबालें, जल शुष्क होने पर और केवल तैल मात्र शेष रह जाने पर मोम ६ तोला डाल कर पकावें, अर्धोष्ण कर के लगावें।

गुण—व्रण को भरता है, चोट, बद्ध, तथा गिलटियों के लिये उपयोगी है। प्लैग की गिलटी के लिये भी उत्तम है।

मरहम ख़ास

कमीला ५ तोला, मुरदा संग १ तोला, कर्पूर ६ माशा, मेहन्दी तैल आध सेर, सफ़ेदा काशग़री १ तोला, प्रथम तैल को कड़ाही में डाल कर कमीला मिलायें, और ५ मिण्ट तक मृदु आंच पर रख कर मुरदा संग मिलायें, फिर आंच से उतार कर कर्पूर और सफ़ेदा डाल कर नीम के डण्डे से इतना घोटें, कि सब एक जीव हो जाये, आवश्यकता पर गर्भाशय को शुद्ध कर के प्रयोग करें।

गुण—गर्भाशय शोथ, व्रण तथा गर्भाशय के अन्य विकारों में उत्तम है।

मरहम दाख़लीयून

पुराना रोग़न ज़ैतून १२ तोला, मुरदा संग ६ तोला, ख़तमीबीज, कनोचाबीज, अलसी, इसपग़ोल, मेथी प्रत्येक २ तोला, बीजों को रात्री को जल में भिगोवें, प्रातः को इन का लुआब निकालें, अब मुर्दासंग को बारीक कर के रोग़न ज़ैतून में शामिल करें, और आग पर चढ़ा कर मुरदासंग को लकड़ी से अच्छी तरह तैल में मिलावें, फिर शीतल कर लुआब शामिल करके पकावें, तैल मात्र शेष रहने पर छान लें।

प्रयोग विधि—मरहम को सबज़ कासनी स्वरस, मको रस, सफ़ेदी अण्डा में मला कर दाई से योनी के भीतर रखवायें।

गुण—गर्भाशय शोथ तथा उसकी सख़ती में बहुत ही उपयोगी है।

मरहम राल

मोम सफ़ेद, कर्पूर, राल, कत्थ प्रत्येक १॥ तोला, सब का पृथक २ चूर्ण करें, मोम को गौघृत ६ तोला में पिघला कर पहिले राल चूर्ण डालें, इस के पश्चात कत्थ, कर्पूर डालकर भली प्रकार हल करें, नीम के जल से धोकर प्रयोग करें।

गुण—दुष्ट मांस को दूर कर के आतशक तथा नासूर के व्रण को भरता है।

मरहम रसल

जाऊशीर, जंगार, गन्दा बहरोज़ा, मुर ७—७ माशा, कुन्दर, ज़राबन्द लम्बे प्रत्येक १०॥ माशा, गूग्गुल १४ माशा, मुरदासंग १६ माशा, उशक २ तोला, मोम सफ़ेद, रातीनज १४—१४ माशा, शुष्क औषध का चूर्ण करें और गोंददार औषध को मोम में पका लें, बाद में रोग़न ज़ैतून आवश्यकतानुसार डाल कर मरहम तैयार करें।

गुण—यह मरहम सब प्रकार के ब्रणों को भरता है, कण्ठमाला प्लैग, अर्श, भगन्दर सब में लाभप्रद है।

मरहम काफ़ूरी

सफ़ेदा काशग़री, तैल सरसों, मोम सफ़ेद, अण्डे की सफ़ेदी, कर्पूर प्रत्येक ४ तोला, मोम को तैल में पकावें, फिर कर्पूर और सफ़ेदा को पीस कर तैल में हल करें, शीतल होने पर अण्डे की सफ़ेदी शामिल करें, नीम जल से धो कर लगावें।

गुण—प्रत्येक ब्रण के लिये अत्यन्त उत्तम है, जलन को दूर करता है।

मरहम नासूर

गुलाब तैल ३ तोला, हलदी, मुरदासंग ३—३ तोला, मोम सफ़ेद ६ तोला, हल्दी, मुरदासंग को गुलाब तेल और मोम में मिला कर अग्नि पर रखें, और थोड़ा सा जल डाल कर उबाल दें, जल शुष्क होने पर और औषध चूर्ण के भली प्रकार हल होने पर घोट कर सुरक्षित रखें—

नीम के जल से धोकर मरहम को बत्ती में लपेट कर नासूर में रखें।

गुण—नासूर में उपयोगी है।

मरहम कृष्ण

नीमपत्र २ तोला ले कर सरसों तैल में जला कर निकाल लें और ३॥ तोला सफ़ेदा काशग़री डाल कर नीम के दस्ते से रगड़ें, गाढ़ा होने पर ब्रण पर लगावें।

गुण—सब प्रकार के । व्रणों के लीये अत्यन्त उत्तम है ।

मरहम रत्नजोत

गुलाब तैल २० तोला में २१ माशा रत्नजोत मिला कर आग पर रखें, सुरख़ होने पर मोम २१ माशा और नीलाथोथा १ माशा, रोग़न ज़ैतून १०॥ माशा मिला कर उतार लें तैयार है ।

गुण—उपरोक्त ।

मरहम ख़नाज़ीर

राल, रत्नजोत २—२ तोला, नीलाथोथा, मुरदासंग प्रत्येक १० माशा, मोम ४ तोला, तिल तैल ८ तोला, प्रथम मोम को तैल में पिघलावें, फिर बाकी औषध का चूर्ण डाल कर खूब घोट कर एक जीव कर लें ।

कण्ठमाला की ग्रन्थियों पर लगा कर मालिश करें ।

गुण—कण्ठमाला में उत्तम है ।

मरहम महलल

बाबूना पुष्प, नाख़ूना, मको शुष्क, बरंजासफ़, प्रत्येक ५ तोला, कर्पूर १॥ तोला, अफ़ीम ३ माशा, मोम सफ़ेद, तिल तैल, १—१ पाव, पहिले मोम तैल को पिघला कर औषध चूर्ण मिला कर घोंट लें और अन्त में कर्पूर, अफ़ीम मिला कर एक जीव कर लें ।

गुण—परम शोथनाशक है ।

इस्तमाली कदीम

मरहम मुहलल, सबज़ मको स्वरस, कासनी स्वरस फाड़ा हुआ तिल तैल १—१ तोला मिला लें, आवश्यकता पर रूई लिप्त कर के, गर्भाशय में रखें ।

गुण—गर्भाशय शोथनाशक है ।

इस्तमाली जदीद

गलस्रीन २ सेर, असरोल चूर्ण १ पाव दोनों को मिला कर उप-रोक्त विधि से प्रयोग करें ।

गुण—उपरोक्त ।

इस्तमाली कर्पूर

मरहम काफ़ूरी, मरहम मुहलल, तिल तैल सम भाग लेकर मिला कर उपरोक्त विधि से प्रयोग करें।

गुण—गर्भाशय शोथनाशक है।

मरहम नायाब

वेज़लीन, एकसट्रेकट बेलाडोना (Extract Belladona), कर्पूर, नीम तैल, प्रथम नीम तैल को और वज़लीन को पिघलावें, फिर बाकी औषध मिला कर एक जीव कर लें :—

मस्सों पर लगा कर सेंक दें।

गुण—अर्श के मस्सों पर लाभ दायक है, शोथ तथा पीड़ा नाशक है।

मरहम आतशक

पारद, गन्धक, नीलाथोथा, मुरदासंग, छालीया सफ़ेद जली हुई, कत्थ प्रत्येक ३॥ माशा, गौ घृत ३५ माशा, सब को बारीक कर के घृत में मिला कर एक जीव करें।

गुण—आतशक के नये अथवा पुराने ब्रणों में उत्तम है।

मरहम हो जोह

अनज़रूत, सफ़ेदा प्रत्येक ३॥ माशा, रत्नजोत ७ माशा, मोम सफ़ेद १०॥ माशा, तिलों का तैल २ तोला ११ माशा, यथाविधि मरहम बनावें, आवश्यकता पर कपड़े की बती इस में लिप्त कर के कर्ण के भीतर रखें।

गुण—कर्ण ब्रण, कर्ण पूय के लिये उत्तम है, पीड़ा शामक है।

मरहम सफ़ेदा

गुलाब १ तोला १०॥ माशा में मोम सफ़ेद ४॥ माशा को पिघला कर सफ़ेदा काशग़री और मुरदासंग प्रत्येक ४॥ माशा बारीक पीस कर मिलावें और मरहम तैयार करें, यदि अधिक शीतल बनानी हो,

तो अण्डे की सफ़ेदी आवश्यकतानुसार और कर्पूर २ माशा मिलावें।

गुण—नासा व्रण में उत्तम है।

आबी मरहम

गुग्गुल, पारद प्रत्येक ३।। माशा, रसोंत हिन्दी, पहिले गुग्गुल और रसोंत को पानी में हल करें, फिर पारद मिला कर इस कदर खरल करें, कि एक जीव हो जाये, अब इस को कपड़े पर लगा कर व्रण पर लगा दें।

गुण—हर प्रकार के व्रण तथा नासूर में लाभ प्रद है।

मरहम अहज़ाज़

फटकड़ी, नीलाथोथा, प्रत्येक १। तोला, कत्थ सुरख़ पापड़ीया, राल, तिल का तैल, कूप जल प्रत्येक ५ तोला, प्रथम जल और तिल के तैल को एक कोरे कांसी के बरतन में डाल कर हाथ से मलें, जब छाछ के समान हो जाये, तो बाकी औषध चूर्ण मिलावें, १ वा दो प्रहर पश्चात दोबारा हाथ से मलें, जब एक जीव हो कर मरहम बन जाये, तो सुरक्षित रखें।

गुण—अत्यन्त उत्तम मरहम है, हरप्रकार के व्रण के लीये अमृत समान गुणकारी है।

मरहम ज़रद

अजमोद, कत्थ सफ़ेद, कमीला, नीलाथोथा सबज़ भुना हुआ, संग बसरी, मुरदासंग प्रत्येक ५ माशा, मोम ज़रद २८ माशा, तिल तैल ४ तोला ८ माशा, सब को मोम रोग़न में हल कर के मरहम बनायें, और ५ बार खालस जल से धो कर प्रयोग करें।

गुण—गहरे व्रणों से दुष्ट मांस दूर कर के व्रण को शुद्ध कर के भरता है। उत्तम मरहम है।

मरहम जंजफ़र

मुरदासंग, बहरोज़ा, प्रत्येक १७।। माशा, अलकलबतम, हिंगुल प्रत्येक २१ माशा, कुन्दर, उशक प्रत्येक ३५ माशा, गोंद कीकर १५

तोला, जैतून तैल आवश्यकतानुसार मिला कर मरहम तैयार करें।

गुण—अण्ड कोषों के व्रण, कण्ठमाला, तथा सरतान में लाभ प्रद है।

दवाये बालखोरा

कैनथराडीन आयन्टमिण्ट (Canthardine Ointment) लेकर एरण्ड तैल में मिलावें, और शिर पर मलें।

गुण—शिर के बालों के गिरने में उपयोगी है।

मफ़रहात (Cordials)

यह भी एक प्रकार की माजून है, जो कि विशेष कर के हृदय को बल देती हैं।

मफ़रह आज़म

बहमन सुरख, बहमन सफ़ेद, बालछड़, तज, इलायची बड़ी, इलायची छोटी, गिल अरमनी, गिल मख़तूम, केशर, जदवार ख़ताई, स्वर्ण वर्क, वर्क चांदी प्रत्येक ४ माशा, कस्तूरी ९ माशा, याकूत रहमानी, याकूत ज़रद, यशप काफ़ूरी, कहरवा शमई, कबाब चीनी, नागकेशर, दरूनज अकरबी, तरबूज़, सन्दल सफ़ेद, सन्दल रक्त, धनियां शुष्क छिला हुआ, अम्बरशहब, फ़ादज़हर हैवानी प्रत्येक १३॥ तोला, सोंठ, ज़रिशक, तमालपत्र, नागरमोथा, शकाकल मिश्री, नीलोफ़र पुष्प प्रत्येक १॥ तोला, गाऊज़बान २। तोला, पोस्त निंबू काग़ज़ी २। तोला तवाशीर सफ़ेद २। तोला, अपक्व आवरेशम कुतरा हुआ २। तोला, बादरंजबोया २॥ तोला, मधुर बही रस, मधुर अनार रस, अर्क गुलाब, अर्क गाऊज़बान, अर्क सन्दल, खाँड प्रत्येक १८॥ तोला मधु द्विगुणा, प्रथम ज्वाहारात तथा फ़ाद ज़हर को गुलाब में खरल करें, कस्तूरी और अम्बर, केशर, तथा वर्को को तबाशीर के साथ खरल करें, और बाकी सब औषध का बारीक चूर्ण कर मधु और खाँड के पाक में मिला कर मफ़रह तैयार करें।

मात्रा—७ माशा, अर्क गाजर वा अर्क अम्बर के साथ वा शरबत अनार २ तोले के साथ प्रयोग करें।

गुण—हृदय के सब रोगों को दूर कर के हृदय को बल देता है, प्लेग तथा विसूचिका में भी उपयोगी है।

मफ़रह बारद

अम्बरशहब, स्वर्ण वर्क हल किये हुये, चांदी वर्क हल किये हुये, १—१ माशा, तबाशीर, चन्दन चूरा, गाऊज़बान पुष्प, गुलाब पुष्प की कली, मग़ज़ तुख़म कद्दू मधुर, तुख़म ख़ुरफ़ा प्रत्येक ९ माशा, मोती, कहरबाशमई प्रत्येक ४॥ माशा, रूब सेब मधुर, मधुर बही रूब प्रत्येक ७॥ तोला, अर्क गुलाब, अर्क बेदमुशक प्रत्येक ९॥ तोला, खाँड आध सर, खाँड का अर्क में पाक करें, और बाकी औषध का बारीक चूर्ण करके पाक में मिलावें।

मात्रा—६ माशा।

गुण—उपरोक्त।

मफ़रह सुसबज़ी

कचूर, दरूनज अकरबी, बहमन सुरख़, बहमन सफ़ेद, बादरंज-बोया प्रत्येक ३॥। तोला, फरंज मुशक २। तोला, वज १॥। तोला, ऊद कुमारी १॥। तोला, पुदीना शुष्क, सोया सबज़, दारचीनी, तिल छिले हुये, जायफल, चांदी पत्र, कहरबा, केशर, प्रत्येक ९ माशा, जावित्री, याकूत, प्रत्येक ३॥ माशा सेब जल, मरज़नजोश जल, गाऊ-ज़वान जल प्रत्येक ६ तोला, ज्वाहरात वर्क और केशर को गुलाब में खूब खरल करें, बाकी औषध चूर्ण को सेब आदि के जल में एक दिन रात्री भिगोने के बाद छान कर शहद और गौ दूध मिला कर इस कदर उबालें, कि दूध जल जाये, और शहद मात्र शेष रह जाये, अब बनफ़शा तैल, बादाम तैल ९॥ तोला मिला कर फिर उबालें, पाक सिद्धि पर ज्वाहरात आदि मिला कर मुफ़रह तैयार करें।

मात्रा—७ माशा अर्क गाऊज़बान, अर्क बेदमुशक के साथ।

गुण—हृदय वल्य, ख़फ़कान, उन्माद, जलोदर, पाण्डु तथा अजीर्ण को नष्ट करता है, रोग के बाद की क्षीणता में उत्तम है, वाजी-करण है।

मफ़रह शेखलरहीस

गुलाब पुष्प ६ तोला, गाऊज़बान १६। तोला काहु बीज छिले हुये, मग़ज़ तुख़म ख़रपज़ा, मग़ज़ तुख़म कद्दू, मग़ज़ तुख़म ख़यारैन, खुरफ़ा बीज प्रत्येक १४ माशा, सन्दल सफ़ेद, छोटी इलायची, तबाशीर प्रत्येक ९ माशा, ऊद हिन्दी, दरूनज अकरबी, कचूर, बहमन सफ़ेद प्रत्येक ५।। माशा, मरवारीद (मुक्ता), बुसद जली हुई, कहरबा, सरतान नहरी जले हुये, आबरेशम कुतरा हुआ, सन्दल सुरख़, कर्पूर प्रत्येक ४।। माशा, केशर ३। माशा, अम्बरशहब १ माशा, कस्तूरी ४ रत्ती, रूब सेब, रूब बही प्रत्येक रूब औषध के समभाग लेकर यथा-विधि पाक करें, और बाक़ी औषध का बारीक चूर्ण कर के मिलावें।

मात्रा—३ माशा, अर्क़ गाऊज़बान के साथ।

गुण—उष्ण प्रकृति वालों के लिये लाभ प्रद है, हृदय दुर्बलता ख़फ़क़ान, ज्वर, क्षीणता आदि में उपयोगी है।

मफ़रह दिलकुशा

अम्बरशहब, दरूनज अकरबी, चांदी पत्र प्रत्येक २। माशा, लाल बदख़शान, ऊदकुमारी, याक़ूत रमानी, याक़ूत ज़रद, प्रत्येक ४।। माशा, कचूर, कर्पूर प्रत्येक १।।। माशा, कहरबा शमई, यशप सबज, लौंग, कबाबचीनी, बहमन सुरख़ प्रत्येक ३।। माशा, बहमन सफ़ेद ७ माशा, दारचीनी, तमालपत्र, प्रत्येक ३।। माशा, बुसद, धनियां, गिल अरमनी धुली हुई, बंशलोचन ७—७ माशा, मोती, बादरंजबोया, निंबू काग़ज़ी का ऊपर का छिलका, पोस्त बीरून पिस्ता, चन्दन सफ़ेद, चन्दन रक्त, बनतुलसी बीज प्रत्येक १०।। माशा, गाऊज़बान पुष्प, आमला प्रत्येक १।। तोला, असारा ज़रिशक ३ तोले, केशर ३ रत्ती, कस्तूरी ६ रत्ती, निंबू रस ४० तोला, सेब रस १२ तोला, बही रस ६ तोला, खाँड औषध से त्रिगुण ले कर स्वरसों में डालकर पाक करें, और औषध को कूट छान कर पाक में भली प्रकार मिलावें।

मात्रा—५ माशा।

गुण—उन्माद तथा हृदय रोगों में अपूर्व है।

मफ़रह कबीर

याकूत के टुकड़े ४॥ माशे, संगयशप, अकीक प्रत्येक ३॥ माशा, ग़ारीकयून, अफ़्तीमियून, काली मिरच, सोंठ, लौंग, मरज़नजोश प्रत्येक ७ माशा, हिजर अरमनी, हिजर लाजवरद, नरकचूर, हमामा, हाथी दन्त चूरा, दरूनज अकरबी, बहमन सुरख, गाऊजबान प्रत्येक ४॥ माशा, तमाल पत्र, दारचीनी, सातर, आशा, ज़ूफ़ा, जीरा, वज, सम्भल रूमी प्रत्येक ३॥ माशा, पोदीना २। माशा, फितरासालीयून, (पहाड़ी करफ़स), हालों, हिजरलयहूद, करफ़स बीज, मुरमुकी, कुन्दर, केशर, मरिच सफ़ेद, प्रत्येक २। माशा, स्वर्ण पत्र १ माशा, चांदी पत्र २ रत्ती, प्रथम ज्वाहरात को खूब खरल कर के वर्क भी इस में खरल कर लें, और बाकी औषध को कूट छान कर औषध के मान से दुगना हरड़ के मुरब्बा का शीरा लेकर पाक करें, और पाक सिद्धि पर औषध चूर्ण, तथा ज्वाहरात मिला कर मुफ़रह तैयार करें।

मात्रा—५ माशा।

गुण—हृदय रोग, दुर्बलता, उन्माद, मस्तिष्क दुर्बलता, अजीर्ण, प्लीहा, यकृत क्षीणता, आमवात तथा जीर्ण ज्वरों में उत्तम है।

मफ़रह मोसवी

ज़रिशक ४४ माशा, खुरफ़ा बीज छिला हुआ २८ माशे, तबाशीर, बहमन सफ़ेद, गुलाब पुष्प, गाऊजबान पुष्प प्रत्येक १४ माशा, याकूत सुरख, मोती, कहरबा शमई, बुसद, सन्दल सफ़ेद, धनियां शुष्क प्रत्येक ७ माशा, गिल अरमनी धुली हुई ४॥। माशा, बहमन सुरख, सोने के वर्क, चांदी पत्र, पोस्त बीरून पिस्ता, अपक्व आबरेशम कुतरा हुआ, अम्बरशहब प्रत्येक ३॥ माशा, शरबत निंबू सब औषध के शमभाग खाँड द्विगुणा, सब औषध का बारीक चूर्ण कर, खाँड तथा शरबत का पाक करके औषध चूर्ण मिला कर मुफ़रह तैयार करें, और आखीर में ज्वाहरात बारीक खरल करके मिलावें।

मात्रा—५ माशा, अर्क गाऊज़बान से।

गुण—उपरोक्त।

मुफरह मतहदिल

कस्तूरी, अम्बर १—१ माशा, गुलाब पुष्प, नागरमोथा, दरूनज-अकरबी, बालछड़, दारचीनी, केशर, मस्तगी, लौंग, जायफल, इला-यची, कबाबचीनी, पिप्पली, इलायची बड़ी, निंबू काग़ज़ी, पान जड़, ऊद हिन्दी, मोती, बुसद, कहरबा प्रत्येक ३॥ माशा, कचूर ३॥। माशा, अपक्व आबरेशम कुतरा हुआ ८॥। माशा, तुलसी बीज ८॥। माशा, खाँड सफ़ेद सब औषध के सम भाग, मधु औषध मान से द्विगुण, हिजरयात, कस्तूरी, केशर, तथा मस्तगी को पृथक २ खरल करें और बाकी औषध के चूर्ण में मिला दें, अब मधु तथा ख़ाँड का पाक कर के अन्त में औषध चूर्ण मिला दें।

मात्रा—९ माशा।

गुण—हृदय को बल देता है, अतिसार तथा गर्भाशय रोगों में भी बहुत लाभ प्रद है, पाचक तथा उत्तेजक है।

मुफरह याकूती मुतहदिल

कस्तूरी, याकूत रमानी लाल, बादरंजबोया, प्रत्येक ४॥ माशा, अम्बरशहब बड़ी इलायची, स्वर्ण वर्क, कर्पूर, गिल मख़तूम, धनियां, लाजवरद, गिल अरमनी, बालछड़, नागकेशर, प्रत्येक ३॥ माशा, मोती, बुसद, कहरबा शमई, केशर, गाऊज़बान, मस्तगी रूमी, दार-चीनी, अपक्व आबरेशम कुतरा हुआ, निंबू काग़ज़ी का छिलका, बहमन सफ़ेद, कचूर, छड़ीला, मग़ज़ तुख़म कद्दू, नख, ज़रिशक, ख़ुरफ़ा बीज, बन तुलसी बीज, तबाशीर, मग़ज़ तुख़म हयात, गाऊज़बान बीज, प्रत्येक ७ माशा, सन्दल सफ़ेद, ऊद हिन्दी, दरूनजअकरबी, गुलाब पुष्प १०॥ माशा, शरबत निंबू २५ तोला, मधु औषध से दुगना, ज्वाह-रात को पृथक खरल करें, और अम्बर, कस्तूरी, मस्तगी रूमी को भी पृथक २ खरल करें, फिर सब औषध चूर्ण को आपस में मिला कर एक जीव कर लें, मधु तथा खाँड का पाक कर के औषध चूर्ण मिला कर मुफ़रह तैयार करें।

मात्रा—९ माशा, अर्क गाऊज़बान से।

गुण—उपरोक्त।

मुफ़रह बंगयान

हरी भांग ७॥ तोला, जावित्री, बालछड़, तमालपत्र, सोंठ, प्रत्येक ४॥ तोला, मिरच काली, मस्तगी, केशर ३---३ तोला, प्रथम भांग को बादाम तैल में दो सप्ताह तक तर रखें, फिर हलका सा भून कर बारीक चूर्ण कर लें, फिर बाकी औषध का बारीक चूर्ण मिला त्रिगुणा मधु में मिला सुरक्षित रखें, यदि इस में ऊद हिन्दी ३ तोला, कस्तूरी १॥ तोला, चांदी वर्क ९ माशा, अम्बरशहब और स्वर्ण वर्क ४॥ माशा और मिलावें, तो अति उत्तम मुफ़रह तैयार होगा।

मात्रा---७ माशा।

गुण---स्तम्भक, उत्तेजक, हृद्य तथा वाजीकर है।

मुफ़रह याकूती

लाल याकूत, चन्दन सफ़ेद प्रत्येक ९ माशा, मोती, कहरबा, केशर, प्रत्येक १३॥ माशा, ऊद कुमारी, दरूनज कुमारी, गुलाब पुष्प प्रत्येक १८ माशा, स्वर्ण वर्क, चांदी के वर्क, अम्बरशहव, बड़ी इलायची, छोटी इलायची, कर्पूर, गिल मख़तूम, केसर पुष्प, लाजवरद धुला हुआ, गिलारमनी, बालछड़, नागकेसर, बादरंजबोयाबीज, प्रत्येक ४॥ तोला, गाऊज़बान, मस्तगी, दारचीनी, आबरेशम कुतरा हुआ, पोस्त-निम्बू, बहमन सफ़ेद, छलीड़ा, नरकचूर, मग़ज़ तुख़म कदू, नाख़ूना, ज़रिशक, ख़ुरफ़ा बीज छिला हुआ, बन तुलसी, तबाशीर, काहु बीज, ख़यार बीज, प्रत्येक १०॥ तोला, शरबत हमाज़ १ सेर २५ तोला, कुरस अम्बर प्रत्येक ५२॥ तोला, मधु २ सेर ५० तोला, शरबत तथा मधु का पाक करके यथाविधि मुफ़रह तैयार करें।

मात्रा---६ माशा।

गुण---शरीर तथा हृदय के लीये परम बल प्रद है।

मुफ़रह याकूती बारद

मरजान मूल, गिलारमनी कज़माज़ज, मोड़ीयों बीज, बनफ़शा-पुष्प, गुलनार फ़ारसी, स्वण वर्क, अम्बरशहब, कस्तूरी प्रत्येक ४॥ माशा, याकूत रमानी, लाल बदख़शानी, यशप काफ़ूरी, ज़रिशक साफ़,

किया हुआ, चांदी पत्र, कर्पूर केसूरी, प्रत्येक १३।। माशा, मोती, बादरंजबोया, गाऊज़बान, वन तुलसी बीज, केशर, आमला, ख़ुरफ़ा बीज छिले हुये, दोनों बहमन, दोनों चन्दन प्रत्येक २२।। माशा, वंशलोचन ३१।। माशा, कासनी ४५ माशा, अर्क कासनी ७।। तोला, शरबत मधुर अनार, शरबत मधुर सेब, शरबत हमाज़ प्रत्येक १५ तोला, मधु २९।। तोला, खाँड ४७ तोला, मधुर औषध का पाक कर बाकी औषध का बारीक चूर्ण मिला कर यथाविधि मुफ़रह तैयार करें।

मात्रा—७ माशा से १ तोला।

गुण—पित्त प्रकृति वालों के लिये अत्यन्त उत्तम है।

मुफ़रह हार सादा

बादरंजबोया १०।। माशा, नरकचूर, दरूनज अकरबी, गाऊज़बान २१—२१ माशा, सब को बारीक पीस कर आवश्यकतानुसार शरबत सेब और मधु का पाक कर मुफ़रह तैयार करें।

मात्रा—१ तोला।

गुण—सरदी से उत्पन्न ख़फ़कान तथा हृदय दुर्बलता में उत्तम है।

मुफ़रह बारद

मोती, आबरेशम कुतरा हुआ, गाऊज़बान प्रत्येक ९ माशा, गाऊज़बान पुष्प, गुलाब पुष्प, धनियां शुष्क, तबाशीर, मग़ज़ कद्दू, मग़ज़ तुख़म ख़ीरा, तुख़म ख़ुरफ़ा छिला हुआ, कहरबा शमई प्रत्येक १३।। माशा, शरबत फोवाका ९० माशा, खाँड सफ़ेद, अर्क गुलाब, अर्क बेदमुशक प्रत्येक ३७ तोला ६ माशा, प्रथम खाँड, तथा शरबत का अर्कों में पाक करें, बाकी औषध का चूर्ण मिलाकर मुफ़रह तैयार करें।

मात्रा—९ माशा।

गुण—हृदय दुर्बलता तथा ख़फ़कान में उपयोगी है।

मुफ़रह आबरेशम

आबरेशम अपक्व १८ तोला ९ माशा लेकर अर्क गाऊज़बान, गुलाब, बेदमुशक, प्रत्येक १५ तोला में भिगोवें, और जोश दे कर निचोड़

लें, अब मधुर बही जल, मधुर सेब जल प्रत्येक ७ तोला ७ माशा, खाँड ८ तोला ९ माशा में मिला कर पाक करें, पाकसिद्धि पर कस्तूरी ३।। माशा, अम्बर ७ माशा डाल कर नीचे उतार लें, शीतल होने पर कहरबा, मरजान जड़, गुलाब पुष्प, चन्दन श्वेत प्रत्येक ४।। माशा, बंशलोचन, मोती प्रत्येक ५। माशा का बारीक चूर्ण डाल कर मुफ़रह बनावें।

मात्रा—४।। माशा।

गुण—सरदी के कारण हृदय दुर्बलता को नष्ट करता है।

मुफ़रह आबरेशम लोलवी

आबरेशम अपक्व १८ तोला ९ माशा ले कर स्वर्ण तथा चांदी के बुझे हुये जल में एक दिन रात्री भिगोवें, और जोश देकर छान लें, अब गाऊज़बान, वन तुलसी, गुलाब पत्र, बालछड़, छड़ीला प्रत्येक ७ माशा लेकर अर्क गुलाब में भिगोवें, और जोश देकर मल छान लें, फिर इस में आबरेशम का जल मिला कर दुगुनी खाँड मिला कर पाक करें, इस पाक में चन्दन सफ़ेद घिसा हुआ ३।। माशा, मोती, कहरबा, हिजरयशप ७–७ माशा, बंशलोचन सफ़ेद ९ माशा, अम्बर ३।। माशा, कस्तूरी पौने दो माशा मिला कर मुफ़रह तैयार करें।

मात्रा—९ माशा, अर्क गुलाब, गाऊज़बान के साथ।

गुण—दिल, यकृत तथा आमाशय को बल देता है, अतिसार बन्द करता है, उन्माद, हृदय डूबना में लाभ प्रद है।

मुफ़रह लोलवी

मुशक (कस्तूरी) ३ माशा, मोती, छोटी इलायची, अम्बरशहब, कर्पूर प्रत्येक ९ माशा, बंशलोचन, आबरेशम (अपक्व) कुतरा हुआ, बहमन सफ़ेद १—१ तोला, धनियां, गाऊज़बान पुष्प, गुलाब पुष्प प्रत्येक दो तोला, मग़ज़ तुखम काहू २।। तोला, चांदी पत्र ३ तोला, मग़ज़ तुखम खयारैन ५ तोला, चंन्दन सफ़ेद गुलाब में घिसा हुआ १० तोला, मधु उत्तम सब औषध के समान, खाँड औषध से दुगुनी, पहिले

मधुर औषध का पाक करके फिर बाकी औषध का बारीक चूर्ण मिलावें।

मात्रा—७ माशा से १ तोला।

गुण—उपरोक्त।

मुफ़रह मसीह

कस्तूरी १।।। माशा, तमालपत्र, सोंठ, पिप्पली, लाल बदख़शानी, कहरबा, मरजान मूल प्रत्येक ३।। माशा, नागर मोथा ५। माशा, अम्बरशहब, मोती ७—७ माशा, पानजड़, कबाबचीनी, लौंग, जायफ़ल, दोनों इलायची, बनतुलसी, केशर, पोस्ततरंज, इन्द्रजौ, जावित्री प्रत्येक १०।। माशा, दोनों बहमन, बालछड़, छलीड़ा प्रत्येक १४ माशा, तज, गाऊज़बान, गुलाब पुष्प प्रत्येक १७।। माशा, बादाम तैल १७ माशा, सोने के वर्क, चांदी वर्क प्रत्येक २। माशा, भांग बारीक चूर्ण ८ तोला ९ माशा, खाँड सब औषध से त्रिगुणा ले कर पाक करें, और शेष औषध का बारीक चूर्ण डाल कर मुफरह तैयार करें।

मात्रा—४ से ८ माशा।

गुण—दिल, दिमाग़ को बल देता है, कमर तथा वृक्कों को बल प्रद है, दीपक पाचक है, वाजीकरण तथा स्तम्भक है।

मुफ़रह हार सादा

बादरंजबोया, पोस्त निम्बू, लौंग, तज, केशर, मस्तगी, जायफल, बड़ी इलायची, नाग केसर, आमला का घन सत्व, दोनों बहमन, नरकचूर, तुलसी, दरूनजअकरबी, बनतुलसी प्रत्येक १७ माशा, कस्तूरी १।।। माशा, शीरा मुरब्बा आमला, शीरा मुरब्बा हरीतकी, आवश्यकतानुसार लेकर पाक करके शेष औषध का चूर्ण बारीक मिलावें।

मात्रा—४।। माशा से ७ माशा।

गुण—सब शरीर के अंग प्रत्यंगों को बल देता है, बालों को काला रखती है, वातरोग, उन्माद आदि में उत्तम है।

नोशदारू

इस को अनोशदारू भी कहते हैं, जिस का अर्थ दीपक पाचक औषध है, यह भी माजून की तरह ही है, विशेष कर इस में मुख्य भाग आमला होता है।

विधि—ताज़ा आमला को जल में पका कर गल जाने पर छान लें। फिर इस की गुठलियां पृथक करके मल कर कपड़े में इस का गूदा छान लें, अब इस में द्विगुणा खाँड मिला कर पाक करें, पाक की उष्ण अवस्था में ही दूसरी औषध का बारीक चूर्णकरके डालदें, यदि आमला ताज़ा न मिले, तो शुष्क आमला गुठली रहित कर एक दिन रात दूध में भीगा रहने दें, इस के बाद तिगुना जल डाल कर उबालें, ज़ब दूध की चिकनाई तथा आंवलों का कसेलापन नष्ट हो जाये, तो निकाल कर दूसरे जल में जोश दे कर उपरोक्त विधि से नोशदारू तैयार करें।

नोशदारू सादा

गुलाब पुष्प १॥। तोला, नागरमोथा १॥ तोला, लौंग, मस्तगी, तगर, बालछड़ प्रत्येक १०॥ माशा, दोनों इलायची, ब्राह्मी, जावित्री, जायफल, तज, केशर प्रत्येक ७ माशा, आमला छिला हुआ आध सेर, खाँड ३० तोला, प्रथम आमला को रात्री को दूध में भिगोवें, प्रातः जल से धो कर जल में उबालें, और आमला के गल जाने पर छलनी से छान कर गुठलियां निकाल दें, अब जल में खाँड और मधु डाल कर पाक करें, बाकी औषध का चूर्ण इस में मिला कर अनोशदारू तैयार करें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—दीपक पाचक है, अतिसार नाशक है।

नोशदारू लोलवी

अम्बर, केशर, मोती, बुसद, यशप, नागरमोथा, अज़ख़र प्रत्येक ११। माशा, आबरेशम (अपक्व) कुतरा हुआ, तबाशीर, तमालपत्र,

बाल छड़, गिलारमनी प्रत्येक १३।। माशा, औषध को कूट छान कर चूर्ण करें, और खाँड औषधसे १।। गुणा तथा खाँडके समान भाग मधु लेकर यथाविधि पाक करें, पाक में औषध चूर्ण मिला लें।

मात्रा—५ माशा ।

गुण—दीपक, पाचक, शरीर को बल देता है, हृदय दुर्बलता को भी उपयोगी है ।

याकूती

याकूती में ज्वाहरात की अधिकता होती है, निर्माणविधि अवलेह की तरह है ।

याकूती बारद

मग़ज़ तुख़म कद्दू, मग़ज़ तरबूज़, मग़ज़ तुख़म ख़यारैन, तुख़म काहू प्रत्येक १०।। माशा, खुरफ़ा बीज छिले हुये १६ माशा, मोती ८। माशा, चन्दन सफ़ेद, बालछड़, बंशलोचन, छालीया, चन्दन लाल, बुसद, क़हरबा प्रत्येक ८ माशा, केकड़े (सरतान) जला हुआ ८। माशा, ज़ुमुरद सबज़ २। माशा, आबरेशम कुतरा हुआ, बह्मन सुरख़, तथा सफ़ेद, गुल गाऊज़बान, गुल गुलाब की कली, शकाकल मिश्री, इलायची, दारचीनी प्रत्येक १।। माशा, आमला १।।। तोला, केशर, अम्बरशहब, स्वर्ण वर्क, कस्तूरी प्रत्येक १।।। माशा, वर्क चांदी ८ माशा, मिश्री १७ तोला, मधुर सेब जल, अमरूद जल, वही जल, शरबत फोवाका मधुर, अर्क गुलाब, उत्तम मधु, अर्क सन्दल प्रत्येक ७ तोला, प्रथम ज्वाहरात को अर्कों में खरल करें, फिर खाँड तथा मधु का पाक कर के बाकी औषध का चूर्ण मिलावें ।

मात्रा—३ माशा ।

गुण—उष्ण प्रकृति वालों क लिये उत्तम है, शरीर को दृढ़ बनाती है ।

याकूती हार

याकूत रमानी ३ माशा, मोती ५ तोले, कहरबा शमई १।। तोले, कस्तूरी, लाज़वरद धुला ३—३ माशा, कुन्दर, पोदीना, प्रत्येक

७॥ माशा, ऊद; केशर प्रत्येक ९ माशा, दरूनज अकरबी ६ माशा, अम्बर शहब ८ माशा, उस्तोख़द्दूस ६ माशा, दारचीनी १ तोला, मधु त्रिगुण, यथाविधि पाक करके याकूती तैयार करें।

मात्रा—३ से ५ माशा।

गुण—शीत प्रकृति वालों के लिये उपयोगी है।

याकूती मुतहदिल

मोती ६ माशा, कहरबा शमई ३ माशा, गाऊज़बान पुष्प, बादरंजबोया, धनिया १–१ तोला, याकूत रमानी ८ माशा, मग़ज़-कदु मधुर, मग़ज़ तरबूज़ प्रत्येक दो तोला, सन्दल सफ़ेद, वंशलोचन, छोटी इलायची, बहमन सुरख़ तथा सफ़ेद, प्रत्येक १-१ तोला, आबरेशम कुतरा हुआ, चांदीपत्र ६–६माशा, ख़ुरफ़ाबीज २ तोला, लाजवरद धुला हुआ ८ माशा, अम्बर शहब ४ माशा, केशर ६ माशा, कस्तूरी २ माशा, स्वर्णवर्क २ माशा, शरबत फोवाका १० तोला, शरबत सेब २० तोला, मिश्री १० तोला, गुलाब, बेदमुशक, अर्क पित-पापड़ा प्रत्येक २० तोला, प्रथम शरबतों, मिश्री और अर्कों को मिलाकर पाक करें, और दूसरी शेष औषध का चूर्ण बनाकर हिजर-यात का चूर्ण भी इसी में मिलाकर पाक में मिलावें।

मात्रा—३ माशा।

गुण—उपरोक्त।

याकूती सादा

याकूत, फ़ादज़हरमहदनी, अकीक, कहरबा, बुसद, यशप, प्रत्येक ४॥ माशा, आबरेशम चन्दन तथा गुलाब में घिसा हुआ, ऊदग़रकी, गाऊज़बान, गाऊज़बानपुष्प, तमालपत्र, दरूनज अकरबी, केशर, वन-तुलसी, पोस्त अतरज प्रत्येक ३॥ माशा, धनियां शुष्क, नसरीनपुष्प, दोनों बहमन, लाजवरद धुला हुआ, आकाशवेल, प्रत्येक ७ माशा, कस्तूरी, अम्बर प्रत्येक १॥।माशे, मुरब्बा हरड़, मुरब्बा आमला, ३-३ नग, शरबत अनार ६ तोला, चांदीपत्र १०॥ माशा, प्रथम ज्वाहा-रात को अर्कों में खरल करें, और मुरब्बाजात को बारीक पीस लें,

अब औषध से त्रिगुण मधु वा खाण्ड का पाक करके औषध चूर्ण इस में मिला देवें। अन्त में चांदीपत्र शामिल करें।

मात्रा—५ माशा।

गुण—उपरोक्त।

याकूती लोलवी

याकूत सुरख, कहरबा प्रत्येक ५ माशा, मोती, संगयशप, प्रत्येक ६ माशा, प्रवाल ९ माशा, मग़ज़ तुख़म ख़रपज़ा, मग़ज़ तुखम ख़यारन प्रत्येक १॥ तोला, शकाकल, सहलब, दोनों तोदरी, दोनों बहमन १-१ तोला, हालोंबीज, कबाबचीनी, दारचीनी प्रत्येक ६ माशा, इन्द्रजौ, बादरंजबोया, गुलाब पुष्प, प्रत्येक ७ माशा, तमाल-पत्र ९ माशा, चन्दन सफ़ेद ४ माशा, बंशलोचन, चांदीपत्र प्रत्येक ५ माशा, स्वर्ण वर्क, केशर, ३-३ माशा, आबरेशम १॥। तोला, मुरब्बा सेब, शरबत मधुर अनार प्रत्येक १५ तोला, मिश्री, मधु प्रत्येक ३० तोला, प्रथम ज्वाहरात को अर्क गुलाब में खरल करें, और मुरब्बों को धोकर सिल पर पीस लें, अब शरबत में खाण्ड तथा मधु मिलाकर पाक करें, औषध का बारीक चूर्ण डालकर याकूती तैयार करें।

मात्रा—५ से ७ माशा।

गुण—वाजीकरण है, सब शरीर को दृढ़ बनाती है।

याकूती

स्वर्ण भस्म, २। माशा, याकूत सुरख रमानी, गाऊज़बानपुष्प, कासनी बीज, कस्तूरी, काफ़ूर, बहमन सफ़ेद, ऊद, हिजर अरमनी, लाजवरद, तज, दारचीनी, केशर दोनों इलायची, जदवारखताई प्रत्येक ४॥ माशा, आबरेशम कुतरा हुआ, सरतान जला हुआ प्रत्येक ६ माशा, मोती उत्तम, कहरबा शमई, मूंगे की जड़ प्रत्येक पौने सात माशा, अफ़तमीयून ११। माशा, बन तुलसीबीज, फरंज-मुशकबीज, उस्तोख़दूस, प्रत्येक १३॥ माशा, मग़ज़ तुख़म ककड़ी

गुलाब पुष्प, प्रत्येक १।। तोला, दरूनज अकरबी, तुरंजबीन, बालछड़, अम्बरशहब प्रत्येक ७ माशा, अर्क गुलाब ३७।। तोला, शरबत हमाज़, शरबत मधुर सेब, शरबत मधुर अनार, प्रत्येक ११। तोला, मधु आवश्यकतानुसार, यथाविधि याकूती बनावें, ४० दिन पश्चात् प्रयोग करें ।

मात्रा––३ से ४ माशा ।

गुण––दिमाग, दिल, यकृत को बल देती है, उन्माद तथा अन्य वात रोगों में उत्तम है ।

याकूती बारद

स्वर्ण वर्क ३ माशा, लाल बदख़शानी, ज़मुरद, अम्बरशहब, प्रत्येक ४ माशा, याकूत रमानी, मोती, कहरूबा शमई, चांदीपत्र, प्रत्येक ९ माशा, तबाशीर सफ़ेद, सन्दल सफ़ेद, धनियां १–१ तोला, आमला गुठली रहित, मधु श्वेत ५ तोला, मधुर अनार जल १ पाव, खाण्ड आधा सेर, यथाविधि पाक कर औषध चूर्ण डाल कर याकूती बनावें ।

मात्रा––४।। माशा ।

गुण––दिल दिमाग को ताकत देती है ।

याकूती हार

कस्तूरी, अम्बरशहब प्रत्येक २ रत्ती, बहमन सुरख़ १।।। माशा, केशर, हरड़, प्रत्येक ३।। माशा, याकूत रमानी, मुक्ता, लौंग, सोंठ, छालीया, बालछड़, पिप्पली, इलायची दोनों, जायफल, शाहतरा, दारचीनी, तेजपात, इन्द्रजौ, दरूनज, गाऊज़बान, मस्तगी, पानजड़, फ़रंजमुशक, चन्दन सफेद, ज़रावन्द गोल, तज, गुलाब पुष्प, ७–७ माशा, निम्बू का ऊपर का छिलका १०।। माशा, जावित्री १।।। माशा, मधु सबऔषध से द्विगुण, सब औषध का चूर्ण करें, मधुर औषध का पाक करके चूर्ण मिलाकर यथाविधि याकूती तैयार करें ।

मात्रा––४।। माशा ।

गुण––उपरोक्त ।

याकूती

स्वर्ण वर्क २। माशा, याकूतरमानी ४॥ माशा, मुक्ता, कहरबा, शमई, मरजान (प्रवाल) मूल, गिल अरमनी, गाऊज़बान पुष्प बंशलोचन प्रत्येक ९ माशा, खुरफ़ाबीज छिला हुआ, १ तोला १० माशा, खाण्ड सब औषध के समान, शरबत फोवाका सब औषध से पांच गुणा, खाण्ड तथा शरबत का पाक करके बाकी औषध का बारीक चूर्ण करके पाक में मिलाकर यथाविधि याकूती तैयार करें।

मात्रा—६ माशा।

गुण—खफ़कान, ग़शी के लिये उपयोगी हैं, हृदय को बल देती है, उत्तम योग है।

माजून—अवलेह (Confection)

माजून यह एक विख्यात मिश्रित योग है, जो मधु तथा खाण्ड के पाक में औषध के बारीक चूर्ण को मिलाकर बनाया जाता है, इस का पाक ज्वारश की भांति मृदु रखा जाता है, जो अंगुलियों से वा चमचे से हलवे की भांति खाया जा सके, इस विधि से औषधियों का गुण बहुत दिनों तक सुरक्षित रहता है, विधि निम्न है।

निर्माण विधि—औषध चूर्ण से त्रिगुण मधु वा खाण्ड हुआ करती है,कभी २ द्विगुण भी होती है। पाक खमीरे से पतला और शरबत से गाढ़ा होना चाहिये, औषध चूर्ण मिला देने से भी हलवे की भांति मृदु रहे, यदि मुरब्बा भी योग में हो, तो पृथक् पीस कर मिलावें, मग़ज़यात को बारीक पीस कर घी में भूनकर मिलावें, पाक के शीतल होने पर औषध चूर्ण थोड़ा २ मिला कर चमचे से चलाते रहें, और शनै २ सारा चूर्ण मिला दें, किसी स्वच्छ बरतन (चीनी तथा शीशे के मरतबान) में रखें, हिज़रयात, केशर तथा कस्तूरी को पृथक् पीस कर मिलावें, स्वच्छता से रखने से माजून कभी दूषित नहीं होता।

माजून आरद खुरमा

गोंदकीकर, छुहारे का आटा (अर्थात् बारीक पिसा चूर्ण), सिंघाड़ा का आटा प्रत्येक आधा सेर, मग़ज़ मधुर बादाम, मग़ज़

चलग़ोज़ा, मग़ज़ फिन्दक, प्रत्येक ५ तोला, बनोला गिरी का मग़ज़ १ तोला, लौंग ६ माशा, जावित्री, जायफल प्रत्येक ३ माशा, (कभी दारचीनी, सोंठ, छोटी इलायची ६-६ माशा भी डाली जाती है) का बारीक चूर्ण करें, तुरंजबीन तथा मधु प्रत्येक २॥ सेर का पाक करके ऊपर की औषध चूर्ण मिलाकर माजून तैयार करें।

मात्रा—१ तोला।

गुण—यह माजून प्रमेह वीर्य के पतलापन में उपयोगी है।

माजून अज़राकी

कुचला शुद्ध २। तोला, गाऊज़बान पत्र १॥ तोला, उस्तोख़-दूस, गोंदकतीरा, नारियल, मग़ज़ चलग़ोज़ा, प्रत्येक १३॥ माशा, छोटी इलायची बीज, कचूर, शकाकल मिश्री, चन्दन सफेद, आमला, हरीतकी कृष्ण, प्रत्येक ९ माशा, ऊद हिन्दी, लौंग, प्रत्येक ४॥ माशा, कूट छानकर त्रिगुण मधु के पाक में माजून तैयार करें।

मात्रा—१ माशा।

गुण—वातकफ़ रोग, अर्दित, अर्धांग, वातकम्प, अपस्मार, अजीर्ण दोष, कामशक्ति दुर्बलता, तथा वृद्ध जनों की दुर्बलता में अत्यन्त उत्तम है।

माजून अस्पन्द सोखतनी

कृष्ण हरमल, जावित्री, जायफल, लौंग, दारचीनी प्रत्येक १॥ तोला, तिल काले धुले हुये २ तोला, सब को कूट छान कर त्रिगुण मधु मिला माजून बनावें।

मात्रा—३ से ६ माशा।

गुण—वाजीकर तथा स्तम्भक है।

माजून अलकली

मधुर बादाम मग़ज़ भुने हुए, मग़ज़ पिस्ता भुना हुआ, मग़ज़ चलगोज़ा भुना हुआ, मगज़ चरोंजी भुना हुआ, खशखाश बीज भुने

हुए, तिल काले धुले हुए भुने हुए, मग़ज़ फिन्दक भुना हुआ, मग़ज़ हब्ब किलकिल, मग़ज़ हबतुलखिज़रा, दारचीनी, पानजड़, मोचरस प्रत्येक ३ माशा, मग़ज़ नारजील, दोनों बहमन, तोदरी दोनों, इलायची दोनों, प्रत्येक ४ माशा, दरूनज अकरबी, पोदीना शुष्क, मस्तगी, वंशलोचन, तालमखाना, कबाबचीनी प्रत्येक ४ माशा, जावित्री, सोंठ, पिप्पली, तरंज छिलका, गोक्षरू, लौंग, गाजर बीज, शलगम बीज, हालों बीज, कौंच बीज, ज़रनबाद (कचूर), मेदा लकड़ी, प्रत्येक २ माशा, बालछड़, अम्बर शहब, प्रत्येक १ माशा, चोबचीनी २। तोला, मंजीठ २ माशा, खाण्ड १६ तोला, तुरंजबीन १७ तोला, मधु उत्तम १६ तोला, केशर १ माशा, प्रथम तुरंजबीन को जल में घोल कर छान लें, और थोड़ी देर के वाद निथार कर खाण्ड तथा मधु मिला कर पाक करें, तत्पश्चात् औषध चूर्ण मिला कर माजून तैयार करें।

मात्रा—१ तोला ।

गुण—वृक्क तथा मूत्राशय को बल देता है, और वीर्यप्रद है ।

माजून बन्द कुशाद

तालमखाना, मेदा लकड़ी, उटंगन बीज, मग़ज़ कौंचा मूसली काली तथा सफेद, बीजबन्द काले, बीजबन्द गुजराती, साहलब मिश्री, प्रत्येक ३ तोला, शकाकल २ तोला, तज, जावित्री, सोंठ, मोचरस, जायफल, दारचीनी १-१ तोला, पिप्पली ६ माशा, सब औषध को कूटछान कर चूर्ण बनावें, गौदुग्ध का खोया १ सेर लेकर भून लें, अब मधु ।। सेर, खाण्ड १।। सेर का पाक कर के खोया और शेष सब औषध इस में मिला दें ।

मात्रा—१ तोला ।

गुण—वाजीकरण तथा स्तम्भक है ।

माजून बवासीर

कहरबा १।। तोला, गिलारमनी, अतीस, निशास्ता, मोड़ीयों बीज, तेवाज खताई, धनिया, अंजबार जड़, माजु सब्ज, बिल्वगिरी,

मगज़ तुख़म नीम, नागरमोथा, जीरा सफ़ेद, तबाशीर प्रत्येक ३ माशा, शरबत मोड़ीयों बीज, खाण्ड १०-१० तोला, शरबत तथा खाण्ड का पाक करें, सब औषध को कूट छान कर पाक में मिलावें ।

मात्रा—७ माशा ।

गुण—अर्श तथा अर्शजनित अतिसार में उपयोगी है ।

माजून बोलस

शुद्ध भल्लातक, अफ़तीमियून विलायती प्रत्येक ३ तोला, तज, वज तुरकी, जरावन्द मदहरज (गोल), केशर, दारचीनी, मस्तगी प्रत्येक २। तोला, कुठ मधुर, सुदाव बीज, मरिच सफ़ेद, प्रत्येक २॥ तोला, गारीकून ९ तोला, मुसब्बर २२ तोला, सब को कूट छान कर त्रिगुण मधु में मिला कर माजून तैयार करें ।

मात्रा—५ माशा ।

गुण—यह माजून मस्तिष्क को बल देती है, बुद्धि को बढ़ाती है ।

माजून पेठा पाक

पेठा १, चांदी पत्र ६ माशा, सोंठ, जीरा कृष्ण, जीरा सफेद, प्रत्येक १४ माशा, जायफल, लौंग, जावित्री, सहलब मिश्री, प्रत्येक २। तोला, नारयील ताज़ा ५ तोला, मगज बादाम, १० तोला, मगज पिस्ता, किशमिश, गौघृत प्रत्येक १० तोला, मधु ॥ सेर, खाण्ड १ सेर पहिले पेठे का मुरब्बा यथाविधि बनावें, मग़ज़यात को घी में भून लें, बाकी औषध को कूट छान लें, अब मधु, और खांण्ड के पाक में पेठा का मुरब्बा और किशमिश पीस कर मिलावें, फिर बाकी औषध का चूर्ण मिलावें ।

मात्रा—१ तोला ।

गुण—वाजीकरण है, कास, श्वास, अपस्मार, शिरोभ्रम, अजीर्ण, प्रमेह, अर्श तथा दुर्बलता को नष्ट करती है ।

माजून प्याज

श्वेत प्याज़ रस, मधु प्रत्येक १ सेर, दोनों को इतना पकावें, कि पाक हो जाये, अब इस में तोदरी दोनों, साहलब मिश्री, दोनों

बहमन, सोंठ, प्याज़ बीज, मूली बीज, गन्दना बीज, शलगम बीज, तालमखाना, मूसली श्वेत तथा कृष्ण, प्रत्येक १।।। तोला, कूट छान कर मिलावें।

मात्रा—१ तोला

गुण—वाजीकर तथा वीर्यप्रद हैं।

माजून तलख़

ग़ारीकून छलनी में छानी हुई १२ तोला, मुसब्बर ८।। तोला, तगर, तज, सकमूनीया प्रत्येक २।। तोला, मस्तगी, ऊद बलसान प्रत्येक १।।। तोला, फ़रफ़यून, काली मिरच, सफ़ेद मरिच, पिप्पली, हिब-जत्याना, कालादाना, अज़ख़र प्रत्येक १ तोला २ माशा, रेवन्दचीनी १ तोला, मस्तगी के सिवाये सब का चूर्ण करें, और मस्तगी को पृथक खरल कर के चूर्ण करें, अब २ सेर मधु का पाक बना कर औषध चूर्ण मिलावें।

मात्रा—२ माशा।

गुण—अर्दित, अर्धांग, अपस्मार, वातकम्प, आमाशय शूल, यकृत शूल, कटिशूल और विबन्ध को दूर करती है।

माजून साहलब

कस्तूरी १।।। माशा, जुन्दबदस्तर, दरूनज अकरबी, चांदीपत्र, अम्बर प्रत्येक ३।। माशा, बालछड़, बड़ी इलायची, ऊद ख़ाम, कज़-माज़ज, गोंद कीकर, प्रत्येक ५। माशा, पनीरमाया शुत्र अहराबी, गाऊज़बान पत्र, बादरंजबोया, फ़रंजमुशक, रेगमाही, चिड़े का शिर का मग़ज़ भुना हुआ, मग़ज़ चलग़ोज़ा, मग़ज़ नारियल, मग़ज़ बादाम, मग़ज़ पिस्ता, मग़ज़ फिन्दक प्रत्येक ७ माशा, बोज़ीदान, सुरंजान मधुर, दोनो तोदरी, दोनो बहमन, सौंठ, पोदीना शुष्क, गोक्षरू (दूध में भगो कर शुष्क कीया हुआ), खशख़ाश बीज सफ़ेद, तिल छिले हुये, गाजर बीज, पिप्पली, कचूर, मस्तगी (पृथक खरल करें), जायफल, जावित्री, केशर, कुठ मधुर, मग़ज़ तुख़म ख़रबूज़ा प्रत्येक १०।। माशा,

इन्द्रजौ, दारचीनी, लौंग, छोटी इलायची प्रत्येक १४ माशा, पानजड़, शकाकल मिश्री, ख़सतीयल सहलब, अजवायन ख़ुरासानी, प्रत्येक १॥ तोला, कूट छान कर त्रिगुण मधु का पाक कर मिलावें ।

मात्रा—७ माशा ।

गुण—वाजीकरण है, प्रमेह में उपयोगी है ।

माजून जालीनूस लोलवी

मुक्ता ४॥ माशा, बुसद ४॥ माशा, फकाह् अज़ख़र, नागरमोथा, कज़माज़ज, तज, दारचीनी, तगर, मस्तगी प्रत्येक २। माशा, अनीसून, बहमन सफ़ेद प्रत्येक १०॥ माशा, काकनज, लबलाब जड़, प्रत्येक ३॥ माशा, गोंद कीकर, गोंद कतीरा, प्रत्येक १।॥ तोला, सब औषध को कूट छान कर मधु का पाक कर के उस में .मला दें ।

मात्रा—५ माशा ।

गुण—शिश्न को बलवान तथा दृढ़ बनाती है, वाजीकरण है ।

माजून जलाली

कस्तूरी १ माशा, अम्बर ४॥ माशा, केशर, कबाबचीनी, अजवायन ख़ुरासानी, बालछड़, ऊद ख़ाम,तज, दारचीनी, मस्तगी, छलीड़ा, प्रत्येक ९ माशा, इन्द्रजौ, जायफल प्रत्येक १३॥ माशा, पनीरमायाशुत्र अहराबी, ख़सतीयलसहलब प्रत्येक १॥ तोला, पोस्त ख़शख़ाशमग़ज़ शिर चिड़ा प्रत्येक पौने दो तोला, खाँड सफ़ेद ४ तोला, काला दाना४०० नग, सब औषध को कूट छान कर त्रिगुण मधु का पाक कर मिला दें ।

मात्रा—७ माशा ।

गुण—उपरोक्त ।

माजून जोगराज गुग्गुल

पिप्पली, मिरच, भांगरा प्रत्येक ९ माशा, सोंठ, कुठ, देवदारू, हाऊबेर, अकरकरा, पिप्पलामूल, नरकचूर प्रत्येक ६ माशा, तेजबल, जुन्दबदस्तर २—२ माशा, चित्रक, कबाबचीनी, कासनी प्रत्येक ३

माशा, पोदीना ५ माशा, गुगुल सब औषध के समान भाग, प्रथम गुगुल को कूटकर बादामरोग़न से स्निग्ध करके कूटें, नरम होने पर थोड़ा थोड़ा औषध चूर्ण मिलाकर कूटते जायें, सब एकजीव होने पर सुरक्षित रखें।

मात्रा—३ से ५ माशा।

गुण—अर्दित्त, अर्धांग, वातकम्प तथा अन्य वात कफ़ रोगों में उत्तम है, वाजीकरण है, आमवात में उत्तम है।

माजून चोबचीनी

लौंग, जायफल, जावित्री, गुलाब पुष्प, केशर, नरकचूर, पानजड़, नागरमोथा प्रत्येक ४।। माशा, सोंठ, पिप्पली, अकरकरा, जदवार ख़ताई प्रत्येक ९ माशा, बड़ी इलायची, काली मरिच, मस्तगी, सुरंजान, बोज़ीदान, सनायमकी, इन्द्रजौ, प्रत्येक १।।। तोला, चोबचीनी ११। तोला।

मात्रा—७ माशा।

गुण—आतशक, वातरक्त, तथा आतशक जनित पीड़ा में उपयोगी है।

माजून चोबचीनी (विशेष योग)

दोनों इलायची, पानजड़, लौंग, कबाबचीनी, कस्तूरी, बोज़ीदान सोंठ, बालछड़, कचूर, तगर, साज़जहिन्दी (तमालपत्र), पिप्पली, अम्बर, जदवार ख़ताई प्रत्येक ९ माशा, दारचीनी, सुरंजान, शकाकलमिश्री, ख़सतीयालसलब, मस्तगी रूमी, ऊद हिन्दी, इन्द्रजौ, केशर प्रत्येक १४ माशा, मग़ज़ चरोंजी, मग़ज़ हब्ब किलकिल, मग़ज़ तुख़म कुटज, मग़ज़ हबतलखिज़रा, प्रत्येक पौने दो तोला, मग़ज़ चलग़ोज़ा, मग़ज़ नारियल प्रत्येक ९ माशा, चोबचीनी ५६। तोला, पहिले चोबचीनी को ४ सेर जल में एक दिन भिगो रखें, फिर बारीक २ टुकड़े कर इस कदर उबालें कि एक सेर पानी रह जाये, अब मधु, तुरंजबीन प्रत्येक ५६ तोला मिला कर पाक करें, और औषध चूर्ण मिला कर माजून तैयार करें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—वाजीकरण, रक्तशोधक है।

माजून हिरलयहूद

मग़ज़ तुख़म कद्दू, मग़ज़ तुख़म ख़यारैन, मग़ज़ तुख़म तरबूज, हब्ब काकनज १।।–१।। तोला, हिजरलयहूद १५ तोला, सब औषध को कूट छान लें और हिजरलयहूद को बारीक पीस कर मिला लें, अब त्रिगुण मधु का पाक कर के माजून तैयार करें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—वृक्क तथा मूत्राशय की अशमरी को ख़ारज करती है।

माजून हमल अम्बरी अलवीखान

अम्बर १। तोला, मुक्ता ९ माशा, कहरबा, बुसद जला हुआ, चन्दन रक्त, चन्दन सफ़ेद, बंशलोचन, माजू, दरूनज अकरबी, ऊद-सलीब, आबरेशम अपक्व, अंजवारजड़, गिलारमनी ९—९ माशा, मग़ज़ तुख़म तरबूज़ १।। तोला, ख़ुरफ़ा बीज १।। तोला, स्वर्ण वर्क २० नग, वर्क चांदी २० पत्र, मधु उत्तम १५ तोला, शरबत अंगूर २८ तोला, खाँड ५६ तोला, सब औषध (पहिली ४ औषध छोड़ कर) कूट छान कर चूर्ण करें, फिर बाकी औषध खरल कर इस में शामिल करें, मधु खाँड और शरबत का पाक कर औषध चूर्ण मिलाकर माजून तैयार करें।

मात्रा—३ मास का जब गर्भ हो तो प्रति दिन ५ माशा, अर्क गाऊज़बान १२ तोला के साथ प्रयोग करें।

गुण—गर्भपात को रोकती है, यदि गर्भावस्था में प्रयोग की जावे, तो बालक पूरे दिनों में स्वस्थ और आसानी से उत्पन्न होता है, बालग्रह नहीं होने पाता, बड़ा उत्तम योग है।

माजून खबसलहदीद

मण्डूर भस्म ४।। तोला, ऊद हिन्दी, नागरमोथा, सोंठ, मिरच, अजवायन, अज़ख़र प्रत्येक ३।। तोला, हरीतकी, कृष्ण हरीतकी,

आमला प्रत्येक १।। तोला, सब को कूट छान कर त्रिगुण मधु का पाक कर माजून तैयार करें।

मात्रा—५ माशा।

गुण—रक्त अर्श में उपयोगी है, रक्त को वन्द करती है।

माजून ख़दरे

ऊदग़ारकी १ माशा, लौंग, कचूर, केशर प्रत्येक १।। तोला, मस्तगी, बोज़ीदान, प्रत्येक २ माशा, शकाकलमिश्री, पानजड़, बहमन दोनों, गाऊज़बान, बादरंजबोया, बालछड़, छलीड़ा, जावित्री, कुठ, छोटी-इलायची बीज, फरंजमुशक पत्र, नागरमोथा प्रत्येक २ माशा, ऊद-सलीब, दारचीनी, सहलबमिश्री ३—३ माशा, सुरंजान मधुर, हरड़ काबुली, ख़शख़ाश बीज ४—४ माशा, पिप्पली, काली मिरच, दरूनज, इन्द्रजौ, पोदीना, तगर, उस्तोख़द्दूस, तेजपात, तज प्रत्येक ७ माशा, कस्तूरी २। माशा, कस्तूरी, केशर, मस्तगी, को पृथक २ ख़रल करें, और बाकी औषध का बारीक चूर्ण करें, मधु का पाक कर सब मिला कर एक जीव करें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—मस्तिष्क को बल देती है, शरीर के सुन होने में उपयोगी है

माजून ख़दर जदीद

आलू बख़ारा, इमली प्रत्येक १—१ पाव, उन्नाव, लसूड़े, द्राक्षा बीज रहित प्रत्येक ११ तोला, हरड़, कसूस बीज, अफ़सनतीन, बनफ़शा पुष्प प्रत्येक ५।। माशा, गुलाब पुष्प, ख़तमी बीज, खुबाज़ी बीज, सौंफ़, सन्दल सफ़ेद प्रत्येक १।। तोला, सब औषध को रात्री समय गरम पानी में भगोवें, प्रातः उबाल कर छान लें, अब सम भाग तुरंजबीन ले कर इस क्वाथ में घोल कर छान लें, और समभाग खाँड मिलाकर पाक करें, पाक सिद्ध पर बंशलोचन, सकमूनीया, गोंदकीकर, निशास्ता प्रत्येक ४।। माशा का चूर्ण कर शामिल करें।

मात्रा—५ माशा

गुण—उपरोक्त।

माजून खोज़ी

जोज़बोया (जायफल) ७ नग, बहेड़ा १० नग, कुठ मधुर, तज, सम्बललतीब (बाल छड़), हब्ब बलसान प्रत्येक ७ माशा, जावित्री, दरूनज अकरबी, बड़ी इलायची प्रत्येक १०।। माशा, करफ़ल (लौंग), अनीसून, अकलीलमलक, चित्रक, नागकेशर प्रत्येक १४ माशा, रेवन्दचीनी, ज़रावन्द गोल, छलीड़ा प्रत्येक १३।। माशा, कृष्ण हरीतकी, बड़ी हरीतकी छिलका प्रत्येक ६ तोला, मोड़ीयों बीज २५ तोला, खाँड १० सेर का पाक करके बड़ी हरीतकी का औषध चूण इस में मिलावें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—अतिसार, तथा पाचक शक्ति की क्षीणता में उत्तम है।

माजून दीबदलवरद

बालछड़, मस्तगी, केशर, दारचीनी, तबाशीर, अज़खरमकी तगर, कुठ मधुर, ग़ाफ़स, कसूस बीज, मंजीठ, लाख धुली हुई, कासनी बीज, करफ़स बीज, ज़रावन्द गोल, हव्ब बलसान, ऊदग़ारकी, लौंग, छोटी इलायची बीज, प्रत्येक ३।। माशा, गुलाब पुष्प सब के समान, शहद त्रिगुणा लेकर यथाविधि पाक कर माजून तैयार करें।

मात्रा—७ माशा, अर्क सौंफ़, अर्क बरंजासफ़ और शरबत दीनार के साथ प्रयोग करें।

गुण—जलोदर, यकृतविकार, यकृत दुर्बलता, तथा मन्दाग्नि में उपयोगी है।

माजून ज़ीब

हरड़ बड़ी, हरड़, बहेड़ा, आमला, उस्तोखदूस प्रत्येक ३ तोला, ऊदसलीब १।। तोला, अकरकरा १।। तोला सब को कूट छान लें, और द्राक्षा बीज़ की गुठली निकाल कर आध सेर को भली प्रकार खूब कूट कर अग्नि पर ज़रा गरम कर के औषध चूर्ण इसमें मिला दें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—अपस्मार में लाभप्रद है—

माजून राजलमोमनीन

कस्तूरी २। माशा, जायफल, कतीरा, सोसन जड़, प्रत्येक १।। तोला, गाऊज़बान पत्र, ख़सतीयलसहलब प्रत्येक पौने दो तोला, गाजरबीज, नारजील दरयाई, दारचीनी, मग़ज़ चलग़ोज़ा प्रत्येक ३।।। तोला, शकाकल मिश्री ७।। तोला, सब को कूट छान लें, पोस्त-ख़शख़ाश पौने उनीस तोला को त्रिगुणा जल में उबालें, दो तिहाई भाग रहने पर इस में ख़शख़ाश बीज सफ़ेद ९।। तोला पीस कर छान लें, अब इस में मधु और मधुर सेब जल प्रत्येक ४० तोला, गाजर रस ६० तोला मिला कर पाक करें, फिर औषध चूर्ण और कस्तूरी मिला लें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—कफ़ज श्वास, ख़फ़कान तथा पुंसक दुर्बलता को नष्ट करता है।

माजून रेगमाही

माही सकनकूर ४। तोला, शलग़म बीज, अस्पस्त बीज, गाजर बीज, श्वेत प्याज़ बीज, अंजरा बीज, जरजीर बीज प्रत्येक ३।। माशा, मिरच काली, मिरच सफ़ेद, दारे फ़िलफ़िल (पिप्पली) प्रत्येक २१ माशा, प्याज़ हिंसल (जंगली प्याज़) भुना हुआ १४ माशा, मग़ज़ चलग़ोज़ा ७ तोला, अकरकरा, मग़ज़ शिर चिड़ा, इन्द्र जौ प्रत्येक २१ माशा, सबको कूट छान कर सम भाग घी में भून कर त्रिगुण मधु का पाक कर यथाविधि माजून बनावें।

मात्रा—२ से ३ माशा।

गुण—वाजीकरण है।

केशर माजून

अजवायन, गाजर बीज, ज़ंजबील (सोंठ) प्रत्येक ३ तोला, करफ़स जड़ २ माशा, मस्तगी ९ माशा, ऊद ख़ाम, अकरकरा प्रत्येक ५ माशा, केशर बसफ़ाइंज प्रत्येक ३।। माशा, प्रथम मस्तगी, केशर को

पृथक २ खरल करें, फिर बाकी औषध का चूर्ण करें, मधु ३३ तोला का पाक कर औषध चूर्ण तथा केशर, मस्तगी मिला माजून तैयार करें।

मात्रा—७ माशा ।

गुण—वृक्क तथा मूत्राशय को बल देती है, वायूनाशक तथा मूत्रल है, प्लीहा यकृत को भी बल देती है।

माजून स्पस्तान

मूसली काली, मूसली सफ़ेद, कौंच बीज, बिनोला वीज, अटंगन बीज, शकाकल मिश्री, सहलब मिश्री, मग़ज़ पिस्ता, मग़ज़ चरोंजी १—१ तोला, मग़ज़ नारीयल, मग़ज़ चलग़ोज़ा, मग़ज़ बादाम, तज प्रत्येक २ तोला, तालमखाना १॥ तोला, पिप्पली, सोंठ, बहमन दोनों, मोचरस, तिल छिले हुये प्रत्येक ६ माशा, मस्तगी, अकरकरा ९—९ माशा, लसूड़े, गोंद कीकर २०—२० तोला, मधु उत्तम २॥ सेर, शकर सफ़ेद १ सेर, गौघृत १० तोला, केशर ३ माशा, लसूड़े और गोंद को कूट कर छान कर घी में भूनें, और दूसरी बारीक की हुई औषध के चूर्ण में मिला लें, फिर खाण्ड तथा मधु के पाक में मिला कर माजून बनावें।

मात्रा—१ तोला ।

गुण—वाजीकरण तथा वीर्यप्रद है।

माजून सरख़स

सरख़स ३॥ माशा, वायविड़ंग ३॥ माशा, त्रिवृत, गुग्गुल ७—७ माशा, सब को कूट छान लें, और द्विगुणा मधु के पाक में मिला कर माजून तैयार करें।

मात्रा—१ तोला ।

गुण—प्रयोग करने से पहिले १—२ घण्टा पहिले दूध पीवें, और ३ दिन पहिले भी दूध के सिवाये कुच्छ न खावें।

गुण—गोल तथा लम्बे कृमियों के लीये उत्तम है।

माजून सनाय

गुलाब पुष्प, बादरंजबोया, गाऊज़बान पत्र, बनफ़शा पुष्प, मधुयष्टि १—१ तोला, अंजीर पक्व १० दाना, द्राक्षा बीज रहित २० दाना, उन्नाब २० दाना, लसूड़े, १०० नग, सब औषधको ३ पाव जल में भिगोवें, प्रातः उबालें, २ भाग रहने पर छान कर १ पाव खाण्ड डाल कर पाक कर, पाक अन्त में किशमिश १ पाव पीस कर शामिल करें, फिर सनाय पत्र ७ तोले, कृष्णा हरीतकी ५ तोले, हरड़ ज़रद ३ तोला का चूर्ण कर बादाम तैल में स्निग्ध कर के पाक में मिलावें।

मात्रा—७ माशा से १ तोला।

गुण—सब प्रकार के शिरशूल में उत्तम है, विबन्ध नाशक तथा मस्तिष्क शोधक है।

माजून संगदाना मुरग़

पोस्त संगदाना मुरग़, वंशलोचन ९—९ माशा, पोदीना शुष्क, पोस्त बीरून पिस्ता, पोस्त तरंज, हरड़ ४—४माशे, गुलाब पुष्प १०॥ माशा, दोनों बहमन, दोनों चन्दन, सातर, धनियां, मोड़ीयों बीज ७—७ माशा, सब को कूट छान कर त्रिगुणा मधु का पाक कर मिलावें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—दीपक, पाचक है, मन्दाग्नि से उत्पन्न अतिसार को बन्द करती है, वायुनाशक है।

माजून संगसरमाही

संगसरमाही, हिजरलयहूद २—२ तोला, गोक्षरू, मग़ज़ आलो, बालो, कुलथ्थी १—१ तोला, सौंफ़ २ तोला, कसूस बीज ३ तोला मग़ज़ तुख़म ख़रपज़ा ५ तोला, मधु आध सेर, प्रथम संगसरमाही आदि को बारीक पीस लें, और बाकी औषध का चूर्ण इस में मिला कर मधु के पाक में मिला दें।

मात्रा—७ माशा, अर्क सौंफ़ आदि से दें।

गुण—यह माजून गुरदा तथा मसाना से रेत को निकालती है।

माजून सुरंजान

करफ़स बीज, सौंफ़, समुद्रझाग, मुसब्बर, मिरच सफ़ेद, सातर सैंधव लवण, मेहन्दी पत्र ५—५ माशा, बोज़ीदान, माहज़हरज, चित्रक, किबर जड़ ७—७ माशा, गुलाब पुष्प, धनियां, सोंठ, सकमूनीया भुना हुआ प्रत्येक १०॥ माशा, सुरंजान मधुर २१ माशा, हरड़ २ तोला, त्रिवृत ४॥ तोला, बादाम रोग़न ३। तोला, मधु ४४ तोला, सब औषध को कूट छान कर बादामरोग़न में मिला कर मधु के पाक में मिलावें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—वातरक्त, आमवात, गृध्रसी तथा वातकफ़ज विकारों में उत्तम है।

माजून सैर अलवीख़ान

गाऊज़बान पुष्प, बादरंजबोया प्रत्येक ७। तोला, वसफ़ाईज—फ़सतकी, कृष्ण हरीतकी, हरड़ बड़ी, मको प्रत्येक ३॥ तोला, इन सब को ६ सेर जल में उबालें, ४ सेर शेष रहने पर छान कर आध सेर लहुसन छिला हुआ मिला कर फिर उबालें, लहसुन के मृदु हो जाने पर १ सेर गौदुग्ध डाल कर उबालें, दूध मात्र शेष रहने गौघृत पर आधा सेर मिलाकर पाक करें, दूध के जज़्ब हो जाने पर मधु १ सेर डाल कर पाक करें, सोंठ, मिरच काली, मिरच सफ़ेद, पिप्पली, लौंग, तज, कबाबचीनी, पान जड़, दोनों बहमन, शकाकल मिश्री, बाबूना पुष्प, मरज़नजोश, प्रत्येक पौने २ तोले, अम्बर, केशर ४॥—४॥ माशा, इन सब का चूर्ण करके पाक में मिला करके यथाविधि माजून तैयार करें।

मात्रा—५ माशा।

गुण—सब वातकफ़ज रोगों में उपयोगी है, सब विषों के लीये अमृत है।

माजून सन्दल

सन्दल सफ़ेद ९ तोला जल में घिस कर रख लें, इमली का निथारा जल, अनार अम्ल का जल १—१ पाव ले कर १॥ सेर खांड मिला

कर पाक करें, और चन्दन को छान कर पाक में मिला दें, फिर तबाशीर १४ माशा, ऊद, केशर प्रत्येक ३।। माशा का बारीक चूर्ण पाक में, मिलावें ।

मात्रा—५ माशा, अर्क गाऊज़बान से ।

गुण—ख़फ़कान, उन्माद, हृदय दुर्बलता को दूर करती है ।

माजून सरह

जुन्दबदस्तर, हींग प्रत्येक ३ माशा, ज़ीरा कृष्ण, अनीसून, सौंफ़, सातर फ़ारसी प्रत्येक ६ माशा, अकरकरा १ तोला, ऊदसलीव २ तोला, सब औषध को कूट छान कर त्रिगुणा मधु के पाक में मिलाकर यथाविधि माजून तैयार करें ।

मात्रा—बालकों को ३ माशा, बड़ों को ७ माशा तक ।

गुण—अपस्मार में उपयोगी है, दीपक पाचक तथा मस्तिष्क संशोधक है ।

माजून उशबा

उशबा मग़रबी, बसफ़ाइंज फ़सतकी, अफ़तीमियून विलायती, गाऊज़बान, कबाबचीनी, दारचीनी २—२ तोला, गुलाब पुष्प, चोबचीनी, चन्दन दोनों ३—३ तोला, सनाय ४ तोला, हरड़, बालछड़, १—१ तोला, हरड़ ६ माशा, बहेड़ा ७ माशा, सब को कूट छान लें, खाँड श्वेत ३ पाव, मधु आध सेर, यथाविधि पाक कर चूर्ण मिला कर माजून तैयार करें ।

मात्रा—१ तोला ।

गुण—जोड़ों की पीड़ा, आतशक, अर्श, ख़ारश तथा रक्तदोष में उत्तम है ।

माजून अकरब

काकनज जड़ १।। तोला, हिबजत्याना रूमी १। तोला, जुन्दबदस्तर १४ माशा, बिच्छू जला हुआ १०।। माशा, काली मिरच,

श्वेत मिरच प्रत्येक ८ माशा, सोंठ ३॥ माशा, कूट छान कर बारीक चूर्ण करके त्रिगुणा मधु के पाक में मिलावें।

मात्रा—६ रत्ती।

गुण—वृक्क तथा मूत्राशय की अश्मरी को टुकड़े २ कर मूत्र, द्वारा बाहर निकालती है।

माजून फ़िलासफ़ा

बाबूना बीज १॥ तोला, सोंठ, मिरच, पिप्पली, आमला, हरड़, कृष्णहरीतकी, चित्रक, जरावन्दगोल, बाबूना जड़, ख़सतीयसहलब मग़ज़ चलग़ोज़ा, नारियल ताज़ा ३—३ तोला, द्राक्षा बीज रहित ९ तोला, सब का बारीक चूर्ण करके त्रिगुण मधु के पाक में मिलाकर माजून तैयार करें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—वीर्य प्रद है, वातपीड़ा, कटिपीड़ा में उत्तम है, बार २ मूत्र आने को रोकती है, दिल, दिमाग़ को बल देती है।

माजून फ़लक सैर

मग़ज़ बादाम, मग़ज़ फिन्दक, मग़ज़ चलग़ोज़ा, मग़ज़ अख़रोट, मग़ज़ कद्दू, मग़ज़ काहू, अहिफेन, भांग ६—६ माशा, जायफल, जावित्री ४—४ माशा, कस्तूरी, अम्बर ९—९ रत्ती, यथाविधि त्रिगुण मधु का पाक कर के माजून बनावें।

मात्रा—३, माशा, सम्भोग से २ घण्टे पूर्व दूध से प्रयोग करें, प्रमेह में १ माशा प्रातः दूध से लें, अम्ल पदार्थ का त्याग करें।

गुण—स्तम्भक तथा प्रमेह को नष्ट करती है।

माजून फ़लक सैर (विशेष योग)

मोती, याकूत प्रत्येक ४॥ माशा, स्वर्ण वर्क ३॥ माशा, चाँदीवर्क ३ माशा, ज़हरमोहरा, ज़ुमुरद सबज़ प्रत्येक ४ माशा, कस्तूरी, अम्बर-शहब ५—५ माशा, मग़ज़ पिस्ता, मग़ज़ फिन्दक, मग़ज़ मधुर बादाम, मग़ज़ चलग़ोज़ा, मग़ज़ अख़रोट, तुख़म ख़शख़ाश, तुख़म काहु, मग़ज़

तुख़म कदू मधुर प्रत्येक २ तोला, भांग पत्र, साहलव मिश्री, शकाकल-मिश्री, केशर, बहमन सफ़ेद, इन्द्र जौ प्रत्येक २ तोला, अजवायन ख़ुरा-सानी, अफ़ीम १—१ तोला, चरस ९ माशा, जायफल, जावित्री, छलीड़ा, बालछड़, लौंग, सोंठ, दारचीनी, नागरमोथा १—१ तोला, गाऊज़बान पुष्प २ तोला, आबरेशम कुतरा हुआ १ तोला, मधुर सेव रस, मधुर अनार रस १—१ पाव, अर्क गुलाब, केवड़ा, बेदमुशक प्रत्येक १—१ पाव, मधु औषध से द्विगुण, खाँड औषध के सम भाग, यथा विधि माजून बनावें, ज्वाहरात को अन्त में खरल कर के मिलावें।

मात्रा—३ माशा।

गुण—सम्भोग से दो घण्टे पूर्व दूध से प्रयोग करें, अत्यन्त प्रभाव-शाली स्तम्भक औषध है।

माजून फनजनोश

बड़ी हरड़ छिलका, हरड़, कृष्णहरीतकी, बहेड़ा, आमला ३—३ तोला, जावित्री, छोटी इलायची, ऊद कुमारी, कस्तूरी प्रत्येक ७ माशा, काली मिरच, पिप्पली, जीरा कृष्ण, सोंठ, सोये बीज, करफ़स बीज, गन्दना बीज, जरजीर बीज, शलग़म बीज, खरबूज़ा बीज, तज, दार-चीनी, लौंग, जायफल प्रत्येक ३।। माशा, अस्पन्द ९ तोला, मण्डूर भस्म सब औषध के सम भाग लेकर, सब का चूर्ण करके त्रिगुणा मधु के पाक में मिलाकर यथाविधि माजून बनावें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—दीपक पाचक है, पुंसक शक्ति वर्धक है, अर्श में भी उपयोगी है।

माजून फोतनजी

करफ़स बीज, बाबूना, आशा प्रत्येक ४ तोला ८ माशा, पोदीना नहरी, पोदीना पहाड़ी, फितरालसालीयून, अन्जदान बीज प्रत्येक ३।। तोला, काशम ४ तोला ४ माशा, काली मिरच ७ तोला, सब को कूट छान कर त्रिगुणा मधु के पाक में मिला कर माजून तैयार करें

मात्रा—७ माशा।

गुण—आमाशय तथा यकृत शूल को नष्ट करती है, कफ़ज, जीर्ण ज्वर तथा चोथिया ज्वर में लाभप्रद है ।

माजून फ़ौलाद

केशर १ तोला, मरिच, पिप्पली, जावित्री, लौंग, जायफल, दारचीनी प्रत्येक ७ माशा, मस्तगी, बालछड़, सोंफ़, चन्दन सफ़ेद, अकरकरा, हरड़, बहेड़ा, आमला प्रत्येक १० माशा, गुलाब पुष्प, चित्रक, साहलब मिश्री, जीरा सफ़ेद, ख़यारैन बीज भुने हुये प्रत्येक ९ माशा, सोंठ, बाबूना, बड़ी इलायची बीज, अम्बरशहब, अजवायन प्रत्येक ४ माशा, मोती, कस्तूरी प्रत्येक ३ माशा, स्वर्ण वर्क २० नग, लौह भस्म ४ तोला ८ माशा, मधु ३५ तोला, खाँड २४ तोला, अर्क गुलाब आध सेर, सब औषध का बारीक चूर्ण कर खाँड तथा मधु का पाक कर के चूर्ण मिला कर माजून तैयार करें ।

मात्रा—३ माशा, तीन दिन प्रयोग कर के १—१ माशा प्रतिदिन बढ़ा कर १ तोला तक पहुंचायें, दूध के साथ प्रयोग करें ।

गुण—वातकफ़ज रोग, वृक्कशूल, प्रमेह में उत्तम है, पुंसक शक्ति को बढ़ाती है, वीर्य को गाढ़ा करती है ।

माजून करतम

मग़ज़ तुख़म करतम, मग़ज़ मधुर बादाम, गुलाब पुष्प, सनाय-पत्र प्रत्येक ६ तोला, सौंफ़, सोंठ प्रत्येक २ तोला, दारचीनी, दोनों इलायची, १–१ तोला, अंजीर विलायती, द्राक्षा बीज रहित, प्रत्येक ४० नग–मग़ज़ तुख़म करतम और बादाम को पृथक पीसें, अंजीर और द्राक्षा को धोकर पृथक पीसें, बाकी औषध को कूट छान कर चर्ण करें, त्रिगुण मधु के पाक में पहिले मग़ज़यात और अंजीर, मुनक्का का शीरा मिला कर पाक करें, फिर बाकी औषध का चूर्ण पाक में मिलाकर माजून तैयार करें ।

मात्रा—१ तोला ।

गुण—दीपक पाचक तथा अजीर्ण नाशक है—मूत्रल है ।

माजून काशम

सुदाब पत्र, पोदीना, काली मिरच, अजवायन करूवीया (शाहजीरा), काशम, सोंठ, दारचीनी, पिप्पली प्रत्येक दो तोला, मधु ५४ तोला, सब औषध को कूट छान कर मधु के पाक में मिलावें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—वातशूल में उत्तम है, वातनाशक है।

माजून करफ़स

गुड़, वर्च, शाहदाना, रेवन्दचीनी, सौंफ़ करफ़सरूमी, करफ़स बीज, सौंफ़, अजवायन खुरासानी, बारीक पीसकर त्रिगुण मधु के पाक में मिलाकर यथाविधि माजून तैयार करें।

मात्रा—१ तोला।

गुण—विबन्धनाशक है, आमाशय तथा गर्भाशय के सब विकारों को नष्ट करती है।

माजून कलान

गुलाब पुष्प, दोनों चन्दन, लोंग, दरूनज अकरबी, दोनों बहमन, कचूर, आमला, गिलअरमनी, फ़ादज़हरमदनी, कस्तूरी प्रत्येक ९ माशा, याकूत लाल और पीला, याकूत कबूद, लाल, अकीक यमनी, बुसद, कहरबा, यशप सबज़, तमालपत्र, गाऊज़बान पुष्प, तबाशीर सफ़ेद, जदवार ख़ताई, पोस्त बीरून पिस्ता, पोस्त तरंज, कासनी बीज, खुरफ़ा बीज, स्वर्ण वर्क, चांदी वर्क प्रत्येक १३ माशा, जुन्दबदस्तर, अम्बरशहब प्रत्येक १॥ तोला, मुक्ता, दारचीनी प्रत्येक १॥। तोला, मस्तगी १। तोला, केशर ५॥ तोला, अफ़ीम १३ माशा, गुलाब अर्क, १ सेर, सब औषध से त्रिगुणा खाँड तथा मधु लेकर अर्क गुलाब में पाक कर औषध चूर्ण मिला कर यथाविधि माजून बनावें।

मात्रा—५ माशा।

गुण—पुंसक शक्ति को बढ़ाती है, स्त्री तथा पुरुषों के प्रमेह में उत्तम है।

माजून कलकलानज

काली मिरच, पिप्पली, पिप्पलामूल, सोंठ, सातर, लवण हिन्दी श्वेत तथा कृष्ण, इन्द्राणी लवण, तरज़रद लवण, साम्भर लवण, इन्द्रजौ, चित्रक, नागरमोथा, छोटी इलायची, तज, लौंग, वायविड़ंग काबुली, कलौंजी, कालादाना, जीरा कृष्ण; तमालपत्र, करफ़स बीज, धनियां प्रत्येक १॥ तोला, हरड़, बहेड़ा, आमला प्रत्येक २ तोला, अमलतास का गूदा ३ तोला, त्रिवृत ४३॥ तोला, द्राक्षा बीज रहित आध सेर, शीरा आमला १ सेर, द्राक्षा और आमला को ६ सेर जल में उबालें, २ सेर रहने पर छान कर अम्लतास का गूदा अच्छी तरह हल करें मिश्री ३ सेर, और तिल तैल आध सेर मिला कर पाक करें, सब औषध को कूट छान कर पाक में मिलावें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—जलोदर, यकृत और आमाशय की सरदी, जीर्ण ज्वर, कफ़ज कास, श्वास, शूल, अपस्मार, इत्यादि में उपयोगी है।

माजून कुन्दर

मुर, कुन्दर, अकाकीया, श्याफ़ मामीशा ७—७ माशा, फटकड़ी भुनी हुई १०॥ माशा, ख़तमी बीज, अलसी बीज, प्रत्येक दो तोला, सोंठ, हरड़ बड़ी ३—३ तोला सब को कूट छान कर त्रिगुण मधु के पाक में मिला कर माजून तैयार करें।

मात्रा—५ माशा।

गुण—मूत्र की अधिकता में लाभप्रद है।

माजून लना

शुद्ध कुचिला १ तोला, मिरच काली तथा सफ़ेद, दारचीनी, पिप्पली, जायफल, जावित्री, मस्तगी, नागरमोथा, सोंठ, लौंग, आमला, बालछड़, छोटी इलायची, अजवायन, सौंफ़, केशर, चन्दन सफ़ेद, ऊदबलसान, अगर प्रत्येक ६—६ माशा, सब को कूट छान कर त्रिगुणा मधु के पाक में मिला कर माजून बनावें, और ४० दिन बाद प्रयोग करें।

मात्रा—३ से ५ माशा ।

गुण—अर्दित, अधांग, वातकम्प, अपस्मार, वातकफ़ रोगों में लाभप्रद है, पुंसक शक्ति को बढ़ाती है ।

माजून मुबहील नताकी

याकूत ज़रद ३॥ माशा, कस्तूरी, चांदी हल की हुई, स्वर्ण हल किया हुआ प्रत्येक ५। माशा, सोंठ, कहरबा, बुसद ७–७ माशा, दोनों बहमन, शकाकल मिश्री, तज़, बोज़ीदान, जावित्री, कबाबचीनी, पानजड़, इन्द्रजौ, दोनों इलायची, बाल छड़, फरंजमुशक, लौंग, मस्तगी-रूमी, तमालपत्र, अम्बरशहब, मुक्ता प्रत्येक १०॥ माशा, ऊद अपक्व, केशर, हालों बीज प्रत्येक १४ माशा, सकन्कूर प्रत्येक १॥ तोला, बादाम रोग़न मधुर ३॥। तोला, भांग ८॥। तोला, सब औषध को कूट छान कर त्रिगुण मधु के पाक में मिला कर माजून तैयार करें ।

मात्रा—१ तोला ।

गुण—पुंसक शक्ति को बढ़ाती है, शरीर को मोटा करती है, तथा प्रमेह नाशक है ।

रक्त शोधक माजून

नीमजड़ छाल, जंगली अंजीर की जड़ की छाल, शाहतरा, चिरायता, धनियां शुष्क, हरड़, बहड़ा, आमला, कृष्ण हरीतकी, सौंफ़, चित्रक, गुलाब पुष्प, सनाय प्रत्येक २ तोला, सब को कूट छान कर त्रिगुण मधु के पाक में मिला कर माजून तैयार करें ।

मात्रा—७ माशा, प्रातः सायं ।

गुण—परम रक्त शोधक है ।

माजून मरूलारवाह

याकूत रमानी, याकूत कबूद, लाल बदख़शानी, फ़ैरोज़ा, ज़बर-जद, जमुरद, बुसद, कहरबा, यशप, अकीक यमनी प्रत्येक ४॥माशा, सोंठ, दारचीनी, सुरंजान, आमला, अकरकरा, इन्द्रजौ, बोज़ीदान, कुठ मधुर तथा कड़वी, पिप्पली, ज़रावन्द गोल, नारवीन, कचूर, दरूनज-

अकरबी, नागरमोथा, बालछड़, लौंग, छोटी इलायची, बाबूना जड़, हरड़, हरड़कृष्ण प्रत्येक ९ माशा, जायफल, जावित्री, छड़ीला, गाऊ-ज़बान पत्र, बालंगू बीज, कबाबचीनी, धनियां, तगर, शकाकल मिश्री, दोनों बहमन, अनजदान, चांदी वर्क, स्वर्ण वर्क प्रत्येक १।। तोला, गोंदकीकर, छुहारे, गोंदकतीरा प्रत्येक २। तोला, मस्तगी रूमी, मधु की मखीयों के छते का मैल, जदवार ख़ताईं, फ़ादज़हरहेवानी, गिल मखतूम, रोग़न बलसान प्रत्येक २।। तोला, मण्डूर शुद्ध (भस्म), केशर, आबरेशम कुतरा हुआ, जुन्दबदस्तर, कुन्दर, मोती प्रत्येक ३ तोला २ माशा, रेगमाही, सकनकूर, चिड़े के शिर का मग़ज़, कुक्कुट अण्डकोष, सरतान, कच्छुआ के अण्डे, राल, हाथीदांत बुरादा, कस्तूरी, अम्बर-शहब, महीसाला, रोग़न ऊद, प्रत्येक ३।।। तोला, कुरस असकील ४ तोला १।। माशा, शिलाजीत, धस्तूरबीज प्रत्येक ३।। तोला, मायाशुत्र-अहराबी, ख़सतीयलसहलब, चोबचीनी प्रत्येक ४ तोला ७ माशा, दोनों तोदरी, काली मिरच, करोवीया, सौंफ़, अनीसून, मेथी बीज, कालादाना, करफ़स बीज, अस्पस्त बीज, जरजीर बीज, हालों बीज, अंजरा बीज, गन्दना बीज, शलग़म बीज, प्याज़ बीज, चकन्दर बीज, सोये बीज, गाजर बीज, मूली बीज, हरमल बीज सफ़ेद, ख़शख़ाश बीज सफ़ेद प्रत्येक ११ तोला ३ माशा, कुरस अफ़ही १५ तोला, भांग १८।।। तोला, भांगरा, अतीस, काली मिरच, सैंधव, शुद्ध गन्धक, अफ़ीम प्रत्येक १०।। माशा, नेवला का मांस सूखा हुआ, मग़ज़ तुख़म ख़यारैन, मग़ज़ तुख़म कद्दू, मग़ज़ तुख़म पेठा, मग़ज़ तुख़म ख़रपजा, मग़ज़ नारियल, मग़ज़ चलग़ोज़ा, मग़ज़ तुख़म कुटज, मग़ज़ बादाम मधुर तथा कटु, मग़ज़ फिन्दक, मग़ज़ पिस्ता, मग़ज़ अख़रोट, मग़ज़ हब्ब किलकिल, अनारदाना, मग़ज़ बनोला, मग़ज़ हब्बलबान, मग़ज़ चरोंजी, हब्बलज़लम, अजवायन ख़ुरासानी, मक्कलमक्की, ईरसा, उस्तोख़द्दूस, रेवन्दचीनी, सनायमक्की, ग़ारीकून, लाजवरद धुला हुआ प्रत्येक १।। तोला, मधु तथा खाँड प्रत्येक, मिलित औषध के समान, शीरा मुरब्बा गाजर, औषध मानसे द्विगुण, अमरूद जल, अर्क गुलाब, बेदमुशक, अर्क बहार प्रत्येक १ सेर ६ छटाँक, मधुर अनार रस, सेब रस प्रत्येक दो सेर १३ छटाँक, शराब अंगूरी १४ सेर, मधु, खाँड,

अर्कयात वा जलों को शराब में मिला कर पाक करें, पाकसिद्धि पर औषध का बारीक चूण मिला कर माजून तैयार करें।

मात्रा---३ माशा, दूध से।

गुण---पुंसक शक्ति को बढ़ाती है, शरीर को सब रोगों से सुरक्षित रख शरीर को दृढ़ बनाती है।

माजून मुशकी

ऊद हिन्दी, लौंग प्रत्येक ६ माशा, कस्तूरी, बालछड़, तेज पत्र, तज, हिबज़त्याना, रेवन्दचीनी, लाख धुली हुइ १-१ तोला, अजवायन, करफ़स बीज, अनीसून, मस्तगी, केशर प्रत्येक दो तोला, सब को बारीक पीस कर त्रिगुण मधु का पाक कर के मिलावें।

मात्रा---१ तोला, करतम के क्वाथ से वा अर्क गुलाब तथा सौंफ़ से दें।

गुण---प्रसूत पश्चात रोगों में उत्तम है, मल को शुद्ध करती है।

माजून मक्कवी बाह

मधु आध सेर ले कर झाग उतारें, साफ़ होने पर मूली बीज ४ तोला का बारीक चूर्ण छिड़क दें, मिल जाने पर मिरच काली, सोंठ, लौंग, मस्तगी रूमी प्रत्येक २ तोला, कूट छान कर मिला दें, यदि कस्तूरी ३ माशा, अम्बर, केशर ६ माशा, भी डाल दें, तो अधिक लाभप्रद होगी।

मात्रा---७ माशा।

गुण---पुंसक शक्ति को बढ़ाती है।

माजून मुण्डी

हरड़, हरड़ बड़ी, हरड़ काली, बहेड़ा, आमला, शाहतरा, मधुयष्टि १---१ तोला, मुण्डी पुष्प ७ तोला, प्रथम त्रिफला को बारीक पीस कर बादाम तैल से स्निग्ध करें, फिर बाकी औषध चूर्ण मिला कर त्रिगुणा मधु का पाक कर के यथाविधि माजून तैयार करें।

मात्रा---१ तोला।

गुण---नेत्र रोगों में उपयोगी है।

माजून मास्कलबोल

कहरबाशमई, हरड़ बड़ी, कृष्णहरीतकी प्रत्येक ९ माशा, सब को बारीक पीस कर गौघृत से स्निग्ध करें, फिर कत्थ सफ़ेद, जुफ़त-बलूत, कुन्दर का छिलका प्रत्येक ६-६ माशा, शहदानज, मोड़ीयों, साहलब मिश्री प्रत्येक ४।। माशा, सब को कूट छान लें, और २२ तोला द्राक्षा (बीज रहित) को बारीक पीस कर अर्क गुलाब में इतना पकावें, कि घन हो जाये, अब इस में औषध चूर्ण डाल कर पाक करें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—बूँद २ मूत्र आने में लाभ प्रद है, प्रमेह में भी उपयोगी है।

माजून मग़ज़यात

मग़ज़ कदू मधुर, मग़ज़ तरबूज़, मग़ज़ पेठा, मग़ज़ तुख़म ख़शख़ाश सफ़ेद, मग़ज़ बनोला, मग़ज़ खरपज़ा, मग़ज़ ख़यारैन, मग़ज़ बादाम १-१ तोला, सब का शीरा बना कर घी में भून लें, गोक्षरू मग़ज़ तुख़म कौंच, मग़ज़ कमलगट्टा, किशमिश, साहलब, मिश्री, प्रत्येक २।। तोला, मूसली श्वेत, मूसली काली, दोनों तोदरी, दोनो बहमन, मसली-सेंभल, शतावर, समुद्रसोख, इन्द्रजौ, तालमखाना, तुख़म, सरवाली, तुख़म रेहां, बालंगू बीज, खुरफ़ा बीज, काहू बीज, धनियां, गुल नीलो-फ़र, छोटी इलायची बीज प्रत्येक ७ माशा, मग़ज़ चलग़ोज़ा भुना हुआ, तिल छिले तथा भुने हुये, सब औषध को बारीक कर त्रिगुण मधु का पाक कर मिला कर माजून तैयार करें।

मात्रा—१ तोला।

गुण—पुंसक शक्ति को बढ़ाती है।

माजून बेज़ामुरग़

साहलब मिश्री, दोनों बहमन, दोनों तोदरी, मस्तगी रूमी, पान की जड़, अकरकरा, दारचीनी, पिप्पली, दोनों मूसली, इन्द्रजौ, सेंभल मूसली, उटंगन बीज, लौंग, जायफल, जावित्री, सोंठ, छोटी इलायची बीज, बीरबहुटी, प्रत्येक १ तोला, गाजर बीज, शलग़म बीज, मली बीज, प्याज़ बीज, बनोला बीज भुना हुआ, मग़ज़ बादाम भुना हुआ,

मग़ज़ कद्दू, मग़ज़ खयारैन, मग़ज़ चलग़ोज़ा, मग़ज़ अखरोट, मग़ज़ नारियल, मग़ज़ पिस्ता, मग़ज़ फिन्दक भुना हुआ प्रत्येक दो तोला, केशर ३ तोला, केंचवे साफ़ किये हुये १० तोला, तिल धुले हुये ५ तोला, ५० अण्डों की ज़रदी, पहिले अण्डों की ज़रदी को चमचे से हल करें, और घी में भून कर मग़ज़यात में मिला दें, बाकी औषध का चूर्ण करें, त्रिगुण मधु का पाक कर सब को डाल कर अच्छी तरह मिला कर एक जीव करें।

मात्रा——१ तोला।

गुण——अत्यन्त प्रभावशाली औषध है, पुंसक शक्ति वंधक है।

माजून मसीह

जायफल ३ नग, कस्तूरी १।।। माशा, अम्बरशहब ३।। माशा, केशर १०।। माशा, अकरकरा १।।। तोला, मरिच सफ़ेद, मस्तगी, तज प्रत्येक ३२ तोला, बड़ी इलायची बीज, बादाम रोग़न मधुर प्रत्येक पौने ४ तोला, भांग ११। तोला, यथाविधि त्रिगुण मधु का पाक कर औषध चूर्ण मिला कर माजून तैयार करें।

मात्रा——५ माशा।

गुण——कमर को दृढ़ करती है, पुंसक शक्ति वर्धक है, दीपक पाचक है।

माजून तिल्ला

अम्बरशहब, कस्तूरी, मोती, याकूत, ज़ुमुरद, प्रत्येक ४ माशा, स्वर्ण वर्क १ तोला, मधु ७ तोला, मधुर सेब रस, मधुर अनार रस, मिश्री प्रत्येक १० तोला, अर्क गुलाब २० तोला, अर्क गाऊज़बान, अर्क़ बेदमुशक प्रत्येक ४० तोला, अर्कों में मिश्री तथा मधु डाल कर पाक करें, पाकसिद्धिपर बाकी औषध चूर्ण मिला कर माजून तैयार करें।

मात्रा——३ माशा।

गुण——हृदय को बल देती है, ग़शी तथा खफ़कान में उत्तम है।

माजून महसफ़र

हरड़, हरड़ काबुली, बेहड़ा १—१ तोला, आमला, पितपापड़ा, गिलोय, जीरा सफ़ेद प्रत्येक दो तोला, धनिया, महसफ़र पुष्प १—१ तोला, सब औषध का चूर्ण कर त्रिगुण मधु का पाक कर माजून तैयार करें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—रक्तदोष को नष्ट करती है।

माजून मग़लज़

मस्तगी २ माशा, बत्तम की गोंद, कतीरा, तबाशीर, छोटी इलायची, गोंद कीकर, निशास्ता, ख़सतीयलसहलब प्रत्येक ६ माशा, मग़ज़ वलग़ोज़ा १ तोला, मग़ज़ नारीयल १॥ तोला, मग़ज़ बादाम छिले हुये २ तोला, मधु तथा खाँड औषध मान से त्रिगुण, यथाविधि पाक कर चूर्ण मिला कर माजून बनावें।

मात्रा—१ तोला।

गुण—वीर्य को गाढ़ा करती है, पुंसक शक्ति वर्धक है।

माजून-मग़लज़ (विशेष योग)

सम्भालू बीज, हरमल, शिलाजीत प्रत्येक ५ तोला, मधुयष्टि, गुलनार, गुलाब पुष्प, काहूबीज प्रत्येक २॥ तोला, मायाशुत्र अहराबी, केशर प्रत्येक १। तोला, कफ़ अबाबील ७॥ माशा, द्राक्षा का शीरा २५ तोला (कपड़े में छान लें,) मधु उत्तम ६५ तोला, प्रथम शीरा द्राक्षा तथा मधु का पाक करें, बाकी औषध चूर्ण मिला कर माजून तैयार करें यदि इस में क़स्तूरी, अम्बर, शिला जीत प्रत्येक ६ माशा, मोती, लाजवरद धुला हुआ, यशप, कहरबा, याकूत, ज़ुमुरद, जहरमोहरा ख़ताई प्रत्येक ९ माशा खरल कर के मिश्रित करें, तो यह माजून मग़लज़ ज्वाहर वाली बन जायगी।

मात्रा—७ माशा से १ तोला।

गुण—वीर्य को बढ़ाती है, पुंसकशक्ति वर्धक है।

माजून मक्कल

आमला, हरड़ काबुली, बहेड़ा, हरमल बीज, गन्दना बीज प्रत्येक १।। तोला, गुग्गुल ३ तोला, प्रथम गुग्गुलु को गन्दना रस में हल करें, सब औषध का चूर्ण कर त्रिगुण मधु का पाक कर के मिलावें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—वातिक तथा रक्तज अर्श में उपयोगी है, विबन्ध नाशक है।

माजून मक्कवी अलवीख़ान

माया शुत्र अहराबी १ माशा, चांदी पत्र, स्वर्ण पत्र, कस्तूरी, अम्बर ३—३ माशा, अजवायन ख़ुरासानी, वरमना तुरकी, केशर, बेख़,लफ़ाह, मोठ जड़, नागकेसर प्रत्येक ६ माशा, मोती, कहरवा १—१ तोला, दोनों बहमन, शकाकल मिश्री, सोंठ, पान की जड़, अंजरा बीज, शलग़म बीज, गाजर बीज, ख़शख़ाश बीज सफ़ेद २—२ तोला, मग़ज़ पिस्ता, मग़ज़ नारियल, मग़ज़ चलग़ोज़ा, मग़ज़ चरोंजी, तिल छिले हुये, रेंगमाही, माही रोबीयान ४—४ तोला, मग़ज़ तुख़म ख़रपज़ा, मग़ज़ तुख़म ख़यारैन ५—५ तोला, चिड़े के शिर का मग़ज़ ७ तोला, चने का आटा १० तोला (दूध में ख़मीर कर शुष्क किया हुआ), सब औषध को कूट छान कर १० तोला गौ मक्खन में स्निग्ध करें, और खाँड तथा मधु प्रत्येक १। सेर, शरबत फोवाका मधुर, शरबत हालों २०—२० तोला लेकर यथाविधि पाक कर के माजून बनावें।

मात्रा—५ माशा।

गुण—पुंसक शक्ति वर्धक तथा स्तम्भक है।

माजून मुमस्क व मक़्कवी

कस्तूरी १ माशा, अम्बर शहब ४।। माशा, दारचीनी, मस्तगी, जायफल, बालछड़, ऊद ख़ाम, अजवायन ख़ुरासानी सफ़ेद, कबाबचीनी, केशर, साहलब मिश्री, चिड़े के शिर का मग़ज़ तथा जिह्वा, भांग ९—९ माशा, मायाशुत्र अहराबी १।। तोला, पोस्त ख़शख़ाश सफ़ेद २२।। माशा, शाह बलूत २२।। माशा, कालादाना सफ़ेद ४०० नग,

खाँड और मधु औषध चूर्ण से त्रिगुण, प्रथम कालादाना को बादाम रोग़न में १ दिन तर रखें, फिर मधु तथा खाँड के पाक में सब औषध चूर्ण को मिला कर माजून तैयार करें।

मात्रा—१ माशा, स्तम्भनार्थं, प्रमेह में चने समान प्रयोग करें।

गुण—स्तम्भक है, प्रमेहनाशक है।

माजून मलूकी

इलायची छोटी, कुन्दर प्रत्येक ४।। माशा, छड़ीला ११। माशा, जायफल, लौंग, जावित्री, इन्द्रजौ, अज़ख़रमूल, दारचीनी, सोंठ, मस्तगी, केशर, ऊद प्रत्येक १३।। माशा, खाँड सब औषध मान से दुगनी, अर्क गुलाब १३ तोला, खाँड को गुलाब में हल कर के और मधु औषध मान के सम भाग लेकर पाक कर माजून तैयार करें।

मात्रा—५ माशा।

गुण—पुंसक शक्ति वंधक तथा दीपक पाचक है।

माजून मक्कवी व मुफरह कलब

मुरब्बा आमला ५नग मुरब्बा हरड़ ५ नग, मुरब्बा सेब, मुरब्बा बही २—२ नग, मुरब्बा अन्नास, मुरब्बा नीशकर (गन्ने का मुरब्बा), मुरब्बा पेठा प्रत्येक १० तोला, सबको गरम पानी से धोकर पीस लें, और अर्क गुलाब-बेदमुश्क केवड़ा में प्रत्येक ३० तोला में हल करके छान लें, और खाण्ड २५ तोला मिला कर पाक करें, पाक सिद्धि पर कहरबा शमई, छोटी इलायची बीज, तबाशीर, केशर, प्रवाल, मरवारीद (मोती), यशप, चांदी वर्क, स्वर्ण वर्क प्रत्येक ६ माशा खरल करके भली प्रकार मिलावें।

मात्रा—४ से ६ माशा।

गुण—दिल दिमाग़ तथा यकृत को बल देती है।

माजून मुफ़रह व मक़्कवी

नागरमोथा, इलायची बड़ी, कुठ, आमला, कुन्दर, दोनों बहमन, दोनों मरिच, गुग्गुलु, नारीयल दरयाई, तज, छड़ीला, ऊद, मुरमकी,

कबाबचीनी, तेजपत्र, हरड़, केशर, जुन्दबदस्तर, पोदीना, पिप्पलामूल, बोज़ीदान, लौंग, कबाबचीनी, शिलाजीत, सोंठ, शकाकल मिश्री, मग़ज़ चलग़ोज़ा, पानजड़, अजवायन, जदवार, बाबूना पुष्प, आबरेशम, हिंबज़त्याना, तगर, ज़रावन्द गोल, दारचीनी, अकरकरा, साहलबमिश्री प्रत्येक ३५ माशा, द्राक्षा बीज रहित सब औषध के समभाग, खाँड सब के समभाग, मधु औषध से द्विगुण, खाँड तथा मधु का पाक कर के सब औषध का चूर्ण मिलावें।

मात्रा—९ माशा।

गुण—बलप्रद तथा हृदय को बल देने वाली है।

माजून मोचरस

मोचरस, सुपारी, तबाशीर, निशास्ता, माजू सबज़, गुलाब पुष्प, मोड़ीयों बीज, हरड़, बहेड़ा, आमला, गिल मख़तूम, मूसली श्वेत तथा कृष्ण प्रत्येक ६ माशा, अनार का छिलका ९ माशा, बही रस, अम्ल अनार रस प्रत्येक २। तोला, खाँड तथा मधु औषध से त्रिगुण, यथाविधि पाक कर औषध चूर्ण मिला कर माजून तैयार करें।

मात्रा—१ तोला, गौ दुग्ध से।

गुण—श्वेत प्रदर में अत्यन्त उत्तम है।

माजून मूसली पाक

मूसली सफ़ेद १ सेर को कूटछान कर दूध में पकावें, खोया बन जाने पर १ पाव घी में भून लें, अब इसे ३ सेर खाँड का पाक कर के मिला दें, गोंदकीकर, नारियल, मग़ज़ बादाम, मग़ज़ चरोंजी, प्रत्येक १।। तोला, जायफल, लौंग, केशर, चव्य, बालछड़, मग़ज़ तुख़म कौंच, दारचीनी, छोटी इलायची, नागकेसर, पत्रज, जावित्री, सोंठ, मिरच, पिप्पली प्रत्येक ९ माशा, सबको बारीक पीस कर पाक में मिलावें।

मात्रा—९ माशा से १ तोला।

गुण—प्रमेह, कास श्वास, तथा शारीरिक दुर्बलता में उत्तम है।

माजून मोमयाई

शिलाजीत शुद्ध ५ तोला, मोती १।। तोला, मायाशुत्र अहरावी ३।। तोला, अम्बरशहब ६ माशा, स्वर्ण वर्क ५० नग, मिश्री औषध मान से द्विगुण, मिश्री का पाक कर यथा विधि माजून तैयार करें, अम्बर और स्वर्ण वर्क पाक के अन्त में मिलावें।

मात्रा—२ माशा।

गुण—शरीर के सब अंगों को बल देती है, सम्भोग पश्चात की क्षीणता में उत्तम है।

माजून आबरेशम

दारचीनी, बहमन सफ़ेद, बालछड़, हब्बबलसान, ऊद सलीव, मस्तगी, केशर, कुन्दर, सोसन जड़, दरूनज अकरबी, नागरमोथा, बहमन सुरख़, वज तुरकी, उस्तोख़दूस, कबाबचीनी, तगर प्रत्येक २ माशा, हरड़ काबुली, मग़ज़ नारियल, प्रत्येक ४ माशा, मग़ज़ फिन्दक ३ माशा, आबरेशम अपक्व २० माशा, द्राक्षा बीज रहित १५ नग, पिप्पली, सोंठ, मिरच सफ़ेद १—१ माशा, खाँड ५ तोला, मधु १० तोला, सब को कूट छान कर, मधु तथा खाँड के पाक में मिला कर माजून तैयार करें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—विस्मृती नाशक है, हृदय तथा मस्तिष्क को बलप्रद है।

माजून अर्श

मण्डूर शुद्ध, शुद्ध गंधक आमलासार प्रत्येक ४ तोला, गुड़ पुराना ८ तोला, गुड़ का पाक कर के बाकी औषध चूर्ण मिला दें।

मात्रा—३ माशा।

गुण—शरीर को बल देती है, अर्श में लाभदायक है।

माजून बलादर

तिल छिलें हुये ४ तोला, शीरा भल्लातक, मग़ज़ बादाम, मग़ज़ चलग़ोज़ा, असगन्ध, अँकरकरा, पान जड़, जावित्री ३—३ तोला,

जायफल, सोंठ, साहलब मिश्री २—२ तोला, पिप्पली, मस्तगी, हालों बीज प्रत्येक १।। तोला, गाजर बीज, अंजराबीज, कौंच बीज, केशर १—१ तोला, समुद्र सोख, कस्तूरी ६—६ माशा, खाँड औषध मान के समभाग, मधु द्विगुण लेकर यथाविधि पाक कर औषध चूर्ण मिला कर माजून बनावें ।

मात्र—९ माशा से १ तोला ।

गुण—पुंसक शक्ति तथा सब शरीर को बल देती है ।

माजून नानखवाह

सातर, अजवायनं, ज़ूफ़ा, पोदीना, जीरा कृष्ण, कलौंजी प्रत्येक २२ माशा, तज, जावित्री, सौंफ़, सोंठ, जायफल, करफ़स प्रत्येक १३ माशा, आशा ९ माशा, सबका चूर्ण करके त्रिगुण मधु के पाक में मिला कर यथाविधि माजून बनावें ।

मात्रा—५ माशा ।

गुण—वातनाशक तथा दीपक पाचक है, आमाशय का शोधन करती है ।

(२) अजवायन देसी, सोंठ, गाजर बीज, प्रत्येक ३ तोला, करफ़स जड़ १।। तोला, मस्तगी ९ माशा, अकरकरा ५ माशा, केशर, बसफ़ाईज ३—३ माशा, मधु त्रिगुण, यथाविधि पाक कर के माजून बनावें ।

मात्रा—५ से ७ माशा ।

गुण—उपरोक्त ।

माजून नजाह

हरीतकी कृष्ण, बहेड़ा, आमला प्रत्येक ३।। तोला, बसफ़ाईज फस्तकी, अफ़तीमियून विलायती, उस्तोखद्दूस, त्रिवृत सफ़ेद प्रत्येक १।। तोला, मधु त्रिगुण, लेकर यथा विधि माजून तैयार करें ।

मात्रा—५ माशा ।

गुण—रक्तदोष में उपयोगी है ।

माजून नसीयान

कुन्दर, वर्च, नागरमोथा प्रत्येक ३ तोला, सोंठ, कालीमिरच प्रत्येक १।।तोला को त्रिगुण मधु के पाक में मिला कर माजून तैयार करें

मात्रा—५ माशा ।

गुण—बुद्धि को तीव्र करती है ।

माजून निशारा आजवाली

हाथीदन्त चूर्ण, सुपारी, गुलनार, आबरेशम छिला हुआ, हिरण-शृंग जला हुआ १—१ माशा, मोती, मरजान, बुसद, यशप सफ़ेद, धनियां, ऊद हिन्दी, मस्तगी, कचूर, कबाबचीनी, गुलाब पुष्प, गिल-अरमनी प्रत्येक २ माशा, तुरंजबीन २।। तोला, शीरा आमला आव-श्यकतानुसार, यथाविधि पाक कर के औषध चूर्ण मिला कर माजून बनावें, अन्त में थोड़ा सा कपूर मिला कर सुरक्षित रखें ।

मात्रा—३ स ६ माशा ।

गुण—जिन स्त्रियों का गर्भ गिर जाता है, उन के लिये उत्तम है, तीसरे मास से प्रारम्भ कर के प्रसवान्त तक प्रयोग करें ।

माजून नक़रा

कस्तूरी ३ माशा, अम्बर २ माशा, कहरबा, बुसद, यशप सब्ज़ १—१ तोला, मोती ३ माशा, बंशलोचन १ तोला, सब को अर्क गुलाब में खरल करें, अब आबरेशम जला कर १ तोला मिलावें, खाँड औषध मान से त्रिगुण लेकर, अर्क गुलाब तथा सेब रस में मिला कर पाक करें, ४ कुक्कुट अण्डों की ज़रदी गौघृत में भून कर तथा चांदी वर्क और ज्वाहरात को पाक में भली प्रकार मिला कर सुरक्षित रखें ।

मात्रा—३ माशा ।

गुण—दिल, दिमाग़ को बल देती है, पुंसक शक्ति को बढाती है, तथा शरीर को बल देती है ।

माजून नीम

नीम छाल, नीम पत्र, नीम शाख़, अंजीर वृक्ष छाल प्रत्येक १३ माशा, पितपापड़ा, धनियां, चिरायता, हरड़, हरड़ बड़ी, हरीतकी कृष्ण, चित्रक, गुलाब पुष्प, सौंफ़, सनाय, बसफ़ाइंज, दरूनज अकरबी, बहेड़ा सम भाग लेकर चूर्ण करें, त्रिगुण मधु के पाक में मिला कर यथाविधि माजून बनावें।

मात्रा—१ तोला।

गुण—परम रक्तशोधक है।

माजून भांगरा (वा कायाकल्प)

पिप्पली, पनवाड़बीज, चित्रकमूल, शतावर, कृष्ण हरीतकी, आमला, बहेड़ा, भांगरा, सोंठ, गुड़ प्रत्येक ३० तोला, सब औषध को बारीक कर गुड़ का पाक कर चूर्ण मिला १—१ तोला की ३०० वटी बनावें, सावन, भादों के मास से प्रारम्भ करके १—१ वटी प्रातः खावें, यह माजून वृद्धों को युवक तथा युवकों को बलवान बनाती है।

माजून जला

शाहतरा (पितपापड़ा), चिरायता, सरफोका, मुण्डी, उन्नाब, कृष्ण हरीतकी, उशबामग़रबी, ब्रह्मडण्डी, नीलकण्ठी, शीशम बुरादा, करफ़स बीज, सोये बीज, गाजर बीज, सौंफ़, धनियां, अजवायन प्रत्येक १० तोला, मस्तगी, अकरकरा, लौंग प्रत्येक ४॥ तोला, अगर २ तोला बारीक पीस कर त्रिगुण मधु के पाक में मिला कर माजून तैयार करें।

मात्रा—७ माशा, रक्तशोधक अर्क से।

गुण—चर्म तथा रक्तदोषों में उत्तम है।

माजून हयात

सुपारीपुष्प १० तोला, पिस्तापुष्प, पोस्त बीरून पिस्ता १०—१० तोला, पिस्ता, आमला, ख़शख़ाश बीज सफ़ेद भुना हुआ,

कतीरा २०—२० तोला, गोक्षरू २० तोला, माजू सबज़ १६ तोला, मस्तगी रूमी ८ तोला, ढाक की गोंद २० तोला, सिंघाड़ा २० तोला, सब को कूट छान कर त्रिगुण मधु का पाक कर यथाविधि माजून तैयार करें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—श्वेत प्रदर और प्रमेह में उत्तम है।

माजून नकछिकनी

नकछिकनी १ सेर लेकर ५ सेर दूध में उबाल कर खोया बनावें, आध सेर गौघृत में भून लें, फिर खाँड १ सेर, तथा मधु १ सेर का पाक कर के खोया मिला दें, दारचीनी, कबाबचीनी, पानजड़, लौंग ३—३ माशा, कस्तूरी १ माशा बारीक करके पाक में मिलावें।

मात्रा—६ माशा।

गुण—पुंसक शक्तिवर्धक है, प्रमेह तथा शीघ्रपतन में उत्तम है।

माजून हलीला

हरड़ कृष्ण २॥ तोला, बहेड़ा १। तोला, मरिच सफ़ेद ७॥ माशा, सोंठ, गुलाब पुष्प, वच, कुन्दर ४॥—४॥ माशा, बशंलोचन १। तोला, सन्दल, कासनी बीज ९—९ माशा, कूट छान कर द्विगुण मुरब्बा हरड़ के शीरा के पाक में मिलाकर माजून तैयार करें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—इस के प्रयोग से बुढ़ापा शीघ्र नहीं आता, शरीर रोग-रहित रहता है।

माजून यदाल्लाह

४ वर्षीय बकरे का रक्त जमा हुआ, काँच सफ़ेद जला हुआ, बिच्छू जलाया हुआ, करन्ब बती की जड़ जलायी हुई, ख़रगोश जलाया हुआ, अण्डा (जिस में से बच्चा निकला हुआ हो) का छिलका जला हुआ, हिजरलयहूद, गोंद जोज़, वज तुरकी, प्रत्येक ४॥ माशा, फ़ितराल-

सालीयून (करफ़स पहाड़ी), दोको, आलू गोंद, पोदीना, खतमीबीज, मिरच काली, प्रत्येक पौने सात माशा, कूट छान कर त्रिगुण मधु के पाक में मिला कर माजून तैयार करें।

मात्रा—७ माशा, गोक्षरू आदि क्वाथ से प्रयोग करें।

गुण—वृक्क तथा वस्तिगत अश्मरी को तोड़ कर बाहर निकालती है।

माजून ख़ास

बहमन सुरख़, बहमन सफ़ेद प्रत्येक ४ तोला, सहलब मिश्री, अकाकीया, नागरमोथा, जायफल, सोया प्रत्येक २॥ तोला, कुन्दर, माया शुत्र अहराबी प्रत्येक १॥ तोला, शाहदाना, पानजड़, केशर, १-१ तोला, अकरकरा, शाहबलूत, प्रत्येक ६ माशा, स्वर्णभस्म १ माशा, खांड़ सब औषध के मान के सम भाग, मधु औषध मान से द्विगुण, तुरंजबीन आध सेर, प्रथम तुरंजबीन को जल में हल कर के छान लें, और इस पानी में खाँड तथा मधु मिलाकर पाक करें, बाकी सब औषध का बारीक चूर्ण कर के पाक में मिला कर माजून बनावें।

मात्रा—१ तोला, दूध से प्रयोग करें।

गुण—प्रमेह को शान्त करता है, शरीर को पुष्ट करता है।

माजून हिज्रलयहूद

हिजरलयहूद १४ तोला ७ माशा, मग़ज़ तुख़म ख़रपज़ा, गाजर बीज, करफ़स बीज, मग़ज़ तुख़म कुड़, मग़ज़ तुख़म ककड़ी, मग़ज़ तुख़म तरबूज़, मग़ज़ तुख़म कद्दू मधुर, मग़ज़ खीरा, काकनज, तगर, कालीजीरी, दोको, सौंफ़ रूमी, प्रत्येक १७ माशा, बारीक चूर्ण कर त्रिगुण मधु में मिला कर माजून बनावें।

मात्रा—६ माशा से ९ माशा।

गुण—पथरी को टुकड़े कर के बाहर निकालती है।

माजून जालीनूस

काली मिरच, श्वेत मरिच, हमामा, कुठ, सम्भल, चिरायता, तेजपात, केशर, अनीसून, अकरकरा, करफ़सबीज, उटंगन बीज,

सुदाब बीज,सब औषध को बारीक पीस कर कूट छान लें, त्रिगुण मधु में मिला कर पाक करें।

मात्रा—४।। माशा, मधु जल से प्रयोग करें।

गुण—वृक्क तथा मूत्राशय को उष्णता देती है, और दोषों को दूर करती है।

माजून

मुरमुकी, कन्दर, अकाकीया, शयाफ़ मामीशा प्रत्येक ७ माशा, फटकड़ी भुनी हुई १०।। माशा, ख़तमी बीज २४।। माशा, अलसी, सोंठ, हरड़ काबुली प्रत्येक ३५ माशा, कूट छान कर मधु में मिला कर माजून बनावें।

मात्रा—१०।। माशा।

गुण—बिस्तरे में मूत्र निकल जाने के रोग में उपयोगी है।

(२) काली मिरच २ माशा, सोंठ ३ माशा, कुन्दर, कुठ मधुर, नागरमोथा, बलूत, जुफ़त बलूत, पिप्पली प्रत्येक ५ माशा, कूट छान कर त्रिगुण मधु में मिला कर पाक करें।

मात्रा—७ माशा से १ तोला।

गुण—बहूमूत्र में उपयोगी है।

माजून मास्कलबोल

हरीतकी कृष्ण, बड़ी हरड़, (दोनों को बारीक चूर्ण कर घी में भून लें), कत्थ सफ़ेद प्रत्येक ९ माशा, जुफ़त बलूत, कशार कुन्दर प्रत्येक २। माशा, साहलब मिश्री ४।। माशा, कहरबा शमई ७।। माशा, भांग बीज, मोड़ीयों बीज, प्रत्येक १८ माशा, द्राक्षा २२ तोला, द्राक्षा को बीज रहित कर के अर्क गुलाब में पकावें, गल जाने पर बाकी औषध चूर्ण को इसी में गूंद कर माजून बनावें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—प्रमेह तथा बहूमूत्र में लाभप्रद है।

माजून हब्बलग़ार

अजवायन, जीरा क्रमानी, काशम रूमी, कलौंजी, सातर, शाह जीरा, पहाड़ी अजमोद, मग़ज़ बादाम कटु, चलग़ोज़ा, मरिच काली, पोदीना, पिप्पली, वर्च, जूफ़ा, हब्बलग़ार, जुन्दबदस्तर प्रत्येक ७माशा, जाओशीर १०॥ माशा, सकबीनज १४ माशा, सुदाब शुष्क १७॥ माशा, गोंददार औषध को शराब में हल करें, बाकी औषध का बारीक चूर्ण करें, मधु में मिला कर यथाविधि माजून तैयार करें।

मात्रा—९ माशा।

गुण—वातरोग, वातोदर, आन्त्रशूल में उपयोगी है।

माजून राहत

सकमूनीया २४॥ माशा, मिरच काली, पिप्पली, सोंठ, जीरा क्रमानी, सुदाब, कुरफ़ा, पानजड़ प्रत्येक ३५ माशा, मधु ५२ तोला, सब औषध को कूट छान कर मधु में मिलाकर माजून तैयार करें।

मात्रा—४॥ माशा।

गुण—आन्त्र शूल को १ घण्टा में लाभ करता है, विबन्ध नाशक है

माजून फ़ाईक

लौंग, सोंठ, मस्तगी, ऊद, जायफल, दारचीनी प्रत्येक ३॥ माशा, सकमूनीया १ तोला पौने ४ माशा, बालछड़, मग़ज़ बादाम प्रत्येक २ तोला आधा माशा, त्रिवृत २ तोला ७॥ माशा, शरबत सेब ३३॥। तोला, यथाविधि माजून तैयार करें।

मात्रा—४ माशा से १॥ तोला तक।

गुण—शिर शूल, कफ़ज़ विकार में उत्तम है, रेचक है।

माजून मुफ़रह

बादरंजबोया, निंबू का ऊपर का छिलका, लौंग, मस्तगी, तज, जायफल, इलायची, नागकेशर, दोनों बहमन, नरकचूर, दरूनज-अंकरबी, केशर, बालंगू, फ़रंजमुशक प्रत्येक पौने ९ माशा, कस्तूरी

१ रत्ती, इन सब को बारीक पीस कर छान लें, इस के बाद हरड़ बड़ी १४ तोला ७ माशा, आमला गुठली रहित २१ तोला को दो सेर पानी में पकावें, आधा भाग रह जाने पर मल छान लें और आध सेर मधु मिला कर पाक करें, इस में बाकी औषध का चूर्ण मिला कर माजून बनावें।

मात्रा—६ माशा से १ तोला तक।

गुण—उदर विकार जनित उन्माद में उपयोगी है।

अपस्मार हर माजून

अफतमियून (आकाशबेल), उसतोख़दूस, अकरकरा, बसफ़ाईज सम भाग लेकर कूट छान कर सकंजबीन अनसली वा द्राक्षा में माजून बनावें।

मात्रा—३ माशा।

गुण—अपस्मार में उपयोगी है।

माजून अकरकरा

अकरकरा पौने ४ तोला बारीक पीस करके पौने चार तोले सिरका मिला कर खरल करें, फिर त्रिगुण मधु मिलावें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—अपस्मार में अत्यन्त उत्तम है।

माजून सुकरात

अनीसून, जुन्दबदस्तर, हब्ब बलसान, तगर, तज, मस्तगी, प्रत्येक ५। माशा, मुरमुकी, वर्च, नरकचूर, दरूनज अकरबी, करफ़सबीज, जरजीर बीज, प्याज़ बीज, गन्दना बीज प्रत्येक ७ माशा, हिबज़त्याना, कालीजीरी, नागकेशर, फरंजमुशक बीज, हब्बलग़ार, ज़रावन्द लम्बे, केशर, जायफल, लौंग, रेवन्दचीनी, दारचीनी, बड़ी इलायची, ज़ावित्री, छड़ीला, बालछड़, तालीस पत्र, चित्रक, फूल फरंग, जंगली प्याज़ भुनी हुई, प्रत्येक १०॥ माशा, नागरमोथा, मग़ज़ तुख़म घेवनी प्रत्येक १४ माशा, बादरंजबोया, लाख धोई हुई, गुलाब पुष्प

प्रत्येक १ तोला ५॥ माशा, हरड़ कृष्ण, आमला गुठली निकाला हुआ, बहेड़ा प्रत्येक १॥। तोला, मुसब्बर २ तोला ११ माशा, अगर ३॥ तोला, त्रिवृत ७ तोला ३॥ माशा, सब को कूट छान कर रोग़न बादाम कद्दू से स्निग्ध कर त्रिगुण मधु में मिला कर माजून तैयार करें, ६ मास पश्चात प्रयोग करें।

मात्रा—७ माशा से १ तोला तक।

गुण—वात कफ़ रोग, अपस्मार, शिरशूल, हृदय, यकृत तथा वृक्क दुर्बलता, उन्माद, रक्तपित्त, क्षय, प्रवाहिका, चर्मरोग, पाण्डू, वातरक्त, अर्श तथा सब प्रकार के ज्वर में गुणकारी औषध है।

मात्रा—६ माशे से १ तोला।

माजून सुहाल

मग़ज़ चलग़ोज़ा १०॥ माशा, मग़ज़ पिस्ता १७॥ माशा, मग़ज़ बादाम ३५ माशा, खाँड ८ तोला ९ माशा, कूट छान कर यथाविधि माजून तैयार करें।

मात्रा—६ माशे से १ तोला।

गुण—कफ़ज़ कास में उत्तम है।

माजून

दारचीनी, कुठ, बहरोज़ा, जुन्दबदस्तर, अफ़ीम, मिरच काली, पिप्पली, मेहीसाला (शिलारस) प्रत्येक २ तोला ८ माशा, मधु (झाग उतारा हुआ) आध सेर, पहिले बहरोज़ा को मधु में हल करें, फिर मधु का पाक कर के बाकी औषध का चूर्ण मिलाकर पाक करें।

मात्रा—१॥ माशा खा कर ऊपर से मधु जल १॥ छंटांक में ३ बिन्दू तिल तैल मिला कर पीवें।

गुण—कास, रक्तपित्त, फुप्फुस व्रण, फुप्फुस पूय, वमन, विसूचका, आन्त्र व्रण इत्यादि रोगों में लाभप्रद है।

माजून

द्राक्षा बीज रहित ३५ माशा, मुरमुकी, कतीरा, मेहीसाला, गोंद कीकर, जूफ़ा, चलग़ोज़ा प्रत्येक १७॥ माशा, कुन्दर, मग़ज़ बादाम

कटु, ज़रावन्द, कालीजीरी, केशर, हंसराज, ईरसा, अड़ूसा प्रत्येक १०।। माशा, कूटने वाली औषध को कूट कर तथा गोंददार औषध को आठ तोला जूफ़ा के क्वाथ में हल करके मधु तथा खाँड का पाक कर के माजून तैयार करें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—खांसी, श्वास, आमाशय शूल, आन्त्रशूल और वक्ष पीड़ा में उत्तम है, आवाज़ को साफ़ करता है।

माजून ज़राबन्द

गोंद कीकर १०।। माशा, ज़रावन्द गोल, कालीजीरी, मटर का आटा, मिरच काली, श्वेत ख़ुरफ़ा बीज, मग़ज़ बादाम कटु छिलके रहित, उटंगन बीज प्रत्येक १७।। माशा, परसाशों, रबुलसूस, जूफ़ा शुष्क प्रत्येक ३५ माशा, कूट छान कर मधु में मिला कर यथाविधि माजून तैयार करें।

मात्रा—१०।। माशा, जूफ़ा के क्वाथ से।

गुण—कास श्वास में उत्तम है।

माजून तिल्ला

स्वर्णपत्र हल किये हुए २२।। माशा, याकूत रमानी, लाल बदख़शानी, मुक्ता प्रत्येक २०। माशा, अम्बर शहब ११। माशा, केशर ९ माशा, कस्तूरी ४।। माशा, शरबत फोवाका, शरबत मधुर अनार, मधुर बही जल, मधुर सेब जल प्रत्येक २ सेर, अर्क गुलाब ३ पाव, खाँड, अर्क बेदमुश्क, अर्क गुलाब, अर्क गाऊज़बान, (जो गुलाब और बेद मुशक में खेंचा गया हो) प्रत्येक १—१ सेर, मधु ९ तोले ४।। माशा, प्रथम मधुर फलों का जल शरबत, खाण्ड तथा मधु और अर्क मिला कर पाक करें, फिर बाकी औषध चूर्ण मिलाकर माजून तैयार करें।

मात्रा—५ से ९ माशा।

गुण—हृदय रोगों में उत्तम है।

माजून बज़ूर

गाजर बीज, शलग़म बीज, प्याज़ बीज, गन्दना बीज, हरमल, हालों बीज, चलग़ोज़ा, मग़ज़ हब्बलज़लम, इन्द्र जौ, बोज़ीदान, वज तुरकी, तोदरी दोनों, दोनों बहमन, शकाकल मिश्री, पिप्पली, कुरफ़ा, हींग १—१ भाग ले कर बारीक चूर्ण कर त्रिगुण खाँड तथा मधु के पाक में मिला कर माजून तैयार करें।

मात्रा—१० माशा।

गुण—पुंसक शक्तिवर्धक है।

माजून घीक्वार

कस्तूरी १॥ माशा, केशर २ माशा, मग़ज़ पिस्ता, छुहारा प्रत्येक ७ तोला, घृत कुमारी गूदा १ पाव, गौ दुग्ध, खाँड प्रत्येक १।—१। सेर, प्रथम घृत कुमारी के गूदा को अच्छी तरह मल कर दूध में डाल कर अग्नि पर चढ़ावें, दूध में हल होने पर खाँड तथा मग़ज़यात मिला कर पाक करें, पाक सिद्धि पर कस्तूरी तथा केशर अर्क गुलाब में हल करके मिलावें।

मात्रा—१ से दो तोला।

गुण—पुंसक शक्ति दुर्बलता तथा आमवात में उत्तम है।

माजून मग़लज़

कस्तूरी ६ रत्ती, अम्बर शहब ३॥ माशा, मग़ज़ हब्ब किलकिल १०॥ माशा, दारचीनी, साहलब मिश्री, शकाकल मिश्री, जायफ़ल, इन्द्रजौ, मस्तगी रूमी, केशर, बोज़ीदान, गुलाब पुष्प, दोनों बहमन, हालों बीज, गाजर बीज प्रत्येक ९ माशा, भांग ९ तोला ४॥ माशा, मधु त्रिगुण, यथाविधि माजून तैयार करें।

मात्रा—७ माशा।

गुण—शिश्न में दृढता तथा उत्तेजना उत्पन्न करता है।

माजून

मग़ज़ बादाम, मग़ज़ फिन्दक, मग़ज़ चलग़ोज़ा, मग़ज़ अख़रोट, मग़ज़ कुड़, मग़ज़ पिस्ता, मग़ज़ नारियल, मग़ज़ हब्ब किलकिल, मग़ज़

हब्बलज़लम, मग़ज़ हिबतलखिज़रा, चिड़ों के शिर का मग़ज़, मग़ज़ खरबूज़ा, गाजरबीज, शलग़म बीज, तुख़म कौंच, तुख़म जरजीर, तुख़म उटंगन, बादरंजबोया बीज, फरंज मुशक बीज, बालंगू बीज, दोनों बहमन, दोनों तोदरी, शकाकल मिश्री, सन्दल सफ़ेद, साहलब मिश्री, इन्द्रजौ, गोंद कीकर, मस्तगी रूमी, मायाशुत्र अहराबी, छुहारे प्रत्येक ३।। माशा, अम्बरशहब २ माशा, आबरेशम कुतरा हुआ, दारचीनी, छोटी इलायची, पानजड़, बोज़ीदान, पोदीनाशुष्क, सोंठ, केशर प्रत्येक ३ माशा, गोक्षरू, गाऊज़बान गेलानी, अनीसून बीज प्रत्येक ४ माशा, मग़ज़ कदू मधुर, खशखाश बीज प्रत्येक ६ माशा, जदवार, मग़ज़ खयारैन, खुरफ़ा बीज छिला हुआ प्रत्येक ९ माशा, मधु औषध से द्विगुण, खाँड औषध मान के सम भाग, खाँड तथा मधु का पाक कर के औषध चूर्ण मिला कर माजून तैयार करें।

मात्रा—५ से ९ माशा।

गुण—गुणप्रद तथा प्रभावशाली योग है, पुंसक शक्तिवर्धक है।

माजून

हरमल कृष्ण, जावित्री, जायफल, लौंग, दारचीनी प्रत्येक १७।। माशा, तिल काले छिले हुए २४।। माशा, सब औषध को कूट छान कर त्रिगुण मधु में मिला कर माजून तैयार करें।

मात्रा—१० माशा।

गुण—उपरोक्त।

माजून

बनफ़शा १७।। माशा, लौंग २४।। माशा, सौंफ़, अनीसून, गाऊ-ज़बान, दोनों इलायची, पोदीना, कृष्ण हरीतकी, हरड़ बड़ी, हरड़ प्रत्येक ३१।। माशा, बसफ़ाइंज फ़सतकी, सनाय प्रत्येक ४२ माशा, त्रिवृत श्वेत ४५।। माशा, गुलाब पुष्प, पोदीना प्रत्येक ५२।। माशा, ताज़ा आमला का पानी ३ सेर १२ छटांक, सब औषध को बारीक कर के आमला के जल में मिला कर बिना खाँड के माजून बनावें।

मात्रा—६ माशा से १ तोला।
गुण—रक्तदोष तथा कुष्ठ में उपयोगी है।

माजून यहीबिनखालद

तगर, सोंठ, जीरा क्रमानी, पिप्पली, प्रत्येक ७ माशा, सनाय १७॥ माशा, सुरंजान ३५ माशा, सब औषध को कूट छान कर त्रिगुण मधु के पाक में मिला कर माजून बनावें।

मात्रा—९ माशा गरम जल से।
गुण—आमवात में उत्तम तथा उपयोगी है।

माजन

हरड़, बहेड़ा, आमला, आकाशबेल, दूकू प्रत्येक २२॥ माशा, कुरफ़ा, पिप्पली प्रत्येक १८ माशा, जायफल, अकरकरा, शाहतरा प्रत्येक ९ माशा, त्रिगुण मधु में यथाविधि माजूनब नावें।

मात्रा—६ माशा से १ तोला।
गुण—मासिकधर्म्म के विकारों को नष्ट करती है।

माजून

मुरमुकी, दारचीनी प्रत्येक ७ माशा, सुदाब पत्र, पोदीना पहाड़ी, कालीजीरी, पोदीना, मंजीठ, हींग, सकबीनज, जाओशीर प्रत्येक १०॥ माशा, हाऊबेर ३५ माशा, बारीक पीस कर मधु में मिला कर माजून तैयार करें।

मात्रा—६ माशा से १ तोला तक।
गुण—मासिक धर्म को खोल कर लाती है।

माजून

क़स्तूरी ९ रत्ती, बालछड़, छड़ीला, अगर, मस्तगी रूमी प्रत्येक ९ माशा, कुरफ़तलतीब १३॥ माशा, जायफल, कोकनार (पोस्त डोडा) प्रत्येक १८ माशा, भांग पत्र ५ तोला १० माशा, काला दाना

सफ़ेद १०० नग, मधु औषध मान से त्रिगुण, प्रथम औषध को कूट छान कर बादाम तैल से स्निग्ध करें, फिर मधु का पाक कर के औषध चूर्ण मिला कर माजून तैयार करें।

मात्रा—३ से ९ माशा।

गुण—शीघ्रपतन में उत्तम है।

माजून रशीदी

बेरका आटा, छालीया, लौंग, सहलब मिश्री, बाल छड़, मस्तगी, अजवायन प्रत्येक ३५ माशा, मधु आध सेर का पाक करके औषध का बारीक चूर्ण कर के अच्छी तरह से मिला कर माजून तैयार करें।

मात्रा—६ माशा।

गुण—शीघ्रपतन तथा बिन्दु २ मूत्र आने में लाभप्रद है।

———

गुप्त विशेष योग

गुप्त विशेष योग

यह योग साधारण योग नहीं हैं, परन्तु अत्यन्त प्रभाव शाली तथा गुण प्रद योग हैं, योगों की औषध को ही ध्यान से देखने से इनके अद्‍भुत गुणों का परिचय सहज ही में मिल सकता है—युनानी चिकित्सा पद्धति के प्रसिद्ध तथा अनुभवी चिकित्सकों के अत्यन्त गोपनीय योग हैं—श्री मसीह-उल-मुल्क हकीम अजमल खान साहिब के वंश के योगों के सिवाये, हकीम जमील खान, हकीम जफ़र मियां तथा अन्य प्रसिद्ध हकीमों के खास सन्दूकचे के यह गुप्त नुस्खे हैं, जो आप को भेंट किये जा रहे हैं—आज के युनानी औषधालय इन्हीं विशेष योगों के सहारे चल रहे हैं, इस में कुछ भी संशय नहीं है।

हब्ब सुरख़

द्रव्य तथा निर्माण विधि—शुद्ध हिंगुल, शुद्ध बत्सनाभ, सौभाग्य भस्म, सोंठ, काली मिरच, पिप्पली, अकरकरा १–१ तोला, सब को बारीक खरल कर भांगरा रस की सात भावना दें।

मात्रा—१ से २ रत्ती, योग्य अनुपान से।

गुण—वातश्लेष्मक रोग, अर्दित, अर्धांग, वातकम्प, गृध्रसी, प्रसूत ज्वर, अजीर्ण, वातगुल्म में लाभप्रद हैं।

हब्ब सुहाल बलग़मी

बाँसापत्र, कंडयारी पंचांग २–२ सेर लेकर १० सेर जल में क्वाथ करें, २ सेर शेष रहने पर मल छान कर १ सेर मधु मिला कर पाक करें, पाक सिद्धि पर, बहेड़ा, पिप्पली, मधुयष्टि, खशखाश बीज, बनफ़शा पुष्प प्रत्येक ४ तोला बारीक पीस कर मिला दें, और खरल कर चने समान वटी करें।

मात्रा—१ से ४ बटी ।

गुण—कास, श्वास में उपयोगी योग है ।

अकसीर बवासीर

ककरोंदा छाया में शुष्क किया हुआ २॥ तोला, काली मिरच २॥ तोला, शुद्ध मल्ल ३ माशा, बारीक पीस खरल कर ४० तोला ककरोंदा के स्वरस से भावित कर मूँग समान वटी करें ।

मात्रा—१ वटी, मक्खन से ।

गुण—अर्श में लाभप्रद योग है ।

यशद भस्म

यशद उत्तम लेकर कड़छे में डाल कर पिघला कर ५० बार केला रस में बुझावें, फिर इस यशद का बुरादा करें, इस बुरादा को निंब रस में १२ घण्टे खरल करें, फिर निंबू रस में भिगो कर १० दिन तक धूप में रखें, इस के पश्चात् इसकी टिकिया बनावें, १ सेर बकुन बूटी को पीस कर दो रोटीयाँ तैयार करें, एक रोटी पर यशद की टिकिया रख कर दूसरी रोटी से ढांक कर कपरौटी कर ६ सेर उपलों की आंच दें, इसी प्रकार निंबू रस से भावित कर और बकुन बूटी में रख कर ३ बार आंच दें, पीले रंग की भस्म तैयार होगी ।

मात्रा—१ से २ रत्ती ।

गुण—प्रमेह, पित्त रोग तथा यक्ष्मा में लाभप्रद है, रक्त अर्श में भी गुणकारी है ।

सफ़ूफ़ राहत

असगन्ध, विधारा, शतावर, सम भाग ले कर चूर्ण तैयार करें ।

मात्रा—३ से ६ माशा ।

गुण—प्रमेह, स्वपन दोष में उत्तम है ।

अर्क मुसफ़ी ख़ून

मुण्डी १ सेर, नीमछाल आध सेर, चिरायता आध सेर, हरड़ एक पाव, सरफोंका एक पाव, चन्दनरक्त २ छटाँक, मको शुष्क

२ छटांक, बसफ़ाईज फ़सतकी २ छटाँक, उन्नाब कांधारी ५० नग, सब को अर्धकुट्टित कर ३६ घण्टे जल में भिगोवें, और १२ बोतल अर्क निकालें।

मात्रा—५ से १० तोला।

गुण—रक्तशोधक है।

दवाये मक्कवी दिमाग़

चांदी भस्म, प्रवाल भस्म, लौह भस्म, हाथदंत बुरादा, मुण्डी पुष्प, सौंफ का मग़ज़, त्रिफला लवण, सम भाग ले कर बारीक पीस कर एक जीव कर लें।

मात्रा—२ से ४ रत्ती, खमीरा बादाम में मिलाकर प्रयोग करें।

गुण—बुद्धि के लिये उत्तम है।

भल्लातक मंजन

भल्लातक ८ नग (जला हुआ), माजू ८ नग, सुपारी ८ नग जली हुई, कौड़ी पीली ३२ नग जली हुई, हिंगुल शुद्ध (नीम पत्र वाला) १ तोला ४ माशा, मुर्दासंग भुना हुआ १ तोला ४ माशा, जंगार, राल, १ तोला ४ माशा प्रत्येक, नीलाथोथा सब्ज़ ८ माशा, सब को बारीक पीसकर मंजन तैयार करें (हिंगुल शुद्ध नीमपत्रवाला—शुद्ध हिंगुल को ५ सेर नीम पत्र के नुगदे में रख कर हाण्डी में डाल कर हलकी आंच दे लें, तैयार है)।

गुण—रात्री को दांतों पर मलें, प्रातः कुल्ली करें, पाईरिया के लिये रामबान है, दंतपीड़ा, दंतशोथ, दंतकृमि इत्यादि में लाभप्रद है, बहुत ही उपयोगी योग है।

कासहर वटी

बादाम मग़ज़ २५ नग, मुनक्का ३ तोला, मधुयष्टि ६ माशा, पिप्पली ४ नग, काकड़ा सिंगी ३ माशा, शकर तैग़ाल ३ माशा, बंशलोचन ३ माशा, छोटी इलायची ३ माशा, गोंदकीकर, गोंदकतीरा, सुहागा ३—३ माशा, अद्रक रस से चने समान गोलीयां बनावें।

मात्रा—१ से ४ वटी ।

गुण—प्रत्येक प्रकार की खांसी में उत्तम है ।

तुत्थादि योग

नीलाथोथा, गन्धक ६ माशा, सिंदूर १ तोला, रसकर्पूर ३ माशा, मुर्दासिंग १ तोला, बावची २ तोला, पारद ३ माशा, नीम पत्र २॥ तोला, हड़ताल वर्की ३ माशा, कर्पूर २ तोला, मनिशल ३ माशा, सब को मिला बारीक पीस कर रखें, ३ माशा औषध २॥ तोला शत धौत मक्खन में मिला कर मालिश करें, १ घण्टा बाद स्नान करें ।

गुण—खारश में अत्यन्त उत्तम है ।

प्रमेह हर चूर्ण

इसपग़ोल सत १। सेर, गोंद कतीरा १ पाव, मग़ज़ तुख़म तिमर हिन्दी कलान बरयान (इमली के बड़े बीज भुने हुए) आध सेर, पोस्त डोडा १ पाव, खाँड २॥ सेर, सब को बारीक पीस कर चूर्ण बनाकर खाँड मिलावें ।

मात्रा—६ माशा, प्रातः ६ माशा सायं दूध से ।

गुण—प्रमेह तथा स्वप्न दोष में उत्तम है ।

अदरारी

हाऊबेर, सकबीनज, जाऊशीर, हींग, पोदीना, मुरमुकी, दारचीनी, सब को पीस कर चूर्ण बनावें ।

मात्रा—३ माशा, प्रातः, ३ माशा सायं को ।

गुण—मासिक धर्म खोल कर लाता है, मासिक धर्म से आठ दिन पहिले प्रयोग करें ।

कुरस पोदीना

पोदीना १ तोला, काली मिरच ६ माशा, अजवायन ३ माशा, सोंठ ३ माशा, बायविड़ंग ३ माशा, लौंग ३ माशा, लवपुरी लवण १ तोला, बारीक पीस कर ४–४ रत्ती के कुरस बनावें ।

मात्रा—१ से दो कुरस ।

गुण—दीपक पाचक तथा अजीर्ण नाशक है ।

जमीलान

बहमन सफ़ेद २ छटाँक, तालमखाना १ छटाँक, सरवाली बीज, तुख़म तिमर हिन्दी कलान १—१ छटाँक, लोध्र पठानी २॥ तोला, चीना गोंद १ छटाँक, मूसली श्वेत आध छटाँक, वंग भस्म २ तोला, बारीक पीस कर १—१ माशा के कुरस बनावें ।

मात्रा—२ कुरस प्रातः, २ सायं को दूध से प्रयोग करें ।

गुण—प्रमेह के लिये विशेष लाभप्रद योग है ।

शरबत सदर

गाऊज़बान ८० तोला, गाऊज़बान पुष्प ४० तोला, ख़तमी बीज ४० तोला, अलसी ५० तोला, सौंफ़ ५० तोला, पोस्त डोडा २५ तोला, अजवायन देसी ५० तोला, मधुयष्टि ४० तोला, उन्नाब ४० तोला, परसाशों ४० तोला, आबरेशम कुतरा हुआ २५ तोला, बहीदाना २५ तोला, २० सेर जल में क्वाथ करें, आधा भाग रहने पर १० सेर खाँड मिला कर पाक करें ।

मात्रा—२ से ५ तोला ।

गुण—कास, श्वास, प्रतिश्याय में उत्तम तथा विशेष योग है ।

मुसफ़ी

पितपापड़ा, सरफोंका, उन्नाब, नीलकण्ठी, ब्रह्मडण्डी, हरड़, कृष्ण हरड़, चोबचीनी, उशबा मग़रबी, चन्दन लाल, बुरादा शीशम, मेंहन्दी पत्र, नीम पत्र, सनाय ६—६ छटांक, चिरायता १२ छटांक, नरकचूर ३ छटांक, मुण्डी १ सेर, कमीला १॥ छटांक सब को अर्ध कुट्टित कर २० सेर जल में उबालें, आधा भाग रहने पर १० सेर खाँड मिला कर शरबत का पाक करें ।

मात्रा—२ से ५ तोला ।

गुण—परम रक्तशोधक है, फोड़े, फुंसी, ख़ारश में अत्यन्त उत्तम है ।

सी-को

कासनी जड़, सौंफ़ जड़, करफ़स जड़, अज़ख़र जड़, मुलैठी, सौंफ़ २—२ छटाँक, सनाय २॥ छटांक, इमली छिली हुई २॥ छटांक द्राक्षा बीज रहित, अंजीर पक्व ५—५ छटांक सब को २० सेर जल में क्वाथ करें, आधा भाग रहने पर गुड़ पुराना १० सेर डाल कर पाक करें ।

मात्रा—२ से ५ तोला ।

गुण—आमाशय तथा यकृत के सब रोगों में उत्तम है ।

मी-लो

कासनी जड़, सौंफ़ जड़, करफ़स जड़, अज़ख़र जड़, मधुयष्टि, सौंफ़, गुलाब पुष्प, रेशाख़तमी २—२ छटांक, सनाय, इमली २॥—२॥ छटांक, मुनक्का, अंजीर ज़रद ५—५ छटांक, इसपग़ोल (पोटली में बांध कर) १ छटांक—सुहागा २।' तोला सब औषध को २० सेर पानी में उबालें। १० सेर रहने पर छान कर रुब्ब कासनी, रुब्ब मको, रुब्ब बथुआ, २॥—२॥ सेर मिलाकर पाक करें । (रुब्ब बनाने की विधि—मको का पानी आधा सेर, चीनी २॥ सेर, सादा पानी ३ पाव, मिलाकर पाक करें । इसी तरह बाकी औषध का भी रुब्ब बनावें ।

मात्रा—१। तोला थोड़े उष्ण जल में मिला कर ३—४ बार प्रयोग करें ।

गुण—सब प्रकार के अंगों की शोथ में लाभदायक है, यकृत शोथ, गर्भाशय शोथ में अत्यन्त उत्तम है ।

वात हर चूर्ण

हरड़, सनाय १—१ तोला, गुलाब पुष्प १॥ तोला, मुलैठी २ तोला, सौंफ़२ तोला, सोंठ ६ माशा, शुद्ध गन्धक १ तोला, बड़ी इलाय-

ची ९ माशा, सुरंजान मीठी २ तोला, खाँड १० तोला मिला लें, बारीक पीस कर चूर्ण करें।

मात्रा ——४ माशा से १ तोला तक।

गुण——वातज रोगों में उत्तम योग है।

माज़न करफ़स

रेवन्दचीनी, वर्च, शहादाना, करफ़स बीज, सौंफ़, अनीसून, अजवायन खुरासानी ५——५ तोला, मधु ३ पाव, खाँड १। सेर, सब का चूर्ण कर मधु तथा खाँड का पाक कर के अच्छी तरह मिला दें।

मात्रा——६ माशा से १ तोला।

गुण——प्रत्येक प्रकार की शोथ में उपयोगी है, यकृतविकार में विशष लाभप्रद है।

शरबत मको

बरंजासफ़, शकाही, बादावरद, मको, अफ़सनतीन, सौंफ़ की जड़, कासनी जड़, कसूस बीज (पोटली में बाँध कर), करफ़स मूल, अज़ख़र मूल, गुलाब पुष्प, अलसी बीज १——१ तोला, द्राक्षा बीज-रहित १ तोला, कासनी, बथुआ, मको, मूली इन का रस १०——१० तोला, पुराना गुड़ १ सेर, यथाविधि शरबत तैयार करें।

मात्रा——२ से ४ तोला।

गुण——यकृत रोगों में अति उत्तम है।

शरबत नज़ली

गाऊज़बान, गाऊज़बान पुष्प, अलसी बीज, मधुयष्टि, परसाशों (हंसराज), शिरस बीज प्रत्येक ५——५ तोला, आबरेशम ३ तोला, ज़ूफ़ा शुष्क ५ तोला, उन्नाब १० तोला, सपस्तान १० तोला, खाँड २ सेर, यथा विधि शर्बत तैयार करें। (नोट—अलसी बीज ७ तोला है)।

मात्रा——५ से १० तोला।

गुण—कास, श्वास, जीर्ण प्रतिश्याय में उत्तम है, क्षय में भी उपयोगी है।

लहूक सदर

गोंद कतीरा, निशास्ता, गोंदकीकर, रबुलसूस, ख़शख़ाश बीज २०—२० तोला, बहीदाना १६ तोला, गाऊज़बान पत्र, अजवायन ख़ुरासानी ४—४ तोला, मग़ज़ बादाम मधुर, मग़ज़ कदू, मधु यष्टि १६—१६ तोला, परसाशों १२ तोला, सरतान जला हुआ १२ तोला, खाँड ६ सेर, मधु २ सेर, क्वाथ वाली (बहिदाना, गाऊज़बान, मुलैठी, परसाशों), औषध का क्वाथ करके उस में खाँड तथा मधु का पाक करें, पाक सिद्धि पर बाकी औषध का चूर्ण मिला कर अवलेह तैयार करें।

मात्रा—६ माशा से १ तोला।

गुण—प्रत्येक प्रकार की कास तथा श्वास की महौषध है, क्षय कास में उत्तम है।

बलप्रद बटी

शुद्ध मल्ल २ तोला, मोम उत्तम (स्वयं मधु के छते से निकाला हुआ), २ तोला कस्तूरी ३ माशा, मिला कर १ सप्ताह तक प्रतिदिन ५–६ घण्टे खूब कूट कर चने समान वटी करें।

मात्रा—१ वटी।

गुण—अत्यन्त बलदायक औषध है।

धूड़ा

कौड़ीयाँ २ तोला, बकरे का माँस जला हुआ २ तोला, रसकर्पूर ५ माशा, मिला कर बारीक करें।

गुण—आतशक के व्रण में अत्यन्त उत्तम धूड़ा है।

(२) चमड़ा जला हुआ, सुपारी पुरानी जली हुई, कर्पूर, कौड़ी जली हुई ५—५ तोला, नीलाथोथा १५ माशा, मिला कर बारीक करें।

गुण—उपरोक्त।

ज्वर हर बटी

सुहागा भुना हुआ, फटकड़ी भुनी हुई, शुद्ध मल्ल सम भाग लेकर कूट कर तुलसी स्वरस से मूँग समान वटी करें।

मात्रा—१ से २ वटी।

गुण—विषम ज्वर, तथा जीर्ण विषम ज्वर में उपयोगी है।

हब्ब पेचश

कर्पूर, अहिफ़ेन, केशर, हरीतकी कृष्ण, आमला शुष्क, माजू १—१ तोला, कूट छान कर चने समान वटी करें।

मात्रा—१ से ४ वटी दूध से।

गुण—प्रवाहिका, अतिसार, मरोड़ में उपयोगी है।

हब्बे चना

बहरोज़ा तर, चने का आटा १—१ तोला, चन्दन तैल उत्तम ३ माशा, यथाविधि चने समान वटी करें और चने के आटे में रखें।

मात्रा—४ वटी प्रातः सायं शरबत वज़ूरी से लें।

गुण—पूयमेह (सुज़ाक) में प्रभावशाली औषध है, पीप को नष्ट कर के व्रण को शीघ्र भरती है।

ज्वर बटी

अतीस १ तोला, कुनीन सल्फ़ ४ तोला, करंजुआ २ तोला, बंशलोचन, छोटी इलायची बीज, काली मिरच, गोदंती हरिताल भस्म १—१ तोला, कूट छान कर चने समान वटी करें।

मात्रा—१ से ४ वटी।

गुण—विषम ज्वर में अत्यन्त उपयोगी है।

हब्ब मुमस्क

जहरमोहरा १ तोला, केशर १।। तोला, जायफल, जावित्री, रेगमाही १—१ तोला, समुद्रसोख ६ माशा, चांदी भस्म ३ माशा,

कस्तूरी १ तोला, १०० पान पत्र के रस में खरल कर मूँग समान वटी करें।

मात्रा—२ वटी, सम्भोग से २ घण्टे पूर्व दूध से प्रयोग करें।

गुण—बल प्रद तथा स्तम्भक है।

हब्ब मस्कन कलब

ज़हरमोहरा, बंशलोचन, यशप सबज़, मुक्ताशुक्ति, मरजान २—२ तोला, बुसद, नारजील दरयाई, पपीता, तुख़म रेहां, तुख़म ख़शख़ाश, मग़ज़ कदू, छोटी इलायची बीज, पोदीना शुष्क, ज़रिशक, मग़ज़ बादाम, कहरबा शमई, धनिया शुष्क, मग़ज़ तुख़म तरबूज़, चांदी वर्क प्रत्येक १—१ तोला, सब को कूट छान कर चने समान वटी करें।

मात्रा—१ वटी, अर्क गुलाब तथा अर्क बेदमुष्क से।

गुण—दिल दिमाग़ को बल देती है, अजीर्ण नाशक है, रोगों की बाद की क्षीणता को नष्ट करती है।

हब्ब ख़ास

स्वर्णभस्म २ तोला, अलाहमर भस्म (कुशता अलहमर) १ तोला, मग़ज़ कदू मधुर २ तोला, अम्बर २ तोला, कस्तूरी १ तोला, अर्क बेदमुशक में मिला कर मूँग समान वटी करें।

मात्रा—१ वटी, प्रातः सायं भोजनोपरान्त प्रयोग करें।

गुण—पुंसक शक्ति को बढ़ाती है, वाजीकरण तथा दीपक पाचक औषध है, शरीर के सब अंगों को बल देती है।

हब्ब मुफ़ैदी

बकरी का दूध १। सेर, शुद्ध वत्सनाभ ९ माशा, दक्षिणी मिरच ९ माशा, एक बारीक कपड़े में वत्सनाभ तथा मिरच चूर्ण को डालकर दूध में लटका कर दूध का खोया बनावें और ज्वार समान वटी करें

मात्रा—४ वटी प्रातः, ४ सायंकाल को बकरी अथवा गधी के दूध से प्रयोग करें।

गुण—यक्ष्मा में अत्यन्त उत्तम है, कास तथा ज्वर को नष्ट करती है।

हब्ब अफलातून

रेगमाही, माही रोबीयान २—२ नग, जुन्दबदस्तर २ तोला, यशप, ज़हरमोहरा, मरवारीद, नीलम, ज़ुमुरद, कस्तूरी, अम्बर, केशर, जायफल, जावित्री ६—६ माशा, चांदी पत्र १ तोला, साण्ड का शिश्न सूखा हुआ १ तोला, सब को बारीक पीस कर मूँग समान वटी करें।

मात्रा—१ वटी प्रातः, १ सायं भोजनोपरान्त।

गुण—पुंसक शक्ति को बल देती है, हृदय, मस्तिष्क को बलवान बनाती है, शरीर की दुर्बलता को दूर करती है, अत्यन्त उत्तम वाजीकरण औषध है।

सफ़ूफ लहलीन

जौहर नवासादर, सत्व पोदीना, काली मिरच, पिप्पली, यवक्षार कलमी शोरा, छोटी इलायची बीज, बड़ी इलायची बीज, लवपुरी, लवण ३—३ तोला, हिरमची ५ तोला, सब को बारीक पीसकर चूर्ण बनावें।

मात्रा—आधा से १ माशा।

गुण—दीपक पाचक तथा अजीर्ण नाशक है, वातशूल में उपयोगी है।

सफ़ूफ़ सिया

सौंफ़ ५ तोला, पोस्त ख़शख़ाश ५ तोला, हरीतकी कृष्ण घी में भुनी हुई ५ तोला, सब को बारीक कर चूर्ण बनावें।

मात्रा—१ से ३ माशा।

गुण—मरोड़ तथा प्रवाहिका में सरल और उत्तम योग है।

सफ़ूफ़ जयाबेतस

गुड़मार बूटी ८ तोला ४ माशा, गुठली जामुन २०० नग, काली मिरच ५०० नग, सब कों मिला बारीक चूर्ण करें।

मात्रा—५ माशा, योग्य अनुपान से दें।

गुण—मधुमेह में प्रभावशाली है।

सफ़ूफ़ दवाय हाज़म

हलदी, लवपुरी लवण १—१ सेर, घृतकुमारी आध सेर, हलदी और लवण को पीस कर घृत कुमारी से रगड़ कर पतली २ टिकिया बना लें, और एक घड़े में डाल मुख बन्द कर आंच दें, शीतल होने पर निकाल कर पीस लें।

मात्रा— १ माशा।

गुण—दीपक, पाचक तथा अजीर्ण नाशक है।

सफ़ूफ दवाये दमा

काला लवण, लवपुरी लवण, साम्भर लवण, अजवायन, अजवायन खुरासानी, करफ़सबीज, गुल तमाकू (हुक्के में से निकाल कर) ३—३ तोला, के बारीक चूर्ण को आक दूध १ पाव में मिला कर कबूतर के उदर को मल आदि से शुद्ध कर इस में भर कर कपरोटी कर आंच दे दें, भस्म तैयार हो जायगी।

मात्रा—१ रत्ती।

गुण—श्वास में गुणप्रद है।

शरबत सदर

अड़ूसा पुष्प २२ तोला, पोस्त डोडा १२ तोला, खाँड १॥ सेर, सरेशममाही २॥ तोला, क्वाथ कर के खाँड मिला शरबत तैयार करें, अन्त में सरेशममाही डालें।

मात्रा—१ से ४ तोला।

गुण—प्रतिश्याय तथा प्रतिश्याय जनित विकारों में उपयोगी है।

शरबत मुफ़रह

धनियां, गाऊज़बान पुष्प, नीलोफ़र पुष्प, ज़रिशक, गाज़र बीज, फरंजमुशक बीज, किशमिश १०—१० तोला, खाँड ५ सेर, यथाविधि शरबत तैयार करें।

मात्रा—५ तोला।

गुण—दिल दिमाग़ को बल देता है, तृषा को मिटाता है, चित्त प्रसन्न रखता है।

शरबत महदी

अलसी बीज ३ छटांक, अजवायन देसी १५ तोला, कसौंदी पत्र, गाऊज़बान पत्र, ख़तमी बीज, परसाशों, पिया बांसा, मधुयष्टि १०—१० तोला, खाँड ५ सेर, यथाविधि क्वाथ कर शरबत तैयार करें।

मात्रा—२ से ५ तोला।

गुण—आमाशय, यकृत तथा आन्त्र विकार में अत्यन्त उत्तम है, विबन्ध, आधमान, वातपीड़ा, तथा ज्वरों में उपयोगी मधुर औषध है।

शरबत मुदर

करफ़स बीज ४ माशा, सौंफ़, अनीसून, सोये बीज, मंजीठ, गाजर बीज ९—९ माशा, हब्ब करतम ४ माशा, ख़यारैन बीज १॥ तोला, मेथरे २ तोला, खाँड ३ पाव, औषध का क्वाथ कर खाँड मिला पाक करें।

मात्रा—२ से ५ तोला।

गुण—मासिक धर्म्म को खोल कर लाता है।

माजून वजह

हरड़ कृष्ण, हरड़ बड़ी, त्रिवृत, काली मिरच १—१ तोला, पिप्पली, सोंठ, अजवायन, ख़शख़ाश बीज, सेंधव लवण, गोक्षरू, काकला कबार, बालछड़ ९—९ माशा, शकाकल मिश्री, ऊद बलसान, तज, अकरकरा, मस्तगी रूमी, सकमूनीया, हब्ब बलसान ४—४

माशा, ख़ाँड १। सेर, मधु ३ पाव, खाँड तथा मधु का पाक कर औषध चूर्ण मिला माजून तैयार करें।

मात्रा—३ से ६ माशा।

गुण—शरीर के सब प्रकार के दर्दों में लाभप्रद है।

माजून अहमद शाही

केशर ४ माशा, दारचीनी, लौंग, जावित्री, जुन्दबदस्तर, मस्तगी रूमी २॥—२॥ तोला, तेज बल, सरयाली, बीजबन्द गुजराती, समुद्रसोख, अकरकरा, तालमखाना, गोक्षरू, मोचरस, साहलब मिश्री, जायफल, उटंगन बीज, कौंच बीज, गोंद ढाक ४—४ तोला, मूसली काली, मूसली सफ़ेद, पिप्पली ३—३ तोला, खाँड ३ पाव, शहद आध सेर, सब औषध को कूट छानकर मधु तथा खाँड का पाक कर यथाविधि माजून तैयार करें।

मात्रा—६ माशा से १ तोला।

गुण—अत्यन्त बलप्रद औषध है, प्रमेह, क्षीणता तथा पुंसक शक्ति की हीनता को नष्ट करती है।

मरहम मुहलल

बनफ़शा पुष्प ३ माशा, सौंफ़, मको, द्राक्षा बीज रहित, नरकचूर १—१ तोला, बड़ी हरड़ २॥ तोला, वायविड़ंग, सोया बीज १—१ तोला, गुलाब पुष्प ३ माशा, पुराना नारियल ६ माशा, मग़ज़ चलग़ोज़ा ९ माशा, बरंजासफ़ १ तोला, गुड़ पुराना ३ पाव, मधु १ पाव, मधु तथा गुड़ को गरम कर के बाकी औषध चूर्ण मिलाकर मरहम की तरह बनावें।

शोथस्थान पर इसका लेप करें।

गुण—परम शोथनाशक है।

कुरस सदफ़

इसपग़ोल २० तोला, गोंद कतीरा १० तोला, धनिया शुष्क, खशखाश सफ़ेद, गुलाब पुष्प, सुदाब पत्र, सदफ़ (मुक्ता शुक्ति), माजू

सबज़, छोटी इलायची, मूसली सफ़ेद, मूसली काली, गोंद कीकर, नीलोफ़र, आमला, सिंघाड़ा शुष्क, मस्तगी १०—१० तोला, बारीक चूर्ण करें, फिर जल के संयोग से कुरस बनावें।

मात्रा—४ कुरस, दूध के साथ।

गुण—प्रमेह, स्वपन दोष तथा श्वेतप्रदर में अत्यन्त उपयोगी है।

कुरस नजात

रेवन्द असारा, मुसब्बर, सनाय, मस्तगी ५—५ तोला, सकमूनीया १० तोला, त्रिवृत सफ़ेद १० तोला, बड़ी हरड़ ५ तोला, हरड़ कृष्ण ५ तोला, गुल गुलाब ५ तोला, शुद्ध जायफल ५ तोला, बारीक पीस कर कुरस बनावें।

मात्रा—१ कुरस, दूध के साथ रात को प्रयोग करें।

गुण—कोष्ठबद्धता नाशक है, पित्त विरेचक है, आमाशय, यकृत तथा आन्त्र को शुद्ध करता है।

कुरस बादायन

शुद्ध विषमुष्टि २ तोला, राई, सौंफ़, सुहागा, सोंठ, मस्तगी रूमी, अनीसून, काला लवण, नवसादर, सज्जी क्षार, प्रत्येक ४—४ तोला, बारीक चूर्ण कर कुरस बनावें।

मात्रा—२ कुरस, ज्वारश जालीनूसके साथ प्रयोग करें।

गुण—अजीर्ण, वमन, उदरशूल, आध्मान में उत्तम है, दीपक पाचक तथा कोष्ठबद्धता नाशक है।

कुरस फोरी

बहमन सुरख़, बहमन सफ़ेद, गोंद कीकर, अकरकरा, गोक्षरू, उटंगनबीज, मूसली सफ़ेद, मूसली काली, मायाशुत्र अहराबी, शाहदाना, केशर, मोचरस, साहलब मिश्री, फली बबूल अपक्व, तबाशीर, बंगभस्म, तालमखाना, समुद्रसोख, अकीक भस्म, सम भाग लेकर चूर्ण कर के कुरस तैयार करें।

मात्रा—४ कुरस, प्रातः सायं दूध से प्रयोग करें।

गुण—प्रमेह के लिये अत्यन्त लाभप्रद है।

मरहम जिलद

पारद, गन्धक, कमीला, बावची, मुर्दासंग, काली मिरच, नवसादर, सुहागा, कर्पूर १—१ तोला, नीलाथोथा ६ माशा, बारीक पीस लें, और २० तोला वेज़लीन में मिला लें, तैयार है।

गुण—खारश के लिये विशेष योग है।

हरीतकी चूर्ण

कृष्ण हरीतकी (घी में भुनी हुई) ३ तोला, गिलअरमनी २ तोला, दारचीनी १ तोला, जायफल ९ माशा, लौंग ६ माशा, छोटी इलायची बीज ३ माशा, शुद्ध पारद ३ माशा, चाक (खड़िया मिट्टी शुद्ध) १ तोला, खाँड ६ तोला, प्रथम चाक और पारद को मिला कर खरल करें, जब दोनों एकजीव हो जायें, तो फिर गिलअरमनी डाल कर खरल करें, फिर बाकी औषध का चूर्ण मिला कर खरल कर एक जीव करें, तत्पश्चात् खाँड मिलावें, तैयार है।

मात्रा—बालकों को २ रत्ती से १ माशा, बड़ों को १ माशा से ४ माशा।

गुण—बालकों के हरे पीले तथा श्वेत दस्तों में अधिक लाभप्रद है, हर प्रकार के अतिसार में अमृत है।

दवालकि़बद

कलमीशोरा, जौहर नवसादर १—१ तोला, रेवन्दख़ताई ५ तोला, बालछड़, तमालपत्र, कालीमिरच १—१ तोला, सब औषध का बारीक चूर्ण करें।

मात्रा—१ से २ माशा, कासनी क्वाथ से।

गुण—यकृत के सब रोगों में एक विशेष अत्यन्त उत्तम योग है।

ज्वारश मुफ़रह

सोंठ १ तोला, तमालपत्र ६ माशा, लौंग १ तोला, बालछड़ १ तोला, जायफल ६ माशा, अकरकरा १ तोला, पान की जड़ ६ माशा, दरूनज अकरबी २ तोला, स्वर्ण वर्क २ रत्ती, चांदी वर्क १ माशा, कस्तूरी ८ रत्ती, मधु त्रिगुण, मधु का पाककर के बाकी औषध का चूर्ण मिला कर अवलेह बनावें, अन्त में वर्क मिलावें, तैयार है।

मात्रा—६ माशा से १ तोला।

गुण—कास, श्वास, हृदय दुर्बलता, अपस्मार, बालग्रह, शारीरिक दुर्बलता में अत्यन्त लाभप्रद योग है, रोग हर तथा शक्तिप्रद योग है।

अकसीर शफा

शंख भस्म ३ तोला, सुपारी भुनी हुई ९ माशा, नीला थोथा ३ माशा, शुद्ध मुर्दासिंग, दारचिकना १-१ माशा, कत्थ सफ़ेद ९ माशा, जंगार ९ माशा, रसौंत १ तोला, सब को बारीक पीस कर चूर्ण करें और अर्क गुलाब १ बोतल से भावना दे कर रख लें।

मात्रा—१ से २ रत्ती।

गुण—अत्यन्त रक्तशोधक है, सुरमा की तरह लगाने से नेत्र-रोगों में उपयोगी है, व्रणों में मरहम बना कर लगावें, व्रण शोधक तथा रोपक है।

सुरंजानी

हरमल २ तोला, शुद्ध गुग्गुलु ३ तोला, शुद्ध कुचला ३ तोला, मालकंगनी २ तोला, सुरंजान कड़वी १ तोला, मुसब्बर १ तोला, सब का चूर्ण कर शुद्ध गुग्गुलु में मिला कर अच्छी तरह से कूट कर ४—४ रत्ती की वटी करें।

मात्रा—१ से २ वटी।

गुण—आमवात, गृध्रसी, वातपीड़ा में अत्यन्त उत्तम योग है।

मरहम अहजाज़

सफ़ेदा काशग़री २ तोला, नीलाथोथा ६ माशा, सिन्दूर १ तोला, अहिफ़ेन ४माशा, सत बन्दक हिन्दी १ तोला (रेंठे के ऊपर का छिलका लेकर जल में अच्छी तरह हाथ से मल कर घोलें, घुलने पर अग्नि पर चढ़ा कर जल शुष्क कर लें और सत को कार्य में लायें) मक्खन वा वेज़लीन १० तोला, सब को बारीक कर के मक्खन में मिला कर मरहम बनावें।

गुण—व्रण का शोधन तथा रोपण करने के लीये अत्यन्त उपयोगी है।

सफ़ूफ़ मुफ़रह

बंशलोचन, धनियां, चन्दन सफ़ेद, छोटी इलायची, ज़हरमोहरा खताई, कहरबा प्रत्येक ५—५ तोला, नारजील दरयाई ३ तोला, अकीक भस्म २ तोला, प्रवाल भस्म १ तोला, चांदी वर्क ३ माशा, सब को बारीक पीस कर चूर्ण करें, और चांदी पत्र मिलावें।

मात्रा—१ से ३ माशा।

गुण—हृदय धड़कन, पित्त उग्रता, वमन, अतिसार, रक्त अतिसार, प्यास इत्यादि में अत्यन्त उत्तम योग है।

शरबत अहमर

कौल पुष्प, गाऊज़बान पत्र ५—५ तोला, वासा पत्र १० तोला, नीलोफ़र पुष्प ५ तोला, सन्दल सफ़ेद १० तोला, चूने का पानी आध सेर, रुब्ब फल जकूम (थुहर का रुब्ब) १ पाव, चूने का जल और रुब्ब के सिवाये बाकी औषध को दो सेर जलमें रात्री को भिगोवें, प्रात. क्वाथ करें, आधा भाग रहने पर मल छान कर १॥ सेर खाँड मिला कर पाक करें, पाक सिद्धि पर चूने का पानी डाल कर फिर पाक करें, और उतार लें, थोड़ा शीतल होने पर रुब्ब मिला दें, तैयार है।

मात्रा—१ से ४ तोला।

गुण—बालकों के शरीर को पुष्ट करता है, कास, क्षय में उत्तम

है, तमाम बालामृतों से अधिक गुणकारी तथा प्रभावशाली औषध है, यह एक अपना गुप्त रहस्य वैद्यजनों के अर्पण है।

सुहराब योग

शुद्ध मल्ल, अहिफ़ेन, शुद्ध पारद, लौंग १—१ तोला, कस्तूरी ३ माशा, प्रथम तीनों वस्तु को अत्यन्त बारीक खरल कर के एकजीव करें, ७२ घण्टे के लगातार खरल से यह कार्य सिद्ध हो जाता है, फिर लौंग चूर्ण तथा कस्तूरी मिला कर २४ घण्टे और खरल करें, तैयार है।

मात्रा—१ से ४ चावल, मक्खन, मलाई तथा दूध का अधिक प्रयोग करें।

गुण—वाजीकरण रसायन है, नपुंसकता को नष्ट करने में अद्वितीय है।

अलाहमर (अकसीर सुरख) (हिंगुल भस्म)

शुद्ध वत्सनाभ २ तोला ले कर ज़िमीकन्द के स्वरस में गूँद लें, और उत्तम हिंगुल २ तोला की डली ले कर उस के मध्य में रख कर ग़लोला सा बना लें, और उस पर मोटा मज़बूत कपड़ा लपेट दें, कुड़ तैल तीन सेर ले कर एक ताम्र के देगचे में डाल कर बीच में उस ग़लोला को डाल कर देगची का मुख भली प्रकार बन्द कर ऊपर एक पत्थर रख दें, देगची के नीचे अग्नि १ प्रहर तक मृदु फिर ३ प्रहर तक तीव्र जलायें, जब देगची में शोर उत्पन्न हो, तो ढक्कन का ध्यान रखें कि खुलने न पाये, जब ४ प्रहर तक अग्नि जल चुके तो देगची को अग्नि पर से उतार लें, शीतल होने पर हिंगुल की डली निकाल कर अत्यन्त बारीक पीस लें।

मात्रा—१ चावल, मक्खन में मिला कर प्रयोग करें, दूध का प्रयोग अधिक करें।

गुण—वाजीकरण है, नपुंसकता को नष्ट करती है, हब्ब खास के योग में यह भस्म डाली जाती है।

सरतानी

द्रव्य तथा निर्माणविधि---कीकर गोंद, कतीरा गोंद श्वेत, गुलाब पुष्प, बंशलोचन प्रत्येक ४ माशा, मधुयष्टि ५ माशा, निशास्ता, कुलफ़ा, प्रत्येक ७ माशा, रक्तचन्दन, श्वेत चन्दन २---२ माशा, काहू बीज ३ माशा, खुलसूस ५ माशा, कर्पूर केसूरी १ माशा, मधुर कद्दु बीज गिरी, खशखाश बीज श्वेत, ख़यारैन बीज गिरी, ख़रबूज़ा बीज गिरी, प्रत्येक ९ माशा, जलाया हुआ केकड़ा १ तोला, इन सब को कूट छान कर इसपग़ोल के जलीय रस की सहायता से टिकियां ८-८ रत्ती की मात्रा की बनावें।

मात्रा---६ माशा, अर्क गाऊज़बान के अनुपान से प्रयोग करें।

गुण---राजयक्ष्मा, कास, उरःक्षत तथा हृदय के रोगों में अतीव प्रभावशाली औषध है।

ज्वाहर मोहरा (विशेष)

द्रव्य तथा निर्माणविधि---ज़हरमोहरा, ख़ताई १॥। तोले, मोती, प्रवाल मूल, कहरुबाशमई, लाजवरद धुला हुआ, माणिक रक्त, माणिक सबज़, माणिक पीत वर्ण, यशप सबज़, ज़ुमुरद (पन्ना), अकीकरक्त चांदी पत्र, मस्तगी रूमी, प्रत्येक ७ माशा, स्वर्ण वर्क, जदवार-ख़ताई, नारजील ख़ताई, अम्बरअशब, कस्तूरी, शुद्ध शिलाजीत प्रत्येक ३॥ माशा, सब औषध को पृथक २ अत्यन्त बारीक खरल करें, फिर मिला कर दो सप्ताह तक अर्क गुलाब, अर्क गाऊज़बान, अर्क केवड़ा, अर्क बेदमुशक से भावना दें।

मात्रा तथा गुण---२ से ४ चावल तक, दवालमस्क ज्वाहर वाली ५ माशे में मिला कर दें, उतमांगों को तथा सब शरीर के अवयवों को शक्ति प्रदान करने के लिये एक महान सिद्ध औषध है, हृत्कम्प, अपस्मार आदि में भी प्रभावशाली है, हृदय रोग तथा शरीर बल हीनता के लीये अमृत तुल्य है।

सफ़ूफ़ ज्वाहर

द्रव्य तथा निर्माण विधि—मुक्ता शुक्ति, ज़हरमोहरा खताई, प्रवाल मूल, रक्त माणिक, कहरूबा शमई, मुक्ता, अक़ीक यमनी, हरायशप, प्रत्येक १—१ तोला सब को ,अर्क़ गुलाब, अर्क़ केवड़ा, बेदमुशक में २ सप्ताह तक खरल करें, शुष्क होने पर शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा तथा अनुपान—३ से ४।। माशे तक खमीरा गाऊज़बान व अम्बरी एक तोला में मिला कर त्रि अर्क के साथ प्रयोग करें (त्रि अर्क—अर्क गाऊज़बान, बेदमुशक केवड़ा)।

गुण—हृदय बलदायक, तथा उल्लास कारक है।

यक्ष्मा हर औषध

द्रव्य तथा निर्माणविधि—गिलोय सत्व, ज़हरमोहरा, अन्तधूँम दग्ध केकड़ा, बंशलोचन, संगज्राहत (दुग्ध पाषाण), गोंद कतीरा, गोंद कीकर, सफ़ेद कत्था, गिल मखतूम, मग़ज़ बहिदाना, निशास्ता, श्वेत खशखाश बीज, खतमी बीज, गिल अरमनी, मधुर बादाम गिरी, दमुलखवायन, रबुलसूस १—१ तोला, प्रबाल भस्म, मुक्ता शुक्ति-भस्म, ज्वहरमोहरा, अभ्रक भस्म, स्वर्ण माक्षिक भस्म ६—६ माशा, यशद भस्म ९ माशा, कर्पूर केसूरी २ माशा सब को कूट पीस कर बहिदाना के लुआब में १—१ रत्ती की वटी करें।

मात्रा तथा अनुपान—१ वटी, ८ तोला अर्क हराभरा के साथ, छागी दूध वा गर्दभी दूध १५ तोले के साथ प्रयोग करें।

गुण—उरःक्षत, यक्ष्मा, रक्तपित्त, जीर्ण ज्वर में अत्यन्त उत्तम योग है, सिद्ध प्रभावशाली महौषध है।

ज्वाहर मोहरा

द्रव्य तथा निर्माणविधि—ज़हरमोहरा खताई १।।। तोला, मुक्ता, प्रवाल मूल, कहरूबाशमई, लाजवरद धुला हुआ, रक्तमाणिक, नील वर्ण माणिक, (याकूत कबूद), पीत वर्ण माणिक (याकूत असफ़र)

हरा यशप, पन्ना, रक्त अकीक, चांदी पत्र, स्वर्ण पत्र, रूमी मस्तगी, प्रत्येक ७—७ माशे, जदवार ख़ताई, दरयाई नारियल, कस्तूरी, केशर, शिलाजीत प्रत्येक ३—३ माशा, त्रि अर्क में दो सप्ताह तक भली प्रकार खरल करें।

मात्रा तथा अनुपान—२ चावल ख़मीरा गाऊज़बान ज्वाहर वाला ५ माशा वा लबूब कबीर ५ माशा वा ख़मीरा गाऊज़बान सादा १ तोला के साथ प्रयोग करें, अम्ल पदार्थ त्याज्य हैं।

गुण—निर्बलता को नष्ट करता है, हृदय, मस्तिष्क, यकृत को बल तथा पुष्टि देता है, जीवनी शक्ति का पोषक है।

वक्तव्य—यदि इस में मकरध्वज ६ माशा और मिला दिया जाये, तो अधिक गुणकारी सिद्ध होगा।

दवाए ख़फ़कान

द्रव्य तथा निर्माणविधि—श्वेत चन्दन, गाऊज़बान पुष्प १—१ तोला, धनियां, कहरुबा शमई ९—९ माशा, यशप, अकीक ७—७ माशा, मुक्ता, प्रवाल भस्म, वंगभस्म, मुक्ता शुक्ति ३—३ माशा, बारीक पीस कर त्रि अर्क से भावित कर शीशी में रख लें।

मात्रा तथा अनुपान—२–४ रत्ती दिन में २—३ बार त्रि अर्क से प्रयोग करें।

गुण—दिल की धड़कन, दिल डूबना में अतीव गुणकारी है।

अकसीर हाफ़िज़ा

मधुर बादाम गिरी (छिलका रहित) कदूबीज गिरी मधुर (छिलका रहित) सौंफ़, धनियां, सफ़ेद ख़शख़ाश बीज ५–५ तोला, छोटी इलायची बीज २ तोला, रौप्य भस्म ६ माशा, मिश्री २ तोला, सब को बारीक पीस कर चूर्ण बना लें।

मात्रा तथा अनुपान—३–६ माशा चूर्ण, दूध संग प्रयोग करें।

गुण—स्मरण शक्ति को बढ़ाता है, दिमाग़ को बल देता है, प्रतिश्याय तथा मस्तिष्क गत रूक्षता को नष्ट करता है।

माजून फ़ालिज

द्रव्य तथा निर्माणविधि—ऊद बलसाँ, हब्ब बलसाँ, तगर, ईरसा, रूमी मस्तगी, कलमी तज, ज़राविन्द गोल, ६—६ माशा, जुन्दबदस्तर, केसर ३—३ माशा, मधुर सुरंजान, बोज़ीदान, बाबूना-मूल, सोंठ १—१ तोला, हरमल, अकरकरा, लौंग, दारचीनी, जायफ़ल, मिरच, पिप्पली, काली जीरी, पानजड़ १—१ तोला, हरड़ का मुरब्बा (गुठली निकाला हरीतकी फल-खण्ड), बीज रहित द्राक्षा प्रत्येक ६—६ तोला मधु, तथा खाँड १५—१५ तोला, मधु और खाँड का अर्क सौंफ़ (मिश्रेयार्क) में पाक करें, (मिश्रयेअर्क आवश्यकतानुसार ले लेवें), बाकी औषध का बारीक चूर्ण कर पाक सिद्धि होने पर पाक में मिला देवें, पीछे उत्तम कस्तूरी ३ माशा बारीक पीसकर मिला दें, तैयार है।

मात्रा तथा अनुपान—३ माशा, मधुजल से लें।

गुण—वातरोग, वात कफ़ रोग, पक्षबध, अर्द्धांग आदि में अत्यन्त उत्तम है।

अकसीर ओजाह

संखिया, कलमीशोरा, सुहागा, नवसादर १—१ तोला, सब को ५ तोला फटकड़ी में रख कर ५ सेर उपलों की अग्नि दें, शीतल होने पर निकाल कर आधा भाग मृग श्रृंग भस्म मिला लें, और सबके समान भाग शुद्ध विषमुष्टि मिला दें, तैयार है।

मात्रा—आधी रत्ती से १ रत्ती तक, माजून सुरंजान ७ माशा में मिला कर दें।

गुण—समस्त प्रकार की जीर्ण वात वेदनाओं में परम लाभ-कारी है।

अक़सीर नज़ला

कलमी शोरा ९ माशा, कर्पूर ६ माशा, अर्क फेनचूर्ण (Dover's Powder) ३ माशा, शुद्ध वत्सनाभ १॥। माशा, लोबान सत्व ३

माशा, केशर ३ माशा, सब को बारीक पीस कर पानपत्र स्वरस से ३ भावना देकर १—१ रत्ती की वटी करें।

मात्रा—१ से २ रत्ती, योग्य अनुपान से दें।

गुण—नज़ला, ज़ुकाम (प्रतिश्याय), कास में अत्यन्त उपयोगी है।

अकसीर सरह

संखिया, नरकपालास्थि भस्म, अकरकरा, हिंगु, ऊद सलीब, जदवार ख़ताई ७—७ माशा, शुद्ध आमलासार गन्धक १॥। माशा, सोंठ ३॥ माशा, शर्करा ४ माशा, इन सब को भांगरा स्वरस से भावित कर १—१ रत्ती की वटी करें।

मात्रा तथा अनुपान—१ वटी, प्रातः सायं योग्य अनुपान से दें।

गुण—अपस्मार में अतीव लाभप्रद है।

मरहम चश्म

शुद्ध चाकसू ६ माशा, शुद्ध अनज़रूत २ माशा, बोरक एसिड २ माशा, काज्जल २ माशा, यशद का फूला २ माशा, मिश्री २ माशा, रसौंत ३ माशा, येलो अकसाईड आफ़ मरकरी ४ रत्ती (Yellow oxide of Mercury) इन सब को बारीक पीस कर वेज़लीन (Vaseline) २॥ तोला में भली भांति मिला लें।

मात्रा तथा सेवनविधि—काजल की भांति पपोटे उलट कर उन में लगा दें।

गुण—नेत्र कण्डु, नेत्रगत लालिमा, पोथकी (कुक्कुरे) और नेत्राभिष्यन्द में अतीव लाभ कारी योग है।

ब्राह्मी वटी

द्रव्य तथा निर्माणविधि—मधुयष्टि ६ माशा, छोटी एलाबीज २ तोला, ब्राह्मी बूटी २० तोला, शंख पुष्पी ४ तोला, बड़ी एलायची बीज २ तोला, केशर १ तोला, चांदी वर्क २० नग, स्वर्ण वर्क १० नग, कस्तूरी २ माशा, मधुर बादाम गिरी ५ तोला, अभ्रक भस्म ६ माशा,

सब को बारीक पीस कर यथाविधि खरल कर धनिये तथा सौंफ़ के क्वाथ से ३ दिन तक भावित करें, और २—२ रत्ती की वटी मधु की सहायता से बनावें ।

मात्रा—१ से ४ वटी, प्रातः सायं दूध से ।

गुण—स्मृतिदोष, उन्माद, प्रतिश्याय, मस्तिष्क की दुर्बलता में अत्यन्त परीक्षित योग है ।

शुक्ला अवलेह

ख़शख़ाशबीज, मग़ज़ तरबूज़, मग़ज़ तुख़म ख़यार, मग़ज़ कदू, शंखपुष्पी, ब्राह्मी बूटी ५—५ तोला, बादाम गिरी छिली हुई १० तोला, त्रिफला १२ तोला, पिप्पली,काली मिरच, उस्तोख़दूस, गाऊ-ज़बान पुष्प, अभ्रक भस्म, केशर, बंशलोचन १—१ तोला,सौंफ़, धनिया २—२ तोला, चांदी पत्र ४८ पत्र, मधु सब के मिलित मान के समान, सब को कूट पीस कर मधु में भली प्रकार अवलेह बनावें ।

मात्रा—१ से २ तोला दूध से ।

गुण—उपरोक्त ।

हबूब रेअशा

लौंग, बालछड़, उस्तोख़दूस, प्रत्येक १०॥ माशा, दारचीनी, कुठ, अभ्रक भस्म, चांदी भस्म ६—६ माशा, हींग, ग़ारीकून, निशोथ, जुन्दबदस्तर ४—४ माशा, अकरकरा १ तोला, केसर, कस्तूरी ३—३ माशा, संख़िया २ रत्ती, सब द्रव्यों को बारीक पीस कर मधु के साथ काली मिरच प्रमाण वटी बनावें ।

मात्रा—१ से ४ वटी, योग्य अनुपान से ।

गुण—रेअशा (वातकम्प), अर्दित, अर्धांग,पक्षावध, तथा समस्त वात कफ रोगों में अतीव गुणकारी है ।

दवाये अजीब

द्रव्य तथा निर्माणविधि—तारपीन तैल, मालकंगनी तैल, धस्तूर तैल, मोम तैल प्रत्येक ५ तोला, लौंग तैल १ तोला, सब को

मिला लें, अब इस में कर्पूर १ तोला, अहिफ़ेन १ तोला यथाविधि भली प्रकार मिला लें।

गुण तथा उपयोग—कम्पवात, आक्षेप, आमवात तथा सब प्रकार की पीड़ा में उत्तम है, पीड़त अंग पर मंदन करें, ऊपर से रूई गरम कर के बांध दें।

सफ़ूफ़ सुरंजान

मधुर सुरंजान १॥ तोला, सनाय मक्की पत्र १० माशा, श्वेत त्रिवृत ४ माशा, कृष्ण जीरक ४ माशे, शुष्क पोदीना ४ माशा, काली मिरच ४ माशा, इन सब का बारीक चूर्ण करें।

मात्रा—३—६, माशा योग्य अनुपान से लें।

गुण—वातनाड़ी शोथ, आमवात में लाभकारी है, मलावरोध नाशक है।

शंकर वटी

मल्लसत्व १ माशा, शिलाजीत १॥ माशा, लौह भस्म ६ माशा, अभ्रक भस्म, अजवायन ख़ुरासानी, लुफ़ाह की जड़, दारचीनी ६—६ माशा, केशर ३ माशा, अम्बर अशहब २ माशा सब को बारीक पीस कर पान पत्र स्वरस से ७ बार भावित कर मरिच समान वटी करें।

मात्रा—१ से २ वटी, योग्य अनुपान से।

गुण—जीर्ण प्रतिश्याय, वातकफ़ज विकार, कफ़ज शिरशूल, में अपूर्व औषध है, स्तम्भक तथा वाजीकरण है।

हब्ब ख़ास

अन्त धूंम दग्ध मन्दार पुष्प, अन्तर्धूम दग्ध कदली पुष्प, नवसादर, लोबानसत्व, शकर तैग़ाल ३—३ तोला, बंशलोचन, काकड़सिंगी, बहेड़ा, मिरच, मुलैठी का सत १—१ तोला, सब को बारीक पीस कर बहेड़े के क्वाथ से ३ भावना दे कर चने समान वटी करें।

मात्रा—१ से ४ वटी।

गुण---कफ़ज कास के लिये रसायन है, श्लेष्म का उत्सर्ग करती है, कफ़ज कृच्छ श्वास के लिये बहुत ही गुणकारी है।

ख़मीरा तिल्ला

बारीक पिसे स्वर्ण वर्क १७॥ माशा, अम्बर अशब १०॥ माशा, चांदी पत्र ८ माशा, मुक्ता उत्तम ८॥। माशा, माणक रूमानी, लाल बदख़शानी, हरा पन्ना प्रत्येक ३॥ माशा, केशर ३ माशा, छोटी इलायची बीज १ तोला, रूब्ब सेब, रूब्ब गाजर, रूब्ब नाशपाती, रूब्ब अनार प्रत्येक १० तोला, मधु उत्तम २० तोला, सब को बारीक पीस कर यथाविधि ख़मीरा प्रस्तुत करें।

मात्रा तथा अनुपान---३-६ माशा तक अर्क मालहम अम्बरी के साथ प्रयोग करें।

गुण तथा उपयोग---हृदय, मस्तिष्क को पुष्टि तथा शक्ति देने में अद्वितीय महौषध है।

अकसीर नफ़सलदम

संगजराहत (दूग्ध पाषाण) ५ तोला ले कर नीम की हरी पत्ती एक पाव में रख कर दो प्यालों के मध्य धर कर कपरौटी कर २० सेर उपलों की पुट दे दें, शीतल होने पर निकाल लें, अब यह उपरोक्त भस्म, कहरूबा, हमलख़यवैन, गेरू, गेलिक एसिड़ (Gallic acid) ४-४ तोला, फटकड़ी २ तोला, कलश्यैम लिकटेट (Calcium Lectate) १० तोला, सब को बारीक पीस कर भली प्रकार चूर्ण कर लें।

मात्रा---१ से ३ माशा।

गुण---रक्तपित, रक्तप्रदर, नकसीर, रक्त अर्श के लिये अपूर्व औषध है।

अकसीर ज़ीकुन्नफ़स

तीक्ष्ण तमाकू ५ तोले, अहिफ़ेन १ तोला, श्वेत संखिया २ माशा, अर्क क्षीर १० तोला, इन सब को खूब भली भांति खरल करें, फिर २

तोले एलुआ, खुरासानी अजवायन २ तोले और धस्तूर बीज २ तोला मिला कर पुनः खरल करें, शुष्क होने पर सुरक्षित रखें।

मात्रा—४ रत्ती औषध लेकर ४ तोला बादाम रौग़न मिला लें, और उसकी १६ मात्रा बनावें, १ या दो मात्रा प्रति दिन प्रातः सायं प्रयोग करें।

गुण—यह कृच्छ्र श्वास और कफ़ज श्वास में परम लाभ कारी है।

आरोग्यदायनी

केशर १।।। माशा, जुन्दबदस्तर (गन्धमार्जार वीर्य),दारचीनी, अहिफ़ेन, तगर, लौंग, धस्तूर बीज प्रत्येक ३।। माशा, मिरच काली, पिप्पली, पान जड़ प्रत्येक २१ माशा, सोंठ, रूमी मस्तगी, अजवायन १—१ तोला, सब को बारीक पीस कर त्रिगुण मधु में मिला लें।

मात्रा—४ रत्ती से १ माशा।

गुण—दीपक, पाचक, अजीर्ण नाशक, अम्लपित, आमाशय की सरदी, शूल, मुह से लालास्राव को नष्ट करती है।।

कामदेव रसायन

शुद्ध शिलाजीत, शुद्ध कुचिला ५–५ तोला, लौह भस्म ४ तोला, काली मिरच २ तोला, केसर १ तोला, सब को कूट छान कर मधु में मिला कर १—१ रत्ती की वटी करें।

मात्रा—१ से २ वटी, दूध के साथ।

गुण—शक्ति दायक तथा बलप्रद, आमाशय, यकृत तथा सब वाततन्तुओं को उत्तेजनाकारक और प्रमेह नाशक औषध है।

अकसीर ज़याबेतस

अहिफ़ेन १ माशा, लौह भस्म २ माशा, जामुन की गुठली, का चूर्ण १४ माशा, सब को बारीक पीस लें।

मात्रा—१ से २ माशा, बिल्व पत्र स्वरस से प्रातः सायं दें।

गुण—मधुमेह के लिये गुणकारी तथा सरल योग है।

गर्भरोधक वटी

असली पत्थर का जीव (कलबलहिजर) १ रत्ती, बंशलोचन १ माशा, दोनों को पृथक पीस कर मला दें, यह एक मात्रा है, ऐसी २—३ मात्रा दिन में आवश्यकतानुसार प्रयोग करें।

गुण—गर्भपात तथा गर्भस्राव के लिये अमोघ औषध है।

उजागर चूर्ण

सनाय मक्की, जुलापा उत्तम, काला दाना, सकमूनीया प्रत्येक ५—५ तोला, सोंठ २ तोला, फ़ेनोफेथीलीन २ तोला सब को बारीक पीस चूर्ण करें, सकमूनीया को हलके हाथों खरल करें, अन्त में फ़ेनो-फ़ेथिलीन मिला कर सुरक्षित रखें।

मात्रा—४ रत्ती से १ माशा, रात्री सोते समय।

गुण—अत्यन्त उत्तम विरेचन है, बिना किसी कष्ट के दस्त लाता है, स्वानुभूत सिद्ध औषध है।

नरेश वटी

शुद्ध हिंगुल (मकर ध्वज डालें तो अधिक लाभप्रद है) काली मिरच, शृंग भस्म, कच्छप अस्थि भस्म, जायफ़ल, गोरोचन, मुसब्बर १—१ तोला, कस्तूरी, केशर ३—३ माशा, सब को बारीक पीस कर अद्रक तथा पान रस से भावित कर सरसों समान वटी करें।

मात्रा—चौथाई से १ वटी तक बालकों को आयु अनुसार दें।

गुण—बालकों के कफ़ज ज्वर, सरदी के विकार, श्वास, कास पार्श्व शूल, निमोनीया, प्लूरसी इत्यादि रोगों में अमृत तुल्य है।

हब्ब ऊदसलीब

ऊदसलीब, जुन्दबदस्तर, कस्तूरी ४—४ रत्ती, हींग, गोरोचन केसर ३—३ माशा, सब को बारीक पीस एक जीव करें, तुलसी पत्र स्वरस तथा करेले की पत्र स्वरस से भावित कर बाजरे समान वटी करें।

मात्रा—१ से ४ वटी, आवश्यकतानुसार ।

गुण—बालापस्मार में एक विशेष प्रभावशाली योग है ।

सुखदायक चूर्ण

कासनीबीज, ज़ीरा सफ़ेद, गुलाब पुष्प, मग़ज़ कमलगट्टा, शकर-तैग़ाल, खुरफ़ा बीज ९–९ माशा, वंशलोचन, इलायची बीज, ज़हर-मोहरा, छोटी इलायची, गिलोय सत्व ६–६ माशा, मिश्री ४ तोला, सबको बारीक पीस कर एक जीव करें ।

मात्रा—१ से ३ माशा, योग्य अनुपान से ।

गुण—पित्तज ज्वर तथा जीर्ण ज्वर, संतत ज्वर में अत्यन्त उत्तम-योग है, वैद्य गौरीशंकरज़ी का परीक्षित है ।

नेत्रामृत

जंगार ४ माशा, नीला थोथा ४ माशा, अहिफ़ेन ६ माशा, सफ़ेदा काशग़री ८ माशा, समुद्रझाग ८ माशा, नवसादर ४ माशा, फ़टकड़ी भुनी हुई ४ माशा, यशद भस्म, सुरमा काला २।।–२।। तोला, सब को, बारीक पीस कर सौंफ़ के पानी तथा शिरस पत्र स्वरस से भावना दें, सुखा कर सुरक्षित रखें ।

गुण तथा उपयोग—आवश्यकतानुसार चाँदी की सलाई से रात्री को लगावें । तिमर, पोथकी, जीर्ण नेत्राभिष्यन्द, अर्म, नेत्रकण्डू इत्यादि में अत्यन्त उपयोगी योग है ।

शरबत मफ़रह

चन्दन लाल, चन्दन सफ़ेद, नीलोफ़र पुष्प, गुलाब पुष्प, बेद मुश्क पुष्प, गाऊज़बान पुष्प, फ़रंज मुश्क, सेवती पुष्प, छोटी इलायची, धनियां, खस, प्रत्येक ६—६ तोला, खाँड २ सेर, शरबत विधि से शरबत तैयार करें ।

मात्रा—२ से ४ तोला, त्रि अर्क १२ तोला के साथ प्रयोग करें । (त्रि अर्क—अर्क गाऊ ज़बान, अर्क बेदमुश्क, अर्क केवड़ा) ।

गुण—हृदय बल्य, तृषानाशक तथा शान्ति दायक मधुर, सुगन्धित तथा गुणप्रद शरबत है, ग्रीष्मऋतु में अमृत तुल्य सिद्ध हुआ है।

रेवन्द वटी

सकमूनीया, जुलापा, रेवन्द असारा, मस्तगी रूमी, इन्द्रायण का गूदा, मुसब्बर २—२ तोला, सोंठ, मुरमुक्की १—१ तोला, सब को पीस कर जल से २—२ रत्ती की वटी करें।

मात्रा—१ से २ वटी रात्री को सोते समय दूध वा जल से प्रयोग करें।

गुण—कोष्बद्धता नाशक है, यकृत विकारों में अत्यन्त उत्तम है आन्त्र का शोधन कर आरोग्य प्रदान करती है, शीघ्र प्रभावी विरेचन है।

अकसीर दर्दगुरदा

हिजरलयहूद, संग मकनातीस २॥—२॥ तोला, संग सरमाही १॥ तोला, संग लाजवरद १ तोला, संग रासख १ तोला, घृत कुमारी गूदा १ पाव, सब ऊपर के पाषाण को बारीक पीस कर घृत कुमारी रस से खरल कर टिकिया बना सुखाकर यथाविधि १० सेर उपलों की आंच दें, इसी प्रकार १० पुट दें, तैयार है।

मात्रा—२ से ४ रत्ती विजयचूर्ण (यवक्षार, पपड़ीया क्षार, अजवीयन खुरासानी, सुहागा अपक्व, नवसादर, मिरच काली, सैंधव, शुद्ध हींग, कलमी शोरा १—१ तोला मिला कर बारीक चूर्ण करें) ३ माशा में मिला कर उष्ण जल से प्रयोग करावें।

गुण—दर्द गुरदा की अकसीर औषध है, मूत्रावरोध को नष्ट करती है, वायूनाशक तथा पीड़ा शामक है।

अर्शान्तक बटी

मुर्दासंग शुद्ध, समुद्र झाग, मिरच काली, नीलाथोथा, रसौंत शुद्ध गुग्गुलु, कौड़ी जली हुई १—१ तोला बारीक पीस कर मूली रस ककरोंदा रस २०—२० तोला से भावना दे कर चने समान व टी करें।

मात्रा—१ से ४ वटी ।

गुण—प्रत्येक प्रकार के अर्श के लिये अत्यन्त उत्तम है ।

स्फटिका योग

कलमी शोरा २ तोला, शुद्ध गन्धक १ तोला, मनशिला १ तोला, चूना कली ८ तोला, मुक्ता शुक्ति १ तोला, मल्ल १ तोला, सुहागा चोकीया १॥ तोला, फटकड़ी २ तोला, सब को बारीक पीस कर घृतकुमारी गूदा में खरल कर ५ सेर उपलों की पुट दें ।

मात्रा—आधा से १ रत्ती बालाई में रख कर प्रातः प्रयोग करें ।

गुण—जीर्ण, पूयमेह की अन्तिम औषध है ।

बालामृत वटी

हींग घी में भुनी हुई १।।। तोला, मिरच सफ़ेद ७ माशा, नीम पत्र २२ पत्र, कत्थ सफ़ेद १४ माशा, अहिफ़ेन ७॥ माशा सब को बारीक पीस कर जल से आधी रत्ती की वटी करें ।

मात्रा—आधा से १ वटी आयु अनुसार दें ।

गुण—बालकों की वमन, अतिसार, अजीर्ण, कास आदि में लाभप्रद है ।

अकसीर ओजा

शुद्ध हिंगुल १ तोला, अहिफ़ेन १ तोला, कुचला शुद्ध २ तोला, पिप्पली, चाकसू, सुरंजान मधुर, अजवायन, रसौंत, मिरच काली, सोंठ २—२ तोला, शुद्ध गुग्गुलु ६ तोला, सब को मिला कर यथा-विधि हरमल के क्वाथ से भावित कर १—१ रत्ती की वटी करें ।

मात्रा—१ से २ वटी प्रातः सायं २ तोला घृत से दें ।

गुण—वातकफ़ज पीड़ा, गृध्रसी, आमवात, कटिशूल में अत्यन्त प्रभावशाली औषध है ।

———

युनानी औषध परिचयं

ॐ

युनानी औषध परिचय

वह औषध जिनका वर्णन आयुर्वेद में नहीं है—और युनानी वैद्यक में जिनका प्रचुरता से व्यवहार किया जाता है, युनानी योग बनाते समय अपरिचित औषध के गुणधर्म, रूप, तथा उत्पत्ति-स्थान न जानने के कारण वैद्यजनों को असुविधा रहेगी, इस असुविधा को दूर करने के लिये तथा वैद्यबन्धुओं के ज्ञानवृद्धि के हेतु हमने उचित समझा, कि युनानी औषध का परिचय भी दिया जाये।

यह वर्णित औषध प्रायः इसी नाम से बाजार में मिल जाते हैं ॥

(अ)

१. अकलीलुलमलिक (Tringonellauncata)

वर्णन—इसे नाखूना भी कहते हैं, एक बूटी की फलियां हैं, जो छोटी २ कटे हुये नख के समान तथा नखरूप होती हैं, इसके भीतर छोटे २ गोल बीज होते हैं। उत्पत्तिस्थान इसका फ़ारस है।

गुण तथा उपयोग—शोथनाशक तथा शोथपाचक, वेदना-शामक, मूत्र तथा रजप्रवाही और अंगों को बल देती ह। शोथ को हल करने, बल देने तथा उष्णता पहुंचाने के लिये इसे लेप और मालिश के रूप में प्रयोग किया जाता है, यकृत, प्लीहा, आमाशय, गर्भाशय, गुदा, और वृषण इनकी शोथ को नष्ट करने के लिये इसका बाह्यांतरिक प्रयोग होता है।

२. अकाकीया

वर्णन—कीकर वा कीकर सदृश वृक्षों की फलियों और पत्रों का घन सत्व है, जिसे शुष्क करके टिकिया बना लेते हैं।

गुण तथा उपयोग—संग्राही, रक्त स्तम्भक, शोषक तथा दोष विलोमकर्ता है। प्रवाहिका, रक्त अतिसार और प्रत्येक अंग के रक्तस्राव में उपयोगी हैं।

३. अकीक (Agate)

वर्णन—यह रंगीन, चमकदार बहुमूल्य खनिज पाषाण है। इसकी खान यमन देश में है, रोमनदी के तीर पर भी मिलता है, परन्तु पीतता लिये हुये लाल वर्ण का यमनी अकीक सर्वोत्तम होता है, वैसे वर्णभेद से यह कई प्रकार का होता है ॥

गुण तथा उपयोग—हृदय बल्य, रक्त स्तम्भक, शरीर में चूने (Calcium) की कमी को पूर्ण करता है। शीतल वीर्य है, रक्तस्राव, रक्तपित्त, पित्तज हृदयरोग, पैत्तिक ज्वर तथा चूने की कमी के कारण दुर्बलता में अत्यन्त उपयोगी है॥

४. अखरोट (Juglans regia)

वर्णन—एक बहुत बड़े और ऊंचे वृक्ष का फल है, जिसका ऊपरी भाग कठोर और बीच में श्वेत रंग का मग़ज़ निकलता है, यह स्वाद में स्वादिष्ट, मधुर और चिकना होता है।

गुण तथा उपयोग—स्तम्भक शुक्ति को बढ़ाने वाला, वाजीकर तथा मस्तिष्क को बल देने वाला है, वाजीकरण योगों में विशेषतया डाला जाता है।

५. अज़ख़र मक्की (Andropogon laniger)

वर्णन—हिन्दी अज़ख़र को गन्धेल और संस्कृत में लामजक कहते हैं, यह खस जाति का एक सुगन्धित तृण है, स्वाद तिक्त तथा चरपरा होता है। हजाज़ से जो अज़ख़र आता है उसे अज़ख़र मक्की कहते हैं। गुण में यह उत्तम होता है। इसकी जड़ तथा पुष्प जिनको शगूफ़ा तथा फ़क्काह अज़ख़र युनानी वैद्य कहते हैं, औषध रूप में काम आता है।

गुण तथा उपयोग—उष्णवीर्य, सांद्रदोषपाचक, अवरोध-नाशक, शोथनाशक, वातानुलोमक, मूत्रल, ऋतुप्रवर्त्तक, आमाशय-बल्य ग्राही, परन्तु जड़ से पुष्प अधिक गुणप्रद हैं। वात, वात-कफ़ज रोग, अर्दित, पक्षवध, आक्षेप, अपतन्त्रक, त्रिस्मृति तथा कफ़ज ज्वर में (दोषों को पाचन करने के लिये) प्रयोग किया जाता है, जलोदर, आमाशय शोथ, यकृत तथा प्लीहाशोथ, मूत्र तथा रजाव-रोध, वृक्क और मूत्राशय अश्मरी में अकेला वा और औषधियों के साथ इसका क्वाथ दिया जाता है, आमाशय दुर्बलता, कफ़ज वमन तथा अतिसार में भी उपयोगी है।

६. अजवायन ख़ुरासानी (Hyoscyamus albus)

वर्णन—इसे बज़रलबंज भी कहते हैं, इसका रूप अजवायन (यवानिका) की तरह है और यह खुरासान (ईरान) से भारत में आती है, इसलिये इसे अजवायन खुरासानी कहते हैं, इसके पौदे का कांड मोटा और रूईदार, पत्र बिल्लीलोटन की भांति मोटे, चौड़े, लंबूतरे, पत्र प्रांत कटे हुये कंगूरेदार, रंग में हरी कालिमा लिये हुये और रूईदार होते हैं। इसके बीज अजवायन से दुगने बड़े वृक्काकार और भूरे होते हैं, स्वाद तेज़ तिक्त और चरपरा अजवायन की भांति होता है। इसके बीज ही औषध में प्रयोग किये जाते हैं। यूरोप, मिश्र, साईबेरिया, खुरासान, समस्त हिमालय पर्वतमाला में तथा बलोचस्तान में स्वयं उत्पन्न होती है।

गुण तथा उपयोग—वेदनाशामक, निद्राप्रद, नशा लाने वाली, दोषविलोमक तथा ग्राही है। वेदनाशामक तथा अवसादक गुण के कारण कफ़ज कास, प्रत्येक प्रकार की पीड़ा तथा अनिद्रा में उपयोग की जाती है।

७. अंजदान बीज

वर्णन—हींग वृक्ष के बीज हैं, ईरान, तुरकस्तान, अफ़गानस्तान और पंजाब इसका उत्पत्तिस्थान है।

गुण तथा उपयोग---शोथविलयन, वातानुलोमक, आमाशय बल्य, मूत्रल, रजःप्रवर्तक तथा वाजीकरण हैं। इसको मस्तिष्क तथा वात संस्थान के रोग अर्दित, पक्षाघात, विस्मृति आदि रोगों में प्रयोग करते हैं। अजीर्ण, आध्मान, मूत्र तथा रजावरोध में भी प्रयोग किया जाता है, पुंसक क्षीणता निवारक योगों में भी डाला जाता है।

८. अंजबार (**Polganum Barlatum**)

वर्णन---यह श्याम, तबरिस्तान देश में नहरों, नदियों और झीलों के किनारे पैदा होता है। यह एक क्षुद्र बनस्पति है, जिसकी ऊंचाई दो गज़, लालिमा लिये हुये पतली शाखायें, और लाल फूल होते हैं, इसकी जड़ गहराई में होती है, रंग उसका कालिमा लिये लाल होता है, यही जड़ अधिकतर प्रयोग में लाई जाती है।

गुण तथा उपयोग---शीतल, ग्राही, रक्तपित्तनाशक, रक्त-स्तम्भक, आन्त्र तथा आमाशय को बल देने वाली है, रक्त अतिसार, जीर्ण पित्त अतिसार में उपयोगी है, रक्तस्राव को बन्द करने में लाभकारी है ॥

९. अंज़रूत (**Astagalus sarcocola**)

वर्णन---यह एक कांटेदार वृक्ष की गोंद है---लालिमा लिये पीत रंग की गोंद होती है---स्वाद तिक्त होता है।

गुण तथा उपयोग---व्रण लेखन तथा रोपण, शोथनाशक, वातानुलोमक तथा कफ़ रेचक है, व्रणशोधन तथा रोपण गुण के कारण मरहमों में डाला जाता है, नेत्र रोगों यथा नेत्र अभिष्यन्द, नेत्रकण्डु, पक्ष्मशात तथा फोले के लिये अंजनों में मिला कर प्रयोग किया जाता है ॥

१०. अंजरा बीज (**Urtica Pilulifera**)

वर्णन---उटंगन के बीज को कहते हैं, यह मिश्र देश से भारत में आते हैं, यह हृदयाकार, चपटे, लम्बे, शिबी, द्विकोष एवं द्विबीज

युक्त बीज होते हैं, मोटे बालों से आच्छादित होते हैं, जल में भिगोने पर यह बाल जल सोख कर फूल जाते हैं।

गुण तथा उपयोग—वीर्य को गाढ़ा करते हैं, इसीलिये शुक्र तारल्य, शीघ्रपतन और शुक्र प्रमेह के योगों में डाले जाते हैं। मूत्रल तथा मूत्रजलन को दूर करते हैं।

११. अँजीर (Ficus Carica)

वर्णन—गूलर जातीय एक वृक्ष का प्रसिद्ध फल है, मधुर तथा स्वादिष्ट होता है, भारतवर्ष में भी उत्पन्न होता है, परन्तु अफ़गानिस्तान से आने वाला फल गुणों में श्रेष्ट होता है, और वही फल औषध रूप में प्रयोग किया जाता है ॥

गुण तथा उपयोग—मृदु विरेचक, कफ़स्रावी, अपक्व दोषों का पाक करने वाला, मूत्रल तथा स्वेदल है। इसलिये प्रतिश्याय, कफ़ज कास, तथा कोष्ठबद्धता में उपयोगी है, प्लीहावृद्धि में भी लाभकारी है, मोतीझरा तथा मसूरिका में दानों को बाहर निकालने के लिये इसका उपयोग भी होता है ॥

१२. अंजीर दशती (Ficus Oppositifolia)

वर्णन—यह अंजीर के ही समान है, परन्तु उससे अधिक उष्ण तथा तीक्ष्ण होती है।

गुण तथा उपयोग—रक्तशोधक, तीव्र विरेचक, लेखन तथा जलाने वाली है, रक्तशोधक होने के कारण किलास तथा श्वेत कुष्ठ पर इसकी जड़ का लेप करते हैं, इसके दूध को तिल और मस्सों पर लगाते हैं, इसका लेप कण्ठमाला पर भी किया जाता है।

१३. अनन्नास (Ananas Sativus)

वर्णन—इसका पौदा केवड़े के पौदे के समान होता है। इसके पत्रों के मध्य में से शाखा निकलती है, उसी पर फल लगता है,

जिसे अनन्नास कहते हैं। इसको छीलकर खाया जाता है इसका गूदा मधुर अम्लता लिये हुये होता है।

गुण तथा उपयोग—मनः प्रसादकर, हृदय बल्य, पित्त शामक, मूत्र तथा रजप्रवाही है, इसका शरबत तथा मुरब्बा बनाया जाता है, जो पैत्तिक हृदय धड़कन, वृक्क तथा बस्तिगत अश्मरी तथा सिकता के निष्कासनार्थ और रजःप्रवाहण के लिये प्रयोग किया जाता है।

१४. अनीसून (**Anisi Fructus**)

वर्णन—इसे बादायन रूमी (सौंफ रूमी) वा ज़ीरा रूमी भी कहते हैं। यह फ़ारस, यूरूप, अफ़रीका, मिश्र देश से आता है, यह एक सौंफ़ जाति की एक क्षुद्र बनस्पति के फल हैं। यह फल सौंफ से छोटा, रंगत सबज़ी लिये हुये, सफ़ेदी, तथा पीलाई लिये हुये अथवा कालिमा लिये हुये पीला होता है। स्वाद कुछ तिक्त, तीक्षण तथा गन्ध युक्त होता है।

गुण तथा उपयोग—वातानुलोमक, शामक, कफ़स्रावी, मूत्रल, आर्तव प्रवर्त्तक तथा दूध बढ़ाने वाली औषध है, दीपक, पाचक तथा आमाशय को बल देता है। इसके गुण शतपुष्पा के गुण के समान हैं।

१५. अफ़तीमियून (**Cuscuta europea**)

वर्णन—इसे आकाशबेल विलायती कहते हैं, यह भारतीय आकाश बेल (अमर बेल) की तरह है, परन्तु इसकी बेल अधिक पतली धागे की भांति है, गुणों में भी विशेषता रखती है, स्वाद कटु, इसके बीजों को तुख़म कसूस कहते हैं। यूरूप, पश्चिम, मध्य एशिया और फ़ारस इसका उत्पत्तिस्थान है।

गुण तथा उपयोग—शोथ विलयन, अपक्व दोषों को पकाने वाली, उदर कृमि नाशक, वातकफ़ विरेचक, वातानुलोमक तथा मस्तिष्क रोगों में लाभप्रद है। उन्माद, मद, अपस्मार, नींद में डरना

इत्यादि रोगों में इसे प्रचुरता से प्रयोग किया जाता है—आमाशय, यकृत, प्लीहा दुर्बलता, कामला तथा जीर्ण ज्वरों में भी उपयोगी है।

१६. अफ़सनतीन (Artemisia Absinthium)

वर्णन—यह एक सबज़ वर्ण की बूटी है, यह एशिया, अमरीका, अफ़रीका आदि देशों से आता है, भारतीय मुसत्यारा जो काशमीर, नैपाल आदि पर्वतीय देश में उत्पन्न होता है, इसका पूर्ण रूप से प्रतिनिधि है, गुणों में दोनों समान हैं, इसके पत्रों तथा शाखों पर मृदु श्वेत रंग की रूई लगी होत्ती है, बू दुर्गन्धयुक्त तथा स्वाद कटु होता है, इसके पत्र तथा पुष्प औषध में प्रयोग किये जाते हैं।

गुण तथा उपयोग—उष्णवीर्य, शोथघ्न, लेखन, मूत्रल, रजः-प्रवर्त्तक, उदर कृमि नाशक, शामक, आमाशय तथा यकृत को बल देने वाला और ज्वरनाशक है। यकृत के रोगों में विशेष उपयोगी है—विषमज्वर में भी उत्तम है।

१७. अमाज़ बीज (Rumex Vesicarius)

वर्णन—हिन्दी में इसे चोका के बीज कहते हैं।

गुण तथा उपयोग—यह ग्राही, पित्तज हृदय धड़कन, आमाशय की सोज़श, पाण्डु, आन्त्रव्रण तथा यकृत रोगों में लाभप्रद है। भुने हुये बीज पित्तज अतिसार, रक्तज अतिसार तथा यकृत विकार जनित अतिसार में प्रयोग किये जाते हैं।

१८. अम्बर(Amergis)

वर्णन—सुगन्धित मूल्यवान औषध है, यह निकोबार तथा भारतीय अन्यान्य टापुओं से आता है, यह एक स्पर्मह्वेल मत्स्य के उदर से निकाला जाता है, इसमें शुक्लता प्रधान श्याम वर्ण का अम्बर जिसे अम्बर अशहब कहते हैं, उत्तम होता है, और यही औषध रूप में ग्रहण किया जाता है।

गुण तथा उपयोग—वातनाड़ियां, मस्तिष्क, हृदय, ज्ञानेन्द्रियां, आमाशय तथा पुंसक शक्ति को बल देने वाला है। उष्णवीर्य है, वात, वातकफ़ रोग, यथा पक्षवध, अर्दित, कम्पवात, अपतानक में अत्यन्त उपयोगी है। कामोत्तेजक है॥

१९. अम्बाहलदी (Curcunver arowotica)

वर्णन—इसे बन हलदी तथा कर्पूर हलदी भी कहते हैं, एक बूटी की जड़ें हैं, जो हलदी के समान होती हैं, परन्तु उससे बड़ी होती हैं, बू तीव्र, स्वाद तिक्त तथा तीक्ष्ण होता है।

गुण तथा उपयोग—शोथ विलयन, पीड़ा शामक और रक्त-शोधक है, अधिकतया आघात, प्रत्याघात और फोड़े, फुंसियों में लेप और मालिश आदि के रूप में प्रयोग की जाती है। कुछ चिकित्सक ज्वर, कास और रक्तदुष्टि में भी इसका उपयोग करते हैं।

२०. अमामा

वर्णन—यह एक वृक्ष है, जिसके पुष्प ख़ैरा पुष्प की तरह हैं, पत्र स्वर्ण वर्ण के और सुगन्धित, लकड़ी लाल वर्ण की तथा सुगन्धित होती है, उत्पत्तिस्थान आरमिनीया देश है।

गुण तथा उपयोग—शोथघ्न, आमाशय शोधक, यकृत, प्लीहा तथा गर्भाशय दोष निवारक और शोथ नाशक है, लेप के रूप में भी शोथनिवारणार्थ प्रयोग किया जाता है।

२१. अम्लतास का पोस्त
(Husk of Cathartocarpusfi Stula)

वर्णन—अम्लतास का ऊपर का छिलका भी औषध रूप में काम आता है।

गुण तथा उपयोग—आर्तव प्रवर्तक, गर्भ तथा अपरा निःसारक, इसको अधिकतया आर्तव अवरोध वा रजःकृच्छ्रता में अन्य

योग्य औषध में मिला कर क्वाथ रूप में देते हैं, गर्भ तथा अमरा को निकालने के लिये इसका क्वाथ पिलाया जाता है।

२२. अलसी (Linum Usitatissmum)

वर्णन—इसका पौदा १ गज तक ऊंचा होता है, इसका तना तथा पत्र बारीक होते हैं, पुष्प लाजवरदी रंग का तथा फल कोषवत होता है, जिसमें बीज भरे होते हैं, यह बीज छोटे २ चमकदार, चिकने, लाल तथा कालिमा लिये हुये वर्ण के होते हैं। यह बीज तथा तैल औषध रूप प्रयोग में आता है।

गुण तथा उपयोग—शोथघ्न, विरेचक, पाचक, लेखन, पीड़ाशामक, कफ स्रावक, वामक तथा मृदु मूत्रल है, इसको अधिकतया फोड़े, फुंसी तथा शोथ आदि पर लेप रूप में प्रयोग किया जाता है, यह शोथ को लीन कर देता है, परन्तु यदि फोड़ा पक रहा हो, तो इसे शीघ्रता से पका कर फाड़ देता है, निमोनिया पर भी इसका लेप किया जाता है, कफस्रावी होने के कारण इसका क्वाथ कास तथा श्वास में पिलाया जाता है, वा इसका बारीक चूर्ण करके मधु में मिला अवलेह रूप में चटाया जाता है, मूत्र तथा आर्त्तव को भी खोल कर लाता है।

अलसीतैल—अलसीबीजों को सरसों समान कोल्हू में दबाकर तैल निकाला जाता है, यह भी शोथघ्न, पीड़ाशामक, लेखन, तथा व्रण रोपक है, पीड़ाशामक होने से इसकी दर्दों पर मालिश की जाती है, व्रणरोपण होने से मरहमों में डाला जाता है, अलसीतैल और चूने का पानी समभाग मिला कर दग्ध स्थान पर लगाया जाता है, जलन को नष्ट करके शीघ्रता से व्रण का रोपण करता है।

२३. अंसकनकूर (Lacerta scincus)

वर्णन—यह एक प्रकार का जानवर है। जो मगरमच्छ की जाति से है, नील नदी के किनारे पाया जाता है। इसका शिकार खेलते हैं। प्रायः दो गज़ लम्बा और आधा गज़ चौड़ा होता है। इसके मांस को सुखाकर औषध रूप में प्रयोग किया जाता है।

गुण—शीत रोग, अर्दित, वातकम्प, अपतानक, वातरक्त तथा आमवात में प्रयोग किया जाता है। पुंसक शक्ति वर्धक तथा वाजीकरण है।

२४. असकोलोकन्द्रयून

वर्णन—एक बूटी है, पत्र दनदानेदार लालिमा लिये हुये, और किनारा ऊपर से सब्ज़ होता है।

गुण तथा उपयोग—शोथविलयन, मूत्रल, लेखन, पथरी तोड़ने वाला, अपस्मार, हिक्का, पाण्डु, प्लीहा और वात संस्थान के विकारों में भीतर औषध रूप में तथा बाहिर लेप रूप में प्रयोग किया जाता है, बढ़ी हुई प्लीहा तथा अश्मरी में विशेष उपयोगी है।

२५. अस्पन्द (**Peganum harmala**)

वर्णन—यह एक बूटी है। इसके बीज औषध प्रयोग में आते हैं, सोख़तनी तथा अरबी इसके दो भेद हैं। सोख़तनी से अभिप्राय हरमल होती है, यह राई के समान तथा कृष्ण वर्ण का बीज होता है।

गुण तथा उपयोग—वाजीकर, शरीरपुष्टिकर, कफ़स्रावक तथा शोषक, वातानुलोमक, गाढ़े दोषों को निकालने वाला, उदर-कृमिमारक, मूत्र तथा आर्त्तव प्रवाही, दुग्ध प्रवाही, इसको अधिकतया वाजीकर लाभ के लिये प्रयोग किया जाता है, श्वास, कफ़ज कास में कफ़ का स्राव कराने के लिये इसका प्रयोग होता है, वातसंस्थान तथा मस्तिष्क रोग, अपस्मार, अर्दित, अर्धांग, उन्माद, विस्मृति, गृध्रसी आदि में दोषों को निकालने के लिये और शरीर में उष्मा पहुंचाने के लिये इसका उपयोग होता है। शीत रोग और गृध्रसी में विशेषतया उपयोगी है।

२६. असफन्ज (**Spongia Officinalis**)

वर्णन—यह एक छोटे २ कीड़ों के योग से बना हुआ रूई के समान मृदु तथा सुराख़दार पीत वर्ण का द्रव्य है, जो समुद्र के किनारे

पत्थरों पर उत्पन्न होता है, यह जल का चूषण कर लेता है और निचोड़ने पर पानी छोड़ देता है।

गुण तथा उपयोग—जला हुआ शोषक, रक्त स्तम्भक तथा लेखन है, यह जल को चूस लेता है, इस लिये इससे कपड़े के स्थान पर उष्ण वा शीतल जल में भिगो कर रोगी के शरीर को पूंछते हैं, वा सेक करते हैं, इसे जलाकर रक्त रोधक गुण के लिये भीतर खिलाते हैं। वा बाहर व्रण पर धूड़ा धूड़ते हैं, आंख में भी दृष्टि-प्रसादन के लिये सलाई से लगाते हैं।

जलाने की विधि—प्रथम इसको साबुन से अच्छी प्रकार धो लें, इसके पश्चात कैंची से छोटे २ टुकड़े करके मिट्टी के पात्र में डाल कर आगपर रखें और किसी चमचे से उलटते पलटते रहें, जब पिसने योग्य हो जाये तो आग पर से उतार कर काम में लावें, ध्यान रखें, कि जल कर राख न हो जाये ॥

२७. असारा रेवन्द (Gam bogia)

वर्णन—यह नामानुसार रेवन्द चीनी का असारा (घन सत्व) नहीं है, परन्तु श्याम देश में उत्पन्न होने वाले एक वृक्ष का राल-दार गोंद है, जो कि उस वृक्ष के तने में चीरा देकर निकाली जाती है।

गुण तथा उपयोग—इसका रूप तथा गुण रेवन्द चीनी के घन सत्व से मिलते हैं, इसी कारण इसका नाम भी असारा रेवन्द पड़ गया है, यह तीनों दोषों को विरेचन द्वारा बाहर निकालता है। वामक भी है, अधिक समय तक आमाशय में नहीं ठहरती है, शीघ्र ही अपना कार्य करती है, कृमिनाशक भी है। कोष्ठबद्धता, जलोदर तथा वात कफ़ज रोगों में उत्तम है, अधिक मात्रा में प्रयोग करने से प्रवाहिका तथा मरोड़ हो जाते हैं, गर्भिणी को प्रयोग नहीं कराना चाहिये। कफ़ज कास श्वास में कफ़ को वमन तथा विरेचन द्वारा निकाल कर कास श्वास में लाभ देती है।

२८. असारून (Asarum europoeum)

वर्णन—इसे तगर कहते हैं, यह ग्रन्थियुक्त जड़ें होती हैं, सुगन्धि युक्त तथा स्वाद में कटु होती हैं, किसी का वर्ण पीतता लिये हुये तथा किसी का भूरा होता है। श्यामदेश तथा अफ़गानिस्तान आदि शीतप्रधान देशों में उत्पन्न होती है। भारत में भी उत्पन्न होती है।

गुण तथा उपयोग—उष्णवीर्य, अवरोधनाशक, शोथघ्न, मस्तिष्क तथा उत्तमांगों को बल देने वाली, मूत्रल, रजः प्रवाही, वात तथा मस्तिष्क रोगों में गुणप्रद औषध है। वातसंस्थान के रोग अपस्मार, अर्दित, पक्षवध, गृध्रसी, आमवात तथा नसों की क्षीणता में प्रयोग किया जाता है। अवरोधजनित, पाण्डु, जलोदर, प्लीहा शोथ, मूत्र तथा रजः अवरोध में भी लाभकारी है।

(आ)

२९. आबनूस (Diospyros ebenum)

वर्णन—एक बृहत् काय सदा बहार वृक्ष है, इसके पत्र सनोबर के पत्तों की भांति परन्तु उनसे कुछ चौड़े होते हैं, फल अंगूर की तरह पीला, लालिमा लिये हुये, स्वाद किंचित मधुर और बहुत कसैला होता है, बीज और पुष्प मेहन्दी के बीज तथा पुष्पों के समान होते हैं। इसकी लकड़ी भारी कृष्ण वर्ण की होती है, तोड़ने पर भीतर से भी कृष्ण वर्ण की निकलती है, यह लकड़ी ही औषध में प्रयोग की जाती है। भारत, ज़ंजबार और अफ़रीका में उत्पन्न होती है।

गुण तथा उपयोग—शोषक, शोथनाशक, लेखन, रक्तस्तम्भक, तथा रक्तशोधक है, अधिकतया रक्तशोधक योगों में इसका बुरादा डाला जाता है, व्रण तथा नेत्ररोगों में भी उपयोगी है।

३०. आबरेशम (Bombys Mori)

वर्णन—एक कृमि का घर है, जिसको वह अपनी लार (थूक) से बनाता है, जब तक यह घर अपने विशेष रूप में रहता है,

इसको कोया आबरेशम, वा आबरेशम खाम (अपक्व) कहते हैं, इसे कैंची से कुतर कर (कीट को बाहर निकाल कर) औषध में प्रयोग करते हैं।

गुण तथा उपयोग—मनः प्रसाद कर, कफ़स्रावी, गाढ़े दोषों को तरल करने वाला, कास-श्वास और प्रतिश्याय में कफ़ को पतला करने तथा बाहर निकालने के लिये प्रयोग किया जाता है, हृदय रोगों में हृदय को बल देने के लिये उपयोग में लाया जाता है, आबरेशम जला हुआ लेखन होने के कारण नेत्ररोगों में सुरमे के योगों में डाला जाता है ॥

३१. आलूबखारा (Prunus Bokhariensis)

वर्णन—यह आलूचे की जाति का एक प्रसिद्ध फल है, बड़े बेर वा आलु के समान आकार वाला, वर्ण लालिमा लिये कृष्ण, और स्वाद में चाशनीदार खट्टमिट्ठा होता है, यह बुखारा देश का उत्तम समझा जाता है। भारत में बलख तथा अफ़ग़ानिस्तान से आता है ॥

गुण तथा उपयोग—पित्त शामक, रक्त उग्रता संशमन करने वाला तथा मृदु विरेचक है। पैत्तिक शिरशूल, ज्वर, वमन और तृष्णा में लाभप्रद है, हृदय की उष्णता तथा दाह को शान्त करता है, पित्त विरेचक है ॥

३२. आलूबालू (Purmus Cerasus)

वर्णन—एक वृक्ष का फल है, जो पश्चिम हिमालय, पंजाब तथा काश्मीर, संयुक्त प्रांत में उत्पन्न होता है, स्वाद के भेद से यह चार प्रकार का होता है, मधुर, खटमिट्ठा, अम्ल और कसैला, और प्रत्येक के गुण भिन्न भिन्न हैं ॥

गुण तथा उपयोग—मधुर स्वाद वाला, उर को नरम करने वाला, मूत्रल, वृक्क तथा वस्ति की अश्मरी को बाहर निकालने वाला है। इस लिये इसे कण्ठ की शुष्कता, तथा कास में उपयोग किया जाता है, रेचक है, सौंफ़ के सहित प्रयोग करने

से रज को खोल कर लाता है, इसका गोंद भी यही गुण करता है तथा इन रोगों में ही प्रयोग किया जाता है, अम्ल स्वाद वाला, मतली, वमन, पित्त तथा रक्त के जोश को शान्त करता है, विबन्धकारक है, यकृत तथा आमाशय बल्य है, परन्तु मधुर आमाशय के लिये हानिकर है; कसैला काबज़ है, आलूबालू का शरबत बनाया जाता है, जो मूत्रावरोध तथा अश्मरी को निकालने के लिये लाभकारी है ॥

३३. आशा

वर्णन—यह पहाड़ी पोदीना का एक प्रकार है, शाखायें बारीक और पतली होती हैं, और उन पर छोटे २ पत्र लगते हैं, जिन पर रूई सी लगी होती है, पुष्प छोटा सा गोलाकृति और इसके बीज राई की तरह होते हैं।

गुण तथा उपयोग—स्वेदल, मूत्रल तथा रज:प्रवाही, अधिक मात्रा में प्रयोग करने से गर्भपात कर देती है, कफस्रावी, वातानोलोमक, विरेचक तथा कृमिनाशक है। वात तथा वात कफज रोगों में भी उपयोग की जाती है।

३४. आस (**Myrtus Communis**)

वर्णन—यह एक बड़ा वृक्ष है, इसके पत्र और फल (काली मिरच) के समान परन्तु उससे बड़े तथा कृष्ण वर्ण के होते हैं। यही औषध रूप में ग्रहण किये जाते हैं, पत्रों को बरग आस वा बरग मोरद और बीजों को हब्बलास कहते हैं।

गुण तथा उपयोग—बीज–संग्राही, रक्तस्तम्भक, स्वेदावरोधक, आमाशय तथा हृदय बल्य, अतिसार, रक्त अतिसार में उपयोगी हैं, शरबत हब्बअलास इसका विख्यात योग है। पत्रों को दग्ध अंग, उष्ण शोथ, तथा शिरशूल शान्ति के लिये लेप रूप में उपयोग किया जाता है। वेदनाशामक, शोषक तथा शिर के केशों के लिये गुण दायक हैं।

(इ)

३५. इमली बीज (Tamarindus Indicaseeds)

वर्णन—प्रसिद्ध द्रव्य है, कठोर, लाल वर्ण के कालिमायुक्त होते हैं, तोड़ने पर भीतर से श्वेत वर्ण की गिरी निकलती है, जो कि औषधरूप में प्रयोग की जाती है।

गुण तथा उपयोग—संग्राही, स्तम्भक, वीर्य शोषक, इसे प्रमेह, स्वप्नदोष, वीर्य का पतलापन में पृथक वा अन्य औषध के साथ प्रयोग करते हैं, प्रमेह में विशेषतया गुणप्रद है।

३६. इसपग़ोल (Plantago ovata)

वर्णन—यह एक बूटी के छोटे २ बीज होते हैं, वर्ण कुछ श्वेत गुलाबी होता है, मुख में इसको रखने से लुआब उत्पन्न होता है, इसके छिलके को सबूस इसपगोल तथा सत इसपगोल कहते हैं।

गुण तथा उपयोग—शोथनाशक, पित्तज शोथ शामक, तृषा तथा तीव्र ज्वर शामक, मृदु विरेचक, चिपकने वाला, भुना हुआ इसपगोल संग्राही होता है। इसको अधिकतया अतिसार तथा प्रवाहिका, मरोड़ आदि में प्रयोग किया जाता है, यह अपने चिपकने के गुण के कारण सुद्धों को फिसला कर बाहर निकाल देता है, और आन्त्र की खराश को शान्त करता है, इसी पिच्छिलता के कारण ही इसे शुष्क कास, जिह्वा रूक्षता तथा उर की रूक्षता में प्रयोग करते हैं, अन्त्र रूक्षता के कारण कोष्ठ बद्धता में बहुत लाभप्रद है, इसे उष्ण शोथ में लेप रूप में प्रयोग किया जाता हैं, यह पित्तशामक तथा प्रवाहिका नाशक है।

(ई)

३७. ईरसा (Iris Germanica)

वर्णन—यह नीले फूल वाली सोसन की जड़ है, यह कठोर ग्रन्थियुक्त सुगन्धित जड़ होती है, इसकी त्वचा नील वर्ण तथा लालिमा वर्ण की होती है, भीतर से पीली लाल वर्ण की होती है,

उत्तर भारत, ईरान तथा यूरोप कें मध्य तथा दक्षिणी देश इसके उत्पतिस्थान हैं ॥

गुण तथा उपयोग—शोथविलयन, अवरोधनाशक, कफ़स्रावी, दोषपाचक, शोषक, लेखन, मूत्रल, मृदु विरेचक, पित्त श्लेष्म विरेचक, विषनाशक, फुप्फुस को कफ दोष से शुद्ध करना इसका विशेष कार्य है ॥ वात, कफ़, तथा वात कफ़ज रोग, प्रतिश्याय, कास, श्वास, कण्ठ तथा श्वास नलिका की रूक्षता, पार्श्वशूल, उर: शूल, वातकफ़ सन्निपात, कम्पवात, सन्यास, पक्षवध, और विस्मृति में लाभप्रद है, दोष तारल्यजनन तथा प्रमाथी होने के कारण मूत्र तथा रज को खोलता है, और इसीलिये जलोदर तथा यकृत विकार जनित पाण्डु में उपयोगी है। लेखन गुण होने से नेत्ररोगों में तथा व्रण में लाभकारी है ॥

(उ)

३८. उक़वान (**Matricaria Parthenium**)

वर्णन—यह एक बूटी है, पत्र धनियाँ क़े पत्र के समान, पुष्प श्वेत वर्ण का मध्य से पीला होता है, बू खराब तथा स्वाद तिक्त होता है।

गुण तथा उपयोग—शोथघ्न, प्रमाथी, वातानुलोमक, स्वेदल, मूत्र तथा आर्त्तव प्रवाही, इसे जलोदर, आमाशय दुर्बलता, आध्मान, आमाशय तथा मूत्राशय में जमे रक्त को पिघलाने तथा शोथ को नष्ट करने के लिये प्रयोग किया जाता है, कास तथा श्वास में इसका अवलेह मधु में बना कर चटाते हैं, मूत्र तथा आर्त्तव अवरोध में इसका क्वाथ पिलाते हैं।

३९. उन्नाब (**Zizyphus**)

वर्णन—प्रसिद्ध फल है, ज़ो बेर के समान गोल, लाल वर्ण तथा स्वाद में मधुर सूखा हुआ होता है, भारतवर्ष में भी उत्पन्न होता है, परन्तु ईरान से आने वाला गुणों में उत्तम होता है ॥

गुण तथा उपयोग—त्रिदोष पाचक, वक्ष को मृदु करने वाला, कफ़स्रावी, मृदु विरेचक, शीतल, रक्त को शोधन करने वाला तथा उसकी उग्रता को शान्त करने वाला है। इसे प्रसेक, प्रतिश्याय, कास, श्वास, वक्ष रूक्षता तथा दोषों को पकाने के लिये अधिकतया प्रयोग किया जाता है, रक्त तथा पित्तविकार-जनित ज्वरों में यथा शीतला, मसूरिका आदि में शान्ति प्रदान करने तथा तृषा शान्त करने के लिये क्वाथ करके पिलाया जाता है, इसका शर्बत बना कर रक्त दुष्टि (फोड़े, फुंसी, खाज) में तथा कास आदि में पिलाया जाता है।

४०. उशक (**Dorema Amoviacum**)

वर्णन—यह एक वृक्ष का गोंद है, इसके अश्रुवत गोल दाने होते हैं। वर्ण पीला, स्वाद तिक्त और एक विशेष प्रकार की गन्ध युक्त होता है। जल में घुल कर एक दूधिया मिश्रण सा बनाता है। फ़ारस, यूरोप तथा अफ़गानस्तान इसका उत्पत्तिस्थान है।

गुण तथा उपयोग—शोथविलयन, कफ़स्रावी, विरेचक, लेखन, रजप्रवाही, उदर कृमि नाशक, प्रमाथी, इसको कण्ठमाला, संधिशोथ और बद्ध को लीन करने के लिये लेप रूप में लगाया जाता है, दाद आदि चर्म रोगों पर प्रयोग किया जाता है, कास, श्वास में कफ़ का स्राव कराने के लिये तथा कफ़ की दुर्गन्ध दूर करने के लिये इसका उपयोग होता है। कण्ठरोहणी, प्लीहा शोथ, अपस्मार, पक्षवध, आमवात, वातरक्त, अर्दित आदि में उपयुक्त औषध में मिलाकर इसका उपयोग किया जाता है। प्रधानतया गहरी तथा कठिन शोथ को नष्ट करने के लिये इसका प्रयोग होता है।

४१. उशनान (**Soda Plants**)

वर्णन—यह एक बूटी है, जिसके दो भेद हैं, एक में पत्र नहीं लगते, परन्तु इसकी बारीक २ शाखायें होती है और इन शाखों में

गांठें लगती हैं, दूसरी प्रकार के भी बारीक २ शाखायें होती हैं परन्तु उसमें छोटे २ पत्र भी लगते हैं, जो मोटे एक ओर से सबज़ नीलवर्ण और दूसरी ओर से गहरे सबज होते हैं, इन पत्रों को जिस वस्तु पर रगड़ा जाये, उसे काला कर देते हैं, दोनों प्रकार का स्वाद खारा होता है, और इनसे क्षार बनाई जाती है।

गुण तथा उपयोग—लेखन, मूत्र तथा आर्त्तवप्रवाही, रेचक इसको जलाकर यथाविधि इसकी क्षार बनाई जाती है, जो कि बहुत से रोगों में लाभदायक है, वैसे भी उशनान् को मूत्र, आर्त्तव अवरोध तथा गर्भपात के लिये प्रयोग करते हैं, रेचक तथा मूत्रल होने के कारण जलोदर में प्रयुक्त करते हैं।

४२. उशबा मग़रबी (Sarsa Redix)

वर्णन—यह चोबचीनी की जाति की एक बेलदार बूटी की लम्बी २ पतली गोल शाखायें और जड़ें होती हैं, जो झुरी दार तथा उनके साथ मुड़े हुये तन्तु लगे रहते हैं, रंगत भूरी लालिमा युक्त, स्वाद तिक्त तथा कुछ तीक्ष्ण होता है।

गुण तथा उपयोग—शोथघ्न, स्वेदल, मूत्रल, रक्तशोधक, इस लिये इसे वातरोग, पक्षवध, अर्दित, जलोदर, आमवात में प्रयोग किया जाता है, जीर्ण आमवातमें अधिक उपयोगी है—रक्त-शोधक होने के कारण प्रत्येक प्रकार की रक्तदुष्टि तथा कुष्ट आदि में और आतशक में विशेष करके उपयुक्त होता है।

४३. उसरब (Plumbum)

वर्णन—हिन्दी में नाग तथा सीसा कहते हैं, प्रसिद्ध धातू है, इस-का वर्ण श्वेत सबज़ी लिये हुआ होता है और यह अत्यन्त मृदु होती है।

गुण तथा उपयोग—शोषक, वीर्यप्रद तथा स्तम्भक, संग्राही, रक्त स्तम्भक, इसे शुद्ध करके इसकी भस्म बनाई जाती है, जो शीघ्रपतन, प्रमेह, स्वप्नदोष, रक्तपित्त तथा मधुमेह में प्रयोग करते हैं। सीसे को

घिस कर पित्तज शोथ तथा अर्श के मस्सों पर लगाते हैं, कण्ठमाला पर इसका पत्रा बनाकर बांधा जाता है, इसे जलाकर (सफ़ेदा तथा सिंदूर) को व्रणों में अधिकतया प्रयोग किया जाता है।

४४. उस्तोख़दूस (**Lavendula stoechas**)

वर्णन—यह एक बूटी है, जिसमें पुष्प बहुत लगते हैं और उनसे कँपूर सी तीव्र गन्ध. आती है, इसके शुष्क किये हुये पत्र तथा पुष्प औषधरूप में ग्रहण किये जाते हैं, उत्पत्तिस्थान यूरोप, अरब तथा भारतवर्ष में बिहार और बंगाल है ॥

गुण तथा उपयोग—शोथविलयन, वातसंस्थान तथा मस्तिष्क-शोधक तथा बल देने वाला, प्रमाथी, आमाशय बल्य, वातनुलोमक, वातकफ़ विरेचक, उस्तोखदूस को अधिकतया मस्तिष्क तथा वात-संस्थान के रोगों में यथा पक्षवध, अपस्मार, अर्दित, आमवात तथा कफ़ज प्रतिश्याय में प्रयोग किया जाता है, मस्तिष्क को शुद्ध-करने तथा उसे बल देने के लिये अपूर्व औषध है ॥

(ऊ)

४५. ऊदकुमारी, ऊदग़रकी (**Aquilaria agallocha**)

वर्णन—उत्तम ऊद (अगर-अगरू) जो काला-चिकना, भारी और सुगन्धित होता है—और विशेषतया जो जल में डालने से डूब जाता है, उसे युनानी वैद्य ऊद ग़रकी कहते हैं—ऊद कुमारी भी अगरू का एक प्रसिद्ध भेद है, व्यवहार में कच्चा ऊद (ऊद खाम) लिया जाता है—इसके गुण तथा उपयोग से वैद्य जन भली भांति परि-चित हैं, इस लिये पिष्टपेषण व्यर्थ है ॥

४६. ऊदबलसान (**Balsamodendron Opobalsamum**)

वर्णन—इसका एक बड़ा वृक्ष होता है—इसकी लकड़ी सुग-न्धित, भारी और लाल गन्धमी वर्ण की होती है, मिश्र, श्याम और अरब देश इसका उत्पत्तिस्थान है, इसके वृक्ष में चीरा

देने से ललाई लिये हुये पीला रालदार सुगन्धित तैल निकलता है-- जिसे रोगन बलसान कहते हैं--काष्ठ, बीज तथा तैल औषध प्रयोग में आते हैं ।। इसके बीजों को हब्ब बलसान कहते हैं ।।

गुण तथा उपयोग---बल्य, मस्तिष्क के दोषों को बाहर निकालने वाला, कफ़नि:सारक, आमाशय दोषहर तथा आमाशय बल्य, गर्भस्रावक, ऊदबलसान को मस्तिष्क शोधक होने के कारण मस्तिष्क रोगों, यथा अपस्मार, शिरोभ्रम, मोह में प्रयोग किया जाता है, कफ़ नि:सारक होने के कारण कफ़ज कास, श्वास में देते हैं, आमाशय के कफ़ज दोष को नष्ट करने के लिये तथा उसे बल देने के लिये भी प्रयोग किया जाता है। बीज (हब्ब बलसान) भी इन्हीं रोगों में प्रयोग किये जाते हैं विशेष करके आमाशय बल्य हैं। तैल (रोगन बलसान) वात कफ़ज रोगों में और विशेषतया औपसर्गिक पूयमेह में उपयोगी है---कुछ वाजीकरण भी है।

४७. ऊद सलीब (**Paeonia officinals**)

वर्णन---यह एक बूटी की जड़ है---इसके दो भेद हैं, स्त्रीलिंग, और पुलिंग, पुलिंग जड़ को तोड़ने से इसके भीतर दो रेखा एक दूसरे को काटती हुई गुज़रती हैं जैसे कि सलीब में होता है---इस लिये इसे ऊद सलीब कहते हैं। औं यही औषध में उपयोग किया जाता है।

गुण तथा उपयोग---यह शोषक, स्रोत शोधक, शोथ विलयन, लेखन, मूत्रल, रज: प्रर्वत्तक, वेदना शमक तथा ज्ञानतन्तुओं को बल देने वाला है, अधिकतया मस्तिष्क तथा वातसंस्थान के रोगों में व्यवहार किया जाता है---यथा अपस्मार, कम्पवात, अर्दित, पक्षवध, उन्माद, मस्तिष्क शोथ, अपतन्त्रक, और बालग्रह में प्रचुरता से उपयोग किया जाता है, यकृत अवरोध, आमाशय, वृक्क, तथा बस्ति के शूल में भी प्रयोग किया जाता है---अपस्मार में विशेष करके उपयोगी है।

क

४८. ककड़ी बीज (**Cucumis utilissimus**)

वर्णन—ककड़ी एक प्रसिद्ध बेलदार पौदे का फल है। इसके बीज खीरे के बीज के समान होते हैं, परन्तु इनसे कुछ बारीक होते हैं। खीरे तथा ककड़ी बीज को युनानी चिकित्सक तुख़म ख़यारैन कहते हैं।

गुण तथा उपयोग—मूत्रल, पित्तशामक, रक्त उग्रता को शान्ति प्रदान करने वाले, तृषा नाशक तथा लेखन और स्रोत विशोधक है। इस लिये पैत्तिक ज्वरों, सुज़ाक, दाहयुक्त मूत्र में तथा यकृत आमाशय के दाह को शान्त करने के लिये और वृक्क तथा बस्ति की अश्मरी को निकालने के लिये अधिकतया प्रयोग किया जाता है।

४९. कज़माज़ज (**Tamarix galls**)

वर्णन—छोटी माईं वा बड़ी माईं दोनों को कज़माज़ज कहते हैं। परन्तु अधिकतया बड़ी माईं को कहते हैं, जो झाऊ वृक्ष का फल हैं। यह कुछ गोल ग्रंथिल, और विभिन्न आकार के मटर से लेकर रेठे समान होते हैं।

गुण तथा उपयोग—संग्राही, रक्तस्तम्भक, लेखन, शोषक, अवरोध नाशक, काटने वाली, आमाशय, यकृत तथा प्लीहा को बल देने वाले होते हैं। संग्राही होने के कारण दंतशूल, तथा मसूड़ों की शोथ में मंजन रूप में प्रयोग होता है, अतिसार तथा रक्त अतिसार में भी प्रयुक्त किये जाते हैं, कण्ठपीड़ा, तथा गलेकी भीतरी सूजन में इसके क्वाथ के गरारे कराये जाते हैं। रक्तपित्त, रक्तप्रदर, नकसीर में भी इसका उपयोग होता है ॥

५०. कतीरा (**Persian Tragacanth**)

वर्णन—यह एक कांटेदार वृक्ष का गोंद है, यह श्वेत तथा पीतता लिये हुये होता है, यह जल में डालने से फूल जाता है, परन्तु गोंद कीकर (सनमय अरबी) के समान हल नहीं होता।

गुण तथा उपयोग—यह चिपकने वाला, मृदु सारक, दाह तथा

उष्मा को शान्त करने वाला, रक्त स्तम्भक तथा छाती को नरम करने वाला और शरीर को मोटा करने वाला है, अधिकतया कास, रक्तपित्त, कण्ठ तथा छाती की रूक्षता, फुप्फुसव्रण तथा स्वरभेद में उपयोग किया जाता है, इसी प्रकार आन्त्रव्रण, प्रवाहिका, मूत्रनलिका व्रण तथा वस्तिव्रण में भी प्रयोग करते हैं, जयपाल आदि तीव्र विरेचक औषध के पश्चात् दाह शान्ति के लिये भी उपयोगी है।

५१. कद्दूबीज (**Cucurbita Lagenaria**)

वर्णन—लम्बे कद्दू (लौकी, घीया) के बीज हैं, सारे भारतवर्ष में उत्पन्न होता है।

गुण तथा उपयोग—दाह प्रशमन, स्निग्ध, पित्त तथा रक्त की उग्रता को संशमन करने वाला, मूत्रल, बृंहण तथा छाती में मृदुता उत्पन्न करने वाला है, इन्हीं गुणों के कारण कद्दूबीज तथा गिरी कद्दूबीज, (मग़ज़ तुख़म कद्दू) शारीरिक दुर्बलता, वृक्क दुर्बलता, पित्त तथा रक्त की उग्रता, तृषा की अधिकता, आमाशय सोज़श, फुप्फुस रूक्षता, पित्तज कास, रक्तपित्त और पैतिक ज्वरों में इसका शीरा (जल से घोट कर सरदाई की भांति) निकाल कर पिलाया जाता है, मस्तिष्क की रूक्षता में तथा अनिद्रा में पान, लेप तथा नस्य रूप में प्रयोग किया जाता है, मूत्रल होने के कारण मूत्र दाह, सुज़ाक, मूत्रकृच्छ्र में भी उपयोग में लाया जाता है, बीजों का तैल भी निकाला जाता है। **रोग़न मग़ज़ तुख़म कद्दू** अनिद्रा, शिर पीड़ा तथा मस्तिष्क को तरावट पहुंचाने के लिये अभ्यंग रूप में प्रयोग किया जाता है, विशेषतया मग़ज़ तुख़म कद्दू मस्तिष्क बल्य तथा वृष्य है॥

५२. कनौचा (**Phyllanthus Madraspatensis**)

वर्णन—यह एक पौधे के बीज हैं, जो अलसी के समान भूरे तिकोने और कोषावृत होते हैं, स्वाद फीका और लुआबदार होता है।

गुण तथा उपयोग—शोथ को पकाने वाला, चिपकने वाला और शामक गुण वाला है, आमाशय तथा आन्त्र को बल देने वाले, वातानुलोमक तथा मृदु सारक हैं, परन्तु भुने हुये संग्राही गुण रखते हैं। इसी लिये आमाशय तथा आन्त्र को बल देने के लिये तथा प्रवाहिका और रक्त अतिसार में भुने हुये उपयोग किये जाते हैं, गम्भीर शोथ, और फोड़े, फुंसियों को पकाने के लिये लेप रूप में वा पुल्टस बना कर प्रयोग किये जाते हैं

५३. कन्तरीयून दकीक

वर्णन तथा उपयोग—यह एक बूटी है, जो खड़े पानी के किनारे तथा गढ़ों में जमती है, कफ़ज रोगों, संधिशूल, प्लीहा, यकृत संशोधन करने के लिये प्रयोग की जाती है। शोषक, विरेचक तथा दोषों को निकालने वाली है। व्रणशोथ नाशक तथा लेखन धर्म भी इसमें है।

५४. कबाबा ख़न्दान (**Xanthoxylum alatum**)

वर्णन—कबाबचीनी से बड़ा बीज होता है, जो अर्ध भाग तक फटा होता है, और इसके गर्भ में छोटा सा गोल, कृष्ण वर्ण का चमकदार बीज होता है, इस की बू सुगन्धित, स्वाद तीव्र-तथा तीक्ष्ण गन्ध वाला होता है।

गुण तथा उपयोग—यह एक सुगन्धित औषध है, इसका सूंघना तथा खाना हृदय तथा मस्तिष्क के लिये उत्तम है, यह शीत आमाशय तथा यकृत को बल देता है, पाचन शक्ति को बलप्रद तथा वातानुलोमक और ग्राही है, यह अधिक करके आमाशय तथा यकृत के शीत रोगों में तथा दस्तों को बन्द करने के लिये प्रयोग किया जाता है, सुगन्धित होने के कारण मुख की बदबू को दूर करने के लिये चबाया जाता है, मस्तिष्क के शीत रोगों में भी उपयोगी है।

५५. कबूतर (**Pigeon**)

वर्णन तथा प्रयोग—प्रसिद्ध सुन्दर पक्षी है, इसका मांस विशेषतया इसके बच्चे का मांस शीघ्र पचता ह, और इसमें आहार विशेष

होता है, शुद्ध रक्त उत्पन्न करता है, क्षीण तथा दुर्बल मनुष्यों के लिये उपयोगी है, शरीर को मोटा करता है, और वाजीकर है, इसे अर्दित, अर्धांग, पक्षवध, तथा श्वास में भी प्रयोग करते हैं, जंगली कबूतर को कृष्ण लवण सहित जला लिया जाता है, यह राख श्वास रोगी को मधु में मिला चटाने से बहुत ही लाभ होता है।

५६. करतम बीज (**Carthamus Tinctorious**)

वर्णन—इसे हिन्दी में कुड़ वा कुसुम्भे के बीज कहते हैं, इस की शाखायें अपक्व अवस्था में सबज़, परन्तु पक्व होने पर श्वेत वर्ण की हो जाती हैं, फूल कांटेदार लालिमा लिये केशरीय वर्ण का होता है, और यह अधिकतया कपड़े रंगने के काम आता है, फूल के प्रत्येक कोष में सात, आठ दाने बीज के होते हैं, और यही बीज औषध प्रयोग में आते हैं।

गुण तथा उपयोग—क़फ़दोष पाचक तथा विरेचक, कफ़स्रावक, वीर्यप्रद, बल्य तथा आर्तवजनन—कफ़ज़ रोग, कास, श्वास, प्रतिश्याय, यकृतविकार जनित जलोदर, तथा आन्त्र शूल में प्रयोग किया जाता है, स्वरभेद तथा कण्ठ की खरखराहट में उत्तम है, आर्तवविकारनाशक तथा वीर्यप्रद योगों में भी डाला जाता है ॥

५७. करफ़स (**Apium Graveolens**)

वर्णन—एक पौदे के बीज हैं, जो रूप में सौंफ़ रूमी (अनीसून) के समान स्वाद में तीव्र और किंचित सुगन्धित होते हैं। यह बीज और इस पौदे की जड़ प्रयोग में लाई जाती है।

गुण तथा उपयोग—अवरोध नाशक, स्वेदल, वातानुलोमक, क्षुधाकारक, अश्मरी भेदक तथा मूत्रल और आर्त्तव प्रवाही है। इसे कास, कफ़ज्वर, वातकफ़ सन्निपात, गृध्रसी, वातरक्त, कटिशूल तथा कफ़ज रोगों में देते हैं, जलोदर, मूत्र तथा आर्त्तव अवरोध और आध्मान में उपयोगी है, वृक्क तथा वस्ति की अश्मरी को भेदन कर उसे निःसरण करने के लिये भी उपयोग किया जाता है ॥

५८. करंजुआ (Caesalpivia bonducella)

वर्णन—यह एक बेलदार बूटी है, इसकी शाखों पर कांटे हैं, इसमें बड़ी २ कांटेदार फलियां लगती हैं, जिनके भीतर सुपारी समान वा उससे छोटे बीज निकलते हैं, जिनका वर्ण नीलिमा लिये होता है, बीज को तोड़ने पर इसके भीतर से श्वेत वर्ण की गिरी निकलती है, यह गिरी ही औषध रूप में काम में आती है, इसका स्वाद तिक्त होता है, इसे ही मग़ज़ तुख़म करंजुआ कहते है।

गुण तथा उपयोग—शोषक तथा दूषित तरल को चूसता है, वातानुलोमक तथा उदरकृमिनाशक है, शोधक तथा मृदुकारक है, ज्वरों और विशेष कर विषम ज्वरों में उत्ताम है, आक्षेपहरं तथा कोथ प्रतिबंधक है, इसे शोषक तथा चूषक होने के कारण जलोदर तथा अण्डकोषों में जल भर जाने में लेप करते हैं, नौबती ज्वरों के नष्ट करने के लिये बहुत से योगों में विशेष करके डाला जाता है, इसकी गिरी को तिलों के तैल में जलाने के पश्चात् इस तैल को साफ़ कर गन्दे व्रणों पर तथा खाज पर लगाते हैं।

५९. कसूसबीज (Cascuta Europeaseeds)

वर्णन—यह आकाश बेल (अमर बेल) के बीज हैं, यह बीज मूलीबीज के समान होते हैं, वर्ण लाल, पीतता युक्त तथा पीत श्वेतता लिये होता है।

गुण तथा उपयोग—गाढ़े दोषों को तरल कर निकालने वाले, अवरोध नाशक, आमाशय तथा यकृत को बल देने वाले, शोथ विलयन, वातानुलोमक, जीर्ण ज्वरनाशक, मूत्रल तथा ऋतुप्रवाही, यकृत तथा आमाशय शोथ, जीर्ण कफज विबन्ध युक्त ज्वर तथा यकृत-विकार जनित पाण्डु में अतीव गुणकारी हैं॥

६०. कहरूबा (तृणकान्त)

वर्णन—यह एक वृक्ष का गोंद है, जो उज्ज्वल पीतता लिये होता है, इसमें घास और तृण को अपने ओर चुम्बक के समान

खेंच लेने का गुण होता है। कहरूबा शमई इसका सर्वोत्कृष्ट भेद है, और यही औषध रूप में ग्रहण करना चाहिये।

गुण तथा उपयोग—हृदय बल्य, आमाशय तथा आन्त्र बल्य, और बाहर तथा भीतर के रक्त प्रवाह का रोधक तथा स्तम्भक है, दिल की धड़कन में विशेष लाभप्रद है, इसे हृदयावसाद, खफ़कान, के लिये हृद्य योगों मे डाला जाता है तथा नकसीर, रक्तपित्त, रक्त-प्रदर आदि रोगों में सफलता से विशेषतया प्रयोग किया जाता है॥

६१ काकनज (**Physalis alkakenji**)

वर्णन—यह मकोय की जाति की एक विदेशीय बनस्पति है, सका फल मकोय से बड़ा होता है, अपक्व अवस्था में सबज़ और पक्व अवस्था में लाल वर्ण का होता है—यही फल औषध रूप में लिया जाता है, यह फल ईरान से भारत म आता है।

गुण तथा उपयोग—निद्रा लाने वाला, मूत्रल, पित्त विरेचक, यकृत शोधक, कृमि निःसारक, मूत्रल होने के कारण वृक्क, मूत्राशय अश्मरी तथा वृक्क, मूत्राशय व्रण तथा मूत्रमार्गस्थ व्रण और पूयमेह में लाभकारी है, पित्तविरेचक होने के कारण यकृत-विकारों में तथा पैत्तिक पाण्डु में उपयोगी है।

६२. कागज़ (**Paper**)

वर्णन तथा उपयोग—प्रसिद्ध वस्तु है, कागज़ जला हुआ संग्राही, रक्त स्तम्भक तथा शोषक है, इसे जलाकर प्रतिश्याय में धूनी देते हैं, इसकी राख को नकसीर रोकने के लिये नासा में प्रधमन करते हैं, मसूड़ों का रक्त बन्द करने के लिये मंजन रूप में इसका प्रयोग किया जाता है, ताजा व्रणों में रक्त रोकने के लिये तथा व्रण को शुष्क करने के लिये इसका धूड़ा धूड़ते हैं, इसी प्रकार फुफ्फुस व्रण, आन्त्रव्रण तथा आमाशय व्रण में भी योग्य औषध के साथ इसका उपयोग होता है।

६३. कालादाना (Pharbitis nil)

वर्णन—इसे हब्बलनील और तुख़म इशकपेचा भी कहते हैं, यह कृष्ण वर्ण के बीज हैं, जिनके भीतर से श्वेत गिरी निकलती है, स्वाद मधुर परन्तु कुछ तिक्तपना लिये और तीक्ष्ण होता है।

गुण तथा उपयोग—इसका बाह्य गुण लेखन है, भीतर देने से यह विरेचक गुण करता है, रक्तशोधक तथा उदरकृमिनाशक है, जल समान दस्त लाता है, इसे चर्म रोगों पर लेप रूप में प्रयोग करते हैं, सब प्रकार की खाज में खांड मिलाकर चूर्ण रूप में भीतर खिलाते हैं, संधिशूल, गृध्रसी, जलोदर तथा कृमिरोग में भी इसका प्रयोग होता है।

६४. कासनी (Cichorium intybus)

वर्णन—कासनी एक प्रसिद्ध स्वयंजात बूटी है, इसके पत्र चौड़े पालक के पत्तों की तरह होते हैं—पुष्प नीलिमा लिये हुये होता है, बीज श्वेत मिट्टी वर्ण के होते हैं, स्वाद तिक्त होता है, कासनी के पत्र बीज तथा जड़ उपयोग में लाई जाती है, तीनों के गुण एक जैसे हैं, भारत में उत्तरी पंजाब और काश्मीर में उत्तम होती है।

गुण तथा उपयोग—अवरोधनाशक, मूत्रल, रक्तशोधक, पित्त तथा रक्त की उष्णता तथा प्रकोप को शान्त करने वाली है, यकृत, प्लीहा के पैत्तिक शोथ को नष्ट करने वाली तथा आमाशय और यकृत को बल देने वाली है, यकृत, प्लीहा अवरोध तथा शोथ, पाण्डु, जलोदर, आमाशय के पैत्तिक विकार तथा प्रदाह में प्रयोग की जाती है, मूत्रल होने के कारण मूत्र नाली के शोधन के लिये पिलाते हैं। पैत्तिक शोथ में पत्रों को और औषध के साथ मिला कर लेप रूप में प्रयोग किया जाता है।

कासनी की जड़—दोषों को पकाने वाली, मूत्र तथा रजप्रवाही, प्रमाथी, शोधक, शोथनाशक है, दोषपाचक होने के

कारण कफ़ ज्वरों में सफलता से प्रयोग की जाती है, शोथनाशक तथा मूत्रल होने के कारण यकृतशोथ, जलोदर, संधिवात, तथा मिश्रित दोष जनित जीर्ण ज्वरों में विशेषतया उपयोग में लाई जाती है, गर्भाशय शोथ तथा आर्त्तव अवरोध में इसका प्रयोग होता है।

कासनी बीज–पित्त तथा रक्त शामक, अवरोध नाशक, मूत्रल, पैत्तिक ज्वर विनाशक, इस लिये यकृत तथा प्लीहा रोग यथा पाण्डु, जलोदर, यकृतावरोध, यकृतशोथ, जीर्ण ज्वर जो यकृत-विकार से हों, के लिये विशेषतया प्रयोग किये जाते हैं।

६५. काहू (**Lactuca staina**)

वर्णन—यह एक बूटी है—जो बाग़ी (लगाया हुआ) और जंगली स्वयं जात इस भेद से दो प्रकार की है, बाग़ी काहु के पत्तों का साग पका कर खाया जाता है, और इसके बीज औषध रूप में प्रयोग किये जाते हैं, काहू के पौदे से ख़शख़ाश की भांति अहिफ़ेन निकलती है, जो कि अहिफेन काहू कहलाती है, यह भी औषध रूप में प्रयोग की जाती है।

गुण तथा उपयोग—काहू रक्त की उष्णता तथा उग्रता को कम करता है, रक्तशोधक तथा तृषा शामक है, निद्राप्रद और मूत्रल है, आमाशय बल्य और दीपक पाचक है, स्त्रियों में दूध बढ़ाता है, जलवायु परिवर्तन से जो शरीर में विकार उत्पन्न होते हैं, यह उनको शान्त करता है। पत्र शाक की भांति अधिकतया उपयोग किया जाता है, पित्तज तथा रक्तज प्रकृति वाले मनुष्यों के लिये बहुत सात्मय है, पित्तज कास, खारश, उन्माद, मद, पाण्डु, कामला, पैत्तिक ज्वर तथा पूयमेह में उपयोगी है, जलवायु जनित दोषों को नष्ट करने तथा अजीर्ण दोष जनित वायु दोष को नष्ट करने में भी इसका प्रयोग किया जाता है।

काहू बीज—काहू बीज श्वेत वर्ण के छोटे २ और चमकीले तथा लम्बे होते हैं। इनका स्वाद फीका होता है।

गुण तथा उपयोग—वेदना शामक, निद्राप्रद तथा नशा लाने वाला, शान्तिदायक, रक्त की उग्रता और पित्त की तेज़ी को नष्ट करने वाला तथा तृषा शामक, वीर्यशोषक तथा बालों को बल देता है। इस लिये पैत्तिक शिरशूल तथा अनिद्रा में माथे पर लेप करते हैं, तथा बालों को गिरने से रोकने के लिये भी शिर पर लेप करते हैं, पैत्तिक तथा रक्तज ज्वरों में उन्माद, मद आदि में अकेला तथा अन्य औषध सहित प्रयोग किया जाता है, स्वप्न-प्रमेह और कामवासना को कम करने के लिये भी प्रयोग करते हैं।

रोग़न काहू—बीजों से तैल निकाला जाता है, जो निद्रा लाने के लिये शिर पर मला जाता है तथा नाक में टपकाया जाता है, शिर के बालों के लिये भी उत्तम है।

काहू की अफ़ीम—काहू के पौदों के तने को चीरा देने से रस निकलता है, जो वायु लगने से शुष्क होकर जम जाता है, इसकी रंगत भूरी वा किंचित लालिमा लिये भूरी होती है, परन्तु भीतर से श्वेत वा पीतता लिये होती है, टूटे मोम की भांति किंचित चमकीली होती है, स्वाद तिक्त और बू ख़शख़ाश की अफ़ीम के समान होती है।

गुण—ख़शख़ाश की अफ़ीम के समान गुण हैं, परन्तु उसकी तरह ग्राही, तथा पाचन विकार करने वाली नहीं है, और इसके खाने से आलस्य तथा कमज़ोरी भी नहीं होती है।

६६. किबर (Capparis Spinosa)

वर्णन—एक कांटेदार वृक्ष है, जो कठोर तथा रेतली पृथवी पर उत्पन्न होता है, इसकी जड़ श्वेत वर्ण की बड़ी और लम्बी होती है, इस की छाल मोटी होती है, जो शुष्क होने पर लकड़ी से पृथक हो जाती है, इसे पोस्त बेख़ किबर कहते हैं, स्वाद तिक्त होता है।

गुण तथा उपयोग—अवरोधनाशक, लेखन, कफ़नाशक तथा कफस्रावी, वेदना शामक तथा कृमिनाशक, वातानुलोमक, मूत्रल तथा रजःप्रवाही। किबर के फल आमाशय बल्य, क्षुधाजनिक, वातानुलोमक तथा मृदु करने वाला है। इसका प्रयोग वात-संस्थान के रोग, कफ़ज रोग, पक्षाघात, स्वप्ति वात, आमवात, गृध्रसी, वातरक्त में होता है, शोथविलयन गुण के कारण कण्ठ-माला तथा दूसरे शोथ को निवारण करने के लिये इसकी जड़ तथा पत्रों का लेप किया जाता है, मस्तिष्क शोधन तथा प्लीहावृद्धि और आर्त्तवजनन के लिये विशेषतया प्रयोग किया जाता है।

६७. किशमिश (**Vytis Vinifera**)

वर्णन—किशमिश एक प्रकार का बीजरहित मुनक्का है, जिसके अंगूर छोटे होते हैं, शुष्क होकर यही किशमिश कहलाता है, रंगत सबज़ होती है, यह अफगानस्तान तथा बलोचस्तान में उत्पन्न होता है।

गुण तथा उपयोग—मनःप्रसादकर, बल्य, शोथघ्न, लेखन, सारक, वीर्यप्रद, उरःसंशोधक, मेध्य तथा शरीर पोषक है, मस्तिष्क, यकृत तथा हृदय को विशेषतया बलप्रद है, मधुर तथा स्वादिष्ट होती है॥

६८. कीकर गोंद (सनमय अरबी) (**Gum acacia**)

वर्णन—नामानुसार कीकर का गोंद है, इसकी डलियां पीतता लिये अर्ध स्वच्छ होती हैं, स्वाद फीका लुआबदार होता है।

गुण तथा उपयोग—चिपकने वाला, शीत संग्राही, छाती तथा कण्ठ की रूक्षता को दूर करने वाला है, फुप्फुस व्रण, रक्तपित्त, रक्तातिसार, प्रवाहिका में प्रचुरता से प्रयोग किया जाता है, प्रमेह तथा-श्वेतप्रदर में भी उपयोगी है, इसके लुआब की सहायता से औषध की गोलियां तथा चक्रिकायें बनाई जाती हैं।

६९. कुन्दर (Boswellia Floribunda)

वर्णन--यह दो तीन गज़ ऊंचे कांटेदार वृक्ष की गोंद है, जो कटु तथा कुस्वाद होता है, आकृति और रंगभेद से यह पांच प्रकार का होता है, परन्तु ताज़ा, मृदु, ऊपर से सफ़ेद, लेसदार, सुनहरी वर्ण का, जो टूटा हुआ न हो, और जो अग्नि पर शीघ्र ही जल उठे, उत्तम समझा जाता है, यह अच्छी तरह से पिस नहीं सकता, इसे और औषध के साथ हलके हाथों रगड़ना चाहिये या उष्ण जल में घोल कर औषध में डालना चाहिये।

गुण तथा उपयोग--वातानुलोमक, स्मृति वर्धक, चक्षुष्य, दीपक, पाचक, संग्राही, दोष पाचक, लेखन, हृदय बल्य, रक्त स्तम्भक तथा विष को नष्ट करने वाला है, इस लिये वमन, अतिसार, रक्त अतिसार, रक्तपित्त, रक्त अतिसार में उपयोगी है, बहुमूत्र में भी प्रयोग किया जाता है, लेखन होने के कारण नेत्र-रोगों में भी लाभप्रद है और उपयोग में लाया जाता है ॥

७०. करूवीया (Carum Cauri)

वर्णन--इसे शाह जीरा भी कहते हैं--यूरूप और ईरान इसका उत्पत्ति स्थान है, यह एक क्षुद्र बनस्पति के बीज हैं, ज़ीरा श्वेत के के समान इसके बीज है, वर्ण पीला, स्वाद तिक्त तथा तीव्र होता है।

गुण तथा उपयोग--करूवीया आमाशय तथा आन्त्र पर संग्राही और वातानुलोमक प्रभाव करता है, क्रृमिनाशक, मूत्रल तथा दीपक पाचक है, उदर रोगों में अजीर्ण नष्ट करने के लिये बहुधा प्रयोग किया जाता है ॥

७१. कुलफ़ा बीज (तुख़म ख़ुरफ़ा) (Portulaca Oleracea)

वर्णन--यह एक कोमल, रसदार, प्रसिद्ध साग है, इसके बीज तथा पत्र औषध प्रयोग में आते हैं, बीज ख़शख़ाश बीज समान तथा कृष्ण वर्ण के होते हैं।

गुण तथा उपयोग—शीतल तथा संशमन गुण होने के कारण पित्त तथा यकृत संताप, रक्तपित्त, तृषा, आमाशय, आन्त्र तथा मूत्र-दाह संशमन के लिये अधिकतया प्रयोग किये जाते हैं, मूत्रल तथा किंचित ग्राही है। भुना हुआ पित्त प्रकृतिवालों के लिये आमाशय, आन्त्रबल्य, संग्राही तथा मधुमेह में उपयोगी है ॥

७२. कुलंजन (**Alpinia officivarum**)

वर्णन—इसे **पान की जड़** भी कहते हैं। जिसका वर्ण बाहर से लालिमा लिये और भीतर से श्वेत पीतता लिये होता है, स्वाद तीक्ष्ण, काली मिरच समान और चरपरा होता है, यह जड़ प्रायः ग्रंथियुक्त होती है।

गुण तथा उपयोग—हृदय बल्य, आमाशय तथा यकृत बल्य उष्णवीर्य, वात तथा कफ़ रोगों में उपयोगी, वातानुलोमक-मुख को सुगन्धित करता है, कफ़नाशक तथा कफ़स्रावक, लाला, प्रसेक जनन, शीतजनित वेदना नाशक, वाजीकर तथा लेखन है, मन को प्रसन्न करने वाली उपयोगी औषध है ॥

(ख)

७३. ख़तमी बीज (**Althœ officinalis**)

वर्णन—यह कृष्ण वर्ण के बीज हैं, भारत में इसका आयात फ़ारस से होता है। ख़तमी का पौदा मनुष्य समान लम्बा होता है, पत्र बड़े २ और खुरदरे होते हैं, पुष्प सुन्दर गन्धरहित तथा बहु वर्ण होते हैं, नील वर्ण पुष्प वाली खतमी को **खैरू** कहते हैं। इसकी जड़ को **रेशा ख़तमी** कहते हैं।

गुण तथा उपयोग—ख़तमी के बीज और पत्र शोथविलयन, शोथपाचक तथा शोथनाशक होते हैं, कफ़दोष पाचक और फुफ्फुस को मृदु रखने वाले तथा पीड़ा शामक हैं। इसकी जड़ सारक है, पित्तज अतिसार, प्रवाहिका, मरोड़ में लाभप्रद है, मूत्रदाह, पित्तज कास, प्रतिश्याय तथा श्वास में बहुधा प्रयोग की जाती है ॥

७४. ख़बाज़ी बीज (Malva sylvestris)

वर्णन—एक बूटी के बीज हैं। भारतवर्ष में भी उत्पन्न होती है, परन्तु औषध के लिये फ़ारस से भारतवर्ष में इसके बीज आते हैं, यह बीज, गोल, चिपटे और श्वेत वर्ण के होते हैं।

गुण तथा उपयोग—दोष पाचक, मृदु सारक, चिपकने वाले, मत्रल, पित्त दोष का पाक करने के लिये, उर तथा फुप्फुस की रूक्षता दूर करने के लिये, पित्तज कास तथा स्वरभेद में उपयोग किये जाते हैं। चिपकने गुण कारण आन्त्र व्रण, प्रवाहिका, आन्त्र-दाह, वृक्क तथा वस्ति दाह में भी प्रयोग किये जाते हैं। खांसी, फुप्फुस विकार में विशेषतया प्रयोग किये जाते हैं ॥

७५. ख़यारैन बीज।

वर्णन—ककड़ी तथा खीरे के मिलित बीजों को कहते हैं।

गुण तथा उपयोग—शीतल पित्त तथा रक्तोष्णता शामक, मूत्रल, शीतल तथा पित्त, रक्त शामक होने के कारण पित्त तथा रक्तोल्वणता, तृषा, आमाशय दाह, पित्तज कास, पैत्तिक ज्वर में इनका शीरा निकाल कर पिलाते हैं, मूत्रल होने के कारण यकृत प्लीहा की पैत्तिक शोथ, मूत्रदाह तथा सुज़ाक में प्रयुक्त किये जाता है।

७६. ख़रनोब (Ceratonia siliqua)

वर्णन—इस वृक्ष के उत्पत्ति भेद से दो भेद हैं, (१) बागी (२) जंगली, जंगली को ख़रनोब नबती कहते हैं, बागी एक बड़ा वृक्ष होता है, इसका पुष्प पीले वर्ण का होता है, इसको एक हाथ लम्बी पतली २ फलीयां लगती हैं, जिस के भीतर बाकला बीज समान बीज होते हैं और इनका स्वाद मधुर होता है, उत्पत्तिस्थान—फिलसतीन, श्यामदेश, पुर्तगाल और अफ़रीका आदि देश हैं।

गुण तथा उपयोग—संग्राही, रक्तरोधक, पीड़ाशामक तथा कफ़नाशक है, मूत्रल तथा आमाशय के मांस धातुओं को बल देता है। बीज भी संग्राही तथा रक्तस्तम्भक गुण रखता है ॥

७७. ख़रनोब नबती

वर्णन—इसके पुष्प पीले और दाग़दार होते हैं, इसकी शाखायें इतस्ततः होती हैं, और उन पर बारीक २ तेज़ कांटे लगे होते हैं, इसका फल छोटे वृक्क समान और कालापन लिये लाल होता है, इसके भीतर बीज होते हैं।

गुण तथा उपयोग—बाह्य त्वचा पर लेप करने से संग्राही गुण करता है, आमाशय तथा आन्त्र पर भी इसका संग्राही प्रभाव पड़ता है, बाह्य शरीर पर लगाने पर शरीर की थकान को दूर करता है, शिर पर लेप करने से बालों को बल देता है, तथा समय से पूर्व श्वेत होने से रोकता है, अतिसार तथा मन्दाग्नि में उपयोगी है, दंतरोगों में मंजन के योगों में पड़ता है, दांतो को दृढ़ करता है ॥

७८. ख़रपज़ा बीज (**Cucumis melo**)

वर्णन—यह ककड़ी के समान एल लता का प्रसिद्ध फल है, जो स्वादिष्ट मधुर और किंचित सुगन्धित होता है। भारतवर्ष में अधिकतया उत्पन्न होता है। इसके बीज औषध में काम आते हैं

गुण तथा उपयोग—मूत्रल तथा आर्तव प्रवाही, वृक्क तथा वस्ति की अश्मरी को बाहर निकालने वाला, लेखन, तथा स्रोत शोधक है, यकृतावरोधक नाशक है। अधिकतया मूत्र तथा रजः अवरोध वृक्क तथा वस्ति अश्मरी और सुज़ाक में प्रयोग किया जाता है। ज्वरदाह, यकृत शोथ, वृक्क तथा वस्ति रोगों में विशेष करके प्रयोग किया जाता है।

७९. ख़रातीन (**Earth worm**)

वर्णन—इसे हिन्दी में केंचवे कहते हैं, ताम्रवर्ण लम्बे २ कीड़े होते हैं, जो बरसात में अधिकतया उत्पन्न होते हैं।

गुण तथा उपयोग—वाजीकर, शोथ शामक, व्रण नाशक। यह अधिकतया वाजीकर लेपों (तिल्ला-जो शिश्न पर उसको उत्ते-जना देने के लिये तथा वृद्धि करने के लिये उपयोग किये जाते हैं)

में डाला जाता है, आंतरिक उपयोग भी वाजीकरण गुण के लिये किया जाता है, चोट आदि पर भी लेप रूप में प्रयोग करते हैं ॥

८०. ख़शख़ाश (पोस्त तथा तुख़्म)
(White popy seeds)

वर्णन—फल को पोस्त ख़शख़ाश वा डोडा ख़शख़ाश (Papauor Somni ferum) कहते हैं, फल के भीतर से जो बारीक दाने निकलते हैं, उन्हें तुखंम ख़शख़ाश कहते हैं–शाखाओं तथा फलों को चीरने से जो रस निकलता है, वही शुष्क होने पर अहिफ़ेन कहलाती है ॥

गुण तथा उपयोग—आमाशय तथा आन्त्र पर संग्राही प्रभाव करती है, रक्त को बन्द करती है। वेदना शामक, निद्राप्रद, वेदना नाशक तथा निद्राप्रद होने के कारण सब प्रकार की पीड़ा में इसका लेप किया जाता है, उन्माद, मद में निद्रा लाने के लिये तथा मस्तिष्क पर शामक प्रभाव डालने के लिये इसका उपयोग होता है, पित्तज तथा कफ़ज कास, श्वास, प्रतिश्याय तथा अतिसार, प्रवाहिका, आन्त्र से रक्त आने में सफलता से प्रयुक्त की जाती है, बादाम गिरी के साथ प्रयोग मस्तिष्क दुर्बलता तथा बार २ प्रतिश्याय हो जाने पर किया जाता है, बीज औषधरूप में अधिकतया प्रयुक्त किये जाते हैं ॥ हलका नशा लाने वाले, निद्राप्रद तथा अवसादक इसके विशेष गुण हैं ॥

८१. ख़सतीयाल सहलब (सहलब मिश्री)
(N. O. Orchideae)

वर्णन—यह प्याज़ के समान एक क्षुप की प्रसिद्ध जड़ है, जो पीतता लिये सफ़ेद होती है, इसका एक भेद पंजा सहलब भी है, गुण तथा उपयोग दोनों का समान ही है, इस की शकल पंजा के समान होती है, जड़, सुरंजान से छोटी वा बड़ी होती है, स्वाद मधुर, लेसदार तथा किंचित तीक्ष्ण होता है। मोटी, बड़ी और मधुर

तथा जिसमें गन्ध वीर्य के समान हो, उत्तम होती है। अफ़गानस्तान, रोम तथा मिश्र इसका उत्पत्तिस्थान है।

गुण तथा उपयोग—वातनाड़ी बल्य, वीर्यप्रद, वीर्य उत्पादक तथा वीर्य को गाढ़ा करने वाली और शरीरपोषक तथा उसे मोटा करने वाली है, वीर्य उत्पन्न तथा पुष्ट करने के लिये दूध से इसे अन्य औषध के साथ वा पृथक ही प्रयोग किया जाता है।

८२. खाकशी (खूब कलान) (**Sisymbrium Iorio**)

वर्णन—पीत लालिमा लिये बारीक बीज होते हैं, ख़शख़ाश बीज से भी छोटे होते हैं, इसका पौदा आधा गज से लेकर एक गज़ तक होता है, पत्र लम्बे, शाखायें बारीक, फलियां सरसों की फलियों के समान परन्तु बारीक होती हैं। जो बारीक बीजों से भरी होती है, यही बीज औषध में प्रयोग किये जाते हैं। भारत में उत्पन्न होती है परन्तु फारस से इसका आयात होता है।

गुण तथा उपयोग—ज्वरनाशक, श्लेष्म निःसारक, विसूचिका में लाभकारी है, ज्वरनाशक होने के कारण ज्वरों में विशेषतया आन्त्रिक सन्निपात, मोतीझरा, चीचक तथा ख़सरा में प्रयोग की जाती है, इसके देने से चीचक, ख़सरा में दाने शीघ्र निकल आते हैं, कास, श्वास में भी उपयोग की जाती है, पैत्तिक विसूचिका में तृषा तथा वमन को शान्त करने के लिये भी प्रयुक्त की जाती है॥

८३. खुरमा (**N. O. Palmeae**)

वर्णन—यह ताल जाति का एक बृहत काय वृक्ष का फल है, जब यह सूख जाता है, तब इसे छुहारा कहते हैं, यह अरब, उत्तरी अफ़रीका, मिश्र का प्रसिद्ध फल है, अपने सब गुण करके खजूर की तरह है।

गुण तथा उपयोग—शरीरपोषक, वाजीकर, वातनाड़ी तथा शारीरक दुर्बलता में प्रयोग किया जाता है, उष्णवीर्य है, कफज रोग, कास, कटिशूल में उत्तम है।

८४. खेलाखेली

वर्णन---यह एक पहाड़ी वृक्ष का पोस्त (त्वचा) है, जो कठोर और मोटा होता है, इसका वर्ण मटियाला लालिमा लिये हुये होता है।

गुण तथा उपयोग---संग्राही होने के कारण कटिशूल तथा श्वेत प्रदर में बहुधा उपयोग में लाई जाती है।

(ग)

८५. गन्दना बीज (**Allium Ampelop rasum**)

वर्णन---इसके पौदे गेहूं तथा चने की खेती में स्वयं उत्पन्न होते हैं, इसके पत्र, बीज और पुष्प प्याज के समान परन्तु उससे कुछ छोटे और बारीक होते हैं, उत्पत्तिस्थान भारत तथा ईरान है।

गुण तथा उपयोग---शोथविलयन, शान्तिदायक, लेखन, वातकारक, वाजीकर, मूत्रल, आर्तव प्रवाही, कफ़स्रावी। इसके बीज अर्श तथा रक्त अर्श में अत्यन्त उपयोगी हैं, अर्श के मस्सों को इसके बीजों का धूम्र भी दिया जाता है।

८६. ग़रीलमस्क (सरेशममाही)

वर्णन---चरबी के समान एक शुष्क जमी हुई रतूबत है, जो एक प्रकार की मछली के उदर से निकाली जाती है। तथा एक प्रकार की मछली के फंकनों को बारीक २ तन्तुओं में काट कर शुष्क कर लेते हैं। आज कल अधिकतया यही बाज़ार में मिलती है।

गुण तथा उपयोग---चिपकने वाली, शोषक, लेखन तथा रक्त स्तम्भक है, इसी गुण के कारण उरःक्षत, रक्तष्ठीवन में अधिकतया प्रयोग की जाती है, लेखन तथा शोषक होने के कारण व्रण औषध में भी डाली जाती है।

८७. गाऊज़बान (**Caccinia glauca Sani**)

वर्णन---यह एक युनानी औषध में प्रसिद्ध बूटी है, इसके सब अंग खुरदरे और रूई युक्त होते हैं, पत्र बड़े २ गो की जिह्वा के

समान, वर्ण सबज़ श्वेतता युक्त होता है, इन पर सफ़ेद २ नुकते चुभने वाले होते हैं, पुष्प अनार पुष्प के समान परन्तु इससे लघु और लाजवरदी वर्ण का होता है, पत्रों का स्वाद फीका और लुआब युक्त होता है। पत्र तथा पुष्प औषध रूप में प्रयोग किये जाते हैं।

गुण तथा उपयोग—मनः प्रसादकर, उत्तमांगों को बल्य, स्निग्धता उत्पन्न करने वाला, कफ़सारक, जला हुआ, ग्राही तथा शोषक गुण रखता है, गाऊज़बान पत्र तथा पुष्प, उन्माद, मद, वातदोष, हृदय धड़कन, चित्त विभ्रम में अत्यन्त उपयोगी है, प्रतिश्याय, प्रसेक, कास, श्वास, उर की रूक्षता को नष्ट करता है, इसे जलाकर मुखपाक में दाह शमन तथा व्रण शोषणार्थ प्रयुक्त किया जाता है, हृदय रोग में विशेषतया लाभकारी है।

८८. गाजरबीज़ (**Daucus Carota**)

वर्णन—समस्त भारतवर्ष में इसकी खेती होती है, बहुधा कच्ची ही खाई जाती है, पकाकर इसका हलवा अत्यन्त उत्तम बनता है, इसका मुरब्बा भी बनता है।

गुण तथा उपयोग—बीज मूत्रल, आर्तव प्रवाही, गर्भाशय शोधक, गर्भपातक, अश्मरी नाशक तथा वातानुलोमक है, कामोत्तेजक तथा शिश्न में भी उत्तेजना उत्पन्न करने वाले हैं, गाजर मनःप्रसादकर, उत्तमांगों को बलप्रद, मूत्रल तथा वाजीकर है।

८९. ग़ाफ़स (**Gentiana dahurica**)

वर्णन—भारतवर्ष में इसका आयात फ़ारस से होता है, यह एक कांटेदार बूटी है, जिसके पत्र लम्बे, चौड़े और रूई युक्त होते हैं, पुष्प नीला लम्बा नीलोफ़र पुष्प के समान होता है, इसके सब अंगों का स्वाद तिक्त होता है, इसके पुष्प तथा घन रस क्रिया (असारा ग़ाफ़स) औषध रूप में प्रयोग की जाती है।

गुण तथा उपयोग—गाढ़े दोषों को पतला करने वाला, त्रिदोष नाशक, लेखन, स्रोत शोधक, मूत्रल, आर्तव प्रवाही, रक्त-

शोधक, स्वेदल, स्तन्य जनन, दीपन तथा आमाशय बल्य है, यकृत-शोथ, आमाशय तथा यकृत काठिन्य, सर्वांग शोथ, जलोदर, जीर्ण-ज्वर, में उपयोग किया जाता है, इसका असारा भी इन्हीं रोगों में प्रयुक्त किया जाता है।

९०. ग़ारीक्यून (Agaricus albus)

वर्णन—ग़ारीक्यून खुम्बी जाति की एक पराश्रयी क्षुद्र बनस्पति है, जो सनोबर के पुराने वृक्षों पर उत्पन्न होती है, बाज़ार में यह श्वेत वर्ण, विषम टुकड़ों के रूप में मिलती है, वज़न में हलकी तंतुल और स्पंजवत होती है, स्वाद प्रथम मधुर और पीछे अम्ल तथा तिक्त होता है, जब इसको बारीक तारों वाली छाननी से छाना जाये, तो इसे गारीक्यून मुग़रबल कहते हैं, और औषध म यही काम आता है।

गुण तथा उपयोग—त्रिदोष विरेचक, और त्रिदोष नाशक है—सुद्धों को खोलती है, गाढ़े दोषों में तरलता उत्पन्न करने वाली है, रक्त संग्राही तथा रक्त स्तम्भक है, वामक, मूत्रल तथा आर्तव-प्रवाही है। इसे विरेचक औषध के समान आमवात, संधिशूल, गृध्रसी, वातरक्त, अपस्मार, श्वास, कास, यकृतावरोध में प्रयोग किया जाता है, जलोदर, कामला और कफ़ज ज्वरों में उपयोगी है, सकंजबीन के साथ प्लीहावृद्धि में भी प्रयुक्त करते हैं।

९१. गिल अरमनी (Bobus Armenia rubra)

वर्णन—लाल वर्ण की मृदु तथा चिकनी मिट्टी है, जो किंचित सुगन्धित तथा स्वाद में फीकी होती है, और जिह्वा पर चिपक जाती है।

गुण तथा उपयोग—शोषक, संग्राही, चिपकने वाली, ज्वर-नाशक, दुर्गन्धनाशक, शोथनाशक, हृदय बल्य तथा विशेषतया रक्त स्तम्भक और रोधक है, शरीर के किसी अंग से रक्त जाने में लाभप्रद है, रक्तपित्त, उरःक्षत, आन्त्र तथा आमाशय क्षत,

और अतिसार, रक्त अतिसार में विशेषतया उपयोग की जाती है, व्रण को शुष्क करके रोपण कार्य शीघ्रता से करती है, हृदय बल्य होने के कारण ग्रंथिक ज्वर (प्लेग) आदि में भी प्रयोग की जाती है।

९२ गिल मखतूम (Marl)

वर्णन—हलके गुलाबी वर्ण की चिकनी मिट्टी है, जिसकी टिकियां बनी हुई मिलती हैं।

गुण तथा उपयोग—मनःप्रसादकर, हृदय बल्य, चिपकने वाली, शोषक, संग्राही और रक्त स्तम्भक है, शीघ्रता से फैलने वाले तथा मारक ज्वरों में अमृत के समान प्रभाव करती है। इसे उरःक्षत, फुप्फुस व्रण, रक्तष्ठीवन, आमाशय तथा आन्त्र व्रण में उपयोग करते हैं, हृदय बल्य होने तथा अगद गुण करके प्लेग में भी प्रयोग कराते हैं, रक्तातिसार तथा पित्त अतिसार में लाभप्रद है, सद्यः व्रण में रक्त रोकने के लिये इसे बारीक पीसकर धूड़ा जाता है।

९३. गिल मुलतानी (Fuller's Earth)

वर्णन—गिल मुलतानी वा मुलतानी मिट्टी, श्वेत पीतता लिये एक परतदार मिट्टी है, जो अधिकतया शिर धोने के काम आती है, यह संग्राही तथा रक्त स्तम्भक है, इसी कारण इसे शीतल जल में घोल कर ठैरा कर उपर का निथरा जल नकसीर तथा मूत्र में रक्त के आने में पिलाया जाता है। नकसीर में शिर तथा मस्तक पर लेप भी किया जाता है, पित्तज गरमी के दानों पर लेप करने से शान्ति मिलती है। तथा दाने भी मुरझा जाते हैं।

९४. गुलनार

वर्णन—जंगली अनार की कलियां हैं, जो औषध रूप में प्रयोग की जाती हैं, इस अनार को फल नहीं लगता है।

गुण तथा उपयोग—संग्राही, शोषक, रक्त स्तम्भक, दोषों को वापिस करने वाला, इस गुण करके शोथ की प्रारंभक अवस्था में

इसका लेप किया जाता है। दोषों के स्थान छोड़ देने के कारण शोथ नष्ट हो जाती है, और फोड़ा आदि फिर नहीं बनता, संग्राही तथा रक्त स्तम्भक होने से दांतो के लिये मंजनों में डाला जाता है, रक्तष्ठीवन, पित्तज तथा रक्तज अतिसार, रक्त प्रदर तथा श्वेत प्रदर में भी इसका उपयोग किया जाता है। शोषक होने के कारण व्रणों पर इसका बारीक चूर्ण धूड़ा जाता है।

९५. गुलाब पुष्प (**Rosa damaseena**)

वर्णन—एक प्रसिद्ध पौदा है, इसका पुष्प सुन्दर हलके गुलाबी वर्ण का और सुगन्धित होता है, यह पुष्प ही औषध रूप में प्रयोग किया जाता है।

गुण तथा उपयोग—सौमनस्य जनन, उत्तमांगों को बलप्रद और आमाशय, आन्त्र को बल देने वाला, सारक परन्तु शुष्क पुष्प का चूर्ण संग्राही है, पित्तज उल्वणता को शान्त करता है, इसका ताज़ा फूल सूंघना हृदय को प्रसन्न करने वाला, इसका परिस्रुत जल (अर्क) नेत्र रोगों में उत्तम है, इस अर्क को हृदय, मस्तिष्क को बल देने के लिये तथा ख़फकान, ग़शी, ज्वा पैत्तिक ज्वरों में अधिकतया प्रयोग किया जाता है, इसके ताज़ा फूलों से गुलकन्द बनाया जाता है, जो उत्तम अंगों को बल देता है तथा उत्तम विरेचन है, यह जमे हुये दोषों को बाहर निकालता है। इसका तैल भी बनाया जाता है, जिसे गुल रोग़न कहते हैं। यह दोषों को लौटाने वाला, शोथघ्न पीड़ा, शामक, विरेचक, भीतरी पीड़ाओं को शान्त करने वाला, आमाशय, आन्त्र दाह शामक है, तीव्र ज्वर में अर्क गुलाब तथा सिरका मिला कर बार २ तालु पर रखते हैं इससे ज्वर शान्त होता है। अनिद्रा तथा मस्तिष्क दुर्बलता के लिये उपयोगी है। कर्ण शूल और दंत शूल में भी लाभकारी है।

ज़रवरद—गुलाब पुष्प के भीतर जो छोटे २ दाने होते हैं, उन बीजों को ज़रवरद (गुलाब का ज़ीरा) कहते हैं, यह आमाशय बल्य, रक्त स्तम्भक, शोषक, मांसतंतु संग्राहिक तथा अतिसार नाशक है।

(च)

९६. चटक (चिड़िया)

वर्णन तथा उपयोग—एक प्रसिद्ध पक्षी है, युनानी चिकित्सक वाजीकर, तथा बल्य गुण इसके मांस में मानते हैं—इस लिये वाजीकर योगों में इसका अधिकता से प्रयोग करते हैं, कफ़ज तथा वात संस्थान के रोग, अर्दित, पक्षवध, यकृत, वृक्क, तथा पुंसक शक्ति की दुर्बलता में विशेषतया इसका उपयोग करते हैं—परन्तु आधुनिक चिकित्सक इसमें वाजीकर तथा बल्य गुण नहीं मानते और इसे एक मिथ्या धारणा समझते हैं।

९७. चलगोज़ा (**N. O. Coniferae**)

वर्णन—सनोबर वृक्ष का फल है, जो खिरनी के समान लम्बा होता है, इसके ऊपर कठोर पतला छिलका होता है। इसके भीतर से श्वेत वर्ण की मधुर स्वादिष्ट गिरी निकलती है। यही औषध में काम आती है, इसे हब्ब सनोबर भी कहते हैं।

गुण तथा उपयोग—वाजीकर, वीर्यप्रद, शरीरपोषक, श्लेष्मनिःसारक तथा उष्ण वीर्य है, शरीर को पुष्ट करता है, दीर्घ पाकी है, इसको दूसरी औषध के साथ वीर्य, बल्य तथा वाजीकर गुण के लिये प्रयोग करते हैं, अर्दित, पक्षाघात, कटिशूल, संधिशूल में भी उपयोगी है।

९८. चाकसू (**Ceassia absus**)

वर्णन—यह बहिदाना के समान कृष्ण वर्ण का चिकना और चमकदार बीज होता है, यह भारत, ईरान तथा अरब देश में उत्पन्न होता है।

गुण तथा उपयोग—रक्त स्तम्भक, संग्राही, लेखन, शोथघ्न, नेत्ररोग हर तथा दृष्टि बल्य, इसे रक्त स्तम्भनार्थ प्रयोग किया जाता है, रक्त अर्श तथा वृक्क विकार जनित रक्तमय मूत्र में रक्त को रोकने के लिये प्रयोग करते हैं, नेत्र रोग, दृष्टि दुर्बलता

नेत्र कण्डु, जाला, नेत्र जलस्राव में अंजन रूप में विशेषतया प्रयोग किया जाता है।

९९. चिरोंजी (Buchananialatifolia)

वर्णन—यह एक वृक्ष का फल है, फल की गिरी को चिरौंजी कहते हैं, बड़ी मसूर के दाने के समान होती है, स्वादिष्ट तथा मृदु होती है।

गुण तथा उपयोग—इसमें आहार की अधिक मात्रा है, दुर्बल मनुष्यों के लिये उत्तम वस्तु है, शरीर पुष्टिकर तथा वाजीकर है, वाज़ीकर योगों में डाली जाती है, इसका बारीक चूर्ण कर पृथक वा अन्य औषध के साथ मुख पर मलने से मुख के वर्ण को निखारती है।

१००. चियूंटा (Black ant)

वर्णन—यह एक प्रसिद्ध छोटा सा जानवर है, लघु तथा बृहत भेद से दो प्रकार का है, लघु को च्यूँटी कहते हैं, बृहत को च्यूँटा, मकोड़ा तथा मोरचा कहते हैं, यह भी लाल तथा कृष्ण वर्ण से दो प्रकार का होता है।

गुण तथा उपयोग—इनका तैल बनाया जाता है, जिसे रोग़न मोरचा कहते हैं, (निर्माण विधि—१०० बृहत चयूँटे पकड़ कर सवा तोला रोग़न चम्बेली में डालकर तीन सप्ताह तक धूप में रखें, इसके पश्चात संभाल कर रखें, प्रतिदिन शिश्न पर इसका यथाविधि लेप करें, और ऊपर पानपत्र बांध दे, यह तैल शिश्न को बल देता है, उसमें दृढ़ता, उत्तेजना तथा मोटापन उत्पन्न करता है) चियूंटा को सिरके में पीस कर किलास पर लेप करते हैं, चियूंटो को ज़ैतून तैल में जोश देकर छान कर कर्ण रोगों में भी प्रयोग करते हैं। कर्ण पूय तथा कर्णनाद में उत्तम है।

१०१. चीनी (Kaolinum)

वर्णन—यह एक प्रकार की मिट्टी है, इसके बरतन बनाये जाते हैं, सुची चीनी अत्यन्त श्वेत तथा पारदर्शक होती है।

गुण तथा उपयोग—स्थानीय रक्तरोधक है, यह बारीक पिसी हुई दांतो के लिये मंजन में तथा नेत्र रोगों के लिये सुरमे में अपने लेखन गुण करके डाली जाती है।

ज

१०२. जदवार (Delphinium denudatum)

वर्णन—एक बूटी की जड़ है, जो वत्सनाभ की भांति भारी, कुछ कठोर और स्वाद में तिक्त होती है—वर्ण बाहर से मिटियाला और भीतर से बनफ़शी होता है, यह पाँच प्रकार की है, परन्तु अधिकतया औषध रूप में जदवार खताई उपयोग में लाई जाती है, जो कि पर्वतीय देश खता में बहुत उत्पन्न होती है, यह यदि चखी जाये तो पहिले किंचित मधुर तथा तत्पश्चात् तिक्त स्वाद देती है। इसे हिन्दी में निर्बसी कहते हैं।

गुण तथा उपयोग—अगद, विषनाशक, मनःप्रसादकर, उत्तमांगों को बल्य, शोथविलयन, प्रमाथी, दोषपाचक, स्तम्भक, मूत्रल, अश्मरी भेदक, पीड़ा शामक, लेखन, ज्वर नाशक, वात कफ़ नाशक तथा विषनाशक होने के कारण सर्प तथा वृश्चिक आदि के दंश पर इसका लेप भी करते हैं, और भीतर भी प्रयोग करते हैं—विसूचका तथा प्लैग में लाभप्रद है, शोथ पर भी इसका लेप उपयोगी है, यह मस्तिष्क रोगों, वातसंस्थान के रोग, कफ़ज रोग, प्रसेक, प्रतिश्याय, अपस्मार, अर्दित, पक्षाघात, वातकम्प, तथा सुप्तिवात आदि में बहुधा प्रयुक्त की जाती है, बालग्रह में विशेष उपयोगी है—बहुत उत्तम और उपयोगी वस्तु है।

१०३. ज़मुरद (Smara gdus)

वर्णन तथा उपयोग—यह एक सबज़ वर्ण का मूल्यवान पाषाण है, यह वर्ण से कई प्रकार का होता है, यह सौमनस्यजनक,

उत्तमांगों को बलप्रद, शोषक, मूत्रल, अश्मरी भेदक और अगद है, अधिकतया हृदय बल्य होने के कारण याकूती में डाला जाता है, ख़फ़कान, रक्तपित्त, आमाशय दुर्बलता, यकृत दुर्बलता, जलोदर, वृक्क दुर्बलता, और जीर्ण रक्त अतिसार में घिसकर पिलाया जाता है, इसकी भस्म भी उपरोक्त गुण करती है, प्राकृतिक उष्मा को तथा हृदय और मस्तिष्क को बल देने में अपूर्व है।

१०४. जरजीर बीज

वर्णन—यह एक बूटी है—इसके बीज मूलीबीज के समान होते हैं और यही बीज औषधरूप में प्रयोग किये जाते हैं। फारस तथा खुरासान देश में उत्पन्न होता है।

गुण तथा उपयोग—दीपक, पाचक, वातानुलोमक, वीर्यप्रद, पुंसक शक्ति उतेजक, मूत्रल, आर्तव प्रवर्तक, लेखन तथा त्वचा पर लगाने से त्वचा को अपनी तीक्ष्णता से लाल कर देने वाला है, इसी लिये इसको त्वचा के रोग झाईं, छीप तथा श्वेत कुष्ठ में प्रयोग करते हैं—पुंसक शक्तिवर्धक योगों में भी डालते हैं, वीर्य उतेजक इसका विशेष गुण है।

१०५. ज़रावन्द (**Aristolochia longa**)

वर्णन—यह एक बूटीकी जड़ है, जो नर तथा मादा दो प्रकार की होती है, नर को **जरावन्द तवील**, मादा को **जरावन्द मदहरज** वा **जरावन्द गिरद** कहते हैं—तवील, एक हाथ लम्बी और एक अंगुल मोटी, वर्ण कृष्ण लालिमा लिये हुये, और इसका स्वाद तिक्त होता है। मदहरज गोलाकार, फिन्दक के समान (वा उससे कुच्छ छोटी वा बड़ी) किसी कदर चपटी होती है—इसका वर्ण बाहर से पीला और भीतर से लालिमा लिये हुये होता है। दोनों के गुण समान ही हैं—परन्तु अधिकतया मदहरज ही औषध प्रयोग में आती है।

गुण तथा उपयोग—मूत्रल, आर्तिव-प्रर्वत्तक, कफ विरेचक, कृमि नाशक, लेख़न, पीड़ा शामक, शोथध्न, आदि गुण हैं। तवील

आर्तवावरोध, गर्भ शोधक, तथा गर्भ निःसारक के लिये बाह्य तथा भीतर प्रयोग में आता है। सीने को कफ़ से शुद्ध करने तथा उदरज कृमि नाश के लिये भी प्रयोग किया जाता है, नाड़ी घात, आक्षेप, अपस्मार और अपतानक जैसे रोगों में भी उपयोगी है। मदहरज भी कफ़ज रोगों, आर्त्तव लाने, तथा कफ़ज खांसी में प्रयुक्त होता है—शोथ विलयन तथा पीड़ा शामक होने के कारण वक्ष पीड़ा, जीर्ण सन्धि शूल, गृध्रसी, वातरक्त तथा यकृत और प्लीहा शोथ में भी आन्त्रिक और बाहर लेप रूप में प्रयोग किया जाता है, इसका विशेष गुण कफ विरेचक है।

१०६. ज़रिशक

वर्णन—यह एक कांटेदार पहाड़ी वृक्ष का फल है, जो किशमिश से छोटा, वर्ण में लालिमा लिये कृष्ण वर्ण और स्वाद में अम्ल मधुर होता है, इसके वृक्ष की लकड़ी ही दारूहलदी कहलाती है। इसका घन सत्व रसौत कहलाता है।

गुण तथा उपयोग—पित्तशामक, तथा रक्तजोश शामक, आमाशय तथा यकृत के पित्तदोष को शान्त करने वाला, संग्राही तथा आमाशय, यकृत को बल देने वाला है। इसे पैत्तिक ज्वरों में तृषा, वमन, मतली को रोकने के लिये जल वा उपयुक्त अर्क में पीस छान कर पिलाते हैं, आमाशय तथा यकृत की उष्मा को नष्ट करने के लिये तथा बल देने के लिये प्रयोग करते हैं, पैत्तिक अतिसार तथा प्रवाहिका में भी इसका उपयोग होता है।

१०७. ज़हर मोहरा (**Serpentine**)

यह एक खनिज पाषाण है, वर्णभेद से इसके कई प्रकार हैं, परन्तु पिलाई लिये हरे रंग का जो ख़ता नामी पर्वतीय देश से आता है, उत्तम होता है।

गुण तथा उपयोग—सौमनस्य जनन, उत्तमांगों को बलप्रद और अग़द माना गया है, हृदय रोग, प्लैग, विसूचिका में अधिकतया प्रयोग किया जाता है, शरीर की रोग रोधक शक्ति को बढ़ाता

है, तथा हृदय को बलवान करता है। इसे फ़ाद ज़हर महदनी भी कहते ह।

१०८. जाऊशीर (Galbanum)

वर्णन--एक वृक्ष का गोंद है, जिसका वर्ण बाहर से हरापन लिये पीला, वा अर्धस्वच्छ नारंजी वर्ण का होता है, भीतर से श्वेत पीलापन लिये, स्वाद तिक्त और खराब होता है, यदि इसे पानी में हल किया जाये तो जल दूध के समान श्वेत हो जाता है, यह ईरान, तुरकस्तान और यूनान से आता है।

गुण तथा उपयोग--उष्णताजनक, शोथविलयन, सारक, कफविरेचक, प्रमाथी, गाढ़े दोषों को पतला करने वाला, उत्तमांगों को बल देने वाला, कफनिःसारक, मूत्रल, आर्तव प्रवर्तक तथा वातानुलोमक है, इसे अधिकतया वातसंस्थान के रोग, मस्तिष्क रोग, अर्दित, पक्षवध, वातकम्प, अपस्मार, बालग्रह, प्रतिश्याय, जलोदर, आमाशय दुर्बलता तथा कफज उदरशूल में प्रयोग किया जाता है, कास, श्वास में कफ को निकालता है, वातानुलोमक होने के कारण आध्मान, वातशूल तथा गर्भाशय शूल में लाभकारी है, लेखन होने के कारण खराब व्रणों में मरहम रूप में प्रयोग किया जाता है, गम्भीर शोथ पर इसका लेप शोथ को विलीन कर देता है।

१०९. जुगनू (Fire fly)

वर्णन--मक्खी समान परों वाला कृमि है, जो रात्री को चमकता है।

गुण तथा उपयोग--जुगनु को शुष्क करके इसका शिर पृथक करके हींग जल के साथ आठ दिन तक पिलाने से वृक्क तथा वस्ति की अश्मरी टूट कर निकल जाती है, मुसब्बर और सफ़ेदा काशग़री के साथ अर्श के मस्सों पर लेप करने से मस्से नष्ट हो जाते हैं, एक नग जुगनु को शुष्क करके बारीक पीस कर गुलाब तैल में मिलाकर टपकाने से कर्ण पूय नष्ट हो जाती है।

११०. जुन्दबदस्तर (Castor fiber)

वर्णन—यह एक ऊद बिलाव समान बीवर नामक जलस्थलचारी चतुष्पद प्राणी के दोनों वृषणों में संचित सूखा हुआ द्रव्य है, जो तिक्त, ऊत्क्लेश कारक, किंचित चरपरा स्वाद वाला, कुछ चिकना, कस्तूरी समान तीव्र गन्ध वाला, हलके भूरे रंग का पदार्थ है, वर्ण के नाते यह पीत, लाल तथा कृष्ण तीन प्रकार का है, परन्तु पीला, सुगन्धित तथा शीघ्र टूट जाने वाला उत्तम है।

गुण तथा उपयोग—शोथविलयन, शोषक, उष्णताकारक, दोष तारल्य कारक, वातनाड़ी बल्य, पीड़ा शामक, वातानुलोमक, मूत्र तथा आर्तव प्रवर्तक तथा शीतल विष नाशक है। लेप करने से शोथ को लीन करता है, शरीर तथा त्वचा में उष्णता पहुंचाता है, और उत्तेजना उत्पन्न करता है। इस लिये शिश्न शिथिलता में इसका तिल्ला किया जाता है, वातनाड़ी दुर्बलता, नाड़ी तथा संधिशूल, वातकम्प, सुप्तिवात, अर्दित, पक्षाघात, आमवात तथा बालग्रह में विशेषतया प्रयोग किया जाता है।

१११. जुफ़त बलूत

वर्णन—यह बलूत नामी वृक्ष के बाहरी छिलके के नीचे उस की गिरी से चिमटा हुआ एक बारीक छिलका होता है, इसे जुफत बलूत कहते हैं।

गुण तथा उपयोग—संग्राही, शोषक, रक्त स्तम्भक,—इन गुणों करके अतिसार, रक्त अतिसार आन्त्र व्रण, मूत्र अतिसार, रक्तप्रदर में इसका उपयोग होता है, ताज़े व्रणों को शुष्क करने तथा रक्त को बन्द करने के लिये भी लेप तथा धूड़े के रूप में यह प्रयोग किया जाता है।

११२. जुफत रूमी

वर्णन—यह सरू वृक्ष की गोंद है।

गुण तथा उपयोग—शोथविलयन, बल्य, अर्दित, अर्धांग, गृध्रसी, संधिशूल में लाभप्रद है, गाढ़े दोषों को पकाती है, कफ-

स्रावी होने के कारण कास, श्वास म भी लाभप्रद है, गर्भाशय की कठिन शोथ में इसका लेप भी किया जाता है। बल्य होने के कारण शिश्न को मोटा करने के लिये तथा उत्तेजना उत्पन्न करने के लिये तिल्ला रूप में इसका प्रयोग किया जाता है।

११३. जूफ़ा (**Hyssopus officinalis**)

वर्णन—जूफा एक बूटी है, जो पृथ्वी पर फैली होती है, इसके पत्र सुगन्धित और उनका स्वाद तिक्त होता है, प्रत्येक शाखा के जोड़ पर पीतवर्ण का फूल होता है, शाम देश इसका उत्पत्ति स्थान है।

गुण तथा उपयोग—कफनाशक, शोथविलयन, वातानुलोमक, लेखन, उदरकृमि नाशक, प्रमाथी और विशेषतया खांसी तथा शुष्क कास में लाभकारी है। इस लिये श्वास, कफज कास, श्वसनक ज्वर, प्रसेक, प्रतिश्याय में विशेष करके प्रयोग किया जाता है—शोथ में इसका लेप करते हैं।

११४. जोज़ जन्दम

वर्णन—यह एक श्वेत पीतता लिये हुये वस्तु है, जो पथरों पर जमती है।

गुण तथा उपयोग—वाजीकर, शरीर को मोटा करने वाला, अश्मरीघ्न तथा उत्तेजना नाशक है।

११५. जोज़लसर

वर्णन—यह प्रसिद्ध सरू वृक्ष के फल हैं, जो औषध रूप में प्रयोग किये जाते हैं।

गुण तथा उपयोग—संग्राही, शोषक, तथा रक्त स्तम्भक हैं, वीर्यस्राव तथा अतिसार में इनका चूर्ण लाभप्रद है, श्वेत प्रदर, रक्त प्रदर, मूत्रातिसार में भी प्रयोग किये जाते हैं।

११६. जंगार (Cupri subacetas)

वर्णन—हलके सबज़ रंग का चूर्ण है—जो ताम्र से तैयार किया जाता है इसके दो भेद हैं, खनिज जिसे ज़ाहने फिरंग भी कहते हैं, और दूसरा कृत्रिम ।

गुण तथा उपयोग—आग्नेय, व्रणकारक, व्रणलेखन, शोषक, गन्दे व्रणों में मरहम में मिला कर उपयोग किया जाता है—उत्सन्न और दूषित मांस तथा पूय को नष्ट करता है, नेत्र रोगों में जाला, शुक्ल (फूला), दृष्टिमांद्य, नेत्रव्रण में अन्य औषध के साथ अंजन रूप में उपयोग किया जाता है ।

(त)

११७. तरंज (उतरज, बिजौरा निम्बू)

(N. O. Aurantiaceae)

वर्णन—एक प्रकार का निंबू है, जिसका वर्ण पीला लालिमा लिये और सुगन्धित होता है । हमाज़ अतरज—(वह भाग जो बीजों के साथ लिपटा हुआ होता है)।

गुण तथा उपयोग—संग्राही, पित्तशामक, रक्त शामक, आमाशय तथा यकृत बल्य, हृदय बल्य तथा लेखन है, यह पित्तज अतिसार, पित्त तथा रक्त की उग्रता, मतली, वमन में प्रयोग किया जाता है, इससे बनाया हुआ मुरब्बा पित्तज खफ़कान तथा आमाशय, यकृत को बल देने के लियें प्रयोग किया जाता है । इसके ऊपर का छिलका जिसे पोस्त उतरज कहते हैं, लालिमा लिये पीत होता है और सुगन्धित होता है, यह उत्तमांगों को बल देने वाला, आमाशय बल्य, वमन नाशक, वातानुलोमक तथा दीपक पाचक है, हृदय, मस्तिष्क तथा यकृत, आमाशय को बल देने के लिये प्रयोग करते हैं, विसूचिका में वमन तथा मतली को शान्त करता है ।

बीज—सनोबरी शकल के श्वेत वर्ण के होते हैं, इनके भीतर से श्वेत गिरी निकलती है, जिसका स्वाद कटु होता है, यह शोथघ्न,

आर्तव प्रवाही तथा विष नाशक है, बिच्छू के दंश स्थान पर इनका लेप लगाना विषनाशक है।

११८. तरबूजबीज (**Citrullus vulgaris**)

वर्णन—प्रसिद्ध फल के बीज हैं, फल की गिरी मधुर होती है।

गुण तथा उपयोग—इस फल का निचोड़ा हुआ पानी शीतल, पित्त तथा उष्मा शामक, मूत्रल, तथा चित को शान्त करने वाला है, पैत्तिक ज्वर, मूत्रदाह, पूयमेह तथा कामला और वृक्क अश्मरी में उपयोगी है—इसके बीज भी शीतल स्निग्ध, पित्त तथा रक्तदोष शामक, मूत्रल तथा उर मार्दवकर हैं, शरीर षोषक है, पित्तज उल्वणता तथा रक्त उग्रता, तृषा, आमाशय प्रदाह, उर शुष्कता, फुफ्फुस रूक्षता, पित्तज कास, रक्तष्ठीवन और पित्तज ज्वरों में इनका शीरा निकाल कर दिया जाता है, मस्तिष्क रूक्षता तथा अनिद्रा में उपयोगी है, मूत्रल होने के कारण—मूत्रजलन, पूयमेह तथा मूत्रावरोध में भी प्रयोग किये जाते हैं।

११९. तारपीन तैल (**Turpintine oil**)

वर्णन—यह सनोबर के समान एक वृक्ष का तैल होता है, इस में एक विशेष प्रकार की तीव्र बू आती है।

गुण तथा उपयोग—इस का बाह्य प्रयोग त्वचा संक्षोभक और खराश उत्पन्न करता है, और खराश के पश्चात शामक तथा सुप्तिकर गुण करता है, अधिक मात्रा में प्रयोग करने से छाले डाल देता है, और त्वचा को जख़मी कर देता है। दुर्गन्धित व्रणों पर टपकाने से व्रण जनित कृमि का नाश करता है, नासा कृमि में भी उत्तम कार्य करता है, भीतर प्रयोग करने से आमाशय तथा आन्त्र में उत्तेजना उत्पन्न करता है, वातानुलोमक तथा उदर कृमि नाशक है, अधिक मात्रा में प्रयोग करने से दस्तों में खून आने लगता है, परन्तु थोड़ी मात्रा में रक्त स्तम्भक है, दुर्गन्धित कफ़ को शुद्ध करता है, तथा

कफ़ को ख़ारज करता है, मूत्रल है, परन्तु अधिकमात्रा में इसे प्रयोग नहीं करना चाहिये, इसे निमोनीया, संध्रि शोथ, कटिशूल आदि में कर्पूर के साथ मिला कर मालिश किया जाता है, एरण्ड तैल में मिला कर उदर कृमिनाश के लिये प्रयोग किया जाता है, मूत्र में ख़ून आना, ख़ून की उलटी आने में थोड़ी मात्रा में दिया जाता है, पुरानी कास निमोनीया तथा क्षय में भी इस उबलते जल में डाल कर इस के वाष्प सुंघाये जाते हैं, उदर शूल में भी उदर पर इसी तैल तारपीन मिले उबलते जल में कपड़ा भिगो कर सेक करते हैं।

१२०. तुख़म तेरातजीक

यह जरजीर बीज का ही दूसरा नाम है, इस का वर्णन ज प्रकरण में जरजीर के वर्णन में देख लें।।

१२१. तुखम नील (**Indigofera tinctoria**)

वर्णन—भारतवर्ष में बंगाल, सिंध, अवध, मद्रास और बम्बई इसका उत्पत्ति स्थान है, इसका पौदा २–३ फुट ऊँचा, सरल, मृदु तथा लोम युक्त होता है, औषध रूप में इसके बीज काम में आते हैं। इनका प्रधान गुण लेखन है—इस गुण करके इसे मोतिया बिन्दु और फोले में सुरमा के समान प्रयोग किया जाता हैं, किलास छीप, झाईं, दद्रु आदि त्वचा के रोगों में भी इसका उपयोग होता है। इसके पत्रों से खिजाब बनाया जाता है।

१२२. तुख़म बालंग (**N. O. Labiatae**)

वर्णन—रेहां की जाति की एक बूटी है, इस के बीज भी रेहां की तरह हैं, परन्तु उन से कुछ दीर्घ होते हैं, यही बीज औषध रूप में काम आते हैं। भारतवर्ष में उत्पन्न होते हैं। तुखंम मलंगा भी इन बीज का ही नाम है।

गुण तथा उपयोग—सौमनस्यजनक, हृदयबल्य, किंचित संग्राही, इस लिये ख़फ़क़ान, भ्रम, और हृदय दौर्बल्यता में विशेषतया प्रयोग किये जाते हैं, संग्राही तथा पिच्छिल होने के कारण रक्त अतिसार, मरोड़, प्रवाहिका में भी प्रयोग किये जाते हैं।

१२३. तुख़्म मवीज़

वर्णन तथा उपयोग—यह मुनक्का के बीज हैं, जो इसमें से निकाल कर उपयोग में लाये जाते हैं, यह संग्राही, आमाशय तथा आन्त्र को बल देने वाले हैं, इनका पृथक वा अन्य औषध के साथ जल वा अर्क में शीरा निकाल कर अतिसार में प्रयोग करते हैं, और यह आमाशय तथा आन्त्र विकार जनित अतिसार को बन्द करने में उपयोगी है।

१२४. तुख़्म सरवाली (Celosia argentea)

वर्णन—यह ज्वार, बाजरा की खेती में उत्पन्न होती है, इसका क्षुप एक वा १॥ गज ऊँचा होता है, इसकी शाखायें सबज लालिमा लिये हुये और चिकनी होती हैं, पत्र भी चिकने तथा किनारे से लाल होते हैं, इसमें सनबूरी आकार के सुन्दर गोशे लगते हैं। जो मृदु तथा गुलाबी श्वेतता लिये हुये वर्ण के होते हैं—इनमें कृष्ण वर्ण, चमकीले, चपटे छोटे, २ बीज निकलते हैं, औषध में यही प्रयोग में आते हैं। भारत ही इसका उत्पत्ति स्थान है।

गुण तथा उपयोग—वीर्य को गाढ़ा करने वाले, संग्राही, शरीर बल्य और पित्तनाशक। वीर्य को गाढ़ा करने के गुण के हेतु प्रमेह, शीघ्रपतन तथा वीर्य के पतलेपन के नाशकारक औषध में मिला कर वा पृथक प्रयोग किये जाते हैं, संग्राही होने से रक्त प्रदर, अर्श, मधुमेह, मूत्रातिसार में भी प्रयोग किये जाते हैं। प्रमेह में विशेष उपयोगी हैं।

१२५. तुख़म स्पन्दान

वर्णन—यह एक बूटी के बीज हैं, जो श्वेत पीतता लिये हुये वर्ण के तथा स्वाद में तीक्ष्णता होती है

गुण तथा उपयोग—कफशोषक, क्षुधावर्धक, मूत्रल तथा आर्त्तवजनक, उदरकृमिनाशक, गर्भस्रावक, वाजीकर, लेखन, विस्फोटक तथा शोथविलयन कर्ता हैं। कफशोषक होने के कारण

श्वास तथा कास में प्रयोग करते हैं, आमाशय, आन्त्र तथा पुंसक शक्ति क्षीणता में भी उपयोग होता है, श्वेत कुष्ठ, किलास, व्यंग आदि को नष्ट करने तथा शोथ को विलींन करने के लिये इसका लेप करते हैं।

१२६. तुख्म हमाज़ (**Rumex Vesicarius**)

चोका एक प्रकार का घास है जिसमें छोटे २ कृष्ण वर्ण के चमकदार और कुछ लालिमा लिये त्रिकोणाकार बीज लगते हैं, यही औषध रूप में काम आते हैं।

गुण तथा उपयोग—संग्राही, चिपकने वाला, उष्मा शामक, पित्तोल्बणता, पित्तज ख़फ़कान, कामला, आमाशयप्रदाह, तथा मूत्रनाली प्रदाह को शान्त करने के लिये प्रयोग किया जाता है, इसे भूनकर वा बिना भूने अतिसार रोकने, आन्त्रव्रण तथा मरोड़ आदि नष्ट करने के लिये अन्य पिच्छिल बीजों सहित (इसपगोल आदि) प्रयोग कराया जाता है।

१२७. तुरमुस (**Lupinus albus**)

वर्णन—यह एक पौदे के बीज हैं, जो बाकला समान चपटे तथा गोलाकार और स्वाद में तिक्त होते हैं, इसका उत्पतिस्थान मिश्र देश है।

गुण तथा उपयोग—शोथविलयन, लेखन, मूत्रल, आर्तव प्रवर्तक, उदरकृमि नाशक, विशेष गुण शोथनाशक तथा उदर-कृमिनाशक है, आर्तवावरोध में भी प्रयोग करते हैं, व्यंग तथा किलास को नाश करने के लिये और औषधियों के साथ मुख पर इसका पतला लेप किया जाता है। शोथ पर इसका लेप लाभप्रद है।

१२८. तुरंजबीन (यवास शर्करा)

वर्णन—यह यवासा का गाढ़ा द्रव है, जो निर्यास के समान उसके पत्र तथा शाखाओं पर स्रावित होकर जम जाता है,

भूरे २ गोल रंग के दाने जिनका स्वाद मधुर होता है, यह अधिक कर खुरासान देश में पैदा होती है, झाऊ के वृक्ष पर जो तुरंजबीन जमती है उसको गज़ानगबीन कहते हैं।

गुण तथा उपयोग—सारक, पित्त विरेचक, कफ स्रावक, वाजीकर तथा शरीर पोषक है, सारक तथा मधुर होने के कारण छोटे बालकों को विरेचन देने के लिये उत्तम औषध है, वीर्य प्रद तथा शरीर की पुष्टि करती है।

१२९. तूत सियाह (**Morus indica**)

वर्णन तथा उपयोग—यह एक वृक्ष का प्रसिद्ध फल है, इस वृक्ष की शाखायें लम्बी २ और लचकदार होती हैं, पत्र पान के समान परन्तु खुरदरे और दनदानेदार होते हैं, फल तीन उंगुल से पांच उंगुल तक लम्बा होता है, और यही फल औषध रूप में प्रयोग किया जाता है, यह फल दो प्रकार का होता है, श्वेत तथा दूसरा काला लालिमा युक्त और इसे तूत सियाह वा तूत शामी कहते हैं, औषध रूप में अधिकतया काला लिया जाता है।

गुण तथा उपयोग—शीतल, संग्राही, मृदुकर, सुद्धों को निकालने वाला, रक्त की उष्मा को शान्त करने वाला, पित्तनाशक, कण्ठ तथा स्वरयन्त्र की पित्तज शोथ को विलयन करने वाला, इसकी जड़ की छाल उदर कृमि नाशक, शोथघ्न होने से कण्ठ पीड़ा तथा शोथ, रोहणी, जिह्वा मूल शोथ, मुखपाक तथा मुख व्रण में अत्यन्त उत्तम है, इन रोगों में इसका स्वरस निकाल कर पिलाया जाता है, वा इस स्वरस में अन्य औषध मिला कर इसके ग़रारे कराये जाते हैं, वहां के दोषों को नष्ट करता है, शीतल होने के कारण तृष्णा नाशक है, और रक्त की तेजी को शान्त करता है, इसके पत्र और मूल के क्वाथ से ग़रारे कराना दंत पीड़ा को भी लाभ प्रद है, और इसके पिलाने से उदर कृमि का नाश होता है।

१३०. तेलनी मक्खी (जरारीह) (Mylabris chicorii)

वर्णन—यह भँवरे की किसम की एक मक्खी है जिसके कृष्ण वर्ण के दो लम्बे पर होते हैं, और उन परों पर नारंजी वर्ण की दो रेखायें होती हैं और परों की जड़ में एक बड़ा नारंजी वर्ण का बिन्दु होता है, इन बड़े परों के नीचे झिल्ली के समान दो पर और होते हैं, जिनका वर्ण भूरा होता है। वर्ण भेद से यह कई प्रकार की होती है।

गुण तथा उपयोग—विस्फोटक, मूत्रल, वाजीकर, त्वचा को जलाने वाली है, शिश्न दुर्बलता को नष्ट करने के लिये रोग़न बलसान वा तिल तैल में मिला कर इसका तिल्ला किया जाता है तथा कतिपय तिल्ला में यह डाला जाता है, रक्तपरिभ्रमण क्रिया तीव्र होकर शिश्न पुष्ट होता है, इसी गुण करके शिर के बालों को बढ़ाने वाले तैलों में भी इसका मिश्रण किया जाता है, इसका आन्त्रिक उपयोग विस्फोटक होने के कारण बहुत देख भाल करके करना चाहिये।

१३१. तेवाज ख़ताई

वर्णन—इन्द्र जौ की छाल को कहते हैं, ज़िसके संग्राही गुण तथा उपयोग से वैद्य भली भांति परिचित हैं ॥

१३२. तोदरी (Lepidium Iberis)

वर्णन—यह एक कंटीली क्षुद्र बनस्पति के फलियों के बीज हैं—जो मसूरबीज से छोटे तथा चपटे होते हैं। तोदरी वर्ण के नाते तीन प्रकार की होती है, लाल, श्वेत तथा पीली। तोदरी श्वेत का बीज बाकी दोनों वर्ण के बीज से किंचित बड़ा तथा चपटा होता है, पीत तोदरी गुण में उत्तम है। उत्पत्ति स्थान भारत तथा ईरान है।

गुण तथा उपयोग—वाजीकर, शुक्रप्रद, दुग्धजनन, उष्णता–कारक, दोषों को सूक्ष्म करने वाला, कफ शोषक तथा निःसारक,

आमाशय बल्य, शरीर पोषक, इसका लेप शोथनाशक है, इसका विशेष गुण शुक्रप्रद तथा कफ निःसारक है। वीर्यक्षीणता तथा वीर्य के पतलेपन में पृथक तथा अन्य औषध में मिला कर चूर्ण वा अवलेह रूप में दिया जाता है। इसका अवलेह कास श्वास में भी प्रयुक्त होता है।

द

१३३. दमुल ख़वैयन (**Dracaena Cinnabari**)

वर्णन—इसे हीरा दोखी, ख़ूनख़राबा वा ख़ून सियाशों कहते हैं, यह एक वृक्ष का गोंद है जो निलाई लिये हुये लाल रंग का होता है।

गुण तथा उपयोग—प्रबल संग्राही, रक्त स्तम्भक, शोषक, रक्त अतिसार, रक्तप्रदर, रक्तष्ठीवन, रक्त अर्श में इस का उपयोग विशेषतया किया जाता है, व्रण का रक्त रोकने के लिये इसके बारीक चूर्ण का धूड़ा डाला जाता है।

१३४. दरमना तुर्की (**Artimisia Stechmaniana**)

वर्णन—यह एक बूटी है, जो सोये बूटी समान ऊंचा तथा पुष्प अफसनतीन रूमी के समान सुगन्धित तथा स्वाद में किंचित तीक्ष्ण और तिक्त होता है। पत्र छोटे २ मृदु, कोमल और बीज कसूस-बीज समान परन्तु किंचित बड़े होते हैं।

गुण तथा उपयोग—शोथविलयन, व्रणशोषक, विरेचक, मूत्र, आर्तव प्रवर्त्तक, वायु तथा कफ़नाशक, मिश्रित तथा जीर्णज्वर नाशक, परन्तु इसका विशेष गुण उदर कृमि (गण्डूपद कृमि) नाशक है। शोथघ्न और वातनाशक है—कफ़ज गाढ़े शोथ पर इसका लेप करते हैं, इस को जलाकर रोग़न जैतून में मिला कर इन्द्रलुप्त पर लगाते हैं, और शिर के बालों को शीघ्र उत्पन्न करने के लिये भी इसका लेप करते हैं, आमाशय शोथ, जलोदर तथा कृमि नष्ट करने के लिये इसका क्वाथ करके पिलाते हैं॥

१३५. दरूनज अकरबी (**Doronicum Pardalianches**)

वर्णन—बिच्छू के समान छोटी ग्रंथिल कठोर जड़ होती है, जो बाहर से मिटयाली और भीतर से श्वेत होती है, इसका उत्पत्ति स्थान शाम तथा तबरस्तान है ।

गुण तथा उपयोग—हृदयबल्य तथा प्रसन्न करने वाली, आमाशय तथा यकृतबल्य, कफ़ तथा वातविलयन, गाढ़े वातदोष का अनुलोमक, अवसादक तथा गर्भाशय पीड़ा शामक, गर्भरक्षक तथा विष नाशक है। हृदय बलकारक होने के कारण हृदय बलप्रद योगों में डाली जाती है, फ़ालज, अर्दित, उदरविकारजनित उन्माद, वात उदरशूल, तथा वातज गर्भाशय शूल में उपयोग किया जाता है। गर्भ की रक्षा के लिये भी इसका प्रयोग सफलता से किया जाता है, अगद होने के कारण प्लैग तथा बिच्छूदंश पर भी इसका प्रयोग होता है।

१३६. दारचिना (**Hydrargyri Perchloridum**)

वर्णन तथा उपयोग—यह पारद तथा संखिया का मिश्रण है, जो श्वेत भारी और चमकदार होता है, यह मृदुकर, रक्तशोधक, व्रण शोषक तथा दुर्गन्धनाशक है, इसका जौहर उड़ाकर रक्त शोधक तथा व्रण शोषक होने के कारण आतशक में प्रयोग करते हैं, मरहमों में इन्हीं गुणों के कारण डाला जाता है।

१३७. दूकू (**Peucedanum grande**)

वर्णन—यह जंगली गाजर के बीज हैं, जो अजवायन के समान परन्तु उससे छोटे तथा स्वाद में तीक्ष्ण होते हैं, इसकी जड़ उंगली के समान मोटी और स्वाद में गाजर के समान होती है। इसके बीज औषधरूप में काम आते हैं।

गुण तथा उपयोग—शोथ तथा कफ़ नाशक, भेदक, कफ़शोषक, आमाशयबल्य तथा वाजीकर, वातानुलोमक, मूत्र तथा आर्तव प्रवर्त्तक, वृक्क, बस्ति अश्मरी भेदक, स्वेदल तथा उदरकृमि नाशक

हैं। विशेष करके मूत्र तथा आर्तव प्रवाहण करने के लिये तथा वृक्क, बस्तिगत अश्मरी के लिये प्रयोग किया जाता है, वातानुलोमक होने के कारण यकृतावरोध, वातज जलोदर तथा कफ़ नाशक होने से उर को कफ से शुद्ध करने के लिये भी इसका उपयोग किया जाता है।

न

१३८. नगन्द बाबरी (**Orthosiphon pallidus**)

वर्णन—यह रैहाँ की जाति की बूटी है, जो एक हाथ ऊंची होती है, इसके पत्र पोदीनापत्र समान तथा पुष्प तुलसीपुष्प समान होते हैं।

गुण तथा उपयोग—रक्त शोधक, अगद, शोथघ्न, चौथीया ज्वर नाशक, अधिकतया रक्तदुष्टि, फोड़े, फुंसी, कुष्ठ, दद्रु तथा अन्य रक्त तथा चर्म रोग में प्रयोग करते हैं, इसके अधिक देर तक प्रयोग करने से किलास जैसा दुष्ट रोग नष्ट हो जाता है।

१३९. नारजील दरयाई (**Lodoicea Seychellarum**)

वर्णन—रूप में यह हिन्दी नारियल (खोपा) के समान है, परन्तु उससे अधिक कठोर और मोटा होता है, यह एक वृक्ष का फल है।

गुण तथा उपयोग—वात तथा कफ़ज्वर नाशक, प्राकृतिक शरीर उष्मा उत्तेजक, विसूचिकानाशक तथा विषनाशक। इसे अधिकतया विसूचिका में गुलाब जल के साथ घिस कर पिलाते हैं, जब तक उदर में विसूचिका की विष होगी, वमन आती रहेगी, विष समाप्ति पर वमन बन्द हो जायगी, तृषा को कम करता है, ज्वाहर मोहरा में प्राकृतिक उष्मा उत्तेजक होने के कारण इसे डाला जाता है।

१४०. नारदीन

वर्णन—इसे सम्बल रूमी भी कहते हैं, यह एक फूलदार वृक्ष है।

गुण तथा उपयोग—शोथघ्न, मूत्रल, अवरोधनाशक तथा उष्णवीर्य है, आमाशयशोथ, प्लीहाशोथ तथा यकृतशोथ में उपकारी है, वृक्क तथा बस्तिशूल नाशक है और मूत्र खोलकर लाता है, मूत्रावरोध तथा कामला में लाभकारी है ।

१४१. नारमुशक (**Mesua Ferrea**)

वर्णन—इसे नागकेशर भी कहते हैं, यह एक बड़ा वृक्ष है, इस के पत्र अमरूद के पत्तों के समान और पुष्प सफ़ेद ज़रदी लिये हुये सुगन्धित होता है, इस फूल को ही नागकेशर कहते हैं,

गुण तथा उपयोग—संग्राही, शोषक, सौमनस्यजनक, हृदय यकृत तथा आन्त्र को बल देने वाला है, वाजिकर है, इसे अधिकतया हृदय तथा मस्तिष्क बल्य योगों में डाला जाता है, अर्श का रक्त बन्द करने के लिये भी इस का सफलता से प्रयोग होता है ।

प

१४२. पनीर माया

वर्णन—किसी चतुर्पाद जानवर के बच्चे को प्रसवोपरान्त उसी समय वध करके उसका दूध सहित आमाशय निकाल कर सुखा लेते हैं । इसे पनीरमाया कहते हैं और औषध रूप में काम में आता है । ऊंट के पनीरमाया को पनीरमाया शुत्र अहराबी कहते ह ।

गुण तथा उपयोग—प्रत्येक पशु के पनीरमाया के पृथक् २ गुण हैं, परन्तु सर्वसाधारणतया यह जमे हुये रक्त को पिघलाता है, प्रत्येक अंग तथा आमाशय के जमे हुये रक्त को पिघलाता है । बल्य, मनः प्रसादकर, संग्राही—संग्राही होने के कारण अतिसार में प्रयुक्त करते हैं, इसमें वाजीकर गुण है, परन्तु शुत्रमाया अहराबी में यह गुण विशेष करके हैं, इस लिये इस कार्य के लिये पृथक् वा अन्य योग्य औषध के साथ इसका प्रयोग करते हैं ।

१४३. पपीता (Ignatia Amara)

वर्णन—यह कुचिला जातीय वृक्ष के प्रसिद्ध बीज हैं। जो त्रिकोण आकार के बाहर से किञ्चित भूरे तथा कालिमा युक्त परन्तु भीतर से अर्धस्वच्छ होते हैं। कुचिले की भांति अत्यन्त कठोर तथा तिक्त होते हैं। इसका वृक्ष अमरूद से बड़ा होता है, उत्पत्ति स्थान—फ़िलापाईन के जज़ीरे, और कोचीन चाईना है।

गुण तथा उपयोग—सर्वप्रकार के विष का नाशक, शोथघ्न, कफस्रावक, वातानुलोमक, आमाशय, आन्त्रशूल शामक, वमन तथा अतिसार नाशक, आर्तव प्रवर्तक, वाजीकर तथा उष्णता कारक हैं। विषनाशक तथा वमन अतिसार नाशक होने के कारण विसूचिका में अत्यन्त उपयोगी हैं, आमाशय, आन्त्रशूल, कफ़ज कास, श्वास, जलोदर, वातज पीड़ा, अर्श, संधिशूल, पक्षवध में प्रयोग किया जाता है। इसका तैल (तिल तैल में बना) मर्दन करने से पक्षघात, खाज तथा सुप्तिवात में उपयोगी है, विषज प्राणियों के दंश स्थान पर घिस कर लगाने से विष तथा शोथ दोनों को नष्ट करता है।

१४४. प्याज़ जङ्गली (हन्सल, असकील)
(Urginea indica)

वर्णन—जंगली प्याज़ भी सामान्य प्याज़ के समान होता है, परन्तु इसके पत्र प्याज़ के पत्रों से अधिक बड़े तथा चौड़े होते हैं, स्वाद तिक्त होता है।

गुण तथा उपयोग—शोथविलयन, दोषपाचक, विस्फोटक, रक्त आकर्षणकर्ता, वाजीकर, विषनाशक, मूत्र, आर्तव प्रवाही, कफ़शोषक, उदरकृमि नाशक, साधारण प्याज़ से यह अधिक गुणप्रद है, विशेषतया मूत्रल तथा कफ़स्रावक है, जलोदर और खांसी में अधिकतया प्रयोग होता है, चक्षुष्य तथा कामला नाशक है।

१४५. प्याज़ नरगस

वर्णन—नरगस एक बूटी है जिसका पुष्प सुन्दर तथा सुगन्धित होता है, पत्र तथा मूल प्याज़ के समान होता है, इसका मूल जिसे प्याज़ नरगस कहते हैं उपयोग में आता है।

गुण तथा उपयोग—शोथविलयन, लेखन, शोषक, रक्त आकर्षणकर्ता, गर्भस्रावी तथा उदरकृमि नाशक है, शोथनाशक होने के कारण फोड़े आदि की शोथ नष्ट करने के लिये इसका लेप किया जाता है, लेखन होने से झाईं, छीप और गंज पर लेप करते हैं, तरल दोष शोषक तथा रक्तपरिभ्रमणक्रिया वर्धक होने के कारण शिश्न दुर्बलता में तिल्लारूप में अन्य औषध के साथ मिलाकर प्रयोग किया जाता है। इसका क्वाथ गर्भपातक तथा उदरकृमि नाशक है।

१४६. प्याज़बीज (**Allium cepa**)

वर्णन—प्रसिद्ध बीज हैं, रूप में त्रिकोण, वर्ण काला और स्वाद तिक्त होता है।

गुण तथा उपयोग—वाजीकर, लेखन। अधिकतया वाजीकर अवलेह तथा योगों में डाला जाता है, लेखन होने के कारण व्यंग, छीप, झाईं तथा खालित्य पर भी पीस कर इसका लेप लगाते हैं।

१४७. पियारांगा (**Thalictrum Foliolosum**)

वर्णन तथा उपयोग—यह एक ग्रथिल कठोर जड़ है, जो अंगुल समान मोटी और दो हाथ तक लम्बी होती है, वर्ण पीला लालिमायुक्त और स्वाद तिक्त होता है। शामक, शोथघ्न, आमाशय बल्य, कफस्रावक, विसूचिकाहर तथा सर्पविष नाशक है, यह अधिकतया विसूचिका में प्रयोग किया जाता है, शीतजन्य शोथ पर इसका लेप किया जाता है, निमोनिया, कास, श्वास में भी योग्य औषध के साथ इसका प्रयोग करते हैं, सर्प से काटे रोगी को घिस कर पिलाते हैं तथा दंशस्थान पर इसका लेप भी लगाया जाता है।

१४८. पिस्ता (N. O. Anacardiaceae)

वर्णन---एक वृक्ष का प्रसिद्ध फल है, फारस और अफ़गानस्तान इसका उत्पत्ति देश है, इसकी त्वचा को तोड़ने से भीतर से सबज़ वर्ण की गिरी निकलती है, जो मधुर और स्वादिष्ट होती है, इसका छिलका जिसे पोस्त बीरून पिस्ता कहते हैं औषध प्रयोग में आता है, पिस्ते के पत्रों पर विभिन्न आकार तथा वर्ण के कीड़े के घर को पिस्ते का फूल (गुल पिस्ता) कहते हैं, यह भी औषध प्रयोग में आता है।

गुण तथा उपयोग---हृदय तथा मस्तिष्क बल्य, वाजीकर, शरीर पोषक तथा कफ़ नाशक है। पिस्ता गिरी को हृद्य, मेध्य तथा वाजीकरण होने के कारण हृदय, बुद्धिवर्धक तथा वाजीकर योगों में डाला जाता है, वृक्क तथा शारीरक दुर्बलता में उपयोगी है, कफ स्रावक होने के कारण कफ़ज कास में लाभकारी है, गुल पिस्ता (पिस्ते के फूल) कास में गुणदायक हैं, हब्ब गुल पिस्ता इसका प्रसिद्ध योग है। पोस्त बीरून पिस्ता पिस्ता के ऊपर की कठोर त्वचा हैं, यह संग्राही, हृदय, आमाशय बल्य, वमन शामक तथा उत्क्लेश नाशक है, इसे अतिसार को नष्ट करने तथा हृदय, आमाशय और आन्त्र को बल देने के लिये प्रयोग करते हैं, मुखपाक में भी लाभप्रद है, वमन तथा उत्क्लेश नाश के लिये इसका शीत कषाय पिलाते हैं।

१४९. पोस्त अनार (Punica granatum)

वर्णन---अनार के छिलका से तात्पर्य है, इसे नासपाल भी कहते हैं।

गुण तथा उपयोग---शोषक, संग्राही, कण्ठ पित्तज शोथ नाशक, रक्तष्ठीवन अवरोधक। इन गुणों के कारण मसूड़ों के मृदु हो जाने में, दांत हिलने में तथा मुखपाक में मंजन तथा धूड़े के रूप में इसका उपयोग होता है, कण्ठशोथ नष्ट करने के लिये इसके क्वाथ से गंडूष कराया जाता है, रक्तपित्त, रक्तातिसार, रक्तप्रदर, श्वेत-

प्रदर, प्रवाहिका, रक्त अर्श में आवश्यकतानुसार चूर्ण करके खिलाया जाता है, इसके क्वाथ से डूश (उरत्तबस्ति) कराई जाती हैं।

पोस्त बेख अनार (अनार मूल जड़ छाल) यह अनार छाल से अधिक गुणकारी है, यह भी संग्राही, उदर- कृमि नाशक, कण्ठशोथ तथा पीड़ा शामक, अधिक मात्रा में प्रयोग करने से विरेचक, इसका क्वाथ उदरकृमि नाशक (कद्दू दाना कृमि) है, और विशेषतया यह इसी रोग में प्रयुक्त किया जाता है।

१५०. पोस्त बेज़ा मुरग़ (अण्डे का छिलका) (Ovum)

वर्णन—मुरग़ के अण्डे से पीतता तथा सफेदी निकाल कर जो ख़ोल बाकी रहता है वही अण्डा का छिलका कहलाता है। और आगे इसी का गुण वर्णन है।

गुण तथा उपयोग—संग्राही, शोषक, लेखन, प्रमेह, श्वेतप्रदर, मधुमेह, प्रमेह में इसकी भस्म अत्यन्त प्रभावशाली औषध है, इसे जला कर तथा इसकी भस्म नेत्ररोग, शुक्ल में अंजन रूप में प्रयोग की जाती है। नासा में प्रधमन करने से नकसीर में लाभ करती है।

१५१. पोस्त संगदाना मुरग़ (Inglovies)

वर्णन—संगदान एक अंग है, जो पक्षियों के आमाशय के स्थान पर उसका प्रतिनिधि अंग होता है, मुरग़ का संगदान औषध रूप में अधिकतया प्रयोग किया जाता है।

गुण तथा उपयोग—संग्राही, आमाशय तथा यकृत बल्य। इसे योग्य औषध के साथ, ग्रहणी, जीर्ण संग्रहणी तथा आन्त्रक्षीणता में विशेषतया प्रयोग करते हैं, माजून संगदाना मुरग़ इसका प्रसिद्ध योग है जो आमाशय तथा आन्त्रविकार जनित अतिसार को नष्ट करने के लिये तथा आमाशय को बल देने के लिये प्रयोग की जाती है।

१५२. पंबादाना (Cotton Seeds)

वर्णन तथा उपयोग—इसे बनोला भी कहते हैं, यह कपास के बीज हैं, इस की गिरी निकाल कर प्रयोग की जाती है। यह शरीर पुष्टिकर, वाजीकर, वीर्य तथा दुग्ध उत्पादक, लेखन तथा कफ़नि:सारक है, इस की खीर पका कर पृथक वा अन्य औषध के साथ शरीर को पुष्ट करने, पुँसक शक्ति के लिये तथा वीर्य और दुग्ध उत्पादक हेतु प्रयोग करते हैं; कफ़ स्रावक होने से इसे कास में भी देते हैं।

फ

१५३. फ़रंजमुशक (Ocimum gratissimum)

वर्णन—इसे राम तुलसी भी कहते हैं, और यह रैहां की जाति की एक बूटी है, इसका क्षुप तथा पत्र रैहां से अधिक बड़े होते हैं, और रैहां जैसी सुगन्ध उनमें से आती है, इसके पत्र तथा बीज औषधरूप में प्रयोग किये जाते हैं, भारत तथा ईरान में उत्पन्न होती है।

गुण तथा उपयोग—मनः प्रसादकर तथा हृदय बल्य, प्रमाथी, आमाशय तथा यकृत बल्य, वातानुलोमक, मरोड़ शामक, दुर्गन्ध-नाशक, उदर स्तम्भक, रक्त स्तम्भक तथा शोषक है। हृदय बल्य होने के कारण ख़फ़कान, भ्रम, तथा अन्य हृदय रोगों में उपयुक्त होता है, आमाशय तथा आन्त्ररोगों में उपयोगी है, शीतलता के कारण शिरशूल में लाभप्रद है, विशेषतया मस्तिष्क संशोधक, आमाशय तथा यकृत बल्य है।

१५४. फ़रफ़्यून (Euphorbium)

वर्णन—यह अफ़रीका देश के डण्डा थुहर का जमा हुआ दूध है, जिसका वर्ण पीत, बू तीव्र और स्वाद तीक्ष्ण तथा काटने वाला होता है, जीर्ण होने पर इसका वर्ण लाल तथा गन्धला हो जाता है।

गुण तथा उपयोग—बाह्य उपयोग लेखन तथा जलाने वाला विस्फोटक है, अंगों को उष्णता पहुंचा कर पुष्ट करता है। इसका भीतरी प्रयोग विरेचक है। इसको अधिकतया रोग़न कुठ वा रोग़न बलसान में मिला कर अर्दित, अर्द्धाङ्ग, वातकम्प, सुप्तिवात, संधि-वात आदि पर मर्दन तथा लेप रूप में लगाते हैं, शिश्न को पुष्ट करने के लिये इसको अन्य औषध में मिलाकर तिल्ला करते हैं। और ऊपर के रोगों में इसे विरेचक औषध के रूप में खिलाते हैं, वात संस्थान के रोग तथा कफ़ज रोगों में विशेषतया उपयोगी है।

१५५. फ़ाद ज़हर हेवानी

वर्णन तथा उपयोग—यह एक प्रकार की पत्थरी होती है, जो पहाड़ी बकरे-बन्दर और बाराहसिंघे आदि में इनके दुग्ध उत्पादक अंग में उत्पन्न हो जाया करती है, यह इनके पित्ताशय तथा आन्त्र में भी उत्पन्न होती है, अधिकतया बकरे के भीतर उत्पन्न हुई पथरी को ही उपयोग में लाते हैं। और इसे ही फ़ाद ज़हर हैवानी कहते हैं, इसका वर्ण सबज़ कालिमा लिये वा साफ़ होता है और इसमें प्याज़ के छिलकों के समान परत होते हैं। यह वाजीकर, प्राकृतिक ऊ़ष्माबल्य तथा उत्तमांगों को बल देने वाली है, विसूचिका नाशक है, यह उष्णवीर्य है, इसलिये उष्ण प्रकृति वालों के लिये हानिकर है, सब प्रकार की विषों को नष्ट करती है, दंशस्थान पर धूड़ने पर उस विष को पी लेती है, प्लेगशोथ पर इसका लेप लाभकारी है।

१५६. फ़ालसा (**Grewia asiatica**)

वर्णन—एक बड़े वृक्ष का प्रसिद्ध फल है, जो जंगली बेर समान तथा उससे कुछ छोटा होता है, अपक्व अवस्था में इसका वर्ण सबज़ और स्वाद कसैला और अर्ध अपक्व अवस्था में वर्ण लाल, स्वाद अम्ल, परन्तु पक्व अवस्था में लाल वर्ण किञ्चित् कालिमा लिये हुये और स्वाद अम्ल मधुर होता है, इसके दो भेद हैं।

फालसा शरबती—इसका वृक्ष एक गज वा इससे कुछ अधिक ऊंचा होता है, दूसरा फालसा शक्करी इसका वृक्ष शरबती से बड़ा होता है, भारत में अधिकतया उत्पन्न होता है।

गुण तथा उपयोग—पित्तज उल्बणता नाशक, रक्त की उष्मा तथा उग्रता शामक, उत्क्लेश तथा वमन शामक, संग्राही, पित्तज विकार जनित हृदय, आमाशय तथा यकृत दुर्बलता नाशक, पैत्तिकज्वर शामक, यह पित्तज विकारों के लिये विशेष उपयोगी है, इसका शरबत, पित्तज ज्वर, वमन, अतिसार तथा तृषा और उत्क्लेश में प्रयोग किया जाता है, पोस्त बेख फ़ालसा शक्करी (शक्करी फ़ालसा मूल त्वचा) पूयमेह तथा मूत्र प्रदाह में उत्तम है, हृदय बल्य होने से ख़फ़कान तथा हृदय दुर्बलता में लाभकारी है, मूत्र कृच्छ्रता तथा मूत्र में रक्त जाने में भी उत्तम औषध है, इसके वृक्ष की छाल का शृत शीत कषाय मधुमेह में प्रयोग कराया जाता है।

१५७. फ़ितरा सालीयून (**Apium petroselinum**)

वर्णन—इसे युनानी वैद्य करफ़स कोही (करफ़स पहाड़ी) कहते हैं, इसके बीज जो लम्बे, कृष्ण वर्ण और अजवायन के समान होते हैं, औषध रूप में उपयोग किये जाते हैं, यह तीक्ष्ण तथा सुगन्धित होते हैं।

गुण तथा उपयोग—उष्णवीर्य, कफ़निःसारक तथा कफ़-नाशक, वातानुलोमक, प्रमाथी, मूत्र तथा आर्तव प्रवर्तक, गर्भ तथा अमरा निःसारक, अश्मरी भेदक तथा वाजीकर हैं। इसलिये कफ़ज कास, श्वास, वक्षपीड़ा, आन्त्रशूल और मरोड़ में उपयोगी है, मूत्रल होने के कारण यकृत, वृक्क, बस्ति तथा गर्भाशय का शोधन करते हैं, मूत्रावरोध तथा आर्तव अवरोध में इसका उपयोग करते हैं। यह गर्भ तथा अमरा का भी निष्कासन करते हैं।

१५८. फिन्दक (**Corylus anellana**)

वर्णन—यह एक वृक्ष का प्रसिद्ध फल है, जो त्रिकोण गोलाई लिये होता है, इसको तोड़ने से बादामगिरी के समान गिरी

निकलती है, जो उसी के समान मधुर तथा स्वादिष्ट होती है, यह गिरी औषध के काम आती है।

गुण तथा उपयोग—वाजीकर, उष्णवीर्य तथा शरीर पोषक है। आन्त्र, मस्तिष्क बल्य, कफ़निःसारक है। वाजीकर तथा शरीर पुष्टिकर योगों में डाला जाता है, वृक्क दुर्बलता में उपयोगी है, मधु में मिलाकर कफ़ तथा प्रतिश्याय में भी उपयोग कराया जाता है।

(ब)

१५९. बकायन (**Melia azedarach**)

वर्णन—यह एक नीम के समान बड़ा वृक्ष होता है, इसके पत्र, पुष्प, और फल सब नीम के समान होते हैं, इसके फल के भीतर चार खाने होते हैं, और हर एक ख़ाने में एक बीज होता है, इसके ऊपर कृष्ण वर्ण की एक झिल्ली होती है, भीतर से गिरी श्वेत वर्ण की होती है, नीम के समान इस वृक्ष के सब अंग स्वाद में तिक्त होते हैं।

गुण तथा उपयोग—रक्तशोधक, पीड़ाशामक, अर्शनाशक, व्रणशोधक तथा शोषक, उदरकृमि नाशक तथा जीर्ण ज्वर नाशक गुण इसमें विद्यमान है, इसके पत्र और छाल रक्तशोधक होने के कारण रक्तदुष्टि के रोग, कुष्ठ, किलास प्रभृति रोगों में प्रयुक्त की जाती है, इसके बीज की गिरी अर्श रोग की प्रधान औषध है, जीर्ण ज्वर तथा चातुर्थिक ज्वर में बकायन वृक्ष की मध्य की छाल का कासनी बीज सहित क्वाथ करके पिलाते हैं, इसकी मूल छाल का क्वाथ कद्दूदाने तथा केंचवे कृमि का मारक है तथा उन्हें बाहर निकालता है।

१६०. बटेर (**Tetrao Coturnix**)

वर्णन—एक प्रसिद्ध चिड़िया है, इसका मांस पुष्टिकर, उष्णता उत्पन्न करने वाला, वाजीकर तथा शीतल, वात कफ़ रोग,

संधिशूल, अर्दित, अर्धाङ्ग आदि में औषध रूप तथा आहार रूप में प्रयोग की जाती है। शरीर में शक्ति देने वाला तथा बृंहण आहार है।

१६१. बतुम (Pistacia terebinthus)

वर्णन—यह एक बड़े वृक्ष का फल है, जो हरे रंग का होता है इसे हब्बतुलखिजरा कहते हैं—इसके तोड़ने पर इसके भीतर से चपटी सी गिरी निकलती है, जो खाने में स्वादिष्ट होती है, इसे मगज तुखम बतुम कहते हैं—इसकी गोंद को अलकलबतुम कहते हैं—फल, गिरी तथा गोंद औषध में प्रयोग किये जाते हैं।

गुण तथा प्रयोग—वाजीकर, कफ निःसारक, सारक, लेखन तथा मूत्र, आर्तव प्रवर्त्तक हैं, कास, श्वास में उर को कफ से शुद्ध करने के लिये इसे प्रयोग करते हैं, वाजीकर योगों में भी इसे डाला जाता है, लेखन होने के कारण रंग साफ करने के लिये तथा झाईं, छीप आदि नष्ट करने के लिये इसका लेप बना कर मुख पर तथा त्वचा पर लगाया जाता है।

१६२. बनफ़शा (Viola odorata)

वर्णन—यह एक बूटी है, जो नैपाल और काशमीर में बहुत उत्पन्न होती है, इसके पत्र अनारपत्र समान और पुष्प लाजवरदी वर्ण के सुगन्धयुक्त होते है। सर्वांग यह औषधरूप में काम आती है, परन्तु पुष्प अधिकतया प्रयोग में आते हैं।

गुण तथा उपयोग—पित्त शामक, सारक, रक्त उग्रता शामक, कण्ठ तथा उर मृदुकारक, सुप्तिजनक, इसे अधिकतया प्रसेक, प्रतिश्यांय, वातकफ सन्निपात, कास, श्वास में प्रयोग किया जाता है, ज्वरों में विबन्ध नष्ट करने के लिये तथा तृषा शान्त करने के लिये पित्तशामक गुण करके इसका क्वाथ पिलाते हैं, कास, श्वास तथा विबंधनष्ट करने के लिये इसका गुलकन्द तथा शरबत बना कर प्रयोग करते हैं, इसके फूलों को तैल में बसा कर तैल बनाया जाता हैं, जो शिरशूल नाशक तथा निद्राप्रद है।

१६३. बरंजासफ़ (Achillea millefolium)

वर्णन—अफ़सनतीन की भाँति एक बूटी है, इसे बूये मादरान भी कहतें हैं। इसकी शाखायें बारीक, पत्र छोटे २, फूल सोये समान छत्राकार, पीत, श्वेत तथा नीलिमा लिये होते हैं, इस बूटी पर एक चिपकने वाला द्रव्य लगा हुआ होता है।

गुण तथा उपयोग—उष्णताजनक, शोथघ्न, प्रमाथी, मूत्र तथा आर्तव प्रवाही, वृक्क, बस्ति अश्मरीभेदक, ज्वरनाशक, शरीरके भीतरी अंगों की शोथ के लिये उपयोगी है, मूत्र तथा आर्तव अवरोध में इसका क्वाथ लाभकारी है, गंभाशय शोथ को नष्ट करता है, कफ़ज ज्वर जिसमें यकृत भी दूषित हो अत्यन्त उपयोगी है, विशेषतया यह शोथनाशक तथा जीर्णज्वर नाशक है ॥

१६४. बरग तब्त

वर्णन—इसे काश्मीरी पत्र भी कहते हैं, पत्र तेजपात के समान परन्तु उससे बड़े तथा मोटे होते हैं। काशमीर इसका उत्पत्ति स्थान है।

गुण तथा उपयोग—इसका बारीक चूर्ण करके नस्य रूप में शिरशूल, प्रसेक तथा प्रतिश्याय में उपयोग करते हैं।

१६५. बसफाईज (Polypodium vulgare)

वर्णन—एक बूटी की जड़ है, इसका रूप कनखजूरे के समान प्रतीत होता है, वर्ण बाहर से रक्त कालिमा लिये हुये और तोड़ने पर सबज पिस्ते के वर्ण की तरह होता हैं, जीर्ण होने पर भीतर से भी बाहर सा वर्ण हो जाता है, जिसका वर्ण भीतर से पिस्ते के समान सबज हो, वह उत्तम मानी जाती है और उसे बसफ़ाईज फ़स्तकी कहते हैं।

गुण तथा उपयोग—वात कफ़ दोष विरेचक, वातानुलोमक, इन गुणों के कारण इसे कुष्ट, अपस्मार, उन्माद और संधिशूल में प्रयोग कराते हैं, वातानुलोमक होने के कारण यह हृदय को बल देता है, तथा आन्त्रशूल, आध्मान में भी उपयोगी है ॥

१६६. बहमन

(Centaurea behemen & Saliva hemotodes)

वर्णन—छोटी २ शुष्क गाजरें के समान एक बूटी की जड़ें होती हैं। जिनके ऊपर झुर्रियां पड़ी हुई होती हैं, यह रक्त और श्वेत दो प्रकार की होती हैं, फारस, भारतवर्ष तथा खुरासान उत्पति स्थान है।

गुण तथा उपयोग—हृदयबल्य, वाजीकर, वीर्यप्रद, शरीर पुष्टिकर इन गुणों के कारण हृदय, ख़फ़कान नाशक तथा वीर्यप्रद योगों में इन दोनों प्रकार के बहमन को डाला जाता है, शरीर-पोषक तथा वीर्य बल्य इनका विशेष गुण है॥

१६७. बहरोज़ा

वर्णन—यह एक वृक्ष का जमा हुआ दूध समान निर्यास है, जो प्रथम श्वेत रंग का किंचित पतला तथा गाढ़ा होता है, फिर यह शनैःशनैः पीले वर्ण का गाढ़ा हो जाता है, और अन्त में लाल वर्ण का शुष्क हो जाता है—बाज़ार में यह दो प्रकार का मिलता है—शुष्क तथा तर, इसके वृक्ष हिमालय पर बहुत होते हैं।

गुण तथा उपयोग—उष्णताकारक-शोथघ्न, वातानुलोमक, व्रण शोषक, वातकफ रोग नाशक, कफशोषक तथा निःसारक, मूत्र तथा आर्त्तव प्रवाही, गर्भ तथा अमरा निःसारक, कृमिनाशक, इसे अधिकतया सुजाक में प्रयोग करते हैं—व्रणों के लिये मरहमों में डाला जाता है, शोथघ्न होने के कारण कण्ठमाला, गर्भाशय शोथ, में प्रयोग करते हैं—आर्तव अवरोध को नष्ट करने के लिये भी इसका उपयोग होता है।

१६८. बही (N. O. pomea)

वर्णन—एक प्रसिद्ध फल है, अम्ल तथा मधुर दो प्रकार का होता है, इसके बीजों को बहोदाना कहते हैं। ईरान, अफ़गानस्तान, काशमीर इसके उत्पत्तिस्थान हैं।

गुण तथा उपयोग—सौमनस्यजनन, मस्तिष्क तथा हृदय बल्य, आमाशय तथा यकृत बलप्रद, ग्राही तथा मूत्रल है, फल की तरह बही को खाया जाता है, भारी तथा ग्राही होता है. इसका प्रसिद्ध औषध रूप इसका मुरब्बा है, जो पित्तज अतिसार, आमाशय, यकृत की उष्मा तथा हृदय पित्तज खफ़कान में उपयोगी है, प्यास, मतली को भी नष्ट करता है। इसके बीज (बहीदाना) लुआबदार, चिपकने वाले तथा पित्त शामक हैं, इसका लुआब पित्तज प्रतिश्याय, कास, कण्ठ रूक्षता, जिह्वा का दाह, ज्वर सहित रक्तपित, यक्ष्मा, अतिसार, प्रवाहिका तथा उष्ण प्रकृति के ज्वरों में उत्तम लाभकारी औषध है, इसकी गिरी यक्ष्मा कास तथा रक्तष्ठीवन में उपयोगी है।

१६९. बाकला बीज (**Vicia faba**)

वर्णन—बाकला मटर के समान एक प्रकार का बीज है, इस की फली तीन चार अंगुल लम्बी और गोल होती है, इन पर बारीक २ रूई सी होती है, प्रत्येक फली के भीतर ४–५ बीज होते हैं।

गुण तथा उपयोग—इसकी फलियां तथा बीज साग की भांति पकाकर खाये जाते हैं, वातल तथा भारी होते हैं, बीजों की गिरी योग्य औषध में मिलाकर खांसी और श्वास में कफस्राव करने के लिये प्रयोग करते हैं, शोथ में लेप रूप में लगाते हैं, शोथघ्न हैं।

१७०. बादरंजबोया (**Melissa officinalis**)

वर्णन—इसे बिल्ली लोटन भी कहते हैं, इसके पत्र रैहांपत्र के समान होते हैं और बिजौरे निम्बु समान गन्ध होती है, मध्य एशिया, यूरूप, उत्तरि अमरीका तथा फ़ारस इसके उत्पत्ति स्थान हैं।

गुण तथा उपयोग—मनः प्रसादकर, हृदयबल्य, वातदोष-पाचक, रक्तदोष नाशक, सुगन्धित, शोथविलयन तथा उष्णता-जनक, इसे अधिकतया वात कफ़ज रोग, यथा अपस्मार, अर्दित, अर्धाङ्ग और हृदय दुर्बलता में प्रयोग करते हैं, संधिशोथ और स्तन शोथ पर इसका लेप करते हैं।

१७१. बादाम तलख़ (Amygdala amarars)

गुण तथा उपयोग—यह मधुर बादाम के समान ही होता है, इसका स्वाद तिक्त तथा अरुचिकर होता है, इसे विषैला होने के कारण भीतरी औषध रूप में प्रयोग नहीं किया जाता, इसे अधिकतया दाद, झाईं आदि दूर करने तथा मुख वर्ण निखारने के लिये मुख पर लेप किया जाता है, इसका निकाला हुआ तैल कर्णनाद, कर्णशूल के लिये किंचित उष्ण करके डाला जाता है, कर्णकृमि के लिये भी अत्यन्त उत्तम है, यूका को मारने के लिये इसे शिर पर भी लगाते हैं।

१७२. बादावंद (Volutarella divaricata)

वर्णन—एक कांटेदार बूटी है, जिसकी शाखायें श्वेत वर्ण की चौपहल और बीच में ख़ाली होती हैं, पुष्प नीले और बीज कुटज बीज समान परन्तु उससे कुछ गोल होते हैं। स्वाद तिक्त होता है।

गुण तथा उपयोग—सुद्धा निःसारक, मूत्रल, रक्त स्तम्भक, ज्वरनाशक और पीड़ा शामक है, इसको अधिकतया जीर्ण ज्वरों में अन्य उपयोगी औषध के साथ प्रयोग किया जाता है, रक्तष्ठीवन, यकृतशूल, जीर्ण अतिसार तथा यकृत अवरोध में इसका उपयोग होता है, कफज ज्वरों में विशेष उपयोग है।

१७३. बादायान खताई (Illicium Verum)

वर्णन—लाल कालिमायुक्त धूम्र वर्ण के तारे की शकल के क्षुद्र बीज हैं, स्वाद में सौंफ़बीज के समान हैं।

गुण तथा उपयोग—आमाशय बल्य, पाचक, वातानुलोमक और मूत्रल गुण वाले हैं, और इन्हीं गुणों के कारण आमाशय-विकार में प्रयोग किये जाते हैं।

१७४. बादियान जड़ (Foeniculum Vulgare)

वर्णन—सौंफ वृक्ष की जड़ है, इसका वर्ण श्वेत पीतता लिये हुये होता है।

गुण तथा उपयोग—कफ दोष पाचक, मूत्र तथा आर्त्तव प्रवाही होने के कारण इन्हीं रोग में अधिकतया उपयोग होती है।

१७५. बाबूना (Matricaria Chamomilla)

वर्णन—एक बूटी है, इसके पत्र छोटे २ रूई युक्त होते हैं–पुष्प पीत तथा श्वेत होते हैं, इसकी गन्ध तीक्ष्ण और स्वाद तिक्त होता है, पुष्प तथा मूल औषध में प्रयुक्त होते हैं।

गुण तथा उपयोग—आमाशय बल्य, वातानुलोमक, शोथघ्न, मस्तिष्क तथा वातनाड़ी बल्य, मूत्र तथा आर्तव प्रवर्तक, इसे अधिकतया शोथ तथा कठोर शोथ में शोथ को विलीन करने के लिये लेपों में डालते हैं। मूत्र तथा आतर्व को लाने के हेतु इसका आंत्रिक प्रयोग करते हैं तथा इसके क्वाथ से कटिस्नान कराते हैं। मस्तिष्क दुर्बलता, वातरोग, कामला, आमाशय दुर्बलता तथा आमाशयिक वातज शूल और कफ़ज कास में इसका उपयोग होता है।

१७६. बाये खुम्बा (Careya arborea)

वर्णन तथा उपयोग—यह शहतूत के समान एक बड़ा वृक्ष है, इसका फल औषधरूप काम में लाया जाता है, जो भूरा मिटयाले वर्ण का होता है, यह पाचक, सारक, वातानुलोमक तथा आमाशय बल्य है, इसको अधिकतया अमाशय शुद्धी तथा शक्ति देने के लिये बालकों को क्वाथ रूप में देते हैं, वातानुलोमक होने के कारण बालकों के उदरशूल में भी उत्तम है।

१७७. बारतंग (Plantago mojor)

वर्णन—यह एक बूटी है, जिसके पत्र भेढ़ की जिह्वा के समान, और बीज छोटे २ काले व़र्ण रंग के बनफ़शी वर्ण युक्त होते हैं,

इसके पत्र वा इन का फाड़ा हुआ पानी तथा बीज औषध में उपयोग किये जाते हैं।

गुण तथा उपयोग—पत्रों का फाड़ा हुआ तथा छाना हुआ पानी शरीर के आंत्रिक अंगों में से रक्त जाने को लाभप्रद है। इसलिये रक्तष्ठीवन, रक्त अर्श तथा रक्त प्रदर में इसका उपयोग होता है, बीज भी अतिसार, रक्त अतिसार तथा यक्ष्मा अतिसार में प्रयोग किये जाते हैं। दंत तथा कण्ठपीड़ा में इसके क्वाथ से ग़रारे किये जाते हैं, उष्ण शोथ में इसके लेप करने से लाभ होता है।

१७८. बारूद

वर्णन—यह कलमी शोरा, गन्धक तथा कोयला का मिश्रण है।

गुण तथा उपयोग—काटने वाला तथा लेखन, इसके विशेष गुण हैं। इसे तिल तैल में मिलाकर नाड़ीव्रण में भरते हैं, यह दूषित मांस को नष्ट करके व्रण का रोपण शीघ्रता से करता है। दाद पर भी लगाते हैं, रक्त स्तम्भक भी है।

१७९. बावची (**Psoralea corylifolia**)

वर्णन—यह एक बूटी के बीज हैं, जो मसूर समान परन्तु इससे कुछ बड़े, गोल, लम्बूतरे और चिपटे होते हैं, भीतर से श्वेत गिरी निकलती है, स्वाद तिक्त तथा तीक्ष्ण होता है, जो जिह्वा पर लगता है।

गुण तथा उपयोग—रक्तशोधक, सारक, उदरकृमि नाशक, वातानुलोमक, आमाशय बल्य, इसे रक्तशोधक होने के कारण रक्तदोषजनित रोग, कुष्ठ, दद्रू, खाज, व्यंग आदि में बहुधा प्रयोग किया जाता है, किलास, छीप और झाईं पर इसका लेप भी किया जाता है, यदि रक्तदुष्टि के साथ विबन्ध, अर्श तथा क्षुधानाश आदि उपद्रव हों, तो इसके प्रयोग से उक्त उपद्रव भी नष्ट हो जाते हैं। इसे शुद्ध करके प्रयोग करते हैं, इसकी शुद्धि गोमूत्र वा अद्रक रस में एक सप्ताह तक भावित करने से हो जाती है।

१८०. बांस (Bambusa Aurndinacea)

गुण तथा उपयोग—एक प्रसिद्ध वनस्पति है, हम यहां पर इसकी मूल (जड़) का गुण वर्णन करते हैं, यह लेखन, मूत्र तथा आर्त्तव प्रवाही है, इसका क्वाथ प्रयोग किया जाता है। इसको पृथक तथा अन्य औषध के साथ चीचक के दाग़ों पर तथा मुख को सुन्दर करने के लिये लेप करते हैं, इसको जलाकर गंज तथा दाद पर भी लगाते हैं।

१८१. बिच्छू (Scorpion)

वर्णन—एक विख्यात विषैला तथा डंकदार जानवर है, इसके काटने से तीव्र पीड़ा होती है।

गुण तथा उपयोग—इसको जला कर वृक्क तथा मूत्राशय की पथरी को तोड़ने के लिये विशेषतया प्रयोग किया जाता है, इसका तैल बनाकर अर्दित, अर्धाङ्ग और संधिशूल में मर्दन किया जाता है। अर्श के मस्सों पर भी लगाते हैं, सर्पदंशस्थान पर इसे कुचल कर बांधने से विष का प्रभाव नष्ट हो जाता है।

१८२. बीज अस्पस्त

वर्ण तथा उपयोग—यह मोटे तथा पीले वर्ण के बीज हैं, अधिकतया वाज़ीकरण तथा संग्राही होने के कारण यह वाजीकर योगों में डाले जाते हैं, शरीर को मोटा करते हैं, आर्तव प्रवर्तक हैं, अर्दित, पक्षाघात, वातकम्प में भी प्रयोग किये जाते हैं, शुद्ध रक्त उत्पादक हैं—कास तथा उर रूक्षता में भी प्रयोग किये जाते हैं।

१८३. बीजबन्द

वर्णन—इसके बीज प्याजबीज समान त्रिकोण तथा मिटयाला वर्ण के होते हैं, स्वाद फीका और बुरा होता है।

गुण तथा उपयोग—वीर्य पुष्टिकर, स्तम्भक इसके विशेष गुण हैं। प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन; तथा वीर्य तारल्यता में अतीव उपयोगी है।

१८४. बीर बहूटी (Mutella Occidentalis)

वर्णन—फारसी में अरूसक भी कहते हैं, यह एक लाल रंग का रींघने वाला कीट है, वर्षा ऋतु के आरम्भ में पृथ्वी से निकलता है।

गुण तथा उपयोग—वाजीकर, वात नाड़ी बल्य, इसे अधिक- तथा शिश्न दुर्बलता में तिल्ला तथा लेप रूप में उपयोग किया जाता है, भीतर औषध रूप में वाजीकर गुण के लिये दिया जाता है।

१८५. बुरादा हाथीदांत (Ivory)

वर्णन तथा उपयोग—प्रसिद्ध द्रव्य है, हाथी के दांत जो बाहर निकले हुये होते हैं, उनका बारीक चूर्ण कर औषधरूप में प्रयोग करते हैं। इसे मधु के साथ खाने से बुद्धि तीव्र होती है, योग्य औषध के साथ मिला कर देने से रक्तप्रदर तथा रक्त अतिसार में उत्तम कार्य करता है, बंध्या स्त्री को रजोधर्म पश्चात मिश्री के साथ एक सप्ताह तक खिलाने से उसमें गर्भधारण की शक्ति आ जाती है और अधिकतया इसी गुण के लिये प्रयोग किया जाता है,, नेत्ररोगों में और विशेषतया दृष्टिदुर्बलता में उत्तम है।

१८६. बुसद

वर्ण—खोखला, सुराखदार, पाषाणवत कठोर और लालिमा लिये एक द्रव्य है—कई इसे प्रवालमूल कहते हैं, परन्तु कई पृथक पदार्थ मानते हैं।

गुण तथा उपयोग—संग्राही, रक्त स्तम्भक, शोषक, लेखन, हृदय बल्य, शीतल वीर्य होने के कारण रक्तष्ठीवन, रक्तपित्त, रक्तार्श, रक्त अतिसार, आन्त्रव्रण में उपयोगी है, लेखन तथा शोषक होने के कारण दंतमंजनों में भी डाली जाती है, जली हुई लेखन गुण के कारण नेत्ररोग, दृष्टिमांद्य, नेत्र शुक्ल, नेत्र कण्डू यथा पक्ष्मशात में गुण कारक है—व्रण रोपण तथा शोधन के लिये इसका बारीक चूर्ण व्रणों पर डाला जाता है।

१८७. बूरा अरमनी

वर्णन—यह एक प्रकार का लाल वर्ण का लवण है, स्वाद इसका खारी होता है, आरमीना देश में उत्पन्न होने के कारण इसे बूरा अरमनी कहते हैं।

गुण तथा उपयोग—अधिकतया इसे उदररोगों में अजीर्ण, मन्दाग्नि, आध्मान, उदावर्त में प्रयोग किया जाता है, वातानुलोमक होने के कारण उपरोक्त रोगों में लाभप्रद है, आमाशय को बल देता है।

१८८. बेख़ लुफ़ाह (**Atropa balladonna**)

वर्णन—इसे सूची बूटी भी कहते हैं, इसके पत्र धस्तूरपत्रवत होते हैं, इसकी मूल दो आपस में लिपटे मनुष्य की तरह होती है, उस पर बारीक रेशे लगे होते हैं—इसके पत्र तथा मूल औषध प्रयोग मे आती है।

गुण तथा प्रयोग—बाह्य प्रयोग पीड़ा शामक तथा सुप्तता उत्पन्न करने वाला है। त्वचा को रक्तयुक्त करती ह और पित्तज शोथ को विलीन करती है, स्वेद तथा दुग्ध की उत्पति को रोकती है, भीतरी प्रयोग से वात ज्ञान तन्तु के ज्ञानशक्ति को नष्ट करके पीड़ा को शान्त करती है, अधिक मात्रा में खिलाने से मद तथा प्रलाप उत्पन्न करती है और अन्त में गहरी बेहोशी लाती है, इसको संधिशूल, वात रक्त तथा अन्य संधिपीड़ाओं में लेप करते हैं, तथा शोथ को विलीन करने के लिये स्तन शोथ (जो दूध की लधिकता से प्रसूता को हो जाता है) में इसका लेप गुणकारी है, आन्त्रिक प्रयोग प्रमेह, स्वप्नदोष, जीर्ण कास तथा काली खांसी में किया जाता है।

१८९. बेद मुश्क (**Salix caprea**)

वर्णन—इसका वृक्ष फारस, यूरूप में और भारतवर्ष में काशमीर तथा पंजाब में होता है, इसके फूल अत्यन्त सुगन्धित होते हैं।

गुण तथा उपयोग—हृदयबल्य, सौमनस्यजनन, मस्तिष्कबल्य उष्मा शामक, मूत्रल, पीड़ा शामक, उदर को मृदु करने वाला, अधिकतया इसका परिस्रुत जल (अर्क) प्रयोग किया जाता है, जो पित्तज प्रकृति के लिये अत्यन्त उत्तम है, पित्तज शिरशूल तथा खफकान के लिये लाभकारी तथा उपयोगी है।

१९०. बेद सादा (**Salix alba**)

वर्णन—यह एक प्रसिद्ध वृक्ष है, इसके पत्ते बारीक २ एक हाथ तक लम्बे होते हैं, पुष्प पीले वर्ण के मृदु होते हैं, इस वृक्ष के पत्र और पुष्प औषध रूप में प्रयोग किये जाते हैं।

गुण तथा उपयोग—उष्मा शामक, हृदयबल्य तथा मनःप्रसादकर है, मूत्रल, पीड़ा शामक, इसके पत्रों पर सोना पित्तज प्रकृति वालों के लिये, यकृत और हृदय की उष्मा, रक्तज और पित्तज ज्वरों में अत्यन्त उपयोगी है, इसके ताजा पत्रों का रस रक्त अतिसार नाशक तथा कर्णशूल में डालने से शूल को शान्त करता है, यकृतावरोध, कामला, प्लीहाशोथ में भी प्रयोग किया जाता है, इसका परिस्रुत अर्क शामक होने के कारण पित्तज खफकान, यक्ष्मा, मसूरिका तथा पित्ताज ज्वरों में अति लाभप्रद है। हृदय, मस्तिष्क बल्य तथा पित्ताज ज्वर में विशेषतया प्रयोग किया जाता है।

१९१. बोज़ीदान (**Tanacetum Umbelliferum**)

वर्णन—श्वेत वर्ण की ठोस और कठोर जड़ है, जो अंगुल समान वा उससे बड़ी होती है—और इसके ऊपर रेखायें खेंची होती हैं।

गुण तथा उपयोग—वाजीकर, वातनाड़ी तथा संधि शोधक, वाजीकर योगों में इसे डाला जाता है, वातनाड़ी तथा संधि शोधक होने के कारण संधि शूल तथा वातरक्त में उपयोगी है। इसका विशेष गुण पित्त विरेचक है।

(म)

१९२. मकोय (Solanum dulcamara)

वर्णन—इसे अनबल सहलब भी कहते हैं, इसका पौदा आधे से एक गज़ तक ऊंचा होता है, शाखों और पत्रों की रंगत सबज कालिमा युक्त होती है, फल चने समान और सबज वर्ण का होता है, इसके भीतर ख़शख़ाशबीज समान छोटे २ बीज भरे होते हैं, अपक्व परन्तु शुष्क फल तथा हरे पत्र. औषधप्रयोग में आते हैं। भारतवर्ष, ईरान, तुरकस्तान, यूरूप इसका उत्पत्ति स्थान है।

गुण तथा उपयोग—संग्राही, दोष को लोटानेवाला, शोषक, मृदुकर, उष्मा शामक, शोथ नाशक—इसका यकृत तथा आमाशय-शोथ में बाह्य तथा आन्त्रिक प्रयोग होता है—इसका पत्र स्वरस फाड़ कर उपरोक्त रोगों में पिलावें—यकृत विकार जनित ज्वर तथा शोथ में अधिक उपयोगी है।

१९३. मरज़नजोश

वर्णन—इसे दोनामरवा भी कहते हैं, यह एक सुगन्धित श्वेत वर्ण की घास है, उष्णवीर्य है।

गुण तथा उपयोग—मृदु करती है तथा विलयन है, लेखन, अवरोधनाशक, अश्मरीघ्न, शोषक, अर्दित-शिरशूल, मस्तिष्क गत दोष, छातीपीड़ा, आन्त्रशूल में लाभप्रद है, यकृत अवरोध, प्लीहाविकार, जलोदर सब में उपयोगी तथा गुणकारी है, मस्तिष्क को शुद्ध करती है, सूंघने से प्रतिश्याय को लाभ करती है।

१९४. मवीज़-मुनक्का (Driedgrapes Seeds)

वर्णन तथा उपयोग—यह वास्तव में शुष्क अंगूर ही हैं, इसकी उत्पत्ति काशमीर और अफ़ग़ानस्तान है, इसमें आहारतत्व अधिक होता है, गाढ़े दोषों का पाक करता है, सुद्धों को निकालता है, उदर को मृदु करके सारक गुण करता है, शोथघ्न, लेखन, आमाशय, आन्त्र तथा यकृतबल्य, वाजीकर और पुष्टिकर है, जिन रोगियों

को भोजन अपथ्य है उनकी शक्ति को ठीक रखने के लिये भोजन-रूप में यह मुनक्का खिलाई जाती है, यह तीनों दोषों का पाक करता है, विरेचक क्वाथ में इसे भी डाल कर देते हैं और विरेचन आसानी से बिना कष्ट के खुल कर हो जाता है।

१९५. मस्तगी (Mastiche)

वर्णन—एक वृक्ष का जमा हुआ रालदार गोंद है, इसका वर्ण श्वेत पीतता युक्त स्वच्छ, स्वाद मधुर और सुगन्धित होता है, श्याम, रोम तथा अरमानीया आदि इसका उत्पत्ति स्थान होने से इसे मस्तगी रूमी कहते हैं।

गुण तथा उपयोग—आमाशय तथा यकृत बल्य, वातानुलोमक, सारक परन्तु संग्राही गुण युक्त, कफनाशक, मृदुकर, शोथघ्न, शोषक, लेखन, संग्राही तथा रक्तस्तम्भक, इसे अधिकतया आमाशय दुर्बलता में प्रयोग किया जाता है, ज्वारश मस्तगी इसका प्रसिद्ध योग है, शोथघ्न होने के कारण लेपों में भी डाली जाती है, रक्त स्तम्भक होने के कारण मंजनों में डाली जाती है, तथा रक्तष्ठीवन, रक्तप्रदर रक्त अतिसार में भी उपयोग की जाती है; विरेचक औषधियों के साथ प्रयोग करने से यह त्रिदोषों को विरेचन द्वारा बाहर निकालने में सहायता करती है तथा विरेचन के अव-गुणों को भी नष्ट करती है।

१९६. माज़रियून (Mezerei folia)

वर्णन—यह एक तेज़ और विषैले दूध वाली बूटी है, इसके पत्र औषध रूप में प्रयोग किये जाते हैं, इसे सिरके में ४८ घण्टे तक भिगो रखने के पश्चात् (अर्थात् सिरके में शुद्ध करके) औषध प्रयोग में लाते हैं, बीच २ में सिरके को बदलते रहने चाहिये।

गुण तथा उपयोग—लेखन, तीव्र विरेचक, कृमिनाशक तथा नि:सारक, मूत्र तथा आर्त्तव प्रवाही, इसे तीव्र विरेचक (पानी के समान पतले दस्त लाता है) होने के कारण जलोदर, कामला

तथा उदरकृमियों के नाश के लिये प्रयोग करते हैं, लेखन होने के कारण चर्मरोग झाईं, किलास तथा दद्रु आदि में इसका लेप लगाते हैं।

१९७. मामीरान (Coptis teeta)

वर्णन—एक बूटी की छोटी सी जड़ है, जो ग्रन्थिल और टेढ़ी होती है, इसका वर्ण पीला कालिमा लिये होता है, मामीरान चीनी इसका सर्वोत्तम भेद है।

गुण तथा उपयोग—लेखन तथा दृष्टि बल्य है--इसका भीतरी प्रयोग वातानुलोमक और मूत्रल गुण करता है। अधिकतया इसे नेत्ररोग में और उपयुक्त औषध के साथ अंजन रूप में प्रयोग किया जाता है, दृष्टिमांद्य, जाला, फोला तथा धुन्ध को नष्ट करता है, चर्म रोग किलास, खाज तथा त्वचा के दाग धब्बों को नष्ट करने के लिये इसका लेप करते हैं, मूत्रल होने के कारण कामला तथा पूयमेह में भी इसका प्रयोग किया जाता है।

१९८. मामीशा

वर्णन—एक बूटी है, जो पृथ्वी पर फैली होती है, इसे कूट कर बलूती आकार की चक्रिकायें बनाई जाती हैं, जिनको **असार मामीशा वा इयाफ मामीशा कहते हैं।**

गुण तथा उपयोग—शीतल, संग्राही, शोषक, तथा दोषविलोमकारक, इसी कारण इसे नेत्ररोगों में, नेत्र अभिष्यन्द आदि में तथा पैत्तिक शिरशूल, पैत्तिक संधिशूल, विसर्प, तीव्र विसर्प तथा रक्तज शोथ में इसे लेप किया जाता है, और नेत्रजलस्राव, तथा दृष्टि-दुर्बलता में सुरमे की भांति प्रयोग किया जाता है, संग्राही तथा शीतल होने के कारण पैत्तिक अतिसार में भी उपयोग किया जाता है।

१९९. माही ज़हरज (Anamirta cocculus)

वर्णन तथा उपयोग—यह एक शीरदार बूटी है, इसे कूट कर जलाशय में डालने से मछलियों की मृत्यु हो जाती है, इसकी छाल

औषध रूप में प्रयोग की जाती है। यह तीव्र विरेचक औषध है, इसे संधिशूल, गृध्रसी, जलोदर में क्वाथ करके पिलाते हैं, यूका को मारने के लिये इसे शिर के बालों में लगाते ह। यह कफ़दोष को दस्तों द्वारा निकालती है।

२००. माही रोबीयान

वर्णन—इसे झींगा मछली कहते हैं—यह एक प्रकार की मछली है—जिसकी मूंछें लम्बी २ होती हैं, रंग श्वेत तथा स्वाद मधुर होता है।

गुण तथा उपयोग—वाजीकर, शुद्ध रक्त उत्पादक, वृक्क तथा गर्भाशय को उष्मा पहुंचाये, वाजीकर गुण इसमें विशेष करके हैं, और अधिकतया इसी लिये प्रयोग में आती है।

२०१. मुरदा संग (**Pulmbi Oxidum**)

वर्णन तथा उपयोग—इसकी ज़रदी लिये डलिया होती हैं, यह सीसा (नाग) से तैयार की जाती है, यह लेखन, व्रणकारक, व्रण-शोषक, उदरकृमिनाशक है, यह अधिकतया व्रणों के लिये मरहमों में डाला जाता है, उदरकृमिनाशक होने के कारण भीतर भी इसका प्रयोग होता है, परन्तु विषैला होने के कारण इसका उपयोग कम किया जाता है।

२०२. मुरमुक्की (**Myrrha**)

वर्णन—एक वृक्ष का रालदार गोंद है, जो उसके तने में चीरा देकर ग्रहण किया जाता है,—इसके गोल २ क्रमरहित दाने होते हैं, इन दानों के आपस में मिलने से बहु तथा विभिन्न आकार की डलियां बन जाती हैं, इसका वर्ण लालिमा लिये हुये पीला, स्वाद तिक्त तथा सुगन्धित होता है, मक्का का मुर उत्तम होता है, उसे मुरमुक्की कहते हैं।

गुण तथा उपयोग—दुर्गन्ध नाशक, शोषक, लेखन, वातानु-लोमक, आमाशय बल्य, उदर कृमि नाशक, आर्त्तव प्रवर्तक,

शोथघ्न, प्रमाथी, कफनि:सारक तथा उष्णवीर्य है। प्लैग आदि ज्वरों में इसका प्रयोग करते हैं—लेखन, होने के कारण नेत्ररोगों में उपयोग होता है, आमाशय को बल देने, वात को नि:सरण कराने तथा कृमिनाश के हेतु इसे प्रयोग किया जाता है, कफ, कफज श्वास, स्वरभेद और गले की रूक्षता में उपयोगी है, विरेचक औषध के साथ मिलाने से उसके गुण को तीव्र करती है, तथा उसके अवगुणों का नाश करती है। शोथ में लेप रूप में इसका उपयोग किया जाता है।

२०३. मुलीम

वर्णन—यह एक पौदे की जड़ है, जिसका वर्ण भूरा कालिमा-युक्त होता है, स्वाद तिक्त होता है।

गुण तथा उपयोग—कृमिघ्न, जिस व्रण में कृमि पड़ गये हों, इसके बारीक चूर्ण को धूड़ने से वह कृमि नष्ट हो जाते हैं, मस्तिष्क कृमिरोग में तथा उसके उपद्रव शिरशूल में इसकी नस्य देते हैं—कृमि मर कर बाहर निकल आते हैं, और शिरशूल नष्ट हो जाता है।

२०४. मुशकतरामशीह (**Zizishora tenuior**)

वर्णन—इसे जंगली पोदीना कहते हैं—यह पोदीना की जाति में से ही है, जिसकी बू तीव्र और स्वाद तीक्ष्ण होता है, इसके पत्र छोटे २ फूल विपुल और बारीक २ लोमयुक्त होते हैं।

गुण तथा उपयोग—वातानुलोमक, मत्र तथा आर्त्तव प्रवर्त्तक, उदरकृमिनाशक—अधिकतया आर्त्तव लाने के लिये, अमरा तथा गर्भ निकालने के लिये इसको क्वाथ रूप में पिलाते हैं, उदरकृमिनाश के लिये इसका क्वाथ पिलाते हैं, तथा क्वाथ की बस्ति भी करते हैं, कर्ण तथा नासाकृमि के लिये इसका स्वरस कान तथा नाक में डाला जाता है।

२०५. मुशक दाना (**Hibiscus abemoschus**)

वर्णन तथा उपयोग—मसूर के समान एक बटी के बीज हैं, जिसका वर्ण मिटियाला कालिमा युक्त होता है और इसके भीतर चिकनी सुगन्धित गिरी होती है। दृष्टिबल्य, संग्राही तथा शामक हैं, इसे खरल करके आंखों में लगाते हैं, इसका चूर्ण प्रमेह में उपयोगी है, इसकी जड़ को जल में घोट कर, छान कर पूय मेह में प्रयोग किया जाता है।

२०६. मूली बीज (**Raphanus sativus**)।

वर्णन–मूलीबीज राईबीज ससान होते हैं।

गुण तथा उपयोग—बाहर त्वचा पर लगाने से लेखन गुण करता है, भीतरी प्रयोग वमन कारक, मूत्रल तथा वातानुलोमक है। इसका क्वाथ कफरोगों में वामक गुण के लिये पिलाया जाता है, वातानुलोम करने तथा मूत्रावरोध और आर्त्तवावरोध में इसका प्रयोग सफलता पूर्वक किया जाता है, किलास, छीप, व्यगं आदि चर्मरोगों में इसका लेप करते हैं।

२०७. मेदालकड़ी (**Litsea chivensis**)

वर्णन—यह एक वृक्ष की मोटी और दृढ़ त्वचा है, इसका वर्ण लाल घूसर होता है।

गुण तथा उपयोग—इसको अधिकतया चोट वा मोच पर लेप रूप में प्रयोग किया जाता है–यह शोथघ्न, संग्राही और वातसंस्थान बल्य है, आमाशय बल्य तथा वाजीकर है, अस्थिभग्न, चोट-मोच आदि पर लेप के इलावा इसे कफजरोग और बातनाड़ीरोग, कटिशूल, संधिशूल, गृध्रसी, वातरक्त, कामदुर्बलता, अस्थिभग्न और शोथ बिलयन के लिये इसका प्रयोग सफलता से किया जाता है।

२०८. मेहीसाला (**Liquid amber orientalis**)

वर्णन—इसे शिलारस भी कहते हैं, यह एक वृक्ष का दूध वा गोंद है, जो वृक्ष में से टपकने के बाद मधु समान गाढ़ा हो ज़ाता

हैं, इसका वर्ण लाल पीतता लिये हुये और स्वाद तथा बू मनोरम होती है, इसका एक भेद मेहीयावसा भी है, जो इस वृक्ष की लकड़ी आदि का क्वाथ करके छान कर फिर अग्नि पर रखकर घन कर के इसको शुष्क कर लिया जाता है, यह कृष्णवर्ण का तथा भारी होता है।

गुण तथा उपयोग—शरीर को बल देती है, पीड़ा शामक तथा कफनिःसारक है, यकृत को बल देती है, वृक्क तथा बस्तिगत रोगों में उत्तम है, कीटाणुनाशक तथा दुर्गन्धनाशक है, मूत्रल तथा आर्तव-प्रवर्त्तक है, अधिकतया इसे जीर्ण खासी तथा यक्ष्मा में दुर्गन्धित कफ को निकालने तथा फुप्फुस को शुद्ध करने के लिये प्रयोग करते हैं, स्वरभेद तथा प्रतिश्याय में भी लाभप्रद है, कफनिःसारक, मूत्रल तथा रजःप्रवर्त्तक इसके विशेष गुण है।

(र)

२०९. रबुलसूस

वर्णन—इसको मुलैठी का सत कहते हैं, यह मुलैठी का शुष्क घन सत्व है, जो बाजार में लम्बे २ गोल टुकड़ों में मिलता है।

गुण तथा उपयोग—इसके गुण मधुयष्टि के समान है, अधिकतया खांसी के योगों में पड़ता है, इसे मुखमें रखकर चूसने से खांसी नष्ट होती है, तृषा-शान्त होती है, स्वरभेद मिटता है।

२१०. रातीनज (**Resina**)

वर्णन—इसे राल कहते हैं, सनोबर की जाति के वृक्षों में से एक प्रकार का रालदार गाढा तैल निकलता है, परिस्त्रावण विधि से तैल तथा राल को पृथक कर लेते हैं, तैल को रोगन तारपीन कहते हैं, राल की अर्धस्वच्छ डलियां होती हैं और उनसे तारपीन के समान गन्ध आती है।

गुण तथा उपयोग—बाह्य व्रणों पर प्रयोग करने से दुर्गन्धि का नाश करके शोषक प्रभाव करती है, व्रण शीघ्र भरता है—इसका आन्तरिक प्रयोग कफनिःसारण तथा फुप्फुस को दूषित

दुर्गन्धयुक्त कफ से शुद्ध करने के लिये किया जाता है। अतः व्रणों के लिये यह मरहमों में डाली जाती है; खाज, दाद, छीप तथा अर्श में भी इसकी मरहम उपयुक्त होती है, मक्खन में मिलाकर हाथ पैर फटने पर भी प्रयोग करते हैं, कास, श्वास में इसका प्रयोग लाभप्रद है।

२११. रासन

वर्णन---इसे ज़ंजबील (सौंठ) शामी कहते हैं, सोंठ इसका प्रतिनिधि औषध है, यह लाल वर्ण की तथा तीव्र सुगन्ध और तीक्ष्ण स्वाद वाली एक प्रकार की जड़ है।

गुण तथा उपगोग---मन को प्रसन्न करती है, हृदय, आमाशय; मूत्राशय को बल देती है, वाजीकर, दीपक पाचक है, यकृत के अवरोध का नाश करती है, वातानुलोमक होने के कारण उदावर्त तथा आध्मान में उपयोगी है।

२१२. रेग माही (**Mabuia carivata**)

वर्णन---यह एक प्रकार की मछली है, जो रेत में होती है, एक अंगुल समान मोटी, भूरे वर्ण की, लगभग ६ इंच लम्बी होती है, त्वचा चमकदार, कड़ी और चिकनी होती है, इसका उदर फाड़कर अन्त्र तथा मलादि से शुद्ध करके लवण लगा कर सुखा लेते हैं, और यह सूखी हुई बाजार में मिलती है।

गुण तथा उपयोग---वातसंस्थान बल्य, वाजीकर, उत्तेजना प्रदायक, दुर्बलता नाशक तथा वीर्य प्रद है, इसे वाजीकरण योगों में डालते हैं, शिश्न को बल देकर उसमें उत्तेजना शक्ति प्रदान करती है, कामवर्धक तथा शक्ति प्रद है।

२१३. रेवन्दचीनी (**Riheum, Rehi Radix**)

वर्णन---यह कई प्रकार का है, यह रेबास की जड़ है, जो ख़ता देश से रेवन्द आती है, उसे रेवन्दख़ताई कहते हैं और यह गुणों में उत्तम है, इसका वर्ण पीत कालिमा लिये हुये, बू तीव्र, स्वाद

तिक्त तथा कुस्वाद होता है। इसको चबाने से थूक पीला हो जाता है।

गुण तथा उपयोग—यह विरेचक तथा संग्राही दोनों गुण रखती है, बाह्य प्रयोग से यह लेखन, संक्षोभजनक तथा शोथ-विलयन है, इसे चर्मरोग दाद, त्वचाके दाग़ोंपर भी लेप किया जाता है, भीतरी प्रयोग से यह फुप्फुस को शुद्ध करती है, कफ का निष्कासन करती है, यकृतावरोध नाशक तथा पित्त विरेचक है, इसलिये कामला, यकृतशोथ,प्लीहाशोथ,जीर्ण ज्वर में प्रयोगकी जाती है, आमाशय तथा आन्त्र को बल देती है, वात अनुलोमक तथा अजीर्ण अतिसार में उपयोगी है, आर्त्तव प्रवर्तक है, गर्भाशय शोथ तथा आर्त्तव अवरोध में भी इसका उपयोग सफलता पूर्वक किया जाता है।

२१४. रैहां बीज

वर्णन—यह तुलसी जाति का एक क्षुप है, इस में तुलसी जैसी सुगन्ध आती है, इस के बीज जो कृष्ण वर्ण के होते हैं, औषध प्रयोग में आते हैं।

गुण तथा उपयोग—यह प्रवाहिका तथा मरोड़ में उपयोगी हैं, शुष्क कास और छाती की रूक्षता को दूर करता है, वीर्य को गाढ़ा करता है, इसपगोल आदि बीजों क साथ प्रवाहिका तथा मरोड़, में बहुधा उपयोग में लाया जाता है॥

२१५. रोगन ज़ैतून (Oleum olive)

वर्णन—यह किंचित पीले वर्ण सबज़ रंगयुक्त का कुछ गाढ़ा तैल होता है, जो जैतून वृक्ष के पक्व फलों को दबा कर निकाला जाता है।

गुण तथा उपयोग—बाह्य प्रयोग में त्वचा पर यह मृदु, शोथघ्न तथा शामक गुण करता है, इसके मर्दन से रक्ताभिसरण-क्रिया उत्तम होकर शरीर पुष्ट होता है, मृदु विरेचक है, यकृत की पित्तज अश्मरी को हल करके बाहर निकाल देता है, यकृतशूल में

अत्यन्त उपयोगी है, अंगपीड़ा, अर्दित अर्धाङ्ग, संधिशूल, गृध्रसी आदि में शोथनाशक तथा पीड़ाशामक गुण करके इसका प्रयोग करते हैं, शरीर की रूक्षता दूर करता है, चम्बल तथा शुष्क इन्द्रलुप्त में उपयोगी हैं; दग्ध अंग पर लगाने से शामक गुण करता है, इसे गुदाव्रण, तथा गुदा का फट जाना और विबन्धमें प्रयोग करते हैं, शरीरपोषक तथा उपयोगी औषध है।

(ल)

२१६. लाजवर्द (**Lapis lazulei**)

वर्णन—एक स्वच्छ नीलिमा लिये चमकदार पाषाण है इसे धोकर औषध में प्रयोग करते हैं।

गुण तथा उपयोग—सौमनस्य जनक, हृदय बलय, गाढ़े दोषों को बाहर निकालने वाला, रक्त शोधक, आर्त्तव प्रवर्त्तक, बाह्य प्रयोग से यह लेखन तथा शोषक है, यह अधिकतया भ्रम, उन्माद, मद जैसे रोगों में प्रयुक्त होता है, नेत्र रोगों नेत्राभिष्यन्द, नेत्र स्राव, नेत्रव्रण आदि में अंजन रूप में अन्य औषध के साथ मिला कर प्रयोग करते है, नकसीर रोकने लिये इसका बारीक चूर्ण नासारन्ध्र में प्रधमन करते हैं, अतिसार में इसे बिना धोये प्रयोग करते है, अतिसार को बन्द करता है।

२१७. लोबान (**Benzoinum**)

वर्णन—यह एक प्रकार का जावा, सुमात्रा और स्याम अदि देशों में उत्पन्न होने वाले एक विशेष जाति के वृक्षों का सुगन्धित निर्यास है, जो उन को चीरा देकर ग्रहण किया जाता है। फ़ारसी में इस वृक्ष को कमकाम तथा अरबी में ज़िर्व कहते हैं। लोबान का वर्ण बाहर से भूरा लालिमा लिये वा पीत और भीत्तर से दूध के समान होता है, एक लोबान जिसका रंग श्वेत और लालिमा लिये भूरा दाग़दार होता है, जिसे कोड़ीया लोबान कहते हैं।

गुण तथा उपयोग—दुर्गन्धनाशक, शोषक, लेखन, यकृत उत्तेजक, कफ़ निःसारक तथा कफ़ शोषक, कफ़रोग नाशक, आमाशय बल्य,

वाजीकर, ज्वरनाशक, और स्वेदल है, दुर्गन्धनाशक होने के कारण इसका धूम्र मकानों में दिया जाना है तथा व्रणों के लिये मरहम बना कर प्रयोग करते हैं, कफ़ को निकालने के लिये तथा फुप्फुस को शुद्ध करने के लिये इसका धूम्र कास, श्वास तथा यक्ष्मा रोगी को दिया जाता है। इस के खिलाने से स्वेद आकार ज्वर टूट जाता है, शोथघ्न होने से शोथ पर तथा अर्दित, अर्धांग, गृध्रसी आदि पर इस का लेप किया जाता है, इसका जौहर भी बनाया जाता है, जो कि लोबान से अधिक गुणप्रद है, शोथ नाशक तथा वाजीकर इसके विशेष गुण हैं।

(व)

२१८. वज तुरकी

वर्णन—वचं का युनानी नाम है, गुण तथा उपयोग से वैद्य भली भांति परिचित हैं।

(श)

२१९. शकर तेगाल

वर्णन—यह तेग़ाल नामी बड़ी मक्खी की भांति एक कीट का घर है। जो वह अपनी लाला (थूक) से बनाता है, यह घर नवीन होने से स्वाद में मधुर होता है, परन्तु जीर्ण होने पर इसकी मधुरता कम हो जाती है, यह घर भीतर से खोखला होता है।

गुण तथा उपयोग—चिपकने वाला, छाती को मृदु रखने वाला, इसका अधिक प्रयोग आमाशय को शिथिल करने वाला तथा उत्क्लेश कारक है, इसे वायु प्रणालियों तथा अन्न प्रणाली के प्रदाह, शुष्क कास को नष्ट करने के लिये प्रयोग करते हैं, स्वर भेद, कण्ठ रूक्षता, और आमाशय की रूक्षता में उपयोगी है।

२२०. शकाकल (**Trachydium lehmanni**)

वर्णन—इसे फ़ारसी में गज़र दशती तथा शकाकल मिश्री भी कहते हैं, यह एक बूटी की जड़ है, जो छोटी गाजर के समान वर्ण

में श्वेतता लिये पीली होती है, इसका स्वाद लेसदार और किञ्चित मधुर होता है । और प्रायः यह काबुल से आती है ।

गुण तथा उपयोग—शरीर बल्य, वीर्यप्रद, वाजीकर, दुग्ध जनन तथा वीर्य को गाढ़ा करने वाली है, अधिकतया वीर्य वर्धक और प्रमेह नाशक योगों में डाली जाती है; प्रसूता स्त्रियों के दूध बढ़ाने के लिये भी इसका चूर्ण दूध के साथ प्रयोग करते हैं, इसका मुरब्बा शरीर पोषण तथा वाजीकर गुण के हेतु प्रयोग कराया जाता है ।

२२१. शकाही

वर्णन—एक कांटेदार बूटी है, इसका तन्ना त्रिकोण, अंगुली समान मोटा होता है, पत्र त्रिकोण, किंचित मोटे और रूईदार होते हैं, इसकी नोक कांटेदार होती है, इसका पुष्प बनफ़शी पीतता लिये वर्ण का होता है ।

गुण तथा उपयोग—शोषक, संग्राही, शोथविलयन और पीड़ा-शामक है, आमाशय, यकृत को बल देने वाला तथा ज्वरनाशक है, इसे अधिकतया आमाशय, यकृतविकार तथा ज्वरों में प्रयोग किया जाता है, इसके क्वाथ से कौआ के शोथ में तथा दंतपीड़ा में ग़रारे कराये जाते हैं। इसके मूल का क्वाथ रक्त प्रदर में तथा जीर्ण अति-सार में पिलाते हैं, रक्तप्रदर और गुदाशोथ में इसके क्वाथ से कटि स्नान कराते हैं।

२२२. शलगम बीज

वर्णन तथा उपयोग—यह बीज सरसों बीज समान लाल वर्ण के किसी कदर धूसर होते हैं, यह लेखन, उत्तेजक, मूत्रल गुण रखते हैं। इसे उबटनों में डाला जाता है, यह त्वचा के रोगों को नष्ट करके वर्ण को सुन्दर बनाता है, वाजीकर तथा कामशक्ति वर्धक योगों में भी इसे डाला जाता है ।

२२३. शादनज

वर्णन—यह एक प्रकार का मृदु पाषाण है, जो कई प्रकार का होता है, मसूर बीज के समान लाल वर्ण का उत्तम समझा

जाता ह, जिसे **शादनज अदसी** कहते है, इसे धोकर औषध में प्रयोग किया जाता है।

गुण तथा उपयोग—यह शोषक, तंतु संग्राहक, रक्तावरोधक तथा नेत्रों को बल प्रदान करता है। इसे अधिकतया नेत्र रोग, नेत्र कण्डु, नेत्र व्रण, नेत्रस्राव तथा दृष्टि दुर्बलता में पृथक वा अन्य योग्य औषध के साथ अंजन रूप में प्रयोग किया जाता है, व्रणों पर रक्त स्राव को रोकने और शुष्क करने के लिये इस का बारीक चूर्ण धूडा जाता है। रक्त प्रवाहिका, अतिसार तथा रक्त प्रदर में भी उपयोग कियां जाता है। इस को धोने को विधि यह है कि इसे बारीक पीस कर जल में हल करें, और जो हल होने से बाकी शेष रहे, उसको दुबारा हल करें, यहां तक कि सम्पूर्ण घुल जाये और धुल जाये ॥

२२४. शाहपसन्द

वर्णन तथा उपयोग—यह एक बेलदार बूटी है, जो अपने पास की वस्तु पर लिपट जाती है, इसके पत्र लोबिया पत्र समान परन्तु उनसे कुछ चौड़े और पुष्प श्वेत तथा सुन्दर होते हैं, पुष्प के शुष्क होने पर इसके नीचे से २-३ दाने पीतता लिये हुये और बीरबहुटी के समान रूईयुक्त निकलते हैं, यही बीज औषध रूप में प्रयुक्त होते हैं। यह तीव्र विरेचक है, तीनों दोषों को दस्तों द्वारा निकालता है, सुद्धों को ख़ारज करता है, अम्लतास के गूदा के साथ शरीर के आशयों की शोथ में इसे पिलाते हैं, संधि शोथ, जीर्ण ज्वर तथा बच्चों के रोग में भी इसका प्रयोग होता है, बीजों को कूट कर चूर्ण बना कर लवण अथवा गुलकन्द के साथ खिलाने से अत्यन्त सरलता से दस्त आ जाते हैं।

२२५. शाहतरा (**Fumaria officivalls**)

वर्णन—यह एक बूटी है, जो गेहूं और चने के खेतों में उत्पन्न होती है, इस के पत्र धनिया के पत्र समान और पुष्प बनफ़शी होते हैं, और उसका स्वाद तिक्त है।

गुण तथा उपयोग—शाहतरा रक्त शोधक, मूत्रल, आमाशय बल्य, तबीयत को मृदु करने वाला तथा ज्वरनाशक है। इसको अधिकतया रक्त दोष, आतशक, खुजली, दाद, फोड़े, फुंसी में पृथक वा अन्य रक्त दोष नाशक औषध के साथ मिला कर प्रयोग करते हैं, जीर्ण ज्वरों में उपयोगी और सिद्ध औषध है।

२२६. शीरख़िशत (Manna)

वर्णन—यह एक प्रकार का मधुर, गाढ़ा जमा हुआ द्रव्य है, जो कई प्रकार के वृक्षों से स्वयं स्रावित होकर जम जाता है। सिसली, दक्षिण यूरूप, ईंरान तथा खुरासान इसके उत्पत्तिस्थान हैं, यह दो प्रकार का बाज़ार में मिलता है, शीरख़िशत तख़्ता जो अधिकतया इंग्रेज़ी औषधालयों में प्रयोग किया जाता है, शीरख़िशत अशकी—इसके बड़े २ मृदु दाने होते हैं, जो श्वेतता लिये हुये स्वच्छ, गोंद के समान होते हैं, स्वाद मधुर होता है, यही औषध में प्रयुक्त किया जाता है।

गुण तथा उपयोग—लेखन, पित्तविरेचक, दग्धदोषनिःसारक, उर मृदुकारक, कफशोषक तथा स्रावक, इसे सारक तथा विरेचक होने के कारण पित्तज रोग, पित्तज ज्वर में अर्क गुलाब के अनुपान से प्रयोग कराते हैं, बालकों तथा मृदु प्रकृति वाले पुरुषों में यह विशेषतया प्रयोग किया जाता है, इसे कफ़ निकालने के लिये पित्तज कास में तथा उर रूक्षता, फुप्फुस रूक्षता में भी उपयोग करते हैं, इसका अधिक प्रयोग वातल, शीघ्रपतनकारक तथा वीर्य को पतला करता है, आन्त्रशूल में भी हानिकर है।

२२७. शीशम (Dallbergia sissoo)

वर्णन—यह एक भारत का प्रसिद्ध वृक्ष है, जिसके पत्ते छोटे २ गोल, नोकदार होते हैं, इसकी फलियां गुच्छों में लगती हैं, जो कि छोटी २ चपटी और बारीक होती हैं, प्रत्येक फली में दो, तीन बारीक बीज होते हैं, अधिकतया इसकी लकड़ी का बुरादा औषध प्रयोग में आता है।

गुण तथा उपयोग—रक्तशोधक, शरीर को दुबला करने वाला, उदरकृमिनाशक, शोषक गुण वाला है, इसकी लकड़ी का बुरादा रक्तविकार नाशक, आतशक, कुष्ठरोग, किलास, खाज, फोड़े, फुंसी और अन्य त्वचा के रोगों में विशेषतया प्रयोग होता है, रक्तशोधक यही इसका विशेष गुण है।

(स)

२२८. सकबीनज (Sagapenum)

वर्णन—एक वृक्ष का गोंद है, जो बाहर से लाल वा पीला और भीतर से श्वेत आर्द्रतायुक्त अश्रुवत दानों सें बनी डली के समान होता है, बू तीव्र और स्वाद किंचित तिक्त होता है।

गुण तथा उपयोग—बाह्य प्रयोग लेखन, चूषक, शोथघ्न और शामक है, भीतरी प्रयोग विरेचक तथा अन्य विरेचक औषध शोधक है, उदरकृमिनाशक, मूत्र, आर्तव प्रर्वत्तक तथा वृक्क, बस्ति अश्मरीनाशक है, इसे अंर्धांग, संधिशूल, कफ़ज शिरशूल, अपस्मार, गृध्रसी, जलोदर में प्रयोग किया जाता है, यह कफ़-विरेचक है और जल समान दस्त लाता है, गहरी तथा कठोर शोथ पर लेप करते हैं, शिश्न दुर्बलता के लिये इसका तिल्ला करते हैं, कृमि तथा अश्मरी और आर्तवावरोध में भी इसका प्रयोग होता है।

२२९. सकमूनीया (Scammonium)

वर्णन—यह एक प्रकार का गोंद है, जो एक बेलदार बूटी की जड़ में चीरा देने से निकलता है, इसका वण बाहर से मिटयाला वा कालिमा लिये भूरा होता है, आसानी से टूट जाता है, ताज़ी टूटी हुई डली चमकदार, अर्धस्वच्छ और सुषिरपूर्ण तथा गहरे भूरे वर्ण की होती है, गंध एक विशेष प्रकार की तथा स्वाद खराब होता है।

गुण तथा उपयोग—यह बाह्य प्रयोग से लेखन तथा शोथघ्न है, आंतरिक प्रयोग करने से यह तीव्र विरेचक है, पतले जल समान

और पीले वर्ण के दस्त आते हैं । अधिक मात्रा में प्रयोग करने से यह आमाशय तथा आन्त्र में ख़राश उत्पन्न करता है, किंचित आमाशयबल्य तथा यकृतबल्य और कृमिनाशक है, और विरेचक औषध के साथ मिलाने से उनके गुण को अधिक करता है, इसे शिरशूल, जलोदर और तीव्र विबन्ध में प्रयोग करते हैं, इसे निम्नविधि से शुद्ध करके प्रयोग करना चाहिये, एक सेब वा बहीफल को लेकर उसके भीतर सकमूनीया को रख कर मुख बन्द कर ऊपर आटा लपेट कर गरक भूभल वा तन्दूर में रख दें, आटा लाल होने पर उसे पृथक कर सकमूनीया निकाल प्रयोग में लावें ।

२३०. सपस्तान (**Cordia Myxa**)

वर्णन—इसे लिसूड़े भी कहते हैं, यह एक वृक्ष का फल है, जो आमला से छोटा होता है, अपक्व सबज़ वर्ण का और पक्व पीले वर्ण का होता है, पक्व लिसूड़े का स्वाद मधुर लुआबदार होता है, शुष्क लिसूड़े ही औषध प्रयोग में आते हैं। इनका वर्ण कालिमायुक्त और उन पर झुर्रियां पड़ी होती हैं, पानी में भिगोने से लुआब उत्पन्न होता है।

गुण तथा उपयोग—सारक, कण्ठ तथा उर में मृदुता उत्पन्न करने वाला, कफ़ नि:सारक, पित्त शामक, चिपकने वाला और विरेचक औषध के साथ मिलाने से उनके संक्षोभक गुण को कम करने वाला है, इसे अधिकतया शुष्क कास, पित्तज प्रतिश्याय, कण्ठ तथा उर की रूक्षता को नष्ट करने के लिये क्वाथ रूप में देते हैं। पित्तज और रक्तविकारजनित ज्वर, (ख़सरा, मोती झारा आदि) मूत्र-दाह, तथा तृषा में इसका उपयोग सफलता पूर्वक किया जाता है, प्रवाहिका, मरोड़ में भी इसका प्रयोग किया जाता है।

२३१. सफ़ेदा काशगरी (**Plumli Carbonas**)

वर्णन—श्वेत वर्ण का मृदु तथा भारी चूर्ण है, जो बंग तथा नाग (सीसा) को जला कर बनाया जाता है, कलई से जो

सफेदा बनाया जाता है, उसे सफ़ेदा काशगरी कहते हैं।

गुण तथा उपयोग—संग्राही, शोषक, शीतल, शामक, चिपकने वाला, व्रण रोपण तथा रक्त स्तम्भक है। इसको अधिकतया नेत्र-रोग, नेत्र अभिष्यन्द, नेत्रव्रण, पोथकी, आदि में अंजन में मिला कर वा पृथक प्रयोग किया जाता है, अग्निदग्ध में इसे अण्डे की सफ़ेदी में मिला कर अग्निदग्ध स्थान पर लगाया जाता है, व्रणशोषक तथा रक्त स्तम्भक होने के कारण इसे मरहमों में प्रयोग किया जाता है।

२३२. सबूस गन्धम

वर्णन—यह गेहूं की ऊपर की भूसी है, जो इसके आटे को छान लेने के पश्चात छलनी में बाकी रह जाती है ।

गुण तथा प्रयोग—कफ़निःसारक तथा शोथघ्न है, कफ़ को निकालने के लिये खांसी तथा प्रतिश्याय में योग्य औषध के साथ क्वाथ बना कर दिया जाता है, स्तनशोथ में इसका लेप करते हैं, इसकी रोटी बना कर मधुमेह रोगियों को आहार रूप में दी जाती है, मधुमेह में उत्तम गुणदायक आहार है ॥

२३३. समाक (**Rhus Parveiflora**)

वर्णन—यह एक वृक्ष का फल है, जो मसूरबीज समान उससे छोटे वा बड़े होते हैं, इन फलों का बारीक छिलका जिसे **पोस्त समाक** अथवा **गिरद समाक** कहते हैं, औषध रूप में प्रयोग करते हैं, इसका स्वाद अम्ल और उत्तम होता है।

गुण तथा उपयोग—संग्राही, दोष विलोमकारक, आमाशय बल्य, पित्त शामक, रक्तप्रवाह तथा मूत्र की अधिकता में लाभकारी है, इसे अधिकतया पित्तज अतिसार, संग्रहणी, यकृतविकार-जनित अतिसार, मतली, वमन तथा तृषा शान्त करने के लिये पृथक वा अन्य योग्य औषध के साथ प्रयोग करते हैं, पित्तज प्रकृति के पुरुषों में आमाशयबल्य तथा क्षुधाजनक है, दांतो को दृढ़ करने के लिये तथा पीड़ा नष्ट करने के लिये इसके क्वाथ की कुलियां

की जाती हैं, रक्तप्रदर तथा मूत्र अतिसार में भी सफलता पूर्वक प्रयोग किया जाता है, आमाशयबल्य तथा पित्तज अतिसार नाशक इसके विशेष गुण हैं ॥

२३४. सरतान (Scilla Serrata)

वर्णन—इसे केकड़ा कहते हैं, यह एक दरयाई जानवर है, इसके दो जबड़े, चुंगल, नाखून, दांत तथा कठोर पीठ होती है। इसके शिर और दुम नहीं होती, सरतान नर तथा मादा इन दो भेदों का होता है, मादा उत्तम समझी जाती है, मादा की पीठ में यदि सूई चभोई जाये, तो एक लेसदार द्रव श्वेतवर्ण का निकलता है।

गुण तथा उपयोग—पित्तज शोथ विलयन, लेखन, यक्ष्मा तथा ज्वर सहित रक्तपित्त में उपयोगी, रक्तष्ठीवन तथा आमाशय से रक्त के आने में लाभप्रद, कुत्ते, बिच्छू तथा अन्य विषैले जानवरों के विष का अगद है। अधिकतया इसे जलाकर (मुहरक) यक्ष्मा, रक्तपित्त आदि रोगों में बर्ता जाता है, पित्तज, तथा शुष्क कास, छाती की रूक्षता, शरीरक क्षीणता तथा दुर्बलता में उपयोगी है, शरीर में चूने (Calcium) की कमी को पूरा करता है।

२३५. सातर (Zataria Multiflora)

वर्णन—यह एक बूटी है, इसका फूल नीला, स्वाद तीक्ष्ण और सुगन्धित होता है, इसके कई भेद हैं। यह फ़ारस, अफ़गानस्तान, बलोचस्तान आदि देश में होता है।

गुण तथा उपयोग—शोथघ्न, छेदन करने वाला, वातानुलोमक, पीड़ाशामक और कफ़ निःसारक तथा शोषक है, आमाशय यकृत तथा आन्त्र को दोषों से शुद्ध करता है, वृक्क, मूत्राशय से अश्मरी को निकालता तथा मूत्र, आर्त्तव प्रवंतक है, कद्दूदाना क्रमिनाशक है, शोथ को नष्ट करने के लिये शोथ पर इसके पत्रों का लेप सिरके के साथ किया जाता है, दंतशूल में इसके क्वाथ से गरारे कराये जाते हैं, कूलहे की पीड़ा, मूत्राशय शूल में इसका

क्वाथ पिलाते हैं, कास तथा श्वास में कफ़ निकालने के लिये और फुफ्फुस को कफ़ से शुद्ध करने के लिये इसका क्वाथ प्रयोग किया जाता है, वृक्क तथा बस्तिगत अश्मरी में भी उपयोगी है, उदरवातनाशक, वाजीकर तथा क्षुधावर्धक इसके विशेष गुण हैं।

२३६. सिरख़स (Male fern)

वणन—यह एक बूटी की ग्रंथिल, कृष्ण वर्ण लालिमा युक्त जड़ होती है, तोड़ने पर भीतर से पीतता युक्त वर्ण की होती है ।

गुण तथा उपयोग—शोषक, गर्भपातक, संक्षोभक तथा उदर-कृमि (कद्दू दाने) नाशक, शोषक होने के कारण व्रणों में इसका धूड़ा किया जाता है । कद्दूदाने कृमि नष्ट करने के लिये यह एक सिद्ध तथा प्रभावशाली औषध है, अधिक मात्रा में वामक है, इसके क्वाथ से शिर धोने से शिर के बालों की यूका (जूयें) नष्ट हो जाती हैं ।

२३७. सिंदूर (Plumbi Oxidum rubrum)

वर्णन तथा उपयोग—यह लाल वर्ण की भारी वस्तु है, जो कलई और सीसा से तैयार की जाती है, यह व्रणशोषक, दूषित मांस नाशक, कृमिनाशक, व्रणशोधक तथा रक्त स्तम्भक है, अधिकतया पृथक वा अन्य औषध के साथ मिला कर इसे व्रण शोधन तथा रोपण कार्य के लिये मरहमों में डालते हैं, दग्ध स्थान पर मरहम रूप में प्रयोग करने से शीघ्रता से उसे ठीक करता है, व्रण में कृमि पड़ गये हों तो उनको नष्ट करके रोपण कार्य सफलता से करता है, व्रणों के लिये विशेष गुणकारी है ।

२३८. सुदाब (Ruta Graveolens)

वर्णन—यह एक जड़ है, जो दो गज़ लम्बी होती है, पत्र इमली के पत्रों के समान और दुर्गन्धित होते हैं, पुष्प पीले वर्ण के, बीज ३ नग त्रिकोण आकार के एक कोष के भीतर होते हैं, इस

॥ इति ॥

रोगानुसार अनुक्रमणिका

अतिसार–संग्रहणी इसहाल–ज़रब Diarrhea & Sprue

अनिद्रा सहर Insomnia

अपस्मार मृगी (सरह) Epilepsy

उन्माद मालखोलीय–जनून Melencholia & Insanity

उपदंश आतशक–आबला फरंग Syphilis

उष्णवात सुज़ाक Gonorrhea

कण्ठमाला खनाजीर Scrofula

दंत रोग — अमराज़ दंदान — Diseases of Teeth

नेत्र रोग — अमराज़ चशम — Eye Diseases

पित्त रोग — अमराज़ सफ़रावी

प्लीहा वृद्धि वरम तिहाल Enlargement of the spleen

प्लैग (महामारी) ताऊन Plague

बाल रोग अमराज़ इतफ़ाल Diseases of Children

बल्य तथा वाजीकरण मक्कवी बाह General Tonics & Sexual Tonics

व्रण जखम Wounds

मुख रोग अमराज दहन

मूत्र विकार अमराज बोल Urine Diseases

वातरक्त — नकरस — Gout

विष विकार — जहर — Poison

विसूचिका — हैजा — Cholera

वृक्क विकार — अमराज गुरदा — Diseases of the Kidney

हृदय रोग अमराज कलब Heart Diseases

हिक्का   हिचकी (फोवाक़)   Hiccup

क्षय   तपेदिक़   Hectic Fever

क्षुद्र रोग   अमराज मुतफरका

॥ ति ॥

एलोपैथिक गाइड

लेखक—डा० रामनाथ बर्मा

पुस्तक क्या है । गागर में सागर । आज जब भारत स्वतंत्र हो चुका है और हिन्दी भाषा राष्ट्र भाषा बन गई है । आधुनिक ढंग से लिखी हुई डाक्टरी चिकित्सा की पुस्तक की अत्यन्त आवश्यकता थी जो सर्व साधारण तथा हर एक वैद्य, हकीम के काम आ सके और वह रोगों का ऐलोपैथिक (डाक्टरी) चिकित्सा पद्धति से बड़ी सरलता से इलाज कर सकें। इसी कमी का अनुभव करते हुये डाक्टर जी ने अपनी सारी आयु के अनुभव का निचोड़ इस पुस्तक में दे दिया है । हमारा तो यह दावा है कि जो साधारण से साधारण व्यक्ति भी इसे एक बार देखेगा इसे अवश्य अपने पास सदा के लिये रखने का प्रयत्न करेगा । डाक्टरजी ने ऐलोपैथिक (डाक्टरी) सिद्धान्तानुसार शरीर के भिन्न २ अंगों का वर्णन तथा उनका कार्य, शरीर की सूक्ष्म रचना तथा भिन्न २ तन्तुओं का वर्णन, दन्तोद्गम, टीका लगवाना; बच्चों के विषय में कुछ जानने योग्य बातें, रक्त सञ्चार, नाड़ी परीक्षा, रक्तभार, लसीका वाहिनियां, प्रणाली विहीन ग्रन्थियां, हमारा भोजन, खाद्य पदार्थों का रसायनिक संगठन, भोजन बनाने के संबंध में कुछ जानने योग्य बातें, भिन्न २ प्रकार के खाद्य पदार्थ, भोजन से रक्त की उत्पत्ति, भोजन किस स्थान पर कितनी देर रहता है, पाखाना, मूत्र परीक्षा, मूत्र के स्वाभाविक तथा अस्वाभाविक अवयव, भिन्न २ आयु में मूत्र का परिमाण, विटेमिन्स, भिन्न २ खाद्य पदार्थ और उनकी विटेमिन्स, खाद्य तालिका, पाण्डु रोग और दौर्बल्य, कब्ज, मधुमेह, अतिसार, अजीर्ण, ज्वर, गठिया, सूजाक, नाड़ी दौर्बल्य, मोटापा, क्षयरोग, गर्भावस्था, वाय, टाइफाइड, रोगियों के लिये भिन्न २ प्रकार के आहार, मक्खी, मच्छर, खटमल आदि का वर्णन, संक्रामक रोग और उनसे बचने के उपाय, औषधियों को शरीर में प्रवेश करने के भिन्न २ मार्ग, व्यवस्था पत्रलेखन, औषधालय के संबंध में कुछ आवश्यक बातें, इन्जेक्शन्स (सूची भेद चिकित्सा इसमें प्रायः सभी प्रकार के इन्जेक्शन्स का वर्णन है, किन २ बीमारियों में और कौन २ से) वैक्सीन थैरेपी सीरम चिकित्सा, मुख्य २ रोग और उनके पूर्ण अनुभूत नुस्खे, अन्य उपयोगी नुस्खे इन्हेलेशन्स स्प्रे, लिक्टस, लिनिमेन्ट्स लोशन्स, मिक्सचर्स आंइन्टमेन्टस्, पिग्मेन्ट्, पल्प पाऊडर्स, रोग और उनमें प्रयोग किये जाने वाले इन्जेक्शन्स और पेटन्ट औषधियां, कुछ पेटन्ट औषधियों का वर्णन, नवीन औषधियां जैसे पैनीसिलीन, सल्फोनेमाइड, आदि उनके गुण दोष, प्रयोग, उपचार, औषधियां हिन्दी अंग्रेजी नाम आदि अनेकों विषय इस पुस्तक में वर्णन कर दिये हैं । मू० ७॥) रु० ।

प्रकाशक—

मोतीलाल बनारसीदास,

पोस्ट बक्स ७५, चौक, बनारस ।
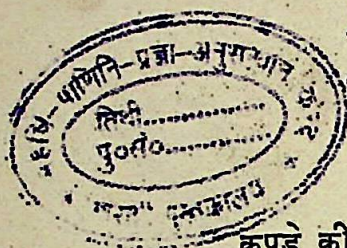
गंगयति निदान

(सरल हिन्दी में)

कपड़े की जिल्द सहित मूल्य रु० ६)

मूल लेखक पंजाब निवासी जैन यति गङ्गाराम। हिन्दी अनुवादकर्त्ता आयुर्वेदाचार्य श्रीनरेन्द्रनाथ जी शास्त्री। पक्की कपड़े की जिल्द मूल्य ६) रु०।

पंजाब के गांवों में प्रायः वैद्य लोग इसी पुस्तक के आधार से रोगों का निदान करते हैं। भाषा इतनी सरल है कि सर्वसाधारण भी बड़ी आसानी से समझ सकता है। इसमें रोग जानने के उपाय, लक्षण, पूर्वरूप, उपशम, सम्प्राप्ति के लक्षण, भेद, स्वरूप, मिथ्याहार-विहार के लक्षण, ज्वर के पूर्व-रूप, वात, पित्त, कफ, वातपित्त, वातकफ, पित्तकफ, सन्निपात आदि लक्षण ५२ प्रकार के सन्निपात का सविस्तर वर्णन है। विषमज्वर की संप्राप्ति, लक्षण, भेद, साध्यासाध्य, अर्थात् हर प्रकार के ज्वर का सविस्तर वर्णन है। स्थान स्थान पर पाश्चात्य मतानुसार भी वर्णन किया गया है। संग्रहणी रोग, अर्श (बवासीर) अजीर्णरोग, क्रिमिरोग, पाण्डुरोग, रक्तपित्तरोग राज-यक्ष्मा, कासरोग, श्वासरोग, स्वरभेद, अरोचकरोग, छर्दिरोग, तृष्णारोग, मूर्छारोग, मदात्यरोग, दाहरोग, उन्मादरोग, भूतोन्माद, अपस्माररोग, वात-रोग, शूलरोग, उदावर्तरोग गुल्मरोग, हृदरोग, मत्राघात, अश्मरीरोग, प्रमेह-रोग, मेदारोग, उदररोग, शोथरोग, वृद्धिरोग, अर्बुदरोग, श्लीपदरोग, विद्रधि-रोग, व्रणशोथरोग, शारीरव्रणरोग, सद्योव्रणरोग, नाड़ीव्रणरोग, भगन्दररोग, उपदंश, शकरोग, कुष्ठरोग, अम्लपित्तरोग, विसर्परोग, विस्फोट, मसूरिका-रोग, मन्थर (टायफायड) ज्वर, स्नायुकारोग, क्षुद्ररोग, प्लेग, चिप (चंडा) रोग, कुनखरोग, मुखरोग, ओष्ठरोग, दन्तरोग, जिव्हारोग, तालुरोग, कंठरोग, सर्वसररोग, कर्णरोग, नासारोग, नेत्ररोग शिररोग, शीर्षकलाशोथरोग, मस्तिष्क-रोग, बादगंठियारोग, हस्तमैथुनरोग, प्रदररोग, योनिव्यापदरोग, बाधकरोग, हिस्टीरिया गर्भरोग, योनिसंवरण, गर्भिणी परिचर्या, प्रसूतरोग, स्तनरोग, दुग्धरोग, बालरोग, विषरोग, जगमविषरोग, नाड़ीविज्ञान, मूत्र विज्ञान, शारी-रिक विज्ञान, धरनरोग, उरोग्रह पार्श्वशूलरोग आदि प्राचीन काल तथा आज-कल में होने वाले हर एक प्रकार के रोगों के पूर्वरूप, भेद, संप्राप्ति लक्षण, सामान्यनिदान विशेष लक्षण, वातज, पित्तज, कफज तथा साध्यासाध्य तथा पाश्चात्यमतानुसार सविस्तर वर्णन दिया गया है हिन्दी भाषा में इस प्रकार की कोई पुस्तक आज तक नहीं छपी। इस एक ही पुस्तक से सर्वसाधारण मनुष्य हर प्रकार के रोगों का ठीक ठीक निदान कर सकता है। भाषा इतनी सरल है कि हर एक मामूली पढ़ा लिखा भी इसे अच्छी तरह समझ सकता है।

प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता :—

मोतीलाल बनारसीदास

किनारी बाजार, देहली। } पोस्ट बक्स ७५, चौक, बनारस। { बांकीपुर, पटना।